'संस्कार' जैसी साहसिक और कलात्मक रचना से औपन्यासिकता को नया संस्कार और आयाम देने वाले विवादास्पद कन्नड़ लेखक यू० आर० अनन्तमूर्ति का नवीनतम उपन्यास है भारतीपुर।

यों 'भारतीपुर' एक दक्षिण भारतीय बस्ती की कहानी है, लेकिन बस्ती तो एक बहाना है। दरअसल, यह सम-सामयिक भारतीय जीवन के दहशत पैदा करने वाले अनुभवों और तिलमिलाने वाले यथार्थ का बहुत तीखा और एक हद तक अविश्वसनीय लगने वाला दस्तावेज़ है।

भारतीपुर एक बस्ती है। उसमें एक मंजुनाथ का मंदिर है। वह मंदिर केवल देवालय नहीं, उस बस्ती की सारी व्यवस्था का केन्द्र है—एक ऐसा केन्द्र और नियामक स्थल, जहाँ से ढोंग, पाखण्ड, स्खलन और दुराचार के अजस्र स्रोत फूटते हैं। सारी बस्ती के जीवन को समेटने, जकड़ने और यथास्थितिवाद को सुरक्षित बनाए रखने के लिए। ऐसे में सामाजिक परिवर्तन लाने की कोई भी भूमिका या भूमिका का कोई भी प्रयत्न न केवल निष्फल होकर रह जाता है बल्कि अपने पीछे ...पतिराव और अडिगजी जैसे लोगों की कुंठित ... हताश पीढ़ी छोड़ जाता है।

ईश्वर, पूंजी और पाखण्ड की मिली-भगत और उसकी कुत्सित सत्ता के असली चेहरे को उजागर करने वाले इस उपन्यास की सबसे बड़ी शक्ति है इसका सामाजिक सन्दर्भ, जो रचना को अतिरिक्त ऊर्जा तो देता ही है, उपन्यास को बेहद प्रासंगिक भी बनाता है।

गहरी संवेदना, मार्मिक भाषा, भेदक सामाजिक दृष्टि और साहसिक रचनाशीलता के लिए विख्यात अनन्तमूर्ति का उपन्यास भारतीपुर भी हिन्दी पाठकों के लिए एक अनुभव होगा—संस्कार की तरह।

22 रुपये

भारतीपुर

भारतीपुर

यू० आर० अनन्तमूर्ति

अनुवादक
भालचद्र जयशेट्टी
तिपेस्वामी 'पुनीत'

संशोधक
सानी



राधाकृष्ण

भारतीपुर

1

जब भी अकेले चलना होता है, जगन्नाथ राह में आने वाले पोखरों के चक्कर नहीं लगाता, बल्कि उन्हें फलाँग कर निकलना चाहता है।

दिसम्बर की सरदी और उस पर खिली हुई धूप। वह सुबह के नाश्ते के बाद, श्रीपतिराय से मिलने के बहाने बाजार की ओर निकला था। आस-पास के पेड़-पत्तों की खुशबू को अपनी साँसों में भरता हुआ, पहाड़ी से उतरता हुआ जगन्नाथ सोचता जा रहा था कि पिछले महीने-भर से मन में जो बेचैनी करवटें ले रही है, उसे श्रीपतिराय के सामने वह कैसे और किस तरह रखेगा!

तभी सामने से बेलवगड़ी के नरहरिराय आते दिखायी दिये और उनसे भेंट हुई। नरहरिराय के सिर पर पगड़ी थी और कानों में बुंदकियाँ। उनका चेहरा झुर्रीदार और आँखों में कातरता भरी हुई थी।

'चल दिये भगवान के दर्शन के लिए?' कहते हुए नरहरिराय ने हाथ जोड़ दिये—थैली और छाते को हाथ के साथ ही उठाते हुए। छप्पन पैबन्द लगे छाते का रंग झुलस कर भूरा हो रहा था। धूल में सने उनके पाँव नंगे थे।

'नहीं, बस यूँ ही बाजार तक...।'

कह कर जगन्नाथ उनकी प्रतिक्रिया के लिए रुका। नरहरिराय अपनी बग़ल की जेब में हाथ डाले कुछ टटोलने लगे और जगन्नाथ इस दुविधा में पड़ गये कि क्या करें? उन्हें घर ले जाकर नाश्ता कराये बिना अधबीच में इस तरह चले जाना कहाँ तक ठीक होगा?

'आप घर पहुँच कर नाश्ता कर लीजिए, मैं दोपहर तक लौट आऊँगा।' अपनी धोती के सिरे को ऊपर उठा कर जल्दी से उड़सते हुए जगन्नाथ ने

कहा।

नरहरिराय अपनी दोनों जेबों की खोजबीन में उलझे हुए थे। पहले जगन्नाथ की समझ में कुछ नहीं आया। आखिर बीसियों काग़ज़ों में से एक चिट्ठी निकाल कर नरहरिराय ने दिखायी और अपराध-भाव से बोले, 'मैं आपके पिता से लिया हुआ ऋण नहीं चुका पाया, शायद इसीलिए नाराज़ होकर आपने ऐसी चिट्ठी लिखी है। लेकिन मैं क्या करता? पाँच-पाँच बच्चों का ब्याह करते-करते मेरी कमर टूट चुकी है। इस बार तो साल की फ़सल भी हाथ नहीं लगी।'

नरहरिराय की आँखें ही जगन्नाथ को समझाने के लिए काफ़ी थीं। जहाँ एक-साथ सौ-डेढ़ सौ चिट्ठियाँ लिखनी हों, वहाँ अपने को समझाना कितना कठिन होता है!

'छी:—छी:! यह बात नहीं, नरहरिराय जी,' जगन्नाथ बोला, 'आपको ऋण चुकाने की ज़रूरत नहीं, यह चिट्ठी तो मैंने इसीलिए लिखी थी। दरअसल, यह कारोबार पहले पिताजी और फिर हमारे कारिन्दे चलाते आये थे। कर्ज़ देना, ब्याज वसूल करना और फिर मंजुनाथ जी को उतारा देना—यह सब मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। इसी तरह की चिट्ठी मैंने औरों को भी लिखी है, लेकिन आप घर तो चलिए!'

नरहरिराय के चेहरे पर असमंजस और हीनता का भाव था। वह बहुत दीनता से हँसे और छाता-थैली अभी तक जुड़े हाथों में ही थामे उसकी तरह खड़े रहे। आखिर घर जाकर सुस्ताने की बात कह कर जगन्नाथ ने उनसे विदाई ली।

प्रॉमिज़री-नोटों को फाड़ते हुए जगन्नाथ ने सोचा था कि ऋण की कड़ी तोड़ने का मतलब होगा, इन लोगों के साथ अपने सम्बन्ध तोड़ लेना। चलो कोई और सम्बन्ध पैदा कर लेंगे...।

मौसी के हाथों से चाय पीते हुए नरहरिराय अचरज में पड़े होंगे, जगन्नाथ ने सोचा। नरहरिराय सोचते होंगे कि भला जगन्नाथ ने हज़ारों रुपये से क्योंकर हाथ धो लिये? और फिर आगे ज़रूरत पड़ी तो कहाँ जायेंगे? चिंतित तो मौसी भी है। जगन्नाथ के तकिए के नीचे गण्डे-तावीज़

रखती है, मनौतियाँ मानती है। मन्दिर के महन्त-पद से उसने त्यागपत्र दे दिया है, यह वह जानती है। गाँव-भर में चर्चा है। भगवान मंजुनाथजी के दर्शन के लिए जब राष्ट्रपति आये थे तब उनसे मिलने का निमन्त्रण जगन्नाथ के पास भी आया तब मौसी को विश्वास नहीं हुआ था, लेकिन जब उसने राष्ट्रपति से मिलने जाने से इंकार कर दिया तो मौसी को हैरानी हो गयी थी। उसी दिन उसने महन्तगिरी से त्यागपत्र दे दिया था।

जगन्नाथ पहाड़ी से उतर कर सड़क पर आ गया।

फ़र्लांग-भर की दूरी से बाजार शुरू होता है। चूड़ी-घर के आगे एक दुर्गन्ध की दुनिया है। चैलों के धुएँ से भरे होटल। राहगीरों के चेहरे को लम्बे-चौड़े बना कर दिखाने वाले नाइयों की आइनों वाली दुकानें। जगन्नाथ इधर-उधर देखे बिना बिलकुल अपनी नाक की सीध में चला। कोई उठ खड़ा होता है, हाल पूछता है। कोई कहता है—'कार छोड़ कर पैदल ही कैसे निकल पड़े?' कोई चुप खड़ा रहता है, या कुछ दूर तक चलता है। हर कोई यह पूछ ही लेता है कि क्या वह भगवान के दर्शन के लिए निकला है?

जगन्नाथ बाबकलिगा छात्रावास को पार कर गया। उसी की बगल में मंजुनाथ-कृपा-पोषित हाई स्कूल है, जहाँ उसकी पढ़ाई हुई थी। बच्चे गेंद खेल रहे थे। आज भी हाई स्कूल की प्रगति नहीं हुई—दो-एक कमरे बढ़े होंगे, बस। अपनी माँ के नाम से एक विंग बनवा देने के लिए, एक सप्ताह पहले एम० एल० ए० गुरप्पा जी ने अनुरोध किया था। जगन्नाथ ने कहा था—'देखा जायेगा।' वह उनसे कहने गया था कि राष्ट्रपति के आगमन के निमित्त सड़कों पर लाल बजरी डलवाना अपव्यय नहीं तो और क्या है? स्कूल के ऊपर पहाड़ी पर डाक-बंगला है। कहा जाता है कि पहले कभी गांधीजी आये थे, तो उन्हें वहीं ठहराने की व्यवस्था की गयी थी। पर सुना है कि गांधी जी आये तो सीधे हरिजन-कॉलोनी चले गये थे। जगन्नाथ के पिता को गाँव के चौधरी होने के कारण, हरिजन-कॉलोनी जाना पड़ा था। फिर पंचगव्य कर लिया था...श्रीपतिराव से [illegible] कहानी...! गांधीजी ही ऐसे थे, जिन्होंने मंजुनाथ जी के दर्शन नहीं किए, अब मन्दिर का प्रसाद छोड़ कर चला आये, ऐसे कलेजे का तो [illegible]

भी नहीं है।

वदबू-भरी गलियाँ। ढाल पर बाज़ार है। श्री मंजुनाथजी के कारण निर्माण हुआ है। अनायास बेढंगा बढ़ा है। गलियों के मोड़ पर पेशाब की बू। दीवारों पर ज़माने से दिखायी पड़ने वाला 'लीवर क्योर' का विज्ञापन। एक ओर लिखा है—'वोट गुरप्पा पाटल को।' दूकानों के सामने फिरने वाले कुर्मी, धीवर औरतें, घुटनों तक धोती, कानों में फिनिया, नाक में बेसर, ढेर-भर फूलों से जूड़ा-बँधा सिर...मन्दिर में किसी के विवाह के निमित्त या भूतनाथ से मुराद माँगने या धोती-चोली के लिए कपड़ा खरीदने—गाड़ी में आकर बाज़ार में घूमने वाले देहाती...कोई लड़का किसी दूसरे लड़के के मुंह में बैलून देख कर बाँस के बाजे के लिए अपनी माँ को तंग कर रहा है...लोग सारे कामों से निपट कर, होटलों में पकौड़ियाँ खा कर और चाय पीकर और कुछ बँधवा कर ले जाते हैं...इंग्लैंड में पाँच वर्षों तक रहने पर भी जगन्नाथ को हर बात याद है। क्या यहाँ परिवर्तन हुआ ही नहीं? या उसे कुछ दिखायी नहीं पड़ रहा है?

दुकानों में बैठे लोग इस दुविधा में थे कि कहीं देख न लिये जायें; देख लेगा तो खड़ा होना पड़ेगा।

जगन्नाथ जल्दी से निकल गया। कहीं-कहीं चुस्त पतलून भी दीख पड़ते थे। भगवान के दर्शन के लिए आये हुए यात्रियों के बच्चे होंगे। पर, दूकानों की बेंचों पर बैठे ये सभी लोग काफ़ी पुराने ही हैं—सवेरे नाश्ते में खाये हुए चिड़वे, या चिलों को हज़म करते बैठे हुए हैं। धुएँदार चूल्हे के सामने इनकी औरतें दिन-भर बैठी रहती हैं। यहाँ हाट-बाजारों में परस्पर सान्निध्य का मज़ा लूटते, भगवान के दर्शन के लिए आने वाले नित नये चेहरों पर आँख गड़ाये रहते। इसी तरह हर रोज़ एक-दूसरे की हाज़िरी लेकर, भोजन के समय अपने-अपने घर—या घर में सुविधा न होने पर मन्दिर—को भोजन के लिए चले जाते हैं। ग़रज़ कि मंजुनाथ के भरोसे जीते हैं। किसी देहात में इनकी ज़मीन है, उसे कोई किसान जोतता है। भूतनाथ के डर से इनका लगान बराबर देता है। कद्दू, ककड़ी, केला—सब-कुछ ला देता है। किसी तरह इनका गुज़ारा चलता रहता है। कोई जन्मता है, कोई मरता है।

वर्ष में कम-से-कम चार-पाँच की बरकत, चार-पाँच का अशौच, दस-पाँच शादियाँ—किसी तरह दिन कटते हैं, बाल पकते हैं और दाँत झड़ते हैं।

जगन्नाथ धवरा गया। मन-ही-मन लिखी जाने वाली चिट्ठी के बीच में ही उसने मार्गरेट से कहा—जहाँ मंजुनाथ जी इस जीवन के कैंसर हैं वहीं यह बाजार उस भगवान के लिए कैंसर बना हुआ है।

'श्री मंजुनाथ बस सर्विस कम्पनी' की पहली बस शिवमोगा से धूल उड़ाती हुई आकर, गली के छोर में जा रुक गयी। इसी प्रकार हर गली पर रुकती है। चोटीधारी, दुपट्टा ओढ़े हुए ब्राह्मण-बच्चे घेर लेते हैं। यात्रियों को तंग करते हैं—'हमारे घर चलिये, हमारे घर चलिये।' कन्नड़ न जानने वाले यात्रियों को हिन्दी में तंग करते हैं। यात्रियों के ठहरने के लिए जगन्नाथ के पिता की बनायी कई धर्मशालाएँ हैं, पर वे पूरी नहीं पड़तीं। मोल-तोल की बात तय होने पर बच्चे यात्रियों की अटैची ढो लेते हैं। नदी में स्नान, भगवान के दर्शन, पितरों का तर्पण, पुण्य स्थलियों के दर्शन, पहाड़ी पर भूतनाथ की मनौती चढ़ाना, फिर लौटने का रिजर्वेशन—सभी का ठेका लेकर यात्रियों को पंडा अपने घर ले चलता है। पाजी लड़के यात्रियों को चकमा भी देते रहते हैं। बाल-बच्चों के साथ, धुएँ से भरे, छत के कमरे में यात्री चले जाते हैं। दो-एक दिन रहते हैं। इसी तरह नये-नये चेहरों को देखता आया है वह बहुत पुराना बाजार।

'राम-राम! जगन्नाथ जी! क्या भगवान के दर्शन के लिए निकल हो?'

जगन्नाथ ने दायीं ओर मुड़ कर देखा। हाथ जोड़कर मुसकराते खड़े थे—गाँव के ख्यात पंचांग के रचयिता नागराज जोयिस जी। उन्होंने राष्ट्रपति से भेंट के समय संस्कृत में उनकी प्रशंसा के श्लोक रच कर उसे छपवाया था। उनके सुपुत्र शिवमोगा के वकील हैं। आये दिन वह खीसें निपोर कर बताया करते हैं कि पुराने ढंग से ग्रह-गणना छोड़ कर, अंग्रेजी ढंग अपनाने के आरोप में जब मठ के महन्त ने उनका बहिष्कार किया था, तो उन्होंने किस तरह उनसे टक्कर ली थी और किस तरह संस्कृत में श्लोक रच कर उनकी खिल्ली उड़ायी थी। वह आधुनिक विचारों वाला है।

पाजी जोयिस इसे जानता है। निरीश्वरवाद के समर्थन में भी दलील पेश करना नागराज जोयिस खूब जानता है। मंजुनाथ जी के प्रधान पुजारी सीतारामय्या इसकी बिरादरी के हैं; अतः सहज ही इनमें ईर्ष्या है।

बहुत अनुरोध पर जगन्नाथ उसकी चौपाल में गया। नागराज जोयिस का छोटा बेटा अकेला ही घर लौट आया था। उसके साथ कोई जजमान नहीं था। जोयिस का चेहरा फीका पड़ गया। बेटे ने बताया कि बल्लारी से एक परिवार आया था, सो उडुपा के घर चला गया। दूसरी बस की प्रतीक्षा करने की हिदायत देकर वह, जगन्नाथ के लिए भीतर से कुर्सी मँगवाने जा रहे थे, पर जगन्नाथ ने कहा, 'दरी ही ठीक है।' चाय के लिए बिलकुल मना किया।

शिवमोगा में उनके बड़े बेटे की वकालत के बारे में पूछताछ की। 'इस इलाके में भूतनाथ को उतारा दिया जाता है न; फिर वकीलों की वकालत कैसी चलेगी?' जोयिस ने शिकायत-भरे स्वर में कहा। वह चमकती लाल बुंदकियों और पीले दांतों वाला मुंह लेकर उसकी बग़ल में ही बैठ गये। बड़ी आत्मीयता से बातें शुरू कीं। दाढ़ी और सिर साफ़ घुटे-मुंडे। गले में सोने में मढ़ी रुद्राक्षों की माला। जजमान को लुभाने के लिए—बुंदकी, रुद्राक्ष, बातों का यह ढंग, पास बैठ कर बतियाने की वह आत्मीयता काफ़ी है।

'मंजुनाथ की स्थापना परशुराम ने की थी, यह बात सरासर झूठ है, जगन्नाथ जी। कोई शोधक शिवलिंग को उखाड़ देखे, तब पता चलेगा। अभी दरार भी पड़ी है, और गहराई भी तीन इंच है। जानते हो, यदुतीर्थ महाराज ने उसकी स्थापना की थी। मुझसे पूछिए; बिरादरी का बैर समझ कर, भले ही कोई मेरी बात का विश्वास न करे...।'

नागराज जोयिस और भी पास सरक आये। आंखें फाड़ कर कानों में और भी मर्म की बात कही, 'जगन्नाथ जी, आप पढ़े-लिखे ठहरे, अच्छी तरह जानते हैं। अद्वैत सिद्धान्त में कहीं भूताराधना की गुंजाइश भी है? अब वास्तव में पूजा किसकी होती है—सच, आप ही बताइये!'

जोयिस की आवाज और भी दब गयी। उनकी आंखें जगन्नाथ को घूर रही थीं।

'बताइये, लोग किससे डरते हैं ? राष्ट्रपति का भोग किसको चढ़ाया गया था ? आप जानते हैं, मंजुनाथ जी के उतारे की पंचायत करने वाला कौन है ?'

जोयिस ने एक पल जगन्नाथ पर आँखें गड़ा कर देखा।

'मंजुनाथ जी के नाम पर यह सारी पूजा होती है, भूतनाथ की। सच या कि झूठ ? उसे लाल अन्न का भोग क्यों चढ़ाया जाता है भला ? भैरव लाल कपड़े क्यों पहनने लगा है ? मंजुनाथ का प्रसाद कह कर, यह भूतनाथ अपने माथे, छाती पर मल लेता है ? बताइये, भभूत छोड़ कर सिन्दूर को प्रसाद बनाने का क्या मतलब है भला ?'

कह कर जोयिस ने अपने माथे पर लगा सिन्दूर का तिलक दिखाया। थोड़ी देर मौन रहे; फिर खुद ही कहने लगे, 'भूतनाथ को रक्त की बलि दी जाती है। तब प्रश्न उठता है कि मंजुनाथ और भूतनाथ का क्या हुआ ?'

जोयिस ने चौपाल की दीवार में टँगा मंजुनाथ का चित्र दिखाया। मुट्ठी-भर के शिवलिंग पर सजाया हुआ सौम्य भाव का मुखौटा। मुखौटे पर बालिश्त-भर का मुकुट।

चित्र पर टकटकी लटकाये जगन्नाथ को देख कर, जोयिस ने कहा, 'अब इस मुकुट को ही लीजिये। जब आप बच्चे थे, तब बालग्रह की पीड़ा आ पड़ी थी। तीन दिनों तक होश नहीं था। अपनी गोदी में ही सुला कर मैंने ही मृत्युंजय का जप किया था। साथ में, सुब्राय अडिग जी भी थे—चाहें उनसे पूछ लें! काटने पर भी जब आपको होश नहीं आया, तब आपकी माताजी को मैंने ही सलाह दी थी कि मंजुनाथ जी को सोने का मुकुट पहनवाने की मनौती करें। मन्दिर की उन्नति से यदि ईर्ष्या होती तो क्या मैं आपकी माताजी को ऐसी मनौती की सलाह देता ? इसलिए मुझे वह सब कहना पड़ा था कि मंजुनाथ जी के सिर पर मुकुट भले चढ़ा हो, आपके प्राण बचाने के लिए, सारे भोग उस भूतनाथ को ही लगाये गये थे। श्रोत्रिय होकर इस भूतनाथ की पूजा करना कहाँ तक उचित है ?'

मुकुट के उदाहरण से, जगन्नाथ की माँ ही अपराधी सिद्ध होती थी। जोयिस खुद ठिठक गये। आगे की बात एकाएक समझ में नहीं आयी।

लगे, 'वस, लोगों की श्रद्धा है। यदि देश-भर में यह श्रद्धा न होती तो क्या राष्ट्रपति यहाँ तक आ सकते ? उन्हें हृदय-रोग का भय था। यहाँ से लौटते समय उनका चेहरा कैसा खिला हुआ था ! मेरा संस्कृत-काव्य देख कर निहाल हो उठे थे। अपने साथ हवाई जहाज में ले गये।'

जगन्नाथ को हँसी आ रही थी, पर उसे रोक कर बोला, 'आपने मंजुनाथ जी और भूतनाथ का कुछ सम्बन्ध बताया था न। बताइये, फिर सही बात क्या है ?'

'इस इलाक़े के आदिवासी हैं, घुटनों तक धोती काछने वाले, भेड़-बकरी खाने वाले—उनका स्वामी है भूतनाथ। ब्राह्मण यतियों ने इस भूतनाथ की रीस में ही मंजुनाथ की स्थापना की है और इन आदिवासियों को अपना अनुयायी बना लिया।'

'अच्छा, तो यों कहिये कि इसी वजह से भूतनाथ आजकल कुमियों के विरुद्ध अपना फ़ैसला सुनाया करते हैं।'

जोयिस बड़े चालाक ठहरे। जगन्नाथ के व्यंग्य को समझते हुए बोले, 'पर उस देव में भी बड़ा चमत्कार है, बड़ा चमत्कार। पूजा करने वाले को अपनी निष्ठा बनाये रखनी चाहिए, बस ! मेरा मतलब तो केवल इतना ही है कि मंजुनाथ जी केवल बहाना न बनने पायें।'

जगन्नाथ उठ खड़ा हुआ और बोला, 'इस बारे में आपको एक लेख लिखना चाहिए, शास्त्री जी।'

'आपकी प्रेरणा-भर चाहिए, बस। मेरा लिखा 'श्री मंजुनाथ महिमा' का प्रकाशन आपकी माताजी ने ही किया था। उसकी एक प्रति आपको दूं ?'

'न, घर पर है।' जगन्नाथ चलने को उद्यत हुआ।

'बिना चाय पिये ही चले जायेंगे ?'

'कोई बात नहीं।' कहता हुआ वह सड़क पर उतर आया।

चक्रव्यूह जैसी गलियाँ। मंजुनाथ जी की महिमा के साथ-साथ परस्पर बाँहें डाल कर बढ़ती गयी बिना नालियों की गलियाँ। भंगियों को सिर्फ़ एक सप्ताह मल ढोने से इंकार करने दीजिये, फिर देखिये। इन गलियों की

दुर्गन्ध से मजुनाथ जी का गर्भ-गृह भी भर जायेगा। जगन्नाथ का शरीर सिहर उठा। ब्राह्मण और बनिए जिस बाजार में इकट्ठे हों, वहाँ किसी सुन्दर चीज़ की कल्पना नहीं की जा सकती।...क्यों? भारतीपुर से दस मील के पार ही शिल्पकार हैं, चन्दन की मूर्तियाँ बनाने वाले। सिर्फ़ दो मील की दूरी पर ही कठपुतली नचाने वाले हैं। पर भारतीपुर के बाजार में कभी कोई आकर्षण नहीं रहा, क्यों? कभी-कभी सजने वाले वन्दनवार राष्ट्रपति के आगमन के समय डाली गयी—और फिर कीचड़-सनी लाल बजरी को छोड़कर था भी क्या? बच्चों के गू से बचता हुआ, बड़ी सतर्कता से जगन्नाथ रथ-मार्ग पर आ गया।

इस बाजार की रचना शायद नागराज जोयिस की अनुष्टुप्[1] छन्द की मंजुनाथ-महिमा होगी। जगन्नाथ को हँसी आयी।

अपनी माँ द्वारा प्रकाशित दस पैसे की उस पुस्तिका में जगन्नाथ के प्राण-रक्षक उस मुकुट का बखान था। मुकुटधारी थी मजुनाथ जी पर इस बच्चे के लिए प्रार्थनापरक श्लोक था। फिर मजुनाथ जी की आज्ञा को सिर-माथे लेकर चलाने वाले भूतनाथ के प्रताप का गान था। रंगोलियों से, वन्दनवारों से, गजगामिनियों से भूतनाथ के स्फुरद्रूपी भक्त किरात-किरातिनियों से, महातपस्वियों से, अनाथरक्षिका जगन्नाथ की माता सीतादेवी से सारे भूमण्डल के शोभनप्राय इस भारतीपुर के वर्णन से एक पूरा अध्याय भरा था।

मार्गरेट के नाम की चिट्ठी में एक और पैरा जुड़ गया:

'कुछ दिन पहले दिल्ली गया था, डीयर मार्गरेट! हैदराबाद से विमान उड़ने ही वाला था कि देश-भर में विख्यात शिर्नाली बाबा नामक एक व्यक्ति चढ़ आया। उसकी बगल में एक नामी विज्ञानी बाबा का बड़ा चेला था। विमान में सम्पन्न व्यापारी और किसी गोष्ठी में भाग लेने निकले हुए बीस कुलपति भी थे। शिर्नाली बाबा की करामात पर विश्वास करने के लिए, तुम्हें खुद अपनी आँखों से देखना होगा। विज्ञानी चेले ने बत्ती जलाने के लिए हाथ ऊपर उठाया तो बाबा ने रोक दिया।

1. 32 अक्षरों का एक प्रसिद्ध छन्द

चार-पाँच ग्रमरीकन हिप्पी लड़कियों ने जाकर वावा के पाँव छुए। वावाजी के मायाजाल से उनके हाथ में भभूत ग्रा गयी। उन्होंने उसे फाँक लिया। एग्रर-होस्टेसों ने भी पालागन किया। शहद से भी मीठी मुसकान विखेरते हुए वावा हाथ ग्रागे वढ़ाता है तो भक्त के हाथ में सोने का मंगलसूत्र, या कुछ भभूत ग्रा जाती है। इसी तरह सभी राजभवनों को उसने घेर लिया है। कंगाल से लेकर राज्यपाल तक सभी लोगों का श्रद्धापात्र है यह वावा। प्यारी मार्गरेट! भगवान को धता वताये विना हम हर्गिज़ रचनाशील नहीं वन पाएँगे। हम सव भगवान के गर्भ-पिण्ड की तरह हैं, ग्रभी पैदा ही नहीं हुए। इतिहास के मंथन में नहीं फँसे। इसे चीरना होगा।'

'एइ, वासू!'

जगन्नाथ ने हाथ पकड़कर खींचा। दस वर्ष से भेंट नहीं हुई थी। होटल में घुस रहा था। वही दरारें-पड़े दाँत। लट्ठ-सा चेहरा। हिटलरी मूँछें। वाल झड़ चुके हैं। माथे पर तिलक लगा है, यह विश्वास ही नहीं होता।

इण्टर में पढ़ते समय सारी रात वैठकर, रसेदार पूड़ियाँ खाते, काका के होटल की चाय पीते दोनों क्रान्ति की वातें किया करते थे। किसी भी त्याग के लिए कमर कस कर तैयार रहने वाला वच्चू! वयालीस के ग्रान्दोलन में पुलिस के लाख जूते खाये, पर डाक का डिव्वा कहाँ छिपाया था, उसके वारे में वासु ने ज़वान तक नहीं हिलायी थी। भावावेश में जगन्नाथ ने उसका कन्धा दवाया। माथे का सिन्दूर-तिलक निहारते हुए वोला, 'क्यों रे सूग्रर, यह क्या शौक के लिए लगाया है, या कुछ वात है?'

सम्भलते हुए वासु ने कहा, 'तू जग्गू भैया है न?'

वासु ने पैंट ग्रौर वुशशर्ट पहनी थी।

'चल, घर चलेंगे।' जगन्नाथ ने कहा।

जगन्नाथ भूल ही गया था कि वह श्रीपतिराय से मिलने जा रहा है।

'क्यों रे वासु, तू इतना नीचे उतर ग्राया है? यहाँ कव ग्राया? कहाँ ठहरा है?'

पर बासु का ध्यान कहीं और था।

'कुछ काम है, यार! बाद में मिलूंगा।'

जगन्नाथ को निराशा हुई। जो खुशी उसे हुई थी वह बासु में नहीं थी। वह बहुत उदास भी था। उसके माथे का मंजुनाथ जी का प्रसाद शायद यों ही नहीं था। जगन्नाथ को लगा कि उनके बीच एक दीवार खड़ी है। फिर भी उसने उसे व्यक्त नहीं होने दिया।

'चल, चाय पियेंगे।' उसने कहा।

'तू इस होटल में आयेगा?'

'क्यों नहीं आता...?'

जगन्नाथ को देखते ही होटल का मालिक उठ खड़ा हुआ। चाय पीते बैठे हुए कुछ किसान भी खड़े हो गये। जगन्नाथ के जाने-पहचाने कारिन्दे भीतर जा बैठे। 'चाय'—बासु ने कहा तो चाय लाने खुद मालिक ही चले गये।

'अब तो जान गया कि तू इस गाँव में कितना बड़ा आदमी है!' छेड़ने के लहजे में बासु ने कहा तो जगन्नाथ को खुशी हुई।

'बता, अब क्या कर रहा है?' चाय की चुस्की लेते हुए जगन्नाथ ने पूछा।

'तू जानता है कि मैं बी० ए० पूरा नहीं कर पाया। पिताजी ने घर से भगा दिया था। तब तू इंग्लैंड में था। मैं नाटक में भर्ती हुआ। फिर अपनी ही मण्डली बनायी। तीस हज़ार की पूँजी कमायी। पर उसे गँवा दिया। दारूबन्दी का एक जमाना था। चोरी-छिपे दारू तैयार करता रहा। पैसा फिर खूब कमाया। एक बनिए की लड़की से सिविल-मैरिज की। मुँह काला करने के लिए पिता ने कहा—मुँह न दिखाना। अब तीन बच्चे हैं। क्रान्ति की बात पर लाख बहस करते रहिए—घर आने पर यदि बीवी आटे-दाल का हिसाब माँगने लगे तो भला क्या कर लेंगे? ड्रग स्टोर्स के नाम पर कुछ दिनों तक मैं ब्राण्डी बेचता रहा। फिर बॉम्बे में शो किया। मेरी मण्डली की लड़कियों के कारण, व्यापारी, पोलिटिशियन—सभी मेरे मित्र बन गये। फिर इस भड़वागिरी के काम से तौबा कर ली। अब एक जगह टिके रहने की इच्छा हुई है। इसलिए यहाँ आया हूँ। हलुवे को

दुकान रखने के लिए भूतनाथ जी ने उम्मीद बँधायी है। करने जा रहा हूँ।'

'तेरा जीवव भी एक दिलचस्प नावेल हो सकता है। देख, क्या तू भूतनाथ को सच-सच मानने लगा है ?'

'क्या तू नहीं मानता कि यह एक मिस्टरी[1] है ?'

वासु उठकर जाने की हड़बड़ी में दिखायी पड़ा।

'जीवन, यार, है बड़ी टेढ़ी खीर। बता, तू क्या कर रहा है ? तेरा विलायत से लौटना, यहाँ काश्त करवाना, आदि बातें तो मालूम हुई थीं। पर यहाँ यह बात फैली है कि तूने किसी अँग्रेज़ लड़की से शादी कर ली है। क्या सच ?'

वासु ने चाय खत्म की और एक सिगरेट जला कर, उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

'एक लड़की के साथ था, सो तो सच है; पर मैंने उससे शादी नहीं की।'

'बड़ा चालाक है, यार ! इंग्लैंड में तूने बड़ी मौज उड़ायी है।'

वासु के मुंह से 'मौज' शब्द सुनते ही जगन्नाथ की भावनाओं को धक्का लगा। जो कभी आत्मीय था वह वासु कोई और है। वह और मार्गरेट पति-पत्नी की भाँति रह चुके थे—यह बात बिलकुल सच है ! शादी नहीं हुई थी, यह भी सच है—पर वह केवल मौज उड़ाने के लिए नहीं। यह चालाकी भी नहीं, पर वासु को कैसे समझाये ?

'फ़ुरसत मिलने पर घर की ओर आना।'

जगन्नाथ उठा। होटल-मालिक ने पैसे नहीं लिये। बाहर हाथ मिला कर वासु चला गया।

जगन्नाथ, श्रीपतिराय के घर की ओर बढ़ा। नयी कड़ियों को ढूंढना होगा। इसी बाज़ार में बाज़ी मारनी होगी। दूसरा रास्ता नहीं। फिर शंका होने लगी। यहाँ काम जम सकेगा ? इतिहास में गिने जाने का। गिनाये जाने का काम। चीर कर बाहर निकलने का, समय के लिए उत्तर-

---

1. रहस्य।

दायी बनने का काम। फिर खिली धूप में नया बनने का, फूल बनने का, फल बनने का काम। इस ग्राम के पेड़ की तरह फूटते जाने का काम। धुआँसे में जगन्नाथ को दिखायी देने वाले धुंधले चेहरे, बिखरे बाल, मल ढोने वाले सिर थे। सामने मंजुनाथ के मंदिर का चमकता शिखर। उसके पीछे सदा बहते रहने वाला शुभ्र जल। बाज़ार की सारी गंदगी को छिपाने वाली सफ़ेद बालू की ढेर, शिला-खण्ड, जिन पर उसके नन्हें पाँवों ने फुदकना सीखा था।

मंदिर के ऊपरी पहाड़ पर बिखरे गोले बालों वाले माथे पर सिन्दूर पुते, हाथों में परिधान लिये, थर-थर काँपने वाले भूतनाथ, गर्भ-गृह में मुकुट-धारी मंजुनाथ। गाँव-भर में गूँजनेवाला अपने पूर्वजों का लगवाया घण्टा। इन सबकी कुहेडिका को चीर कर बाहर निकलने की चेष्टा करता हुआ एक विचार। रह-रह कर इस विचार को अनेक पहलुओं से देखने का जगन्नाथ ने प्रयत्न किया है। श्रीपतिराय से सब-कुछ बता देने के इरादे से, खुले किवाड़ के भीतर, अँधेरे से भरे माँझ-घर में वह जा खड़ा हुआ।

पूछा—'रायसाहब हैं ?'

2

श्रीपतिराय जगन्नाथ के पिता आनन्दराय के बाल-सखा थे। पति के मरने के बाद माँ सीतादेवी के भी आत्मीय। पढ़ाई के लिए जगन्नाथ के मैसूर जाते समय माताजी के विश्वासपात्र कारिन्दे कृष्णय्या का भी देहान्त हो चुका था। तब श्रीपतिराय की सलाह के बिना माताजी एक तिनका तक न हिलाती थीं। बी० ए० के पश्चात पढ़ाई के लिए जगन्नाथ के इंग्लैंड जाने में भी श्रीपतिराय ही कारण थे। इकलौता बेटा, माँ को छोड़कर विदेश जाने में जगन्नाथ हिचक रहा था। साथ ही अपने अनुभवों को बढ़ाने की उमंग भी थी। तब श्रीपतिराय ने माँ के साथ परामर्श करके इंग्लैंड भेजना ही ठीक समझा था। मन का चैन तथा कर्तृत्व शक्ति को बिगाड़ सकने लायक़ पुश्तैनी जायदाद काफ़ी थी। अब फिर

करने की चेष्टा में जगन्नाथ के व्यक्तित्व को सीमित रखना श्रीपतिराय को पसन्द नहीं था। माँ भी इससे सहमत हुई थीं।

जीने की कला में अनुभवी माँ ने उसकी अनुपस्थिति में, वड़ी कुशलता से घर-सम्पत्ति की देख-रेख की थी। कारिन्दे कृष्णय्या की मौत के वाद, इस भार को हलका करने में श्रीपतिराय ने, माँ का हाथ वँटाया था। अचानक माँ के चल वसने का समाचार सुनते ही जगन्नाथ भागा आया था। भविष्य के वारे में वह विचलित हुआ था। पर श्रीपतिराय ने जगन्नाथ को फिर इंग्लैंड वापस भेज दिया। कहा था—'पहले पढ़ाई खतम कर लो, यहाँ की चिन्ता छोड़ दो। तुम्हारे जन्म के समय से, तुम्हारे घर आ वैठी हैं न मौसी, वाल-विधवा। वहन का वेटा, क्या उनका निजी वेटा जैसा नहीं? फिर घर में पटवारी हैं, मैं हूँ, तुम्हें काहे की चिन्ता—जाओ।' मौसी भी मान गयी थी।

यही नहीं—अव तो उसकी मानसिक स्थिति वनी है, उसके लिए भी कई प्रकार से श्रीपतिराय ही उत्तरदायी हैं। वयालीस में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय जगन्नाथ मैट्रिक में पढ़ता था—श्री मंजुनाथ कृपा-पोषित हाई स्कूल में। मंदिर के व्यय में से इस स्कूल की स्थापना कराने वाले श्रीपतिराय ही थे। इस इलाके के कांग्रेस-नेता श्रीपतिराय ने ताल्लुका-कचहरी के सामने जो सत्याग्रह किया था, वह आज भी जगन्नाथ की आँखों में ताज़ा है। स्वयं वह भी खद्दर की टोपी और खद्दर की अचकन पहन कर, जै का नारा लगाकर दो दिन जेल हो आया था। चंदन के पेड़ काटे थे। शराव की दूकानों के सामने पिकेटिंग किया था। इंगर्साल, शॉ, रसेल को पढ़े हुए श्रीपतिराय ने उसके मन में शंका के वीज वोये थे। पिताजी तो खद्दर पहनते ही थे। अव माँ ने भी सफ़ेद खद्दर की साड़ी पहन ली थी। घर में 'हरिजन' पत्रिका आने लगी थी। शाम के समय श्रीपतिराय घर आकर 'हरिजन' पढ़ कर समझाया करते; माँ, मौसी, कारिन्दे, कृष्णय्या और वह सुनते।

श्रीपतिराय के विना इस मध्य युग में भारतीपुर में मंजुनाथ जी से वाहर की दुनिया, जगन्नाथ को मिल ही न पाती। वचपन में सर्वथा न मिलती। मैसूर के प्रमुख कांग्रेस-नेता श्रीपतिराय स्वतन्त्रता-आन्दोलन में

अटारी पर ले गये।

अटारी पर धुआँ-भरे रहने पर भी काफ़ी प्रकाश था। रायसाहब ने किवाड़ बन्द कर लिये। बन्द खिड़कियों को खोला। पलँग पर पड़े कपड़े हटा कर बैठने को कहा। पलँग के पास ही छोटी-सी अलमारी में उसके बचपन की ही चिर-परिचित रायसाहब की कुछ पुस्तकें देखने को मिलीं : बहुत ही बारीक अक्षरों में, दो कालमों में मुद्रित रेनाल्ड्स के तथा स्काट के उपन्यास, गोल्ड्स्मिथ का 'विकार ऑफ़ द वेकफ़ील्ड', 'लाइट ऑफ़ एशिया,' शॉ के नाटक। दीवार पर जगन्नाथ की माँ की तसवीर—शादी के तुरन्त बाद की, शायद मेले में उतरी हुई। कालांतर में रंग धूमिल पड़ गया था। फलस्वरूप उनका कोमल गोल चेहरा और भी कोमल दिखायी दे रहा था। घने काले बालों के बीचोंबीच माँग निकाल कर माँ कैसे कसा जूड़ा बाँधा करती थी।

रायसाहब चुप रहे। प्रायः जगन्नाथ के मिलने पर वह बोलते नहीं। जगन्नाथ भी नहीं बोलता। यों ही साथ रहना-भर काफ़ी है। मुँह में पान भर कर राय साहब, मुसकुराते हुए कोई अर्थगर्भित बात कह देते हैं। दस-पाँच वाक्यों का निचोड़, एक बात में रख देते हैं जिसे जगन्नाथ तुरन्त समझ लेता है।

'गांधीजी ने क्या कहा, यह भले नेहरू...।' इतना-भर रायसाहब का कह देना काफ़ी है; वर्तमान अर्थनीति आदि सभी बातों के सम्बन्ध में रायसाहब के इशारे को जगन्नाथ ताड़ लेता है। 'भावना की दृष्टि से हम सब भारतीय हैं। पर विचारों में पाश्चात्य प्रभाव ही है...।' इस तरह शुरू कर जगन्नाथ बात को अधूरा छोड़ देता है। छोटी-सी कड़ी रायसाहब के मस्तिष्क में सारा दिन काम करती रहती है और दूसरे दिन और विचारों के साथ बाहर निकलती है।

जगन्नाथ ने अंदाजा लगाया कि रायसाहब की आज की चुप्पी शायद मन की उद्विग्नता के कारण होगी। खद्दर के बटुए से पान-सुपारी निकाली, सुपारी मुँह के हवाले कर पान में चूना लगाते बैठ गये। जगन्नाथ ने सिगरेट जलायी और राख झाड़ने के लिए कोई डिबिया ढूँढ़ने लगा। कोने में एक पुरानी सुँघनी की डिबिया मिली। रायसाहब की पत्नी की

सबसे छिपा कर, अपने पति की भी नज़रों की ओट में सुँघनी की आदत थी, जो हर कोई जानता था। हर माह एक डिबिया लाकर खुद रायसाहब ही ऐसी जगह रख देते, जहाँ से उनकी पत्नी को आसानी से मिल जाये। जब रायसाहब जेल गये थे तब सूँघनी पहुँचाने की यह गुप्त ज़िम्मेदारी जगन्नाथ ने ही सँभाली थी। अब लड़का बड़ा हो गया है और सावित्री भी मिडिल स्कूल में काम करती है, इसलिए रायसाहब को अब सुँघनी ला देने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

बारीक कटे हुए सफ़ेद बाल, घनी भौंहों के नीचे लड़कपन की शरारत-भरी आँखें, कानों में रोम-राशि, नाटा क़द, दुबला बदन, फुर्ती से चलने-फिरने वाले व्यक्ति थे श्रीपतिराय। चाहे कुर्सी पर ही क्यों न बैठे हों, उमंग आयी कि झट पाँव मोड़ कर पद्मासन में बैठ जायेंगे, या उठ कर चहल-क़दमी करने लगेंगे। पर उन्हें घर पर चैन नहीं मिलता, सदा खोये-खोये रहते हैं। इसे जगन्नाथ जानता था, इसलिए कहा—'चलिये राय-साहब, चलें।'

'ज़रा ठहरो!' उन्होंने कहा।

दरवाज़ा खुला। रायसाहब की पत्नी भाग्यम्मा पीतल के दो गिलासों में चाय लायी। रायसाहब के घर में अभी स्टेनलेस-स्टील के युग ने पदार्पण नहीं किया था। किसी ज़माने के बेढँगे गिलास। कालिख का संग्रह किये पिचके हुए किनारे, गिलास को गरम कर खुद ठंडी पड़ जाने वाली गुड़ की चाय।

'कुशल-मंगल तो है?' चाय की चुस्की लेते हुए जगन्नाथ ने पूछा।

'ठीक है। दस-पन्द्रह दिनों से इधर दिखायी ही नहीं पड़े।' भाग्यम्मा ने आँचल से अपनी आँखें साफ करते हुए उदासी से कहा।

भाग्यमम्मा दुहरे बदन की महिला थी, छोटा-सा ललाट, छोटी-छोटी आँखें। उनको मुसकराते हुए किसी ने नहीं देखा था। जवानी की उमंगें धुआँ उगलते चूल्हे को फूंकते-फूंकते, बच्चों को जन्म दे-देकर, कहीं उड़ गयी थीं। पर श्रीपतिराय अभी भी इमली के पटसन की तरह कैसे ऐंठे हुए हैं! शीत-युद्ध घर में वर्षों से चलता होगा—इसीलिए बाहर निकलते ही रायसाहब कैसे अँकुराते हैं? यह सोचते हुए जगन्नाथ ने भाग्यम्मा को निहारा।

भाग्यम्मा पास के खंभे से टिक कर खड़ी थीं, रायसाहव वेचैन दीखे। जगन्नाथ का अंदाजा ठीक निकला।

'मेरे तो सिर पीट-पीट कर नाक में दम आ गया है, जग्गू भैया।' वह बोलीं, 'ज़रा तुम ही समझाओ। मुँह खोला कि वस शेर की तरह झपट पड़ते हैं। सावित्री की वदली शिवमोगा की हुई है। गाँव-भर का काम करते फिरते हैं, क्या डी० इ० ओ० साहव से कह कर वेटी को यहीं नहीं रखवा सकते? शिक्षामंत्री इनके जेल के साथी रहे हैं। सभी ने अपनी-अपनी खिचड़ी पका ली, पर हमें पूछने वाला कोई नहीं। मायके से लायी चार रेशम की साड़ियों को इनकी वातों में आकर मैंने आग में फूंक दिया। चाहे जो वकते जाओ, पर यह कानों में तेल डाले वैठे रहते हैं।'

अधीरतापूर्वक श्रीपतिराय ने कहा, 'वस, वस, अव भीतर भी जाओ।'

'पिछली वार म्युनिसिपलिटी के चुनाव में खड़े थे न; सुना होगा कि क्या हुआ? जव रत्ती-भर कोई अहसान नहीं मानता तो आप ही सारे गाँव की झंझट क्यों अपने पल्ले वाँधते हैं? अपनी वेटी को गाँव के स्कूल में वसाये रखने की विसात तो है नहीं और चले हैं...!'

'कुछ करेंगे माँ जी, मुझे यह वात मालूम ही न थी।' धीरज वँधाने के लिए जगन्नाथ ने कहा।

सहसा भाग्यम्मा की आवाज़ ऊँची हो गयी।

'जवान लड़की की शादी नहीं की। इनके जेल हो जाने के वहाने, या घर में नेम-निष्ठा न होने के वहाने कोई मंगनी लेकर ही नहीं आता। वह कमायेगी नहीं, तो घर में चूल्हा कैसे जलेगा? घूस खिलाने की नौवत आ पड़ी तो, झिझक किस वात की! वेटी की कमाई खाते झिझक नहीं होती?'

गुस्से में तमतमा कर, विवशता से रायसाहव को छटपटाते हुए, जगन्नाथ से देखा ही नहीं जा रहा था। सांत्वना देते हुए कहा, 'कुछ करेंगे, माँ जी। हो सका तो मैं खुद शिवमोगा हो आऊँगा...।'

जगन्नाथ की वातें शायद भाग्यम्मा के कानों नहीं पड़ीं। वह लगातार वोलती रहीं, 'जिसको एक जून का खाना नसीव न हो और वालों में मेंहदी लगाये घूमे तो कौन भला उसकी दाद देगा? वेटे का हाई स्कूल

हुआ। उसकी नौकरी के लिए भी इन्होंने क्या किया ? दूसरे बच्चों की तरह यात्रियों को घर ले आने के लिए परसों मैंने ही बस के पास भेजा था। हाथ में कौड़ी न हो तो गुजारा कैसे हो ? रंगप्पा जाकर एक परिवार को ले आया। पूजा-पाठ कराने मन्दिर ले गया। घर में कदम रखते ही यह ऐसे नाचने लगे कि मानो सिर पर भूत सवार हो गया हो। पेट की खातिर मैंने जो किया, क्या वह मेरी गलती है ? इतने सालों से मुंह पर ताला लगा कर इनकी सेवा जो करती रही, उसके बदले में इन्होंने ऐसा पीटा, जग्गू भैया, कि क्या कहूँ ! मेरी पूछताछ करने वाले माँ-बाप कोई नहीं। इसलिए, यह मुझ पर इतना रोब दिखाते हैं। चित्रदुर्ग के यात्री थे। जैसे ही पूजाकर लेकर आये, उलटे पाँव उन्हें घर से भगा दिया। उनके लिए बनी रसोई घूरे में गयी। रंगप्पा को बेतहाशा पीटा...।'

फूट-फूटकर रोती हुई भाग्यम्मा जमीन पर लुढ़क गयी। दरवाज़े की आड़ में बेचैन खड़ी सावित्री ने बाँहें पकड़ कर खींच लिया।

झुँझला कर श्रीपतिराय जाने के लिए उठ खड़े हुए। पसोपेश में पड़ा जगन्नाथ भी उठ लिया और गली में उतरते ही जान में जान आयी। सामने ही मन्दिर। कुछ दूर पर बहती नदी की आवाज़ सुन कर बोला, 'नदी की ओर चलें, रायसाहब ?' रायसाहब से आँखें मिलाना कठिन था, लेकिन अकेला छोड़ देना भी ठीक नहीं लगा।

कुछ दूर तक दोनों चुप्पी साधे चलते रहे। नदी के कगार पर रुके। मल-मूत्र की भभक, टीलों और सफ़ेद बालुका पर तपती धूप। आँखों को ठंडक पहुँचाने वाला शुभ्र बहता जल। पत्थरों से टकराते जल का फेन। वहाँ नहाते बच्चों का उल्लास। सतर्कता से पानी में उतरते यात्री, मन्त्र-पाठ करते उन्हें हिम्मत बँधाते, गोता लगाने के लिए प्रेरित करने वाले पण्डे। नदी के उस पार हनुमानजी का मन्दिर। कगार के दूर-दूर तक आम, कटहल, पलास के पेड़। जहाँ कुछ छाया थी, वहाँ की मल-मूत्र की सड़न वाली बू से ऊब कर जगन्नाथ ने कहा, 'दुकान की तरफ़ चलें ?'

'चलो !' श्रीपतिराय ने कहा।

'आप से मिले करीब दो-तीन सप्ताह हो गये होंगे न ?' जगन्नाथ ने बातों की शुरुआत की।

'इन दो-तीन सप्ताह में नरक-यातना झेली है। कभी-कभी मन करता रहा कि क्यों न पानी में डूब कर मर जाऊँ, भैया ?'

रायसाहब के मुंह से ऐसी बातें सुनने की बिलकुल आशा नहीं थी। जगन्नाथ को दुःख हुआ कि यदि उसके सामने भाग्यम्मा ऐसा काण्ड खड़ा नहीं करतीं, तो शायद रायसाहब यह न कहते।

बात बदलने के लिए बोला, 'जानते हैं, परसों क्या हुआ ? कन्नडा जिले में मेरे करोबार की देखभाल करने वाले राजप्पा हैं न—वह सख्त बीमार होकर यहाँ आये। डॉक्टर को दिखाने नहीं, मंजुनाथ को मनौती चढ़ाने। पाँच-सौ रुपये आरती-अभिषेक आदि में फूंक दिये। मैंने डॉक्टर को दिखाया। कैन्सर का शक हुआ। पर बेंगलूर जाने के लिए उनके हाथ फूटी कौड़ी नहीं थी। मुझे देना पड़ा, क्योंकि वह मौत की देहरी पर बैठे थे। उस आदमी को सारे पैसे मंजुनाथ पर उड़ा देने से मना करने की मेरी हिम्मत ही नहीं हुई।'

'देखो भैया, अपना बेटा रंगू जब बस से यात्रियों को ले आया तो मुझे इतनी घिन हुई मानो मेरी बेटी बाज़ार में बैठ गयी हो। कभी ग़लती से भी हाथ न उठाने वाला, उस दिन मैंने अपनी पत्नी को पीटा। अगर सावित्री रोक न लेती तो शायद मैं उसे मार ही डालता। पता नहीं था कि मुझे भी उतना गुस्सा आ सकता है। देखा, इस भगवान ने मेरी कम-जोरी देखकर, किस तरह निगलने की चेष्टा की है !'

आखिरी बात कहते हुए श्रीपतिराय हँस पड़े। जगन्नाथ को खुशी हुई कि वे दोनों एक ही विचारभूमि पर आ गये हैं। फिर भी रायसाहब ऐसी मानसिक स्थिति में हों, ऐसे समय उनके सामने अपनी योजना रखना ओछी बात लगी।

'इस भूतनाथ की बात आप जानते हैं, रायसाहब ?'

'कैसे-कैसे भूत हैं, भैया ! पंजुली, जुमादि ! बैदर, कल्कुड़, बोब्बर्य, जाट्टिट—वग़ैरह-वग़ैरह। ये सभी शूद्रों के भूत ठहरे। पंचमों का भी एक भूत है—कोर्दब्बुसंधि या ऐसा ही कुछ। सुना है, उस पर एक साण्ड है। इन सारे भूतों का स्वामी है भूतनाथ और इस भूतनाथ के स्वामी हैं मंजुनाथ। यदि हिन्दू धर्म को जानता हो तो इस मन्दिर में आये।'

'पर शूद्रों के इस भूतनाथ को तथा इन कुमियों को अपने क़ाबू में रख कर उनसे काम जो लिया करते हैं—यह चालाकी भी देखिये !'

श्रीपतिराय हँस पड़े। पूछा कि 'नागराज जोयिस से भेंट हुई कि नहीं ?' उसकी योजना अभी तक रायसाहब के कानों तक नहीं पहुँची है। पता लगाने पर, जो एक समय अपना सब-कुछ जला कर आन्दोलन में कूद पड़ा था, ऐसा आदमी शायद घबरायेगा नहीं। अभी तो इनकी बेटी का तबादला रद्द कराना होगा। बेटे को अपने ही दफ़्तर में काम देना होगा। वरना भाग्यम्मा उसे यात्रियों को घर लाने ज़रूर भेजेगी। यों ही पैसा देने पर तो रायसाहब नहीं लेंगे। 'फिर कभी लौटाइएगा।' कह कर उन्हें पैसे देने को जगन्नाथ का मन बहुत करता है, पर साहस नहीं होता।

चौक के खादी-भण्डार तक आये। रंगप्पा दुकान खोल कर बैठा था। दुकान में अनबिके धूल-भरे खद्दर के थान; ऊपर टँगी सफेद टोपियाँ, टूटे करघे, बे-दाँत के हँसते हुए गांधी की तसवीर, गांधी के छापे की खद्दर की थैलियाँ थीं। तकिये पर टेक लगा कर जगन्नाथ बैठ गया।

कभी इसी दुकान में बैठ कर रायसाहब ने आन्दोलन शुरू किया था। नयी विचारधाराएँ उस जैसे युवकों में भरी थीं। जैसे ही रायसाहब ने पान-सुपारी का बटुआ निकाल कर पान में चूना लगाना शुरू किया, तो लगा कि घर में हुए काण्ड को प्राय: वह भूलाने जा रहे हैं। फिर से उमंग, मस-खरी, शरारत के लक्षण; उनकी घनी भौंहों के नीचे चमकती आँखों में नाचते दिखायी पड़े। कभी वस में न आने वाले इस प्राणी से भाग्यम्मा को जलन कितनी सहज थी !

बाज़ार आये हुए सारे शूद्र हड़बड़ी में मन्दिर की ओर जा रहे थे। उन पर टकटकी लगाये जगन्नाथ से रायसाहब ने कहा, 'इनके लिए बाहर की पँगत, लाल चावल का खाना ! खट्टी दाल ! भीतर ब्राह्मणों का भोजन। दाल, सब्ज़ी, खीर, पूड़ी। तुम्हारे घर से भी प्राय: आठ-दस थैला चावल मन्दिर को जाता होगा ?'

जगन्नाथ ने हामी में सिर हिलाया।

'मेरे बीवी-बच्चों को थाली लेकर मन्दिर जाने की नौबत न आये, ऐसा कुछ करना होगा, भैया।'

रायसाहव के परिहास में टीस थी।

'इस मंजुनाथ की अध्यक्षता में जीवन सिर्फ़ कालातीत में चलने वाला संभ्रम मात्र है—है न गणेश? तुम्हारे पिता का भी यही कहना है न?' दुकान की देहरी पर खड़े युवक से रायसाहव ने मसखरी से कहा।

हाथ में दवा की शीशी और पुराना उपन्यास लिये गणेश ने अर्थहीन हँसी हँस दी। चेहरे पर उभरी हड्डियाँ, आयु क़रीव पच्चीस वर्ष की होने पर भी वच्चे-जैसे उस गणेश को जगन्नाथ ने कुतूहल से देखा। छोटी-सी शिखा को छिपाने वाला अँगोछा और धोती, माथे पर विभूति, कानों में वड़ी वुँदकियाँ। कहीं इसे पहले भी देखा है? जगन्नाथ याद करने लगा।

'वहन की तवीयत ठीक नहीं है रे, क्या अंथोनी डाक्टर के पास आया था?' फिर जगन्नाथ की ओर मुड़ कर वोले—'इसे पहचाना नहीं? मन्दिर के पास प्रधान पुजारी हैं न, सीतारामय्या—उनका वड़ा वेटा।'

'अच्छा!' जगन्नाथ ने कहा।

'आज्ञा हो!' गणेश ने 'पायलागूँ' किया।

'जीते रहो।'

गणेश चला गया।

जगन्नाथ ने रायसाहव से कहा, 'चलें, अपने घर ही भोजन कर लेंगे।'

'दूकान का ध्यान रखना।' रंगप्पा से कह कर रायसाहव पान-सुपारी का वटुआ उठा कर खड़े हो गये। तभी वहाँ वासु आ धमका।

साथ चलते हुए वासु ने कहा, 'क्या तुम नागराज जोयिस के यहाँ गये थे? गाँव के महाजन को लेकर उसकी शेखी क्या कहूँ! हर्गिज़ उस पर भरोसा मत करना। चाहे रायसाहव से पूछ लो। वूढ़ा हो गया, लेकिन कमीनगी नहीं गयी। सता-सता कर वीवी को खा गया और अव वहू को। हैवान वहू को रखैल वनाये हुए है। वेचारा लड़का शिवमोगा में काम करता है। वहू को वेटे के पास नहीं भेजता? वहाना वनाता है, घर आने-जाने वालों के लिए रोटी सेंकने वाला कोई नहीं। मैंने तो खुल्लमखुल्ला रजिस्टर्ड शादी की है। इस ढोंगी की तरह व्यभिचार तो नहीं करता। सुना है, मन्दिर की पूजा का अपना हक़ जता कर नालिश करने वाला है। इस इलाके का

जब एक भी मामला तक भूतनाथ अदालत तक आने नहीं देता, तो इस आदमी को गाँव बरबाद करने की नौबत क्यों हुई ? दूसरों को चैन की नींद सोते देखा नहीं जाता, इस गाँव के हरामजादों से। इन ब्राह्मणों की गली से तो चाण्डालों की गली सौ-गुनी भली। हाथ में पंचपात्र लिये, चले मन्दिर पेट भरने के लिए...' कमर झुका कर, पसीना बहाना पड़े तो तब पता चले।'

बालू बेकार गरम होता जा रहा है। कहीं-न-कहीं उधार पड़ने की ताक में बैठी हिंसा। लाठी की मार को भी पीठ न दिखाने वाला वह कोई और था और यह कोई और। जीवन की क्रिया में अविकृत बने रहना क्या संभव है ?'

जीवन के सुख-दुख से घिरे रह कर भी इतिहास के चक्र को चलाये रखने की क्रिया कब हमें प्रमुख लगेगी ? क्या यह श्रीपतिराम को अपनी बात समझा सकेगा ?

जब पिल्ल, माद, करिय सिर उठा पायेंगे, जब भीतर एक कदम रख सकेंगे, जब सदियों को एक पग में दुतकार कर फिर चक्र को घुमा सकेंगे— इसके महत्व को रायसाहब तक कैसे पहुँचायें ? कोई कीचड़ कुचलता हुआ खेत जोते, कोई यहीं बैठा-बैठा खाये। मंजुनाथ के अन्तर्मन की चिकनाहट में अलसाने वाली प्राण-शक्ति, इस व्यवस्था के पोषण के लिए बँधा हुआ भूतनाथ नाचता है, बेकार।

इधर बड़ा घण्टा बज रहा है। अपने पूर्वजों के दान का घण्टा। उसकी गूँज टेढ़ी-मेढ़ी गलियों वाले बाज़ार में भर रही है। भूतनाथ नाच रहा है, प्रसाधन लिये हुए। हरे मुकुल जैसे पत्रों को धारण किये मंजुनाथ की मंगलआरती। अपनी गुज़र के लिए बाज़ार के इन नाचने वालों में भी घण्टे की आवाज़ से कैसा सूक्ष्म परिवर्तन ! खरीदी जाने वाली नदी [illegible] ढेर की परीक्षा करने वाला वह गँवार, [illegible] के लिए स्वच्छ होता है। पर इस [illegible] में कैसा [illegible] है ? दोपहर के भोजन के लिए [illegible] है। [illegible] धोने वाला भगवान, स्नान [illegible] करने वाला भगवान, [illegible] को मृत्यु का वरदान देने वाला भगवान, [illegible] धारण किये भगवान, माथे पर सिन्दूर-तिलक

पर हाथी-दाँत के लाल चावल का तथा वासमती का खाना वन कर पड़ने वाला पेटुओं का भगवान—जगन्नाथ के चेहरे पर मुसकराहट की लहर दौड़ गयी।

और एक वस आकर चुंगी-घर के पास रुकी। यात्रियों को ब्राह्मण-लड़कों ने घेर लिया।

'बड़े आराम का काम सिर्फ़ यही एक है।' वासु ने कहा।

वस से उतरते हुए एम० एल० ए० गुरप्पा पटेल ने कहा, 'नमस्ते महाजन जी को, नमस्ते रायसाहव !'

धोती, अचकन, छोटा-सा पेट, नेताओं की सारी अदा पटेल साहव में थी। माथे पर मंजुनाथ जी का सिन्दूर का टीका था।

'जस्टिस पार्टी में रह कर अँग्रेज़ों का पक्ष लेने वाले ये सारे लोग अव कांग्रेस के एम० एल० ए० वन गये हैं।' पटेल साहव के ओझल हो जाने पर रायसाहव ने बड़े तीखे से कहा।

जगन्नाथ जानता था कि ऐसी वातें किस प्रकार धीरे-धीरे ब्राह्मणों के पक्ष में और शूद्रों के विरोध में राजनीति खड़ी कर अर्थहीन वन जाती है, इसलिए वह मौन रहा।

पहाड़ चढ़ कर घर पहुँचा, तव तक पत्तल विछ गये थे। भूख लगी थी। रोज़ की भाँति वाज़ार के लिए भगवान के दर्शन के लिए, आये हुए वीसियों लोग भोजन के लिए आये थे। रायसाहव को भोजन के लिए देख कर, मौसी को वड़ी खुशी हुई।

'आपको आये महीना-भर हो गया।' कहते हुए मौसी ने रायसाहव को तौलिया दी।

3

विस्तर पर पाँव फैला कर जगन्नाथ ने लालटेन की वत्ती मद्धम की। इतना थक गया था कि हाथ-पाँव ढीला कर सोने में वड़ा सुख मिला। दोपहर के भोजन के वाद श्रीपतिराय से अपने मन की सुनाने के लिए निकला था, पर उनकी अन्यमनस्कता को देख कर चुप रह गया था। साँझ

को हमेशा की तरह मातंग (हरिजन) आये थे। पर दस युवकों में से क्या एक की खोपड़ी में भी उसकी बात उतर पायी थी? आँगन से दूर खड़े रहने वालों को आँगन के छोर तक लाने में एक सप्ताह लगा था, पर आँगन को पार कर चबूतरे के बोरिये पर बैठने के लिए शायद वह हर्गिज़ तैयार नहीं होंगे। जब वह बच्चा था, तब इस 'पितरम' का बाप 'मर्म' रास्ते में कभी मिलता था तो झट रास्ते से हटकर, किसी पेड़ के पीछे छिप कर अपने काले अँगरखे को उतार कर, सड़क के किनारे झुक कर, यों सलाम करता था मानो उसकी नज़र में आना ही कोई अपराध हो।

रात का खाना खाकर पेन ले मेज़ के सामने बैठ गया।

जगन्नाथ ने समाचार पत्रों के लिए एक छोटा-सा लेख लिखा। तीन बार लिख कर फाड़ा। उसे वह रोमांटिक आदर्शवाद जैसा लगा। लोगों का विश्वास है कि यदि मातंग लोग मंजुनाथ जी के मन्दिर में प्रवेश करेंगे तो रक्त वमन करके मर जायेंगे। कहा जाता है कि भूतनाथ उनकी टाँगें पकड़कर घसीटते हुए रक्त वमन करवाता है। राष्ट्राध्यक्ष का भी विश्वास है, उस देवता की महिमा को ठेस लगे बिना भारत की जनता अपने पैरों पर नहीं खड़ी हो सकेगी।

लेख भाया नहीं, फाड डाला। दूसरा लिखा : 'यह मन्दिर वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परम शत्रु है। भूत, चुड़ैल-मोचन कराने वाला भूतनाथ, ज़मींदारों को लगान दिलाने वाला भूतनाथ—इस भूतनाथ का पालक है मंजुनाथ। हमारे जीवन की सृजनशीलता में अवरोध बन कर, हमें इतिहास का उत्तराधिकारी बनने से रोक कर, बन्धन में बँधे इस भगवान के गुमाश्ते का नाश किये बिना कुछ नहीं बन सकता। देवता को नाश करने का प्रयत्न ही शहद के छत्ते में हाथ डालने के बराबर है। इस भारत में मंजुनाथ ने ही समाज के लिए सार्थक कार्यों को असाध्य बना रखा है। इससे समाजिक जीवन अर्थहीन बन गया है। भौतिक यथार्थ को माया का नाम देकर, उसकी भर्त्सना करते हुए, हम आत्म-प्रवंचना में जी रहे हैं। इसलिए यदि हम महान क्रान्ति चाहते हैं, तो इन दीन-हीन मातंगों को सीना तानकर सिर उठाना होगा। सदियों के सत्य का केवल एक पग में परिवर्तन ये मातंग ही कर सकते हैं। ऊँची जाति वाले कितने ही ऊपर

न उठें, हम प्रगति के भ्रम में ही जीते रहेंगे, न कि...।'

जगन्नाथ ने फिर से फाड़ डाला। केवल कार्यक्रम के रूप में ही लिखना होगा। बातों का अम्बार लगता जायेगा तो आप बावला जैसा दीख पड़ेगा। अपने निहित सारे मिथ्यात्व से मुक्त होकर, जब ठोस आदमी बनने के लिए इस कार्य में हाथ लगाया है तो अपने को इस बातों का महल नहीं बाँधना चाहिए। ऐसा सोच कर जगन्नाथ ने अपने संकल्प का निर्देश करने वाली छोटी-सी चिट्ठी लिखी: 'मान्यवर, सारे भारत-भर में प्रसिद्ध मंजुनाथ जी के मंदिर में हरिजनों का प्रवेश करवाने का मैंने निश्चय किया है। इसके लिए मेरी राय में अमावस के मेले का तीसरा दिन ठीक है। क्योंकि भारत-भर के भक्त-गण उस दिन भारतीपुर आयेंगे। उन सबके सामने यदि सिद्ध हो जाये कि मन्दिर-प्रवेश करने वाले मातंगों का रक्त वमन करके मर जाने की बात सरासर झूठ है तो मेरा विश्वास है कि जनता में एक नये विचार का स्फुरण होगा। इस कार्य के लिए सभी प्रगतिशील व्यक्तियों के सहयोग की कामना करता हूँ—जगन्नाथ, भारतीपुर।'

एक अंग्रेज़ी में तथा एक कन्नड़ में चिट्ठी लिखी। बंगलूर के दो समाचारपत्रों के पते लिखे लिफ़ाफ़ों को लेकर रात में ही घर से बाहर निकला। टॉर्च की रोशनी में पहाड़ी से उतर कर डाकखाने जाकर जगन्नाथ ने डाक के बक्से में चिट्ठी डालीं तो उसका जी हलका हुआ। बड़े उल्लास के साथ घर लौट आया। उछलता हुआ छत की सीढ़ियाँ चढ़ कर बिस्तर पर लुढ़क पड़ा।

जाड़े में भी उसका शरीर पसीने से तर था।

अब वास्तव में उसे डर लग रहा है। चिट्ठी छपेंगी, उन्हें पढ़ कर भारतीपुर के सारे लोग उसे कुत्ते की नाईं देखेंगे। डाक में चिट्ठी डालते समय जो उमंग थी, वह उतरती जा रही है। पर निष्क्रिय, हाथ बाँधे बैठना भी उसके लिए दुस्सह बन गया था—अपने मन की छान-बीन करने की ठान कर जगन्नाथ मेज़ के सामने फिर जा बैठा। खिड़कियों के बाहर, पहाड़ियों के पार चन्द्र-रेखा, झींगुरों का झींझाख, जाड़ा।

इंग्लैंड में छः वर्षों तक उसने क्या किया ? व्यक्तिगत जीवन को ही सच मानकर अस्तित्ववादी बना रहा। उसने अपनी काली आँखें, काले बाल, इतालवियों का रंग, बातों की अदा—सभी का बड़ी चतुराई से उपयोग किया था। लिबरल बना, 'गार्डियन' पढ़ा। किसी एक से न बँधकर, कई लड़कियों से दोस्ती करनी चाही। यह वांछा पूर्ण न होने पर *काम-स्वच्छन्दता का समर्थक बन गया। अंग्रेज़ों की प्यूरिटन मनोवृत्ति* का कड़ा विरोधी बन गया। फ्रांसीसियों के मौजी जीवन को सराहा। लड़कियाँ फँसाने में लगे हुए मित्रों का हीरो बना। उसका एक भारतीय मित्र, जो किसी अंग्रेज लड़की से तिरस्कृत होकर मन-ही-मन कुढ़ रहा था, यूरोपीय संस्कृति के उसके खण्डन से प्रसन्न हुआ था। भीतर की दबी हुई आकांक्षाओं पर इस प्रकार वह विचारों का बाहरी पोशाक बना रहा। सारांशतः बहुरूपिये का जीवन रहा।

एक दिन लंदन यूनिवर्सिटी यूनियन के पब में मार्गरेट से परिचय हुआ। साथ में चन्द्रशेखर था। बॅंगलूर के मध्यवर्गीय जीवन से ऊबकर लंदन आया था। स्लम स्कूलों में टीचिंग, इवनिंग कॉलेजों में पढ़ाई, एकाकीपन से ऊबकर पब के बन्द होने तक बीयर पीना। बॅंगलूर में ब्राह्मणवादी, लंदन में उग्र साम्यवादी। अंग्रेज़ों की वर्णनीति का खण्डन करने के लिए कुछ करना होगा, *'प्रोटेस्ट' नामक मासिक पत्रिका निकाली जाये तो कैसा रहेगा ?* हर रोज की बातचीत में रूबेन्स नामक यहूदी मित्र साथ रहता था। पर उस दिन वह नहीं था। फोर्स्टर पर अपने थीसिस की रूपरेखा सोचता हुआ जगन्नाथ जब लायब्रेरी से बाहर निकला तो लगा कि उसके पास लिखने को कुछ है ही नहीं। वह उदास बैठा था। अपने अंग्रेज अध्यापकों की उपेक्षा से क्रुद्ध होकर, चन्द्रशेखर लेक्चर दे रहा था कि इंडियन जीनियस कितना महान है। ये स्लम के बच्चे कैसे कुंद-जहन हैं। हमारी प्रतिभा को नव-उपनिवेशवाद ने कैसे कुं किया है। जगन्नाथ को उस दिन उसकी बातें अच्छी नहीं लग रहीं *उठकर बाहर से एक-आध पाइंट बीयर, चीज एँड अरुनियन,* क्रिस्प्स खरीद लाया। पाइप सुलगायी। चन्द्रशेखर ब था। एकाएक जगन्नाथ को लगा कि वह कभी . ।

केवल एक नक़ल है। उसकी बातें झूठी, विचार झूठे। फ़ोर्स्टर के सम्बन्ध में उसे एक नयी बात तक नहीं सूझी थी। विद्रोह की आकर्षक बातें कहते हुए, सभी को खुश करने वाले विनय का बाना पहने, विचारों में जंगली जानवर बनकर, आचरण में गर्म कोने को ढूंढ़ने निकलने वाली बिल्ली बनकर अन्दर खोखला होने पर भी ऊपर मौलिकता का लबादा— छी: ! अपने पर घिन आ गयी। ईल की जाति का प्राणि ! मौलिक विचारों का लबादा ओढ़े सभी बातें झूठी, सच यही है कि मन में अतृप्त आकांक्षाएँ भरी पड़ी हैं। रईस घर में जन्म लेने के कारण कोई चूं करनेवाला नहीं। अपना रोब जमाने के लिए ही यह सारी खटपट, क्रान्ति की बातें, साहित्यिक गोष्ठी—ये भाँति-भाँति के आईने, पर अन्दर कोई निष्ठा नहीं। अपनी बातें अपने को ही सच लगें, ऐसे ऑडियंस को ढूंढ़ना अपना ही सत्य है।

जगन्नाथ जब अपने पर घिनाता बैठा था, मार्गरेट उसकी जगह चली आयी थी। हाथ में बीयर लिये, 'क्या मैं साथ दे सकती हूँ ?' कहती हुई कुर्सी खींचकर बग़ल में बैठ गयी थी। गालों पर बिखरी काली केशराशि, काली-काली आँखें, मनमौजी लगनेवाला दुहरा बदन, कोमल होंठ—उठकर कोट उतारा और दूसरी कुर्सी पर फेंक दिया था। गले में बड़े-बड़े रुद्राक्षों की माला थी। हलके नीले रंग के कपड़े पहने हुए थी। बालों को गालों से हटाती हुई, मस्ती से हँसती हुई, 'मैं मार्गरेट' कहकर हाथ बढ़ाया था। जगन्नाथ अपना परिचय देने लगा तो उसने कहा था—'मैंने तुम्हें देखा है—आपने यूनियन में ब्रिटेन के भारतीयों पर जो भाषण दिया था वह काफ़ी सीरियस तथा मूविंग था।'

जगन्नाथ ने कहा था कि काले और गोरों के बीच जीनेवाला भारतीय कैसा सूक्ष्म विद्रोह करता है, अपने देश में जात-पाँत बरतने वाला भारतीय, इंग्लैंड में विद्रोही बनता है, इसके पीछे क्या मनोवृत्ति हो सकती है ? विश्लेषण किया था कि, नेहरू भावना से भारतीय होने पर भी विचारों में क्यों पाश्चात्य हैं ? अपने व्यक्तित्व के सूक्ष्म विद्रोह को ही मानो विश्लेषित करके कही गयी बातें, भीतर के उफान के कारणों की प्रामाणिक खोज, और मार्गरेट की प्रशंसा-भरी बातों में जगन्नाथ को अपना

मर्म दीख पड़ा। उसकी माँड ड्रेस, पीठ पर तक बिखरे बाल—लगा कि सहज में मोहित होनेवाली औरत वह नहीं है। उसकी बातों में व्यंग्य के तीखेपन को ताड़कर जगन्नाथ को उसकी प्रशंसा से खुशी हुई थी। वैरन और नेहरू को अपने सच्चे पूर्वज मानकर अपनी भर्त्सना कर लेने पर भी मार्गरेट की आलोचनापरक दृष्टि में अपना-आप और भी आकर्षक बन पाया था। चन्द्रशेखर का भी परिचय करा दिया गया था।

मार्गरेट ने बताया कि वह अध्यापिका है और छुट्टियों में लंदन यूनिवर्सिटी से इतिहास में एम० ए० की तैयारी कर रही है। 'ओह, कितनी प्यास लगी थी' कहते हुए, उसने गटागट आधा पाइंट बीयर पीकर हाथ से होंठ पोंछ लिये। संवेदना के लिए उतावली बताकर, साथ ही अपने को स्वतन्त्र बताने वाली उस लड़की के व्यक्तित्व से जगन्नाथ के दिल और देह दोनों जाग्रत हुए। खाली तीन गिलासों को लेकर जगन्नाथ उठा। मार्गरेट भी उठ खड़ी हुई। कहा, 'मुझे चुकाने दीजिये।'

मना करके जगन्नाथ काउण्टर के पास गया। भरे गिलासों को ट्रे में लाते समय, 'कम-से-कम मुझे मदद करने दीजिये,' कहकर वह उठ आयी। सिगरेट खरीद लायी। उसकी सिगरेट सुलगाकर जगन्नाथ ने बातें शुरू कीं। एक नवेली से परिचय होते ही, उसके दिल पर कब्ज़ा करने के उसके पैंतरों को वह तुरन्त ताड़ गया था। कुछ ही क्षण पहले वह कितना उदास था। पर अब अपनी झुकी हुई गरदन, परीक्षक दृष्टि, गहराई से बातें, हाव-भाव, आदि मार्गरेट को प्रभावित करने की ताक में थे। सम्मति, विरोध, आत्मालोचन—सभी शिकार के साधन बने। गालों पर पड़े बालों को हटाती, बदन को अँगड़ाती, निस्संकोच अपने मन और बदन को जगन्नाथ की नज़रों में फैलाती, अब मानकर, फिर दूसरे ही क्षण अनमना कर परस्पर बातों का मज़ा लूटती रही। ईर्ष्यालु चन्द्रशेखर ने उग्रता से कहा कि यूरोपियों के लिबरल विचारों को हिजड़ापन और धोखा कहकर वे गुएवारा की तरह खूनी क्रान्ति करने से ही यूरोपीय लिबरलों के छलछन्द का भण्डा-फोड़ हो सकता है। मानव की चरम तुच्छता की बातें करना और अपनी न्यूनताओं का विश्लेषण करना डिकेडेण्ट लोगों का मनोविनोद है। फिर व्यंग्य किया था कि तुम दोनों, आराम के साथ बैठ-

कर इतनी क्रूरता से मानव की जो आकर्षक आलोचना कर रहे हो, क्या वह लुमुम्बा के अफ़्रीका में सम्भव थी ?

बीयर का सरूर चढ़ा हो, या दिल का बुख़ार निकल रहा हो— चन्द्रशेखर जो कह रहा था, प्रायः जगन्नाथ और मार्गरेट में भी कुछ ऐसी ही बातें हो रही थीं। मार्गरेट ने बताया कि उसके पिता भारतीय गुजरात के रहनेवाले और माँ अँग्रेज़ है; पर उसे पिता से ही अधिक लगाव रहा है। कहा कि जगन्नाथ की हर बात वह मानती है। चन्द्रशेखर ने व्यंग्य किया कि पब में बैठकर मानना बड़ा आसान है। यदि जगन्नाथ इसी तरह बातें करता रहेगा तो नेहरू की सरकार में एम्बैसेडर बन जायेगा। जगन्नाथ जैसे वाक्पटु भारत में बहुत जल्दी ही ऊपर उठते हैं। नेहरू, कृष्ण मेनन की सफलता का रहस्य और क्या हो सकता है ? क्षण-भर पहले जगन्नाथ ने भी यही कहा था।

पब के बन्द होने पर ही वे लोग उठे थे। 'बाइ' कहकर चन्द्रशेखर चला गया। जाते हुए मीठी तहज़ीब से पेश आने की चेष्टा की थी। मार्गरेट ने 'तुम्हारी कुढ़न की मैं दाद देती हूँ,' कहते हुए हाथ मिलाया था। चन्द्रशेखर की तानेबाज़ी और ईर्ष्या में व्यक्त प्राणशक्ति से जगन्नाथ का दिल उलटने लगा। उसकी कड़वी बातें, ईर्ष्या में जली दुर्बलता ने मानो मार्गरेट के स्त्रीत्व को प्रबोधित किया हो। चन्द्रशेखर के चले जाते ही जगन्नाथ ने कहा, 'बकता है। पौंड की कालाबाज़ारी करके बेंगलूर के जयनगर एक्स्टेन्शन में बँगला बनवा रहा है।'

मार्गरेट की नज़र में शायद चुटकी में ही चन्द्रशेखर लाश बन गया होगा। पर अपनी इस जीत से खुद लजाकर कहा, 'चन्द्रशेखर ओछा कंगाल है। इसलिए उसकी समझ में आनेवाली पीड़ा मेरी समझ में नहीं आती।'

'मैं इस क़िस्म के लोगों को पहचानती हूँ।' उसने कहा था।

ब्रूम्सबरी में मार्गरेट के फ़्लैट तक दोनों चलते गये।

'आओ,' मार्गरेट ने बुलाया।

दरवाज़ा खोलते हुए कहा कि उसकी लैंड-लेडी बड़ी शक्की है। दबे पाँव आने के लिए कहकर हाथ पकड़कर ऊपर ले गयी। 'रिलैक्स' कह-

कर सोफ़ा-कम-बेड की ओर इशारा करते हुए कोट उतारने में मदद की। रविशंकर के सितार का रेकार्ड लगाकर रसोई में चली गयी।

जगन्नाथ मार्गरेट के बेड-कम-सिटिंग रूम का कौतूहल से मुआयना करने लगा। उसके कमरे में उपयोग में लायी गयी सजावट की वस्तुएँ अधिकतर नीले रंग की थीं। मेज़ पर लटकते स्तनों वाले नंगे बदन, हाथ ऊपर उठाये खड़े रामकृष्ण परमहंस की तसवीर थी। दीवार पर गोगाँ की पेंटिंग। कोने में एक पुराना रेडियोग्राम। खाने की मेज़ पर पड़ी तश्तरियाँ और पत्रिकाएँ। सुरुचि के साथ-साथ काहिली के चिह्न। पाप-चित्र बता रहे थे कि अपने को अच्छी रुचि है, पर आप बूर्ज़ुआ नहीं। वियतनाम के युद्ध की भीषणता को दर्शानेवाले चित्रों की कतरन। दरवाज़े के स्टैण्ड पर उतारकर रखा डफ़्‌ल कोट। देखने में साधारण पर, बहुत ही मुलायम आरामदेह सोफ़ा। गैस के चूल्हे के सामने जगन्नाथ हाथ सेंकता बैठ गया। भीतर से मार्गरेट ने कहा कि ह्विस्की वहीं रखी है, वह ले ले।

पुस्तकों की अलमारी पर रखी ह्विस्की उँड़ेलकर जगन्नाथ ने पूछा, 'तुम ?'

उसने कहा, 'न !'

रसोई के भीतर जाकर जगन्नाथ ने फ्रिज खोलकर बर्फ़ डाल लिया, सासेज तलती हुई मार्गरेट से कहा कि वह अधिक कष्ट न करे।

'एक मिनट !' मार्गरेट ने कहा।

'तुम्हें परमहंस पर श्रद्धा है ?' जगन्नाथ ने पूछा।

'हाँ, तुमने ईशरवुड पढ़ा है ? वह मेरी पसन्द का लेखक है।'

'फ़ोर्स्टर की तरह का लेखक, है न ?'

'हाँ; परमहंस, ह्विटमेन सब-कुछ मान लेते हैं। किसी का निराकरण नहीं करते। सृष्टि की सारी संकीर्णता को भी आत्मसात करने वाली हस्तियाँ हैं।'

'मनमानी भरी जानेवाली अटैचियाँ। उनकी हम्प्टी [illegible] की भाँति है।'

'मैं नहीं मानती।' हँसती हुई मार्गरेट ने [illegible]

कर इतनी क्रूरता से मानव की जो आकर्षक आलोचना कर रहे हो, क्या वह लुमुम्बा के अफ़्रीका में सम्भव थी ?

बीयर का सरूर चढ़ा हो, या दिल का बुख़ार निकल रहा हो—चन्द्रशेखर जो कह रहा था, प्रायः जगन्नाथ और मार्गरेट में भी कुछ ऐसी ही बातें हो रही थीं। मार्गरेट ने बताया कि उसके पिता भारतीय गुजरात के रहनेवाले और माँ अँग्रेज़ है; पर उसे पिता से ही अधिक लगाव रहा है। कहा कि जगन्नाथ की हर बात वह मानती है। चन्द्रशेखर ने व्यंग्य किया कि पब में बैठकर मानना बड़ा आसान है। यदि जगन्नाथ इसी तरह बातें करता रहेगा तो नेहरू की सरकार में एम्बैसेडर बन जायेगा। जगन्नाथ जैसे वाक्पटु भारत में बहुत जल्दी ही ऊपर उठते हैं। नेहरू, कृष्ण मेनन की सफलता का रहस्य और क्या हो सकता है ? क्षण-भर पहले जगन्नाथ ने भी यही कहा था।

पब के बन्द होने पर ही वे लोग उठे थे। 'बाइ' कहकर चन्द्रशेखर चला गया। जाते हुए मीठी तहज़ीब से पेश आने की चेष्टा की थी। मार्गरेट ने 'तुम्हारी कुढ़न की मैं दाद देती हूँ,' कहते हुए हाथ मिलाया था। चन्द्रशेखर की तानेबाज़ी और ईर्ष्या में व्यक्त प्राणशक्ति से जगन्नाथ का दिल उलटने लगा। उसकी कड़वी बातें, ईर्ष्या में जली दुर्बलता ने मानो मार्गरेट के स्त्रीत्व को प्रबोधित किया हो। चन्द्रशेखर के चले जाते ही जगन्नाथ ने कहा, 'बकता है। पौंड की कालाबाज़ारी करके बेंगलूर के जयनगर एक्स्टेन्शन में बँगला बनवा रहा है।'

मार्गरेट की नज़र में शायद चुटकी में ही चन्द्रशेखर लाश बन गया होगा। पर अपनी इस जीत से खुद लजाकर कहा, 'चन्द्रशेखर ओछा कंगाल है। इसलिए उसकी समझ में आनेवाली पीड़ा मेरी समझ में नहीं आती।'

'मैं इस क़िस्म के लोगों को पहचानती हूँ।' उसने कहा था।

ब्लूम्सबरी में मार्गरेट के फ़्लैट तक दोनों चलते गये।

'आओ,' मार्गरेट ने बुलाया।

दरवाज़ा खोलते हुए कहा कि उसकी लैंड-लेडी बड़ी शक्की है। दबे पाँव आने के लिए कहकर हाथ पकड़कर ऊपर ले गयी। 'रिलैक्स' कह-

कर सोफ़ा-कम-बेड की ओर इशारा करते हुए कोट उतारने में मदद की। रविशंकर के सितार का रेकार्ड लगाकर रसोई में चली गयी।

जगन्नाथ मार्गरेट के बेड-कम-सिटिंग रूम का कौतूहल से मुआयना करने लगा। उसके कमरे में उपयोग में लायी गयी सजावट की वस्तुएँ अधिकतर नीले रंग की थीं। मेज़ पर लटकते स्तनों वाले नंगे बदन, हाथ ऊपर उठाये खड़े रामकृष्ण परमहंस की तसवीर थी। दीवार पर मोनों की पेंटिंग। कोने में एक पुराना रेडियोग्राम। चाले की मेज़ पर पड़ी तश्तरियाँ और पत्रिकाएँ। सुरुचि के [illegible] कार्टूनों के चित्र। वाल-चित्र बता रहे थे कि बनाने को अच्छी रुचि है, पर [illegible] बुढ़ापा नहीं। वियतनाम के युद्ध की भीषणता को [illegible] चित्रों की कतरन। दरवाज़े के स्टैण्ड पर उतारकर रखा [illegible] कोट। [illegible] मुलायम आरामदेह सोफ़ा। मेज़ के [illegible] के सामने [illegible] हुए [illegible] बैठ गया। भीतर से मार्गरेट ने कहा कि व्हिस्की रखी है, चाहे तो ले ले।

पुस्तकों की अलमारी पर रखी व्हिस्की उँडेलकर जगन्नाथ ने पूछा, 'तुम?'

उसने कहा, 'न!'

रसोई के भीतर जाकर जगन्नाथ के लिए [illegible] सासेज तलती हुई मार्गरेट ने कहा कि वह [illegible]।

'एक मिनट!' मार्गरेट ने कहा।

'तुम्हें परमहंस पर श्रद्धा है?' जगन्नाथ ने पूछा।

'हाँ, तुमने ईशरवुड पढ़ा है? [illegible]'

'[illegible]'

'हाँ; [illegible] नहीं करते। [illegible] हस्तियाँ हैं।'

'[illegible] है।'

'मैं नहीं जानती।' [illegible]

ो टेवल पर रखा।

खाने के वाद काली कॉफ़ी पी थी। मना करने पर भी तश्तरियाँ ोने में जगन्नाथ ने मार्गरेट का हाथ बँटाया। मार्गरेट ने कहा, 'मेरी ाँ ने मेरे पिता को निकम्मा वना दिया है। इसलिए मैं उसे हेट करती ़।' फिर जाते समय वोली, 'कल इतवार है, लंच के लिए ग्रा जाना। पताजी से मिलेंगे। यहीं हैं।'

निहाल होकर जगन्नाथ अपने फ़्लैट को लौट पड़ा। उसके सम्पर्क में ग्रायी सभी लड़कियों से, मार्गरेट उसे एकदम सच्ची लगी थी। लगा कि उसके साथ रहने में उसका व्यक्तित्व निखर जायेगा।

दूसरे दिन इतवार था।

सवेरे से ही वारिश, कीचड़ ग्रौर जाड़ा। वस से जगन्नाथ मार्गरेट के यहाँ पहुँचा था। उसने अभी-अभी स्नान किया था। कमरा गरम ग्रौर ग्रारामदेहक था। मेण्टल पीस के सामने वैठा।

मार्गरेट ने पूछा, 'चाय या कॉफ़ी!'

'मैं वनाऊँगा।' कसते हुए मार्गरेट के साथ किचन में पहुँचा।

जगन्नाथ को खुशी हुई कि उसके ग्राने को ध्यान में रखकर ही मार्गरेट ने कमरा विलकुल साफ़-सुथरा रखा था।

टी-पॉट में गरम पानी उँडेलते समय वह उसके पास खड़ा था।

शैम्पू किये हुए उसके वालों की भीनी खुशवू प्यारी लगी थी। 'जूड़ा वाँधने लायक़ लम्वे वाल हैं,' कहते हुए उसके वालों को पकड़कर उसने उठाया। वह मोरों का वार्डर वाला ढीला लहँगा ग्रौर ब्लाउज़ पहने हुए थी। उसके शरीर से शरीर सटाकर वह खड़ा था। कन्धे पर हाथ रखकर, अपनी जिस थीसिस के लिए ज़मीन-ग्रासमान एक कर रहा था उसके वारे में वातें कहीं। चाय पीते हुए माँ ग्रौर भारतीपुर के वारे में वताया। श्रीपतिराय द्वारा अपने ग्रौर इंगरसाल को पढ़वाये जाने की वात कही।

'इंगरसाल कौन है?' मार्गरेट ने जिज्ञासा से पूछा। वह विलकुल सहज हो गयी थी। वातें करते-करते दोनों पूरी एक वोतल वाइन पी गये थे। खाने के लिए उसने चिकन-करी ग्रौर चावल पकाये थे। जगन्नाथ ने

अपने उपनयन आदि का विवरण देते हुए कहा कि उसे मेजिटेरियन खाना ही भाता है। खाना खाकर फ़िन्सबरी—मार्गरेट के पिता के घर—गये।

डॉक्टर देसाई देखने में अपनी बेटी से मिलते थे। जगन्नाथ से हिन्दी में बोले। जगन्नाथ ने कहा कि उसे हिन्दी नहीं आती।

सीधी नाक, गोल चेहरा, मलिन आँखें, दुहरे बदन के व्यक्ति थे, देसाई जी। गंजे सिर को मलते हुए भारत के बारे में पूछा। बताया कि उन्होंने बंगलूर देखा है। उनकी अँग्रेज़ी का लहज़ा गुजराती ढंग का था। जगन्नाथ ने पूछा, 'आपसे गुजराती बोलनेवाला कोई नहीं मिलता?'

'मिलते हैं।' उन्होंने संक्षिप्त उत्तर दिया।

भीतर से टी-ट्रॉली ठेलती हुई मार्गरेट अपनी माँ के साथ आयी। उसकी माँ ठंडी बातों वाली, नीली आँखों वाली, ब्याउन (भूरे) बालों वाली औरत थी। उसके झुर्रीदार चेहरे में देसाईजी से भी अधिक उम्र दीख रही थी। घर में पाँच भारतीय छात्रों को पेइंग गेस्ट के लिए रख लिया था; उन भारतीय छात्रों की गन्दी आदतों की शिकायत की; कहने लगी कि भारतीय भगवान या देवताओं के गुलाम होते हैं।

माँ-बेटी में नोक-झोंक हुई। पिता उदासीन थे। अपने पति के प्रति उसकी विरक्ति व्यक्त करते रहने के ढंग को भाँपकर जगन्नाथ ने भी अपना मुँह बन्द रखा था। मार्गरेट ने स्वीकार किया कि भारत की दरिद्रता के लिए अँग्रेज़ ज़िम्मेदार हैं। पर माँ कैसे बाज़ आती? उसने बकना शुरू किया कि यदि अँग्रेज़ न होते तो भारतीयों में [illegible] वैज्ञानिक दृष्टि नहीं होती। अँग्रेज़ों के आने से [illegible] भारतीय नारी समाज की दुर्दशा देख रहे हैं। [illegible] आदि।

निकलने पर, मुझे यहाँ कौन पहचानता है ? कहेंगे कि शायद कोई इण्डियन कण्डक्टर है ।' बड़बड़ाते वह कमरे में चहलक़दमी करने लगे थे।

मार्गरेट जब बाहर आयी तो उसकी आँसू चू पड़ने वाली आँखों में गुस्सा भरा था। 'रेचड् कण्ट्री, रेचड् पीपल !' कहती हुई जगन्नाथ का हाथ पकड़कर निकल पड़ी। उसे वहीं गले लगाकर सान्त्वना देने की इच्छा हुई थी।

बस पर चढ़कर मार्गरेट के फ्लैट आने तक किसी ने बातें नहीं कीं। साँझ हो गयी थी। किवाड़ बन्द करते ही जगन्नाथ ने मार्गरेट को बाँहों में भरकर चुम्बन लिया। उसकी आँखों से पानी चू पड़ा। सीने पर सिर रखकर सिसकने लगी। जगन्नाथ ने पूछा कि क्या मैं रात यहीं रहूँ ? उसने हामी में सिर हिलाया।

उस रात जगन्नाथ को मार्गरेट ने बेहद उत्ताप के साथ प्यार किया था। उसके दुख-भरे बचपन की स्मृतियाँ, उसकी कमियाँ, उसकी करुणा, और उसके दहकते बदन की दरारों में छिपी हुई तृप्ति—सब उसने अपना लिये थे। अपनी बाँहों में सोयी मार्गरेट के गरम नंगे बदन को टटोलते हुए उसने घड़ी देखी। दो बजे थे।

सवेरे जल्दी उठकर चाय बनाकर मार्गरेट ने जगाया। लैंड-लेडी के अनजाने में वहाँ से खिसक जाने को कहा। ड्रेसिंग-गाऊन पहने मार्गरेट को दोनों बाँहों में उठाकर चुम्बन लिया, गरागर घुमाया।

'मुझे स्कूल के लिए देरी होगी; अब तुम जाओ।' कहकर वह हँस पड़ी थी। एक नटखट लड़की की हँसी।

मार्गरेट के अन्तराल में जड़ें फेंककर जगन्नाथ जैसे खिल उठा था।

'ब्याह करेंगे।' कहने पर उसने कहा था कि शादी-ब्याह में उसे विश्वास नहीं। 'देखो, मेरे पिता को माँ ने कैसा बना रखा है ! पिता की हैसियत ही नहीं।'

वास्तव में जगन्नाथ को भी शादी की चाह नहीं थी। मार्गरेट को खो देने के भय ने उससे शादी की बात कहलवायी थी। वह जानता था कि उसे एक-न-एक दिन भारतीपुर लौटना ही होगा। तब सचाई का

क्या होगा ? भारतीपुर में मार्गरेट के साथ वह नहीं रह सकेगा। एब्सेण्टी लैण्ड-लॉर्ड बनकर बेंगलूर में रहना होगा—अंग्रेज़ी में रैडिकल बातें करते हुए, पार्टियाँ देते हुए, कहीं ऐसे लोगों के साथ जिनकी जड़ें कहीं नहीं हैं। रविशंकर का संगीत, कोणार्क का शिल्प, रेशम की साड़ी, ड्राइंग-रूम में दीप-रहित काँसे का दीपाधार, नटराज, कथकली मूर्ति, कलात्मक ऐश-ट्रे, बाल मुंडे, चिकनी आँखों वाली, कटे बालों वाली, साड़ी पहनी औरतें, आई० ए० एस० अफसरों की सालियाँ या मिलिट्री अफ़सरों से शादी करने की प्रतीक्षा करने वालियाँ।

'कुछ लीजिये।'

'नहीं!'

'क्यों? आर यू डाइटिंग?'

मार्गरेट उस किस्म की नहीं थी, पर भारत आने पर वैसा बने बिना नहीं चलेगा—यह वह जानता था। फिर भी जब प्रणय की तन्मयता का सरूर उतरने लगा था, तब शादी की रट लगाकर पीछे पड़ा था।

धीरे-धीरे प्यार में प्रारम्भिक तन्मयता नहीं रही। बाँहों में बँधी मार्गरेट किसी-न-किसी सोच में डूबी रहती। जगन्नाथ उसकी उदासी, जूठे फैले बर्तन, या बिखरे पड़े कपड़ों की शिकायत करता। वह भी कहती कि हर किसी को प्लीज़ कहने की वह क्यों चेष्टा करता है। जगन्नाथ को बुरा लगता। हमेशा क्रूर बनकर दिल में आग छिपाये रहनेवाले चन्द्रशेखर के साथ जब मार्गरेट खुलकर बातें करने लगती तो उसके दिल में फफोले पड़ जाते। पर बाद में पता चला कि चन्द्रशेखर, मात्र एक मोहरा है जिसे चलाकर मार्गरेट जगन्नाथ में ईर्ष्याजनित उत्तेजना पैदा करती थी, ताकि अधिक उत्ताप-भरे संभोग का आनन्द लूट सके।

फिर उद्देश्यपूर्वक ही जगन्नाथ ने स्वयं चन्द्रशेखर के साथ सौहार्द से रहना शुरू किया। उसके गुणों के पुल बाँधने लगा। मार्गरेट ने आग-बबूला होकर भर्त्सना की, 'उसको हर बात सह लेते हो न? तुममें मर्दानगी नहीं?' धीरे-धीरे जगन्नाथ को लगा कि वह मार्गरेट की दैहिक भूख मिटाने का एक साधन-मात्र बन गया था। आसानी से छुड़ा लेने वाली

उसकी देह की आसक्ति भी अब कम होती जा रही थी। उनींदे में उसके हाथ से आदतन की जानेवाली हरकतें एक वला वन जाने के कारण उन्हें हटा देता। जगन्नाथ की हर मानसिक हलचल और तीव्रता की ओर मार्गरेट ने उदासीनता दिखाना शुरू कर दिया था।

इतवार की एक सुवह, धूप थी। पिछवाड़े के बाग़ में सेव के नीचे, देह में जैतून का तेल मलकर, सिर्फ़ चड्डी और ब्रेसरी पहने, वह दरी पर सोयी थी। शर्ट-पैण्ट पहने जगन्नाथ आराम-कुर्सी पर वैठा था। धूप ही खाने मार्गरेट पीठ ऊपर किये औंधी लेटी थी।

'जगन्, ज़रा मेरी ब्रेसरी के हुक तो खोल दो,' उसने कहा।

उठकर जगन्नाथ ने हुक निकाला। कुछ सोचता वैठा था, कुछ भूल गया। धूप वड़ी प्यारी थी। इतवार की चुप्पी। औंधी सोयी हुई मार्गरेट ने एकाएक कहा। उसकी आवाज़ में तीखापन नहीं था।

'जगन्, तुम्हारी नोविलिटी से चन्दर की ईर्ष्या ही अधिक असल लगती है। वन कांट रियली फ़ील यू आर देयर। तुम ठोस नहीं लगते तुम्हारी यातना भी होगी; पर चन्दर ज़्यादा सफ़र करता है।"

याद है : सेव का पेड़, धूप, हरी घास, ब्रेसरी वँधी जगह मा मार्गरेट की गोरी पीठ। उसकी भावनाशून्य वात...उसकी ओर वि मुँह किये उसने सिगरेट जलायी। उस दिन उसने जो यातना सही वैसी कभी नहीं सही होगी। घास देखता वैठा रहा। धूप में चमक हुआ उसकी ब्रेसरी का हुक देखता ही वैठा रहा। यों ही देखते-दे अपने प्राणों को विसर्जित कर देना चाहा था। पर मार्गरेट ने उठाया ही नहीं। विखरे वालों पर तथा पीठ पर सूरज की गर्मी भे अलसाती, हाथ-पाँव फैलाये, वह निश्चिन्त सोयी थी। उसकी व हथेली टिकाकर वैठे अपने को उस हालत में देखना उसे पसन्द नहीं वड़ी देर वाद मार्गरेट ने सिर उठाया। उसे देखा। उस सम उसकी आँखों में आँसू थे ? वह उठकर आयी। विना वोले उससे गयी! लिपटकर लुढ़क गयी। चुम्वन लेकर उसके गालों को

किया। वह भीतर से सूख गया था। उसकी कमीज़ खोलकर गला और सीने को चूमा। उसकी आँखें खुली ही थीं। चूमते समय उसने उससे आँखें बन्द कर लेने का आग्रह किया था। बातें सारी सूख गयी थीं। धूप, घास, औरत का बदन—किसी को न ठेलते, किसी की चाह न करते हुए भी बहुत देर तक वह वहीं बना रहा।

दूसरे दिन प्रोफ़ेसर के पास जाकर कहा, 'दस पन्ने से ज़्यादा फ़ॉरस्टर पर लिखने लायक सामग्री उसके पास नहीं। मेरा एक लेख 'एसेज़ इन क्रिटिसिज़्म' में छप रहा है। वह काफ़ी है। डिग्री नहीं चाहिए।' उन्होंने उसे बिठाकर कहा, 'तुम ऐसा क्यों सोचते हो? मेरे छात्रों में तुम प्रतिभाशाली छात्र हो।'

'थैंक्स!' कहकर चला आया। एक सप्ताह में बोरिया-बिस्तर बाँधकर सीधा वापस भारतीपुर रवाना हो गया था।

दो बजे थे। बाहर नीरवता थी। जगन्नाथ ने मार्गरेट को लिखा पत्र फाड़ डाला। और कुछ ठोस बनने पर लिखूँगा। ठोस बनने के लिए, जानवरों की तरह जीनेवाले मातंगों को सिर्फ़ एक कदम उठाने की हिम्मत करानी होगी। *उनकी क्रान्ति में ही उसकी सफलता है।* उनके मन से जूझना होगा। इसी के द्वारा उसके व्यक्तित्व को निश्चित रूप मिल सकेगा। चिकनाई पिघलेगी। इस प्रकार यहाँ कुछ करके फिर लिखूँगे।

बत्ती बुझाकर, शाल ओढ़कर सो गया। बिस्तर के नीचे मौसी द्वारा छिपाकर रखी गयी मंजुनाथ जी के दूत भूतनाथ की तावीज़ की याद आयी तो हँस पड़ा। जाड़ा था, एक कम्बल ओढ़ लिया। नींद नहीं आ रही थी। पता नहीं, कब आयी! बहुत बुरा सपना दीखा। भाग्यम्मा सिर के बाल बिखराये सिन्दूर लिये खड़ी हैं। रंगण्णा को पीटा जा रहा है। रंगण्णा छटपटा रहा है। भाग्यम्मा रुकती नहीं। श्रीपतिराय स्तब्ध बैठे हैं, मानो टोना लगा हो। भाग्यम्मा पीटती ही जाती हैं, रंगण्णा बेहोश होता है। फिर भाग्यम्मा ऐसे पीटने लगती हैं, जैसे चिड़वे कूट रही हों। बच्चे की नाक और मुँह से लहू निकलता है। रंगण्णा को यों उठाने जाती हैं मानो निचुड़कर रखे कपड़े उठा

हों। रंगण्णा की गरदन टूट पड़ती है। इस सबके लिए श्रीपतिराय को ही ज़िम्मेदार ठहरा कर, एकाएक भाग्यम्मा रोने लगती हैं। यह सब देखते खड़े अपने हाथ में सिन्दूर देखकर आश्चर्य होता है।

जगन्नाथ की आँखें खुलीं। उसकी देह पसीने से तर थी।

4

इंग्लैंड से भारतीपुर लौटे जगन्नाथ को क़रीब छः महीने बीत गये। उसे शिवमोगा स्टेशन से लिवा लाने मौसी ने कार भेजी थी। बड़े संभ्रम के साथ उसकी अटैचियों को कार में रखते हुए ड्राइवर बुडन ने उदास होकर कहा था, 'आशा थी कि इंग्लैंड से आप नयी कार लायेंगे। आपकी माता जी के चल बसने के बाद यह कार शेड से बाहर निकलती ही नहीं, साब ! मौसी तो हमेशा घर में ही रहती हैं।'

रास्ते में उसने घर के बारे में रिपोर्ट पेश की थी। भारतीपुर के प्रवेश-स्थान पर वन्दनवार बँधे थे। मन्दिर के प्रधान पुजारी सीता-रामय्या, गाँव के सभ्रान्त व्यापारी प्रभुजी, एम० एल० ए० गुरप्पा पटेल, श्रीपतिराय, घर के पटवारी विश्वनाथ शास्त्री, सफ़ेद कुर्ता और खाकी नेकर पहने गाँव के स्कूल के बच्चे, ढीला पैंट, तिलक और अक्षत धारण किये हुए मुख्याध्यापक—ऐसे कई लोगों को वन्दनवार के नीचे अगुवानी के लिए खड़े देख उसे बड़ा संकोच हुआ था। जगन्नाथ की आँखें भीड़ में कहीं पीछे खड़े श्रीपतिराय को ढूँढ़ रही थीं। तभी मंत्राक्षता पड़ी, माथे पर सिन्दूर का तिलक लगा, और सीतारामय्या के मुँह से आशीर्वचन के मंत्र अबाध गति से फूटने लगे। भूतनाथ के प्रसाद सिन्दूर को, शायद सीतारामय्या ने हाथ में धराया था। गुरप्पा पटेल ने हाथ में नींबू देकर हार पहनाया था; फिर हाथ जोड़कर गाँव के सौभाग्य की और मंजुनाथ जी की कृपा की प्रशंसा करते हुए उसने छोटा-सा भाषण ही जड़ दिया था। इस तरह पहले से ही निश्चित अपने 'स्थान, मान, कर्त्तव्य की दुनिया में, पानी में पड़े चने की तरह अपने फूल जाने के डर से जगन्नाथ घबरा गया था। मंत्राक्षता के अपने सिर पर पड़ते ही जगन्नाथ को लगा कि इस जाल

से निकलने के लिए पहले मंजुनाथ का तिरस्कार करना होगा, अर्थात् मंजुनाथ के प्रति लोगों की श्रद्धा के मर्मस्थल में गहरी ठेस पहुँचानी होगी।

मुँह में पान भरे, धोती की कोर हाथ मे पकड़े, कहीं दूर श्रीपतिराय मुसकराते खड़े थे। उनकी मुसक्राहट जगन्नाथ की समझ में आयी थी। घनी भौंहों के नीचे आँखें, यों हँस रही थीं, मानो कह रही हों कि प्रधान धर्मदर्शी होने के कारण तुम अपने निरीश्वरवाद को पीकर जिओ, जैसे मैं जी रहा हूँ; विश्वास के साथ।

मुँह का पान थूककर, हाथ बढ़ाये आये और बाँहों में भर लिया।

'यात्रा में थकावट हुई होगी' जैसी गुरप्पा पटेल की शिष्टाचार की बातों में उसने सुर मिलाया। उम्र ढलते-ढलते जीवन के साथ समझौता करके आदमी कैसे लिबरल बनता है! जगन्नाथ का दिल धड़क उठा कि कहीं यह समझौता, हर आँख को आईना समझने वाला स्वभाव, क्या उसके पल्ले भी एक-न-एक दिन नहीं पड़ेगा?

जगन्नाथ उस दिन से आज तक खोजता रहा कि इस मुसकान या हार के पीछे क्या अब भी कोई विद्रोह इस व्यक्ति में बचा है या नहीं? बयालीस के दंगे में अकेले दफ्तर के सामने अनशन करने वाला, उससे पहले गांधीजी के आह्वान पर कपड़े की दुकान में आग लगाने वाला यह घनी भौंहों वाला आदमी अब पालतू बन गया है। देश की इस गलाघोंटू परिस्थिति के बारे में जगन्नाथ गंभीरता से सोचने लगा था।

सभी को छोड़कर राय साहब के साथ घर आया था। सकेशी[1] होने के कारण मौसी ने मुँह नहीं दिखाया था। दूसरे घर की लड़कियों ने देहरी पर पानी छिड़का था। मांझघर में जाकर रायसाहब के साथ बातें करने लगा। वह जानता था कि कुलदेवता को माथा टेक-कर, ठंडा दूध माँगकर पीये जाने की प्रतीक्षा में मौसी बैठी है। कहा जाता है कि यह नरसिंह शालिग्राम हजार वर्षों से घर में पूजा जाता रहा है। माथे पर चौड़ा सिन्दूर का टीका लगाये, टोपी काँख में दबाये पटवारी भीतर-बाहर चक्कर काटता

1. ब्राह्मण विधवाओं को सिर मुँडाये रहना पड़ता है। जो नहीं मुँड़ातीं वे अशुभ मानी जाती हैं।

हों। रंगण्णा की गरदन टूट पड़ती है। इस सबके लिए श्रीपतिराय को ही ज़िम्मेदार ठहरा कर, एकाएक भाग्यम्मा रोने लगती हैं। यह सब देखते खड़े अपने हाथ में सिन्दूर देखकर आश्चर्य होता है।

जगन्नाथ की आँखें खुलीं। उसकी देह पसीने से तर थी।

4

इंग्लैंड से भारतीपुर लौटे जगन्नाथ को क़रीब छः महीने बीत गये। उसे शिवमोगा स्टेशन से लिवा लाने मौसी ने कार भेजी थी। बड़े संभ्रम के साथ उसकी अटैचियों को कार में रखते हुए ड्राइवर बुडन ने उदास होकर कहा था, 'आशा थी कि इंग्लैंड से आप नयी कार लायेंगे। आपकी माता जी के चल बसने के बाद यह कार शेड से बाहर निकलती ही नहीं, साब ! मौसी तो हमेशा घर में ही रहती हैं।'

रास्ते में उसने घर के बारे में रिपोर्ट पेश की थी। भारतीपुर के प्रवेश-स्थान पर बन्दनवार बँधे थे। मन्दिर के प्रधान पुजारी सीता-रामय्या, गाँव के सभ्रान्त व्यापारी प्रभुजी, एम० एल० ए० गुरप्पा पटेल, श्रीपतिराय, घर के पटवारी विश्वनाथ शास्त्री, सफ़ेद कुर्ता और खाकी नेकर पहने गाँव के स्कूल के बच्चे, ढीला पेंट, तिलक और अक्षत धारण किये हुए मुख्याध्यापक—ऐसे कई लोगों को बन्दनवार के नीचे अगुवानी के लिए खड़े देख उसे बड़ा संकोच हुआ था। जगन्नाथ की आँखें भीड़ में कहीं पीछे खड़े श्रीपतिराय को ढूंढ़ रही थीं। तभी मंत्राक्षता पड़ी, माथे पर सिन्दूर का तिलक लगा, और सीतारामय्या के मुंह से आशीर्वचन के मंत्र अबाध गति से फूटने लगे। भूतनाथ के प्रसाद सिन्दूर को, शायद सीतारामय्या ने हाथ में धराया था। गुरप्पा पटेल ने हाथ में नींबू देकर हार पहनाया था; फिर हाथ जोड़कर गाँव के सौभाग्य की और मंजुनाथ जी की कृपा की प्रशंसा करते हुए उसने छोटा-सा भाषण ही जड़ दिया था। इस तरह पहले से ही निश्चित अपने 'स्थान, मान, कर्त्तव्य की दुनिया में पानी में पड़े चने की तरह अपने फूल जाने के डर से जगन्नाथ घबरा गया था। मंत्राक्षता के अपने सिर पर पड़ते ही जगन्नाथ को लगा कि इस जा

से निकलने के लिए पहले मंजुनाथ का तिरस्कार करना होगा, अर्थात् मंजुनाथ के प्रति लोगों की श्रद्धा के मर्मस्थल में गहरी ठेस पहुँचानी होगी।

मुँह में पान भरे, धोती की कोर हाथ में पकड़े, कहीं दूर श्रीपतिराय मुसकराते खड़े थे। उनकी मुसकराहट जगन्नाथ की समझ में आयी थी। घनी भौंहों के नीचे आँखें, यों हँस रही थीं, मानो कह रही हों कि प्रधान धर्मदर्शी होने के कारण तुम अपने निरीश्वरवाद को पीकर जिओ, जैसे मैं जी रहा हूँ; विश्वास के साथ।

मुँह का पान थूककर, हाथ बढाये आये और बाँहों में भर लिया।

'यात्रा में थकावट हुई होगी' जैसी गुरप्पा पटेल की शिष्टाचार की बातों में उसने सुर मिलाया। उम्र ढलते-ढलते जीवन के साथ समझौता करके आदमी कैसे लिबरल बनता है! जगन्नाथ का दिल धड़क उठा कि कहीं यह समझौता, हर आँख को आईना समझने वाला स्वभाव, क्या उसके पल्ले भी एक-न-एक दिन नहीं पड़ेगा?

जगन्नाथ उस दिन से आज तक खोजता रहा कि इस मुसकान या हार के पीछे क्या अब भी कोई विद्रोह इस व्यक्ति में बचा है या नहीं? बयालीस के दंगे में अकेले दफ्तर के सामने अनशन करने वाला, उससे पहले गांधीजी के आह्वान पर कपड़े की दुकान में आग लगाने वाला यह घनी भौंहों वाला आदमी अब पालतू बन गया है। देश की इस गलाघोंटू परिस्थिति के बारे में जगन्नाथ गंभीरता से सोचने लगा था।

सभी को छोड़कर राय साहब के साथ घर आया था। सकेशी[1] होने के कारण मौसी ने मुँह नहीं दिखाया था। दूसरे घर की लड़कियों ने देहरी पर पानी छिड़का था। मँझघर में जाकर रायसाहब के साथ बातें करने लगा। वह जानता था कि कुलदेवता को माथा टेक-कर, ठंडा दूध माँगकर पीये जाने की प्रतीक्षा में मौसी बैठी है। कहा जाता है कि यह नरसिंह शालिग्राम हजार वर्षों से घर में पूजा जाता रहा है। माथे पर चौड़ा सिन्दूर का टीका लगाये, टोपी काँख में दबाये पटवारी भीतर-बाहर चक्कर काटता

---

1. ब्राह्मण विधवाओं को सिर मुंडाये रहना पड़ता है। जो नहीं मुंडातीं वे [illegible] मानी जाती हैं।

रहा। पर, भगवान को माथा टेकने के लिए कहने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ी। जगन्नाथ ने 'मौसी' कहकर पुकारा। मांझघर में आकर मौसी ने दूध दिया था। प्यार से उन्हें देखा। बातों की आवश्यकता भी नहीं। हालाँकि बोलने का मन हुआ था। वह कहना चाहता था—क्षमा करना मौसी, अगर 'भगवान' पर भरोसा होता तो मैं भी इसी घेरे में बन्द हो जाता। मौसी, भगवान से निर्लिप्त रहे बिना इस गाँव का उद्धार नहीं हो सकता। यह गाँव उबरे, इसके लिए कुछ करना होगा। सुनो मौसी, मैं वही करने आया हूँ। कुछ सही बनने के लिए...।

पर कुछ कहे बिना, प्यार से देखते हुए उसने दूध पिया था।

देखने में माँ जैसी ही। पर, बाल कुछ कम। ललाट भी कुछ छोटा ही। मुँह तिरछा कर बातें करना तो बिलकुल माँ की भाँति ही। सफ़ेद साड़ी, सफ़ेद चोली। अपने भाग की सारी जायदाद को इस घर में ही छोड़कर, जब से बाल-विधवा हुईं तब से यहीं पली हैं। उसे भी पाला है। दूर से देखने पर भारतीपुर के सभी लोग मंजुनाथ की रिआया लगने पर भी पास से देखने पर हर किसी की खिचड़ी अलग ही पकती है। पर मंजुनाथ किसका शासन करता है—इनकी अज्ञानता का, या...? जगन्नाथ का सोचना कठिन हुआ।

गाँव की राजनीति के बारे में रायसाहब बड़ी फुर्ती से बातें करने लगे। रायसाहब के लिए राजनीति चबैना है।

'जानते हो, यह गुरप्पा पटेल कैसे जीता! पहले यह जस्टिस पार्टी का था न? 47 में कांग्रेस में आया। इस बार के चुनाव में थालियाँ भरकर मंजुनाथ का प्रसाद—सिन्दूर लेकर देहातों में घर-घर गया था। प्रसाद छुआकर वह शपथ करवाता था कि उसे ही वोट दें। पटेल का बच्चा जो ठहरा। फिर ऊपर से...।'

जगन्नाथ को यात्रा की थकावट थी, नहाने के लिए उठ खड़ा हुआ। रायसाहब से कहना चाहा कि चुनाव की बात छोड़ दें। इस घटिया राजनीति को छोड़ दें। सोचना यह है कि इस भारतीपुर में क्या भौतिक काम किया जा सकता है?

'नहा लीजिये,' उसने कहा।

'नहीं, मैं नहा लिया हूँ।' रायसाहब ने कहा।

'खाना खाकर जाना,' मौसी ने कहा। रायसाहब ने बातें शुरू की कि इस बार नगरपालिका चुनाव में क्यों नहीं खड़े हुए? यदि खड़े होते तो पिछली बार की तरह हारना निश्चित था, इत्यादि। एक ज़माने के गांधी के अनुयायी बने लोगों पर जगन्नाथ को वितृष्णा-सी हुई। पर इंग्लैंड के 'पबों' के वातावरण में पले मार्क्सवाद से रायसाहब को नापना अनुचित समझकर, स्नानघर में घुस गया। टब में नहाने की बजाय जगन्नाथ को, मुँह पर साबुन लगाकर लोटे के लिए टटोलने में, मनमानी पानी उँडेलना अच्छा लगा। यह चमचमाता हुआ ताँबे का लोटा, भगौने में भीगने रखा साल का सुंदा, घर में ही पीसा हुआ शीकाई का चूर्ण और संदल साबुन ने बचपन की याद दिला दी थी। मल-मलकर गरम पानी से नहाकर रायसाहब के साथ खाने बैठा। अब तक जगन्नाथ की एवज़ में प्रभुजी महन्तगिरी का काम संभालते रहे हैं, उन्हीं को आगे भी करने दें। सुनकर भीतर से मौसी ने कहा कि यह कैसे हो सकता है? रायसाहब भेद-भरी निगाह से उसको देखकर मुसकराने लगे थे।

गाँव आने के दूसरे ही दिन से जगन्नाथ अपने और भारतीपुर के बीच नया नाता जोड़ने की कोशिश करने लगा। हाई स्कूल के सभा-भवन में अपनी सम्मान-गोष्ठी में आये लोगों से 'रसेल' के विचार सम्बन्धी बातें की थीं, पर लोगों के सिर हिलाने के ढंग से ही ताड़ गया था कि उसकी बातें बिलकुल बेकार गयी। नागराज शास्त्री ने तो उसकी विद्वत्ता की सराहना की थी। 'यह कोई, हमारे लिए नयी बात थोड़ी ही है? लोकायत मार्ग में ये बातें कभी की आ चुकी हैं।' उन्होंने कहा था।

लोगों के गुज़ारे के तौर-तरीके जानना पहली आवश्यकता थी। शिवमोगा से आते समय मार्ग में उसे इस प्रश्न ने उलझाया था। सामन्ती घराने में पैदा हुए और पले एक ब्राह्मण के लिए अपनी ही मिट्टी का कितना पता था? ज़्यादा-से-ज़्यादा फलों के दो-चार पेड़ों को पहचान ले, कुछ पक्षियों के नाम बता दे; गाँव से अपने असामियों की बस्तियों को जाने वाले दो-एक रास्ते बता दे—और क्या? मालिक होने के कारण लोग उसके सामने रास्ते से हटकर खड़े होते हैं। ज़मी

रहते हैं, ऐसा अभिनय करते हैं जैसे उसकी नज़र में पड़ना ही पाप हो —पर, है यह सरासर अभिनय। पीठ फेरते ही उनके चेहरे बदल जाते हैं। अपने आगे चल पड़नेवाले इन दीन शूद्रों को, जगन्नाथ जानता था कि, अगर आँखों पर पट्टी बाँधकर, वे भारतीपुर के आसपास के जंगलों में छोड़ दिये जायें तो केवल गंध और स्पर्श से ही वे वापस आ जायेंगे। स्वीकार करने के लिए उन्हें शिकार करना पड़ता है, ताड़ी पीना पड़ती है, तम्बाकू खाना पड़ती है, लुच्चा बनना पड़ता है—किन्तु लगता है, इस प्रकार के परिवर्तन का कोई अन्त नहीं।

थोथे आदर्श की आयु बीत चुकी है। वह तीस पार कर गया है; अब कुछ ठोस काम करना है। पर कैसे ? रह-रहकर जगन्नाथ सोचने लगा। उसे लगा कि यह सिर्फ़ सोचने से सुलझनेवाला प्रश्न नहीं है। क्योंकि सोचना मानो अतल कुएँ में टटोलने के समान है। बिना सोचे यहाँ का जीवन उसके इर्द-गिर्द चुपचाप ललास होता जा रहा है। शादी के लिए कर्ज़ा, खेती के लिए कर्ज़ा, दवा के लिए कर्ज़ा—मात्र विपत्ति में उसका और सामान्य लोगों का नाता, अपनी वास्तविकता को कभी न समझ पाने लायक़ मर्यादा की रक्षा, मंजुनाथ की रक्षा, उसके नियंत्रण में रहनेवाले भूतनाथ के भय की रक्षा।

हाथ में सिन्दूर लिये, थर-थर काँपते हुए लोगों पर सवार भूतनाथ पूछता है : 'यहाँ पर धर्माचरण निरांतक चल रहा है ?'

महन्त को जवाब देना पड़ेगा : 'चल रहा है।'

क़तार में खड़े प्रश्नकर्ता एक के बाद एक, सामने आकर हाथ जोड़े खड़े होंगे।

पूछ लेंगे, बस। पाँच रुपये डाल, प्रसाद ले। दस रुपये डाल, प्रसाद ले। ऐसे न्याय के निर्णय में अपने जैसों की रक्षा की जाती है। जगन्नाथ के बदले, उसी के नाम पर प्रभुजी महन्त बने थे।

जब राष्ट्रपति आये थे, तब जगन्नाथ के त्याग-पत्र देने पर, वह गद्दी प्रभुजी को ही चली गयी। इस गाँव में उसका कोई स्पष्ट व्यक्तित्व नहीं था। मंजुनाथ, एक व्यक्तित्व-हीन है और वह भी व्यक्तित्व-हीन। इस बीच बँधा पड़ा भूतनाथ भी क्या कोई सत्य है ?

इंग्लैंड में लम्बे बालों वाले मित्रों के साथ अनायास पत्रों में छोटी निरात्मक चर्चाएँ जीवन के लिए अर्थहीन थी। केवल मन मात्र से मानव स्वतन्त्र है। किसी सामाजिक या राजकीय परिवर्तनों से भी मनुष्य की मानसिकता कभी परिवर्तित नही हो पाती इत्यादि। भारतीपुर में, जो मंजुनाथ का कुआँ है, ये सभी चर्चाएँ केवल मज़ाक जैसी लगती थी। यहाँ हर दोपहर में घड़ियाल बजाते समय बीतता है। जन्म से मरण तक, जीवन पूर्व-निर्धारित लीक पर चला जा रहा था।

लोगों को समझने का अभिप्राय क्या है ? उनके साथ काम करने का अर्थ क्या है ? धन के कारण, जगन्नाथ का भी पूर्वनियोजित सम्बन्ध है। उसकी समझ में आने लगा कि, भले ही छटपटा ले, पर इस सम्बन्ध में तनिक भी फर्क लाना असम्भव है। भारतीपुर में आते ही उसने सफेद कुर्ता, लुंगी पहनना शुरू कर दिया था। लोगो ने तारीफ की कि महाजन कितने सीधे हैं। बातें चलने लगी कि पटवारी ही महाजन जैसे लगते हैं। लोगों के मन में अपने को गढ़ाने का ढंग क्या हो सकता है ? कुछ न कर पाने पर लगता है कि कहीं आत्महत्या ही न कर ले। सबेरे उठना, हिसाब-किताब देखना, कर्ज देना, खाना, सुपारी के भाव की चर्चा करना, नये पौधे लगाना—कैसा अर्थहीन जीवन है ! भीतर-ही-भीतर और भी निकम्मा होते चले जाने का भय। जगन्नाथ को लगा कि वह जितना भी नपुंसक बनता जायेगा, अजातशत्रु बनता जायेगा, हँसमुखी बनता जायेगा, सारी व्यवस्था के लिए निरापद, और प्रतिष्ठित—और फिर धीरे-धीरे मजुनाथ की महिमा के लिए वह खाद बन जायेगा।

कारिन्दे कृष्णय्या के देहान्त के बाद घर के कारोबार की देखभाल करने के लिए विश्वनाथ शास्त्री नामक एक पटवारी नियुक्त हुआ था। जगन्नाथ जब इंग्लैंड में था, तब माँ की निगरानी में, और उनके मरने के बाद, मौसी की निगरानी में—यह पटवारी बड़ा घूसखोर बन गया था।

विश्वनाथ शास्त्री को वही घर मिला, जहाँ कारिन्दे कृष्णय्या रहते

थे। घर की उत्तरी बग़ल में दफ़्तर (शास्त्री की भाषा में 'एस्टेट ऑफ़िस')। चूं-चां करने वाले छः बच्चे, बीवी, विधवा सास—यह था शास्त्री का परिवार। कारिन्दे कृष्णय्या के मरने से पहले ही उनकी पत्नी मर चुकी थी। इसलिए अपनी मां की इच्छा के अनुसार उनके इकलौते बेटे गोपाल की पढ़ाई की व्यवस्था जगन्नाथ ने ही की थी; अतः कृष्णय्या का अधिकार, घर, नरम गद्दीदार कुर्सी, काले आइल-क्लाथ लगी मेज आदि-आदि अनिवार्य रूप से विश्वनाथ शास्त्री को ट्रांसफ़र हुए थे।

शास्त्री को देखकर जगन्नाथ को दीवार से चिपकी लिजलिजी छिपकली की याद हो जाती। बिल्ली की तरह आंखों वाला। मंजुनाथ का प्रसाद सभी लोग भौंहों के बीच लगाते हैं तो यह शास्त्री पुरानी सुहागिनियों की तरह ललाट के बीच लगाता है। जगन्नाथ ने एक बार रायसाहब से मज़ाक में कहा था कि वह तिलक इतना बड़ा था कि मंजुनाथ की महिमा को उद्घोषित करने वाला, आंखों में चुभने लायक़। राष्ट्रपति की पत्नी के माथे से लेकर बेंगलूर में सब्जी बेचने वाली औरत के माथे तक इस सिन्दूर-प्रसाद के प्रसिद्ध होने के कारण—इस व्यक्ति के भारतीपुर वाला होने की बात बेंगलूर के महात्मा गांधी रोड में भी . करनेवाला था। तिस पर कारिन्दे कृष्णय्या की जगह आप आने के . ८५। इस सिन्दूर के साथ कच्छेदार धोती, उसमें खोंसा गया कुर्ता, टाई, गैबर्डिन का कोट, काली टोपी (शिवमोगा जाते समय जरी की पगड़ी) के बिना, वह कभी भी दिखायी नहीं पड़ता। बिना टोपी और टाई के सिर्फ़ एक बार वह जगन्नाथ की निगाह में पड़ा था। एक बार—दिन-ढलते समय बाग़ में वेंकप्पा नामक नौकर की बीवी को पांच का नोट लेकर, कामातुर और याचना-भरी मुद्रा में।

बातों में पटवारी शास्त्री बड़ा तेज था। सकपकाते हुए उसे जगन्नाथ ने कभी देखा ही नहीं। शिष्टाचार, पाजीपन, आवभगत, मुंह से लार टपकने वाली उसकी बातों में 'हां' या 'ना' का अर्थ निकाल पाने की ताक़त किसी में नहीं थी। कभी तनता हुआ, कभी दनता हुआ, कभी बिल्ली बनकर, कभी छटपटाता चूहा बनकर, देने का लालच दिखाते-

दिखाते एकदम हाथ खींच लेने वाले शास्त्री की बातों के जाल का पूरा अनुभव सिर्फ कर्ज़ा माँगने वालों को था।

केवल एकादशी के दिन जगन्नाथ, शास्त्री का मुँह देख नहीं पाता था; मंजुनाथ के सिन्दूर के बिना उसका सूना माथा उजड़ा हुआ-सा लगता। इस प्रकार मंजुनाथ के प्रसाद के रहने, या न रहने से ही लोगों के मुँह पर शास्त्री का प्रभाव पड़ते रहने के कारण ही शायद भारतीपुर-भर में उसे सिन्दूर के शास्त्री कहना अधिक समीचीन लगता था।

जगन्नाथ को फँसाने के लिए भी उसने मक्खन का किला ही खड़ा किया था। इंग्लैंड से लौटने पर जगन्नाथ के लिए जन-सम्पर्क का एक-मात्र साधन उसकी जायदाद ही थी। किन्तु जगन्नाथ उसकी पकड़ से बाहर न जाने पाये, ऐसी व्यवस्था शास्त्री ने की थी। बातचीत करते समय जगन्नाथ को सुना-सुनाकर ऊँची आवाज में उसकी प्रशंसा करना; जो जगन्नाथ को शनैः-शनैः निकम्मा बनाती जा रही थी। शास्त्री उसकी कमज़ोरी जानता है और उस कमज़ोरी का लाभ उठाकर वह अपनी स्थिति मज़बूत बनाता जा रहा है। यह जगन्नाथ भी समझने लगा था। अपने व्यक्तित्व के विकार का दूसरा पहलू बने हुए इस शास्त्री को खुद का प्यारा प्रतिबिम्ब पाने की चेष्टा करते हुए देखकर जगन्नाथ कुछ घबरा गया। इस चिकने, पिचपिचे बदन वाले कीड़े को यदि फटकार सका तो समझूँगा कि अपनी कमज़ोरी को जीतना शुरू किया है।

जब से शास्त्री को वेंकप्पा की बीवी के साथ खड़ा देखा था, जाने क्यों उसका हौसला बढ़ गया था कि शास्त्री अभेद्य नहीं है।

उस दिन दफ़्तर में आकर उसने शास्त्री की प्रतीक्षा की। माथे पर सिन्दूर लगाये मुसकराता हुआ गैस-लाइट जलाकर शास्त्री दफ़्तर में आया। टाई नहीं थी; पर टोपी थी।

'शास्त्री जी, आपसे एक बात पूछनी थी। किस-किसका लगान रुका है, देखना है। खाता लाइये।'

जगन्नाथ को शक था कि शास्त्री झूठा हिसाब लिखता है। पकड़ा जायेगा तो ठंडा पड़ जायेगा—इस विचार से जगन्नाथ ने कुछ ज़ोर देकर पूछा।

'रात में खाता देखकर क्या आँखें खराब करेंगे ? कल मैं खुद आपको पढ़कर सुनाऊँगा। ऐसी बातों के लिए क्यों आप बेकार की तकलीफ़ उठाते हैं ?' शास्त्री ने गरदन लचकाते हुए कहा।

जगन्नाथ ने कड़ी आवाज़ में सख्ती के साथ कहा, 'नहीं! क्या आमदनी है, क्या खर्च है—सब-कुछ मैं खुद जांचना चाहता हूँ।'

शास्त्री के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं; उसने एक खाता निकाल दिया था। उसके लहजे से व्यक्त हो रहा था कि ऐसे बड़े आदमी को ऐसी छोटी-सी बातों में नहीं पड़ना चाहिए। वही की धूल झाड़कर, फूँककर, बड़ी नम्रता से उठाकर हाथ में थमाये जाने के ढँग को देखकर, जगन्नाथ कुछ पिघल गया। बाग़ के दृश्य की याद कर फिर मन कड़ा किया।

दूसरे दिन सवेरे शास्त्री को बुलवाकर कहा, 'यह क्या शास्त्री जी, क़रीब तीस लोगों का सुपारी का बक़ाया है। जाकर उनसे मिलना होगा। बुडन से कहो—दोनों चलेंगे।'

शास्त्री टसकता नहीं दीखा।

'उन्हीं को बुलवा भेजते हैं, साब। उनके पास हम क्यों जायें ? उनको भी संकोच होगा कि ऐसी मामूली बात के लिए महाजन खुद ही आये हैं।'

'कोई बात नहीं, शास्त्री जी। हम चलेंगे।'

'न, न ! मैं खुद जाऊँगा। आज कुछ काम हैं। दवा छिड़कनी है। लोगों को लाने के लिए जनार्दन सेट्टी से कहा है।'

'टाल-मटोल ठीक नहीं, शास्त्री जी, चलिये। ऐ ! बुडन से कार बाहर लाने के लिए कह, रे !'

जगन्नाथ ने नौकर को पुकारकर कहा। शास्त्री के चेहरे को फीका पड़ते देखकर उसकी हिम्मत बढ़ गयी थी।

शास्त्री ने कमरा बन्द किया। आँखें बन्द किये, हाथ जोड़कर कहा, 'बाल-बच्चों वाला हूँ, हिसाब लिखने में कुछ भूल हुई है। बाद में उन्होंने लगान लाकर दिया है। खाते में वह दर्ज नहीं हुआ, वहाँ सारी सुपारी आपके नाम पर जमा हुई हैं या नहीं ?'

जगन्नाथ ने मुँह पर सीधा कहा, 'शास्त्री जी, आप यहाँ ढाई सौ वेतन पाते हैं न ? बहुत कम है। आज से आपका वेतन चार सौ किया। आपने जो अपने नाम सुपारी जमा कर ली हैं, सारी-की-सारी लौटा दो। धोखेबाजी करना, बात बनाना, कृपया छोड़ दीजिये। इसी क्षण यहाँ से जाकर, मैंने जो कहा है कीजिये।'

इस घटना के बाद जगन्नाथ तड़के उठता और सफेद धोती बाँधकर, जहाँ नौकर काम करते, वहाँ चला जाता। लोग क्या सोचते हैं, कैसे सपने देखते हैं, किन बातों से उन्हें बुरा लगता है या भला लगता है—वह समझने की कोशिश करने लगा। उसे यक़ीन था कि उसके सामने इतनी दीनता दिखाने वाले ये लोग वास्तव में उसकी क़द्र नहीं करते। आत्मीयता से बात करने लगा, तो शंका करते। साथ काम करने के लिए निकला, तो बातें होने लगी कि मालिक को पैसों की बड़ी फ़िक्र है, नौकरों के कामचोर होने का शक है। उदारता से पेश आता तो—'बच्चा है, अभी पका नहीं, कच्चा है' कहते। जगन्नाथ की समझ में न आया कि क्या करे ?

बाग़ में केले के झाड़, काली मिर्च, सुपारी के गुच्छों की चोरी होने का जगन्नाथ को शक था। एक दिन रात को छिपकर वह बाग़ में जा बैठा। आधी रात में पैरों की आहट सुनकर कान खड़े हो गये। गहरे में भी आँखों ने दो की शक्ल देखी। एक ढली उम्र वाला और दूसरा छोटा। साँस साधकर बैठा। पास ही आये। उसकी उपस्थिति से बेख़बर बाग़ के केले और झाड़ और सुपारी के गुच्छों को बड़ा आदमी काटकर छोटे के हाथ में दे रहा था। अपनी प्रतीक्षा सफल होने की जगन्नाथ को खुशी हुई। सुपारी के झाड़ पर चढ़ता हुआ बड़ा आदमी कहीं गिर न जाये, इसलिए साँस रोके रहा। उसे ऐसा अहसास होने लगा कि मानो वह खुद ऊपर चढ़ रहा है। लड़के के सब-कुछ थैले में बटोर लेने के बाद दोनों सिर पर थैलियाँ उठाये चल पड़े। जैसे ही वे कुछ दूर गये, उनको पहचानने की इच्छा हुई। दबे पाँव उनका पीछा करने लगा। बाग़ से पहाड़ी पर जाने वाले इस चोर-रास्ते को जगन्नाथ

नहीं था। मातंगों के जाने-पहचाने, न जाने और कितने रास्ते होंगे ! उन सबको जानने की उत्कण्ठा हुई। पहाड़ी के ऊपर तक बिल्ली की तरह उनका पीछा किया। वे सिरे पर पहुँचने वाले ही थे कि दौड़कर बड़े आदमी का हाथ पकड़ लिया। टॉर्च जलायी।

वह शीनप्पा था। क़रीब पेंतालीस की अवस्था का हट्टा-कट्टा असामी, अपने छोटे बेटे गंगप्पा के साथ चोरी करने आया था। रँगे हाथ पकड़ने से जगन्नाथ का आत्म-विश्वास बढ़ गया। गिड़गिड़ाते शीनप्पा से कहा, "अब फिर कभी चोरी मत करना। इस बार तुम्हें छोड़ देता हूँ।'

'भूतनाथ को डाँड भरूँगा मालिक, मुझे छोड़ दो।' उसने पैर पकड़ लिये थे।

'केले का एक झाड़ ले जा, बाक़ी घर पहुंचा दे। 'तुझे पैसों की ज़रूरत हो तो बताना—दूंगा।' फिर लौट पड़ा। शीनप्पा थरथरा रहा था।

'आपको घर तक छोड़कर आऊँगा, मालिक।' कह कर रास्ते-भर और कौन-कौन इसी प्रकार की चोरियाँ करते हैं, उन सबको पकड़वा देने की आदि बातें कहता हुआ, साथ चलता रहा।

इस खबर के पहुंचते ही नौकरों पर उसकी धाक जम गयी। यह जान कर, वह एक और उलझन में फँस गया कि केवल भय से ही ज़मींदारी का काम संभव है। मिल्कियत को बढ़ाते रहने की चाह में ही मन फँस गया न ? सम्पत्ति से बिलकुल अरुचि होने पर भी सम्पत्ति ही उसकी सारी शक्ति को बनाये रख सकती है— यह सोचकर वह घबरा गया। अपने तथा औरों के बीच जब तक सम्पत्ति खड़ी रहेगी, तब तक किसी भी नाते-रिश्ते की संभावना नहीं। सम्पत्ति के बराबर बँटवारे से भी इस नाते के प्रश्न को सुलझाया नहीं जा सकता। क्योंकि भारतीपुर में सम्पत्ति पर ही सभी नाते खड़े थे। या तो वह मालिक बनकर रहे, या असामी, या व्यापारी, या मंजुनाथ का दलाल, या सब-कुछ छोड़कर अवधूत बन जाये। आख़िरी बात को छोड़कर बाक़ी सभी अवस्थाओं में सम्पत्ति के द्वारा ही नाते जुड़ सकते थे। ज़मींदार बनकर मानवीयता खो दे; असामी बनकर नीम-ज़िन्दगी बसर करे, या व्यापारी बनकर काला धन्धा करे। सभी नाते-रिश्तों में

सम्पत्ति ने जड़ें जमा रखी थी, और मंजुनाथ का दूत भूतनाथ इसकी परवरिश करता है।

लोगो के भीतरी जीवन को समझने की इच्छा हुई। शीनप्पा जैसा दिखावटी सज्जन भी चोरी करता है; इस भारतीपुर में सिर्फ मातंगों को कई गुप्त रास्ते मालूम हैं। भूतनाथ की हदबन्दी से डरने वाले ये लोग भी नीति-नियमो को लाँघकर गुप्त रास्तो को ढूंढ लेते हैं—इस बात ने जगन्नाथ के विचारो को नया कोण दिया।

सभी नौकरों का मिस्त्री बना हुआ जनार्दन सेट्टी नामक एक बाँका जवान था। मिस्त्री होने के कारण खुद हाथ गन्दे नहीं करेगा, इसे जताने के लिए वह दायें हाथ में घड़ी बाँधता है। खाकी पेंट, चमकीली टेरिलीन की शर्ट, जेब में पेन, सिगरेट, दियासलाई, तिरछे बाल काढे, बम्बई शहर का वर्णन करने का उसका ढँग, मजदूरनियो पर डोरे डालकर उन्हें लुभाते हुए उनमें होड़ उत्पन्न करना—इन सबके कारण वह दक्ष मिस्त्री कहा जाता था। वेश-भूषा, बातें करने का शहराती लहजा। लेकिन माथे की अमिट मुद्रा ऐलान करती थी कि वह दक्षिण कन्नड जिले का देहाती है।

एक दिन जगन्नाथ को इस हम-उम्र जवान से बातें करने की इच्छा हुई। नौकरो को काम का निर्देश करते खड़े उसको बुलाया। मालिक की हाँक सुनकर मुँह का सिगरेट फेंककर, आये सेट्टी को अपने बग़ल के लकड़ी के कुंदे पर बैठने के लिए कहा।

सेट्टी सविनय खड़ा रहा। जगन्नाथ ने कहा, 'कोई बात नहीं, बैठिये।' सेट्टी बैठा नहीं।

'आप बता रहे थे न शीनप्पा की—उसके कितने बच्चे हैं ?'

शीनप्पा के पकड़े जाने की बात शायद सेट्टी जानता होगा। अपने असामी के पकड़े जाने का उसे डर हुआ होगा।

'कहाँ तक पढ़ा है ?'

'मिडिल स्कूल किया है, सर !'

बात आगे बढाने के लिए कुछ न सूझने के कारण जगन्नाथ चुप रहा सेट्टी ने ही झेंपते हुए कहा, 'शीनप्पा को मैंने भी डाँटा है ' आपने

पूछा, उसके कितने बच्चे हैं ? तीन लड़केऔर तीन लड़कियाँ। पहली वेटी यहीं काम करती है; मर्द को छोड़ कर आयी है। दूसरी, वाग़ में घास लाती है न कावेरी—वही। तीसरी भी यहीं काम करती है। गंगप्पा को छोड़-कर वाक़ी दो वेटे अभी छोटे हैं। वाल-बच्चों वाला है वेचारा। आप न होते, सर, तो काम से हाथ धो वैठता।'

शायद सेट्टी के लिए जगन्नाथ एक कौतूहल-भरी पहेली था। पर शीनप्पा की परिवारिक हालत को जानने की जगन्नाथ की इच्छा जान कर ही दूर खड़ा हुआ सेट्टी कुछ पास आया था। उसके पास आने के लहजे ने जगन्नाथ को पशोपेश में डाल देने पर भी सेट्टी की ज़वान को ढील देने के लिए जगन्नाथ ने प्रतीक्षा की। वह कहने लगा, 'इस शीनप्पा की वात छोड़िये, सुना है कि इसका एक भाई अपनी वहू को ही भगा ले गया था। वहू भी कुछ कम नहीं थी—हर किसी के लिए टाँग उठाने वाली !'

'हाँ ! ऐसे कितने ही लोग होते हैं।' जगन्नाथ ने कहा।

'उस वात को छोड़िये, सर ! इस शीनप्पा के वारे में कहूँ, तो आपको विश्वास न होगा। जानते हैं, उसने अपनी वड़ी वेटी को ही रख लिया है। नहीं तो वेटी से मर्द का घर क्यों छुड़वाता ? दूसरी वेटी कावेरी ,जो है—शीनप्पा ने उसकी शादी अभी क्यों नहीं की ?'

हँस-कर सेट्टी ने कहा था, 'शीनप्पा वड़ा लालची है, सर ! पाँच सौ रुपया लिये विना लड़की देने के लिए तैयार नहीं। कमाने वाली वेटी, फिर देखने में भी अच्छी है। हरामज़ादे को घमण्ड है—वस।'

सेट्टी और भी आत्मीय वनने लगा था।

'असल में लोगों के चाल-चलन ठीक नहीं, सर ! दूर के पहाड़ देखने में सुन्दर वाली मिसाल है। पास से देखने पर ही पता चलता है। काला अक्षर भैंस वरावर। हरामज़ादों में ज़रा भी शील नहीं है। खास वेटी को ही रख लेते हैं। वहू को रख लेते हैं।'

शास्त्री की वेइज़्ज़ती की वात शायद इस सेट्टी ने सुनी होगी। वह वड़ी संजीदगी से वोला, 'शास्त्री को आपने अच्छा पानी पिलाया, सर ! आपके आने के पहले उसकी शान देखनी थी। वह क्या कम है, सर ! वह वीवी वेचारी सिर्फ़ नाम के लिए है। गाँव-भर में कानाफूसी

होती है कि उसने खास अपनी सास को ही रख लिया है। बड़ा बेटा सास से ही पैदा हुआ है। बेचारी बेटी मुँह पर मोहर लगाये सब सहती बैठी है। और कर भी क्या सकती है, भला ?"

घर आते ही जगन्नाथ, बौराया जैसा चुपचाप बैठ गया था। भीतर के जीवन को देखने चला, तो हर-एक की जिन्दगी कितनी उलझी हुई है ! मंजुनाथ के गर्भ मे कितने मंगल-सूत्र बचे हैं ! जीवन की सफलता से कितने घोर रास्ते हैं !

सेट्टी की आत्मीयता से जगन्नाथ और एक चक्कर में फँस गया। इस वार्तालाप के दूसरे दिन उसका कमरा झाड़ने तिम्मी के बदले शीनप्पा की दूसरी लड़की कावेरी आयी थी। गोल-मटोल लड़की। जघे खुले। चिथड़ा पहन-कर जूड़े मे गुलाब खोंसे हुए थी। नखरे के साथ झुक-कर पलँग के नीचे झाड़ू लगा रही थी। बाग़ मे काम करते समय भी उसी नखरे के साथ सहेली से बातें करती हुई बेकार ही आँचल सँवारती रही थी।

जगन्नाथ को उसके प्रति ललक हुई थी। पर अपने वर्ग की लड़की की चाह जैसी नही। उसके साथ क्षणिक देह-तृप्ति से आगे कुछ सम्भव ही नही था।

एक दिन जब वह कमरे में आयी तब जगन्नाथ आईने के सामने खड़ा हजामत बना रहा था। उसके पीछे ट्रंक पर दस रुपये का नोट था। आईने में वह दीखता था। बड़ी फुर्ती से झाड़ती हुई, कावेरी नोट के पास जाकर दो पल ठिठककर, ट्रंक के आसपास झाड़ी हुई जगह को ही बार-बार झाड़ती रही। जगन्नाथ मुँह में क्रीम लगाकर आईने में निरीक्षण करने लगा कि देखें वह आगे क्या करती है ? कावेरी तीसरी बार झुकी। आईने की ओर देखा। बेशक उसको मालूम हुआ ही होगा कि वह सब-कुछ देख रहा है। उसने देखा ही होगा कि भले ही मुँह में क्रीम लगाने में हाथ व्यस्त हों, पर आँखें उसी के हाथों पर जमी थी। सहसा नोट उठाकर बड़ी सहजता से उसने कमर में खोंस लिया। और, आँचल को पूरा खिसका कर स्तनों को खोल दिया। फिर यों ही झाड़ू लगाती हुई पास आयी। उसकी कुर्सी के नीचे झाड़ने के बहाने अपने बायें स्तन को उसने

जंघा में दबाया। फिर आईने की खिड़की की धूल झाड़ने के बहाने, पीठ के पीछे जगन्नाथ के बदन से सटकर झुकी—भरे हुए स्तनों से उसके गाल को दबाती हुई।

जगन्नाथ चुप बैठा रहा। जी में आया, कह दे कि क्षमा कर, पर कह नहीं सका। पसीने में नहाता बैठा रहा। फिर एक बार लगा कि मार्ग-रेट के साथ सेब के पेड़ के नीचे हार जाने का कैसा आभास हुआ था। लगा कि वह वास्तविक पुरुष नहीं है? कावेरी उसी नखरीली चाल से कमरे के बाहर चली गयी थी। जगन्नाथ संभलकर उठ खड़ा हुआ और सीधे स्नानघर में घुस गया।

दूसरे दिन से जब कावेरी झाड़ने आती, तब जगन्नाथ कमरे में नहीं रहता था। अपने से बतियाने आनेवाले सेट्टी से वह दूर रहने लगा। लोगों को समझने के लिए निकलना, दलदल में फँसने के बराबर है। बेटी को रख लेने वाला बाप; बहू को रख लेने वाला ससुर; सास को रखने वाला दामाद; बीवी को पीटने वाला पति; यह कमज़ोरी; यह रोग; यह घटियापन; रोज़मर्रा के सुख-दुख—इन सबको देखने से लगता है कि सारे ऐतिहासिक परिवर्तन ऊपरी सतही घटनाएँ मात्र हैं। गहराई में कभी कुछ परिवर्तन होता ही नहीं। जीवन में सहे जाने वाले दुख-सुखों का स्वरूप यदि सदा-सर्वदा यही रहता हो, दिन और रात का भ्रमण इसी तरह होता हो तो, किस क्रिया से किसको सिद्धि प्राप्त हो सकेगी? वह कैसे मान ले कि उसमें और उठी चाह कुरेदकर निर्वीर्य बनाकर जाने वाली, कावेरी-जैसियों के जीवन का परिवर्तन, उन्हें ठीक कर देगा?

कई दिनों तक फिर जगन्नाथ सोचता रहा। बाग़ के काम से मन उचट गया था। घबरा गया था कि लोगों के भीतरी जीवन को जानने की जिज्ञासा न जाने कहाँ-कहाँ लिये जा रही है! लगा, असल में जीवन निरर्थक है। लेकिन अपने अतीत के आलसी जीवन को याद करके फिर से अपने को उसी माद्दे पर आते देख और भी घबराहट हुई। मन पक्का कर लिया कि समाज के भीतर रह कर ही, यदि वह सक्रिय नहीं हो सका तो जीना-मरना बराबर है।

एक शाम मन्दिर के पीछे के पत्थर पर बैठा था। राष्ट्रपति चले गये थे। सहसा शाम की पूजा का घंटा सुनायी पड़ा। तब एकाएक जगन्नाथ को सूझी कि मातंगों को मन्दिर के भीतर ले आया जाये। सदियों की वास्तविकता को डग-भर में बदला दिया जाये। मंजुनाथ के विश्वास को तोड़ दिया जाये। अपने जीवन के लिए, भगवान के बजाय अपने को ही उत्तरदायी बनाने के संकट से लोगों को परिचित कराया जाये।

उठकर सीधा लम्बे डग भरते हुए घर चला आया था। मातंगों के दस युवकों को चुनकर उनके साथ धीरे-धीरे बातें करनी शुरू की थी।

उस दिन से हर साँझ, दूर पर छायाएँ दिखायी देने लगीं; पास आतीं, 'मालिक' कहतीं। जगन्नाथ 'आओ' कहता। वे आँगन के छोर तक ही आकर रुकतीं। जगन्नाथ बातें करता। सोचो, निश्चय करो। उठो। पर बातें अभी उनके मन में उतरी नहीं थीं। मंजुनाथ की जकड़ से चीरकर उन्हें किस तरह बाहर लायें।

5

दूसरे दिन तड़के ही उठकर जगन्नाथ अपने घर के पिछवाड़े चला गया। पहाड़ी पर घर था। घर के पीछे और एक पहाड़ी थी जहाँ उसका काजू का बाग था। जगन्नाथ जानता था कि आधे काजुओं की चोरी होती है।

काजू की पहाड़ी के सिरे पर चढ़कर सवेरे के समय भारतीपुर को देखने में उसे बड़ी खुशी होती थी। घनी हरियाली से भरे कटहल के पेड़, बौर-लगे आम के पेड़, घाटियों में डोलते खड़े सुपारी के बाग, बीच में खपरैल के घर। ऐसे गाँव, जो न बस्ती हैं, न शहर। पूर्व में साँप की भाँति टेढ़ी-मेढ़ी बहने वाली नदी, बगल में मंजुनाथ के मन्दिर का गोपुर, किसी भी ऊँची जगह से दीख पड़ते हैं। मन्दिर की बगल में ही भूतनाथ की पहाड़ी—जिनका मासिक धर्म नहीं रुका हो, ऐसी स्त्रियाँ इस पहाड़ी को चढ़कर भूतनाथ के मन्दिर नहीं आ सकतीं।

अमावस के मेले में क़रीब एक महीना बाक़ी है। तब

तथा मातंगों को तैयार करना होगा। देश-भर के भक्त आयेंगे। कल-परसों तक समाचारपत्रों में अपनी चिट्ठी आयेगी। रायसाहव को आज ही बता दिया जाये।

पहाड़ी पर जगन्नाथ घूमता रहा। जाड़ा था, कत्थई रंग का स्वेटर पहना हुआ था। मार्गरेट का दिया हुआ स्वेटर। सारे भारतीपुर पर छाया हुआ कुहरा, सवेरे के सूर्य-ताप से ढलता जा रहा था। काजू की पहाड़ी के सिरे से गाँव वड़ा सुन्दर दिखायी देता है। चमकते हुए खपरैल के घर, हरियाली, जहाँ धूप पड़ी हो वहाँ आईना वनी हुई नदी। पहाड़ी पर हरी-भरी घास में वँधे छोटे-छोटे मकड़ी के जालों पर पड़े ओस-विन्दु; सूर्य की किरणों से वनाये कोण में चमकते ये ओस-रत्न!

पहाड़ी से उतरकर गलियों में चलते समय मात्र मंजुनाथ के अन्नसत्र में केवल तोंद वाले लोग; वस आने पर भी गली छोड़कर न उठने वाले पुष्ट कुत्ते; मन्दिर के अश्वत्थ वृक्ष में वेधड़क हाथ से केला लेने वाले वन्दर; सिर्फ़ आकाश में सदा स्वस्थ रहने वाले पक्षी। ऊपर से देखने पर कुछ और ही दीख पड़ता है; मूत्र की वू से भरी गलियों में चलते समय कुछ और ही।

पहाड़ी से उतरकर आते समय प्रभुजी की चलायी जाने वाली 'मंजुनाथ वस सर्विस' की पहली वस शिवमोगा को जाती हुई नज़र आयी। चौकड़ी भरते हुए पहाड़ी से उतरा। देह गर्म थी। नहा कर भोजनशाला को आया। क़रीव वीस पत्तलों के सामने कुछ परिचित और कुछ अपरिचित वैठे थे। यदुनाथ के दर्शन के लिए जाने कहाँ-कहाँ से आये हुए लोग। सभी दीन अपने ही घर आयेंगे, या अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित धर्मशाला में जायेंगे। पैसे वाले लोगों को रास्ते में ही ब्राह्मण वुक कर लेते हैं।

चुडवे की उप्पुमा खाकर, कॉफ़ी पी कर जगन्नाथ वाज़ार को निकला ...रायसाहव से मिलकर वता ही देना होगा।...आप वहुत वुझ गये हैं... इसके द्वारा आपको भी चेतना आयेगी...मातंगों के वढ़ने वाले पहले क़दम में हम सव मरकर जियेंगे। वरना मंजुनाथ के कुएँ में इसी तरह सड़ते रहेंगे। रायसाहव, क्या आपको नहीं लगता कि गाँव सदियों से सड़ता जा रहा है?

जगन्नाथ को लगा कि इधर यह मन-ही-मन बहुत बड़बड़ाता है। मातंगों के साथ बात संभव हो तो शायद यह बड़बड़ाना रुक जायेगा। रास्ते-भर यंत्रवत् प्रणाम करता चला। सार्वजनिक चौपाल में बैठे नाग-राज जोयिस को अनदेखा कर रथ की गली से रायसाहब के घर की ओर आगे बढ़ा।

रथ की गली में मुड़ने की जगह सब्जी की दूकान, अर्थात् ककड़ी, लौकी, मीठा कद्दू, नारियल, तरह-तरह के केले, कुंदरू आदि। यह सोचने का किसी ने प्रयत्न ही नहीं किया कि इस मिट्टी में और क्या उग सकता सकता है ? जैसे ही सुपारी का भाव बढ़ गया, धान की खेती सुपारी के बाग में परिवर्तित होने लगी। एक ओर मंजुनाथ, दूसरी ओर सुपारी; बस और कुछ नहीं। आश्चर्य कि सब्जी की दूकान में सूखती हुई एक फूलगोभी थी। कौतूहल से जगन्नाथ ने दूकानदार से पूछा, 'कहाँ की है यह ?' छीट की तहमद पहने सब्जी वाला अदब के साथ उठकर, खाली[1] थूककर, सिर पर बँधे कपडे को कन्धे पर डाल कर भौंचक्क खड़ा रहा। बैंच पर बैठने को कहना, क्या ठीक होगा—इस दुविधा में पड़े सब्जी वाले से मुसकराते हुए जगन्नाथ ने फिर कहा, 'मैंने पूछा कि यह फूलगोभी भारतीपुर में कैसे आयी ?'

'शिवमोगा से कभी-कभी मँगवाता हूँ, साब। यह, मटर, गाजर—वैदिक लोग ही खरीदते हैं, बाकी कोई इन्हें नहीं खाता।'

जगन्नाथ की मुसकराहट गहरी हो गयी। 'अच्छा, ठीक है।' कहकर आगे बढ़ा। दुकान पर 'श्री मंजुनाथ प्रसन्न ब्राह्मण युवजन सभा' का बोर्ड टँगा था। इंग्लैंड से लौटे शुरू-शुरू में कौतूहल से जानने की कोशिश की थी कि इस सभा में चलता क्या है ? कुछ-कुछ अमीर बने हुए लोगों के बेकार बच्चे वहाँ मिलते हैं। नाश्ते के बाद सारी दोपहरी ताश खेलते हैं। नाम के लिए कैरमबोर्ड है, खेलने वाले नहीं। दस-बीस फटे उपन्यास हैं—बस। लकड़ी के बक्से में ये किताबें, बक्से के ऊपर कैरमबोर्ड है। कूड़े से भरी जमीन पर ताड़ी का बोरिया, उस पर बच्चे। दीवार पर मुकुट पहने मंजुनाथ का मामूली

1. पान का बीड़ा।

में सिर के वालों को हिमालय तक विखेरे खड़ी भारतमाता, सूत कातते हुए गांधी।

नाली वदवू-भरी रहने पर भी, रथ की गली में प्रतिदिन सवेरे और शाम पानी छिड़ककर स्त्रियां रँगोली पूरती हैं, क्योंकि कभी-कभी पालकी में मंजुनाथ जी का आगमन होता है। कुछ घरों को सुपारी के गुच्छे, धान की वालियों से सजाने की चेष्टा की जाती है। अमावस का मेला निकट आने के कारण धुले हुए काले चौपाल, आटे की सफ़ेद रँगोलियां, चूना-पुती दीवारें। चूर्ण से महकने वाली आयुर्वेद ओझा की दूकान के वेंच पर कुछ वूढ़े। श्याम ओझा ने उठकर प्रणाम किया। दीवार पर सहसा 'वच्चे, दो ही अच्छे' का विज्ञापन। करीने से सजाये गये 'निरोध' के डिव्वे। अभी तक भारतीपुर में विजली नहीं। गाँव के एकमात्र जैन, विशाल ललाट वाले जिनेन्द्र की दूकान में एक पर एक लदे ताँवे के वर्तन, स्टेनलेस लोटे और थालियाँ।

जगन्नाथ हर वार जव भी इस गली में आता है तो कुछ नवीनता की तलाश करने लगता है। इस वार दीख पड़ा कि हर दूकान में नंगे वदन मंजुनाथ जी के सामने हाथ जोड़े खड़े राष्ट्रपति की आर्ट पेपर पर छपी फ़ोटो टँगी है। क़ीमत पचहत्तर पैसे। मंदिर की आयोजक मंडली ने ही वेंगलूर से छपवाया था।

जगन्नाथ रायसाहव के घर के सामने खड़ा हो गया। चौक की अपनी खद्दर की दूकान में अभी रायसाहव नहीं पहुँचे होंगे। अभी नौ भी नहीं वजे। अँधेरे मँझघर में अभी रायसाहव को हाँक लगायी। अभी चूल्हा न सुलगाये जाने के कारण धुआँ नहीं था। भोजनशाला से मुंह पोछते हुए रायसाहव के वदले कोई और ही आये। मँझली अवस्था के दुहरे वदन के आदमी। ज़री का दुपट्टा कन्धे पर। रूमाल से मुंह पोंछते आने वाले उन सज्जन के साथ टेरिलीन की साड़ी पहने एक लड़की थी। वह भारतीपुर की नहीं लगती थी। रायसाहव के वेटे रंगण्णा के साथ वे दोनों उसकी ओर देखे विना वाहर चले गये।

रसोई से ही भाग्यम्मा, 'उडुपा नहीं मिल पाये तो राम जोयिस से कहना कि मैंने भेजा है। वे ही तर्पण, स्नान, देवता-दर्शन वग़ैरह करा

देंगे'—ऊँची आवाज में कहती हुई, बाहर आकर जगन्नाथ को देखकर एकदम झेंप गयी। बैठने के लिए कहकर, भीतर से काँसे के गिलास में कॉफी लाकर दी। दो-एक पल किसी ने मुँह नहीं खोला।

फिर भाग्यम्मा ने ही बात शुरू की। 'सवेरे ही बस से शिवमोगा गये। कल शाम तक आएँगे।'

चौकी पर बैठे हुए जगन्नाथ ने कुछ नहीं कहा।

'कहते थे, मैय्या; एक साल इसे शिवमोगा में ही टीचर रहने दे। वहाँ दोस्तों के यहाँ रहने का प्रबन्ध कर आयेंगे। उन्हें कुछ दिये बिना, उनके घर खाना क्या संभव है? जब मैं पूछती हूँ कि उसके वेतन में क्या बचेगा, तो यह जवाब ही नहीं देते। यदि डी० ओ० से बात करने के लिए कहती हूँ, तो एकदम काटने दौड़ते हैं। खुद कहा करते हैं कि शिक्षामन्त्री अपने साथ जेल में थे। क्या लाभ भला! इनके इशारों पर नाच-नाचकर मैं तो थक गयी हूँ। जग्गू भैया, तुम्हारी माँ जिन्दा होती तो वह ही बताती। किसी से भी चाहे पूछ लेना कि जब इन्होंने अपनी कपड़े की दुकान में आग लगायी थी तो अपने पीहर से मिली रेशम की साड़ियों को, इनकी बातों में आकर आग में डाला था कि नहीं? अब बेटी बिना वेतन के घर बैठी है। गाड़ी जो चलानी है—क्या करूँ भला! मैं हर रोज़ इनसे कहती हूँ: एक भैंस दिलवा दो, दूध बेच कर गुज़ारा करूँगी, अपना दर्जा, अपनी इज़्ज़त देखते बैठेंगे, तो बस एक दिन पेट पर गीला कपड़ा डाल देना पड़ेगा। जग्गू भैया, अब तुम्ही को मेरी लाज रखनी होगी। बचपन से तुम्हें जो देखा है इसलिए बेहया होकर कहती हूँ। अभी जो आये थे वे चिकमगलूर के हैं। ज्यादा-से-ज्यादा मैं दस रुपये कमा सकूँगी। तुम्हारी कसम—इन्हें लाने के लिए मैंने रंगण्णा को बस के पास भेजा नहीं था। उनको धोखा देने की बात मैंने सपने में भी नहीं सोची, पर करूँ तो क्या भला?'

अपनी सफाई देने की भाग्यम्मा की कातरता दुस्सह थी। भीतर किवाड़ के पीछे खड़ी सावित्री को माँ को इशारा करते-करते परेशान होते देख, बात बदलने के लिए जगन्नाथ ने कहा, 'मैं इसलिए आया," बार, अपने दफतर में हिसाब-किताब लिखने के लि[illegible]

रंगण्णा हाई स्कूल पास करके घर में ही बैठा है। उसी को क्यों न यह काम दें ? आप ही से पूछने के लिए यहाँ तक आया था। मुझे भी एक भरोसे का आदमी चाहिए। अच्छा, चलता हूँ।' कहता हुआ, उठ खड़ा हुआ। 'जल्दी ही भेज दीजियेगा। मुझे भी ज़रूरी काम से जाना है !' कहकर तुरन्त वहाँ से चल पड़ा।

सहसा जगन्नाथ के सामने अँधेरा छा गया था। उसे लगा कि जीने की क्रिया में कैसे सारे सपने ढह जाते हैं ! प्रायः कोई भी फूल न उगाने वाली ज़मीन है यह। भूतनाथ के प्रसाद-रूपी सिन्दूर को कान में लगाये दीवरों का एक समूह पहाड़ी से उतरकर सामने पड़ा। केवल सुपारी यहाँ फूल उगाती है, हाथों में, कानों में, सिर पर, डोलते हुए ऊँचे पेड़ों पर। मन्दिर के लिए शुभ होकर आये पुरुषों के चेहरे प्रसन्न थे।... मैं जैसे सोचता हूँ, वैसे वे मंजुनाथ के प्रति सोचते ही नहीं। वर्षा होने की बात, न होने की बात, भैंस के पड़िया होने की बात, लगान का बक़ाया बढ़ने की बात करते हैं ? फिर भुला देते हैं। लड़ते हैं। मनौती करते हैं। उन्हें जगाने के लिए मैंने हाथ लगाया है। सिर पर पाखाना ढोनेवाले, काले बदन के लोग भी क्या मेरे साथ, हाथ लगायेंगे—यही देखना है।

चौक तक जाकर टेढ़ी-मेढ़ी गलियों के रास्ते से घर की ओर चला। रास्ते में नागराज जोयिस का घर। सुपारी थूककर दुपट्टे को संभालते हुए उन्होंने हाँक लगा ही दी। सोने में गुँथी रुद्राक्ष की माला, अन्दर से निकालकर ओढ़े हुए दुपट्टे के ऊपर डाल लिया। एक पान उठाकर उसको कतरते हुए बोले, 'उस दिन स्कूल में आपने जो रसेल के बारे में कहा था—वही मैं सोच रहा था। मेरा विचार है कि हमारे यहाँ मन्दिर, अन्धविश्वास आदि वेदकाल में थे ही नहीं। सवितृदेव से, धी-शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करने वाले हमारे सम्प्रदाय में मन्दिर, पूजा, व्रत आदि के लिए तनिक भी जगह नहीं। आपने महन्तगिरी छोड़ दी है। आप मेरी बात समझ सकते हैं, इसीलिए कहता हूँ—मैं सवितृदेव की ही प्रार्थना करता हूँ, मुझमें धी-शक्ति प्रेरित कर दे। धी-शक्ति से क्या मतलब है ? वैज्ञानिक ज्ञान, आपका रसेल जो कहता है—वही।'

अण्डे से तो मुर्गी की ही भाँति अपने विचारों में डूबे हुए जगन्नाथ को लगा, इतनी बढ़-चढ़कर बातें करनेवाले जोयिस को बता दूँ—देखूँ ?

'अन्धविश्वास जब गलत लगते हैं, तो उसके विरुद्ध हम-आप जैसों को कुछ करना चाहिए न, जोयिस जी ?'

जोयिस को कुछ और बात का ध्यान आया।

'अरे ! कल आपको कॉफी पिलाये बिना भेज दिया था।' 'नागमणी, नागमणी !' कहकर पुकारा। माँझघर से चूड़ियों की हलकी आवाज आयी।

'महाजन आये हैं, कल वह खाली ही चले गये थे।' फिर जगन्नाथ की ओर मुड़कर कहा, 'नागमणी मेरी बहू है। शिवमोगा में वकील है न मेरा बेटा। उसी की पत्नी ! शिवमोगा में किराया ज्यादा है, कमाई पूरी नहीं पड़ती। मेरी पत्नी के चल-बसने के बाद यहाँ आने-जाने वालों के लिए रोटी सेंकनेवाला कोई नहीं था। मेरी छोटी लड़की की अभी दस की आयु थी। इसलिए नागमणी यहीं है। क्या करें भला ! श्रोत्रियों का खानदान होने के कारण, लोग ढूँढते हुए यहीं आते हैं। घर में पन्द्रह-बीस यात्री आ जाते हैं। बड़े बेटे को दुनियादारी के लिए छोड़ रखा है। और एक को वैदिक धर्म में लगाया है। शंकर सब जानता है—ज्योतिष, वेद, पूजाविधान सब-कुछ। परम्परा जो चली आयी है उसे छोड़ा भी कैसे जा सकता है ? अगली बार उसके हाथ पीले करने के बाद नागमणी को उसके पति के पास शिवमोगा भेज दूँगा।'

जगन्नाथ ने जम्हाई को बड़ी कठिनाई से रोका। जोयिस के साथ बात करना बेकार है। समाचारपत्र उठाकर कुछ बताने के लिए जोयिस जी कुछ ढूँढ रहे थे। उसे चौपाल में यह जाहिर करने के लिए बिठा लिया था कि महाजन अपने घर आते रहते हैं। इन लोगों के साथ मुलाहजे में ही अपनी कमजोरी है।

केले के दो पत्तलों को उसके तथा अपने ससुर के सामने रखने के लिए नागमणी झुकी। भरी हुई छाती को छिपाये ब्लाउज। पतली कमर, कत्थई रंग की मामूली-सी साड़ी में प्रतिमा-सी गढ़ी आ गेहुँआ रंग, बीचोंबीच माँग काढ़कर बालों को कसकर जड़ा

हुआ था। माथे पर लम्बा सिन्दूर का टीका। मंगल-सूत्र को छोड़कर उसके बदन पर कोई गहना नहीं था। पत्तल पर चक्कली डालकर ऊपर उठते समय, चोली न पहने होने के कारण उसके स्तन ब्लाउज़ में उभर-कर नाच उठे। पर उसकी हर अदा से व्यक्त हो रहा था कि वह अपने आकर्षण से बिलकुल बेखबर है। उसका झुकना, ठहरना, चलना, आँखें घुमाना, द्वार के पास ताकते ठहरना—सभी रोज़मर्रा के काम करने की भंगिमाएँ थीं, सौन्दर्य की अभिव्यक्तियाँ नहीं। देहरी के पास बिलकुल अपने सामने खड़ी नागमणी त्रिभंगी मुद्रा में खड़ी है। शरीर में खिलने वाले सौन्दर्य की खबर सदा चूल्हे में लगी रहने वाली नागमणी को नहीं। खाना पकाने के लिए ही जीने वाली ये औरतें; गू उठाने के लिए ही जीनेवाले मेहतर; और बीच में भोजन डकारते हुए चौपालों में बैठे रहनेवाले भारतीपुर के नागरिक—जगन्नाथ के रोएँ-रोएँ से रोष फूट पड़ा।

देहरी के पास चक्कली का डिब्बा लिये खड़ी नागमणी के चेहरे को देखा। चिकना, कोमल गाल। भरे हुए होंठ, आँखों ने जब उसकी बड़ी-बड़ी आँखों का शोध किया तो वहाँ अपनी चक्कली खत्म होने पर दूसरी चक्कली परोसने की प्रतीक्षा के बिना कुछ दिखायी नहीं पड़ा। उसके अन्तराल के दुःख को भेदने के लिए और भी आँखें गड़ाकर देखा। पर वह मानो शून्य को ताकती हुई पत्थर की तरह खड़ी थी। लगा कि अपनी आर्तता अभी उसके मन तक नहीं पहुँच पायेगी। वैयक्तिक आकांक्षा से रहित, अपने प्रेम से भी, उसकी सुन्न पड़ी जीवन-शक्ति को खिला पाना असम्भव जानकर जगन्नाथ खुभ गया। ऐसी स्त्रियाँ खिल न पायेंगी तो लगा कि अपना कार्यक्रम बेकार है। पर उसके सारे अंग क्यों इतनी मतवाली छटा से खिल रहे हैं ?

'अब मुझे चक्कली नहीं चाहिए।' प्यार-भरी नजर से नागमणी को देखते हुए कहा।

'और एक लीजिये।' जोयिस ने आग्रह किया। कॉफ़ी लाने नागमणी भीतर गयी। जगन्नाथ को लगा कि कितनी ही उत्कट इच्छा क्यों न हो, औरों के दुःख को अपना बना लेना सम्भव नहीं। कॉफ़ी लाकर, फिर

झुककर जमीन पर रखी। जब सारा गाँव जागेगा तब शायद वह भी जीवित हो जायेगी। नागमणी चली गयी। जोयिस ने उठने नहीं दिया।

फिर मन्दिर की बातें। सवितृ से अभिमुख प्रार्थना करने वालों के लिए मूर्ति-पूजा उचित नहीं। जोयिस और वर्तमान प्रधान पुजारी सीतारामय्या—दोनों एक ही बिरादरी के हैं। जोयिस के पिता के पिता और सीतारामय्या के पालक पिता के पिता दोनों सगे भाई थे। सीतारामय्या दत्तक पुत्र था। इसलिए वास्तव में मंजुनाथ जी की पूजा का हक उनका है, सीतारामय्या का नहीं। तिस पर सीतारामय्या के बेटे गणेश में शील नहीं। एक बार वह पागल भी हो गया था। पर अपना बेटा ऐसा नहीं। सारे वेद उसकी जिह्वा पर हैं। जोयिस नालिश करने की सोच में हैं।

अटारी पर नसैनी के गिरने की आवाज़ हुई। मांझघर में जोयिस की बेटी किसी दूसरी लड़की के साथ चौसर खेल रही थी। जोयिस के बेटे ने दौड़ते हुए आकर बताया, 'उन्होंने कहा कि वे सब आज मन्दिर में ही खायेंगे। शाम को हमारे यहाँ। स्नान, पूजा आदि सभी करवाया। गाँव घुमाकर आऊँगा।'

फिर रास्ते में खड़े यात्रियों के साथ चल पड़ा। जोयिस ने जगन्नाथ को छोड़ा ही नहीं। बायाँ हाथ जमीन में टेके, दायें हाथ से मुट्ठी बाँधते-खोलते हुए, छाती ठोकते और भी करीब आते हुए कहा, 'आप महन्त रहते तो कुछ-न-कुछ फ़ैसला हो जाता। बताइये, अब मैं क्या कर सकता हूँ? भारतीपुर वालों को अदालत की सीढ़ी नहीं चढ़नी चाहिए। कहते हैं कि मंजुनाथ ही सारे फ़ैसले सुनाता है। पर क्या मैं इसके भरोसे हाथ बाँधे बैठ जाऊँ? अपने बेटे से कहा : देख लो कि क़ानून क्या कहता है—नालिश कर देंगे। मेरा सवाल सिर्फ़ इतना ही है कि इतने प्रसिद्ध मन्दिर में पूजा-अर्चना आदि विधि-विधान के अनुसार चलनी चाहिए या नहीं? प्रभु जी मेरी बातों को सुनते ही नहीं। कोंकणी जो ठहरा, उसका क्या बनता-बिगड़ता है, भला? राष्ट्रपति के नाम मैंने एक चिट्ठी लिख रखी है। कृपा करके जरा उसे अंग्रेज़ी में भाषांतर कर दें।'

जगन्नाथ ने न 'ना' कहा, न 'हाँ'! जोयिस अपनी ही धुन में बोलते जाते हैं। नागमणी को अपने स्त्री होने का भी गुमान नहीं

क्या ? यों ही देखती रही, चक्कली परोसने की धुन में। उसकी दृष्टि उसके भीतर कुछ न सुलगा सकी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में केवल शून्य समाया था। लम्बी पलकें झपकती रहीं। निहारते समय भी उसकी उपस्थिति की परवाह उसे नहीं थी। इसी तरह पचासों यात्री आकर खा जाते हैं। उसे देखते हैं। दुबारा उन्हें परोसने की प्रतीक्षा में उनके पत्तल, उनके हाथ, उनके मुँह, खाते हुए अघा जानेवाली उनकी आँखें, देखती खड़ी रहती है। उसकी चक्कली खानेवाले पचासों लोगों में, एक और वह—बस ! उसकी भरी जवानी कभी उसको नहीं झिझोंड़ती ?

नागमणी के बारे में और भी कुछ याद करने की कोशिश की। किसी ने उसके बारे में कुछ कहा था। जोयिस बातें करते ही जा रहे थे। उनकी लड़की की सहेली खेल खत्म करके चली गयी। लहँगा-ओढ़नी पहनकर 'सर-सर' आवाज़ आवाज़ करती हुई सीढ़ियाँ उतर गयी।

'इस सीतारामय्या ने क्या एक दगाबाज़ी की है ? आपकी माँ ने आपके नाम पर जो सोने का मुकुट बनाकर दिया, क्या आप समझते हैं कि उसके लिए दिया गया सारा सोना मंजुनाथ जी के सिर पर ही है ? बेटे की कण्ठी, बेटी और बीबी की पँचलड़ी, पटिका, चूड़ियाँ और झूमर के लिए सोना कहाँ से आया, पता है ?'

बातें करते-करते जोयिस बिलकुल पास ही आ बैठे थे। उसके कानों में बातें कर रहे थे। उनके पीले दाँत और लाल पत्थर की बुँदकी को जगन्नाथ ने घूरकर देखा। इनसे कुछ कहना बेकार है।

'देर हो गयी, जाना है।' कहकर उठ खड़ा हुआ। यह घड़ी सदा याद रहेगी : दोपहर, सुनसान गलियाँ, महामंगल-आरती के लिए बड़े घंटे का नाद। अँगड़ाई लेते हुए जब निकलने को था, तब अटारी की सीढ़ियों से सरपट उतरती हुई जोयिस की बेटी चिल्लायी : 'बापू, बापू, आओ, भाभी, भाभी...!'

जोयिस भीतर भागे। जगन्नाथ भी दौड़कर सीढ़ियाँ चढ़ा। अटारी की छत की बल्ली से लटकती, रस्सी में नागमणी फाँसी लगाये झूल रही थी, नीचे एक नसैनी पड़ी थी।

छत की बल्ली से नसैनी लगाकर जगन्नाथ झटपट चढ़ा, और रस्सी

काटकर जगन्नाथ ने धीरे से नागमणी को नीचे उतारकर जमीन पर सुलाया। गले में पड़े फन्दे को छुड़ाया।

'दौड़ो, जाकर डॉक्टर को लिवा लाओ।' उसने कहा। जोयिस फिर डॉक्टर के लिए भागे।

जगन्नाथ ने नागमणी का बदन छूकर देखा। गर्म लगा। अपना भ्रम तो नहीं? उसकी गरदन टूट गयी थी, नाक और मुंह से लहू बह रहा था। आँखों की पुतलियाँ ऊपर उठी थीं। उसे कृत्रिम साँस देने के लिए सभी उपायों का प्रयोग किया। पेट के बल सुलाकर दबाव डाला। मुंह में मुंह रखकर साँस फूंका। छाती मली। उसकी विकृत आँखों को बन्द किया। लड़की से पानी मँगाकर, उसका मुंह धोया—पर साईकिल पर आये डॉक्टर ने बताया, 'प्राण चले गये हैं।'

जोयिस सिर पकड़कर बैठ गये। अवाक् होकर मूक बैठे-बैठे जोयिस से क्या कहे, कुछ समझ न पाकर जगन्नाथ खड़ा रहा। डॉक्टर यह कहकर चला गया कि स्यूसाइड होने के कारण पुलिस को इत्तला देनी होगी। पोस्टमार्टम करना होगा।

जोयिस के घर-भर में लोग जमा हो गये।

'हाय, कितनी भली लड़की थी! जबान तक बिना हिलाये सारा काम संभालती रहती।' कहकर कुछ औरतों ने रोना शुरू किया। जगन्नाथ ने नागमणी के पति का पता पूछ लिया। नागमणी के पिता का पता पूछने पर पता चला कि माँ-बाप कोई नहीं है। किसी ने बताया कि भाई हासन के किसी होटल में बावर्ची है। उसके पति को तार देने के लिए, जगन्नाथ जोयिस से कहकर निकला। सीधा डाकघर जाकर, तार देकर अपने घर आया। खाने को 'ना' कहकर अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर लुढ़क गया। रोना चाहा, पर रो नहीं सका। लम्बी-लम्बी साँसें लेता हुआ वह साँझ की प्रतीक्षा करने लगा। दूर से मातंगों को आते देखा। लंगोट-मात्र पहने काले मुशुंड, बिखरे हुए बाल, किसी की प्रतीक्षा न करने वाली आँखें। आकर उनको बताया कि आज नहीं।

मौसी को मालूम हुआ होगा कि नागमणी की मौत के कारण उसे पीड़ा हुई है। मौसी ने कमरे में कॉफ़ी लाकर रखी। और जगन्नाथ के

जलते माथे पर हाथ रखकर देखा। फिर नीचे चली गयीं। मौसी जानती थीं कि बचपन में जगन्नाथ का मन क्षुब्ध होने पर कैसे उसे ताप चढ़ता था। इसीलिए, अब उनको चुपचाप जाते हुए देख कृतज्ञता से आँखें बन्द कर सो गया।

6

पहाड़ी के सिरे पर खड़े होकर जगन्नाथ ने भारतीपुर को देखा। लगा, कुहरे से ढँका बाज़ार मानो, नींद में हो। इसमें हलचल लाने की मेरी कोशिश अर्थहीन लगती है, मार्गरेट! मुझ लौंदे-से में तुम चोंच और पंजे की अपेक्षा करती हो!

जगन्नाथ पहाड़ी उतरकर आया। मुंह धो, कॉफ़ी पीकर सो गया। किसी के आने की खबर से नीचे उतरा। रायसाहब का बेटा रंगण्णा आया था। उसके हाथ में दो सौ रुपये थमाकर कहा, 'माँ के हाथ में देना। आज से ही काम पर आना।'

और एक महाशय खड़े थे। कोई रामकृष्णय्या, दुबला-सा आदमी, आठ बच्चों वाला। लगान न देने के कारण मन्दिरवालों ने खेत से बेदखल किया था। घर ज़ब्त किया था। जगन्नाथ ने अदालत जाने को कहा। रामकृष्णय्या बैठा रहा। 'मैं क्या कर सकता हूँ भला?' जगन्नाथ ने पूछा। रामकृष्णय्या ने याचना की कि प्रभुजी, मन्दिर के मुखिया से कहें। झुर्रियों से भरा चेहरा, थर्राती हुई आवाज़। जगन्नाथ परेशान हो गया। नालिश करता हो, तो पैसे देने की बात कही। रामकृष्णय्या ने इसका जवाब नहीं दिया। कहा, 'मेरे बाल-बच्चे हैं। मेरा हाथ मत छोड़िये।'

गर्म होकर जगन्नाथ ने कहा, 'अदालत जाना चाहिए, रामकृष्णय्या!' रामकृष्णय्या ने गहरी साँस भरकर, चिन्ता व्यक्त की कि 'कहीं रोज़ मिलने वाला मन्दिर का खाना रुक न जाये।' जगन्नाथ ने कहा, 'मेरे पास, लगान पर देने को कोई बाग़ नहीं। बिन तोड़ी हुई ज़मीन है। उसे दूंगा। थोड़ी-बहुत मदद कर सकूंगा। कल या परसों आइये। मेरी

एक चिट्ठी समाचारपत्रों में छपेगी। उसे पढ़िये।'

ऊपर जाकर जगन्नाथ ने सोचा, समाचारपत्र की बात रामकृष्णय्या से क्यों कही? क्या उस पर कोई असर होगा?...वी लिव इन अपेथी, मार्गरेट! हम सब जड़ हो चुके हैं। रामकृष्णय्या को प्रभावित करना बिलकुल असम्भव लगा।

इस प्रदेश में, कभी सुपारी की खेती करने के सपने भी न देखने वाले, केवल मातंग ही थे। गोबर उठानेवाले, पाखाना ढोनेवाले, केवल मातंग ही मंजुनाथ की पकड़ से छूट सकेंगे—इस विचार से जगन्नाथ को फिर से हौसला बँधने लगा।

मेज के सामने जगन्नाथ लिखने के लिए बैठ गया।

दोपहर का खाना खाया। ज़ीना चढ़कर अपने कमरे में गया। बिस्तर के नीचे नया प्रसाद, भूतनाथ की तावीज, पुड़िया में मंजुनाथ का सिन्दूर... हर रोज़ मातंग युवकों को रेत पर अक्षराभ्यास करते देख घबरायी हुई मौसी को इस मसलहत पर हँसी आयी। मौसी को विश्वास दिलाने के लिए कि भगवान उस पर प्रभाव नहीं डाल सकता, उसने प्रसाद और तावीज़ को बिस्तर के नीचे ही पड़ा रहने दिया। मातंगों से अभी जगन्नाथ ने मन्दिर-प्रवेश की बात नहीं कही है। अभी वे उस पर विश्वास नहीं कर पाये हैं। उनके निकट आने के प्रयत्न में ही उनको अक्षराभ्यास करा रहा है। रेत पर उँगलियाँ फेरते हैं। मालिक का आज्ञा-पालन करते हैं—विवश होकर। इतने से ही मौसी डर गयी हैं। जब पूरी तरह उसके मनोगत विचार को जान जायेंगी तब? जगन्नाथ घबरा उठा।

दोपहर के बाद मातंग युवक आये। इनके नाम ही भूल जाते हैं। कौन पिल्ल, कौन करिय, कौन मुद्द; च, ज, ट वर्णों के मिले हुए शब्दों को रेत पर लिखकर दिया, उस पर उँगलियाँ चलाने के लिए कहा। आसानी से ईंधन काटने वाले बच्चे रेत के सामने झुककर बैठे अक्षरों को सीखने में कैसे घबराते हैं! मुँह से अक्षरों का उच्चारण करते हुए, उन पर उँगलियाँ घुमाते समय, उनके नंगे बदन के सारे मास-

खण्ड यातना से मरोड़े जाते लगते हैं। गले की नसें उभर आती हैं। कुछ देर में ही थककर, उठने के बाद यों चलते हैं मानो, पाँवों में बालू के बोरे बाँध दिये हों। अक्षरों पर उँगली फेरते समय, उनकी आँखों में उमड़ आने वाली घबराहट देखकर, कभी-कभी जगन्नाथ को बड़ी निराशा होती है। काम करने वाले मज़दूर, दूर खड़े कौतूहल से जब उसकी इस क्रिया को देखने लगते हैं, तो जगन्नाथ को बड़ा संकोच होता है। उसे लगता है कि वह टोना-टोटका जैसी निषिद्ध क्रिया में लगा है।

एक घंटा मातंगों को एक युग जैसा लगा होगा। कल से इनको अपने मन की बात धीरे-धीरे बताने की सोची। जगन्नाथ प्रतीक्षा में था कि वे कुछ बोलें। घास उठाये कावेरी, कनखियों से देखती, मुसकराती और कूल्हे नचाती चली गयी।

'मुँह के लिए कुछ दीजिये, मालिक।' एक मातंग ने माँगा। थैली में रखी तम्बाकू और सुपारी जगन्नाथ ने उनमें बाँटी। कल से अक्षराभ्यास के लिए जब बैठेंगे, तभी उनके मुँह में ठूंस दूं तो ठीक रहेगा। अनायास ही उँगलियाँ चलती रहेंगी। तनाव छोड़कर सीखना शुरू करेंगे। धीरे-धीरे खुल जायेंगे। मातं[illegible] पर आँगन पार कर भीतर आते समय, गोशाला में जाते [illegible] खड़ी मो[illegible] पड़ी।

कर पूछा, 'क्या ?'

जगन्नाथ को घबराहट हुई। फिर भी कह गया, 'अमावस के मेले के दिन मातंगों को मन्दिर में ले जाने का विचार किया है। यह समाचार अखबारों को भी भेजा है। कल छपेगा।'

उसका गला सूख गया था। रायसाहब का चेहरा भय से पीला पड़ गया था। रायसाहब को सन्न होकर बैठे देख जगन्नाथ को खुशी हुई। तब तो अपने क़दम का कुछ अर्थ है। वह भय को नकली मुसकराहट से छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे। जगन्नाथ उनकी बातों के लिए तैयार होकर बैठा।

'कुछ निकलेगा नहीं, जगन्नाथ। अपना आरोग्य-सचिव हरिजन है, शिवमोगा में डी० सी० हरिजन है। बता, क्या लाभ हुआ ?'

जगन्नाथ ने तीखी आवाज में कहा, 'बताइये, अब आपको क्यों डर लग रहा है, मुझे क्यों डर लग रहा है ?'

'डर की बात नहीं, जगन्नाथ ! लोग विश्वास पर जीते रहे हैं। उनके विश्वास को भंग करने का हमें क्या अधिकार है भला ? भगवान में विश्वास खोकर, इस नौकरशाही में विश्वास रखकर, कहीं उनसे जीने को कहा जा सकता है ?'

'आप थक गये हैं। इसीलिए इस तरह की बातें कर रहे हैं। मंजुनाथ की महिमा को मिट्टी में मिलाये बिना यह गाँव कभी रचनात्मक नहीं बन सकता। देखिये, आप भी कितना डर रहे हैं ?'

जगन्नाथ को और भी तीखेपन से बातें करने की इच्छा हुई। रायसाहब की घबराहट में ही, अपने उद्योग के सफल होने की सम्भावना देखकर उत्तेजित होकर अपनी सारी योजना कह गया। रायसाहब थकी आवाज में बोले, 'मन में द्वेष नहीं होना चाहिए, मन साफ़ रहना चाहिए —गांधीजी का कहना है। जब क्रान्ति करने निकले हो तो किसी प्रकार की स्वार्थ-भावना नहीं रहनी चाहिए।'

जगन्नाथ को लगा कि रायसाहब को अपने भय का सामना करना कठिन हो गया है। उसने खेद के साथ कहा, 'हममें [illegible] नहीं है, रायसाहब ! आप थके-माँदे आदमी की तरह बातें कर रहे

आपने पहले जो कपड़े की दूकान में आग लगाकर ताल्लुका कचहरी के सामने सत्याग्रह किया था, उसी से आज मुझे यह काम करने की धुन लगी है। मेरे निर्माण में आपका भी हाथ है। आप जिस तरह आज हाथ-पाँव ढीले कर बैठे हैं, कल मैं भी इसी तरह डर जाऊँगा, हट-कर खड़ा हो जाऊँगा। पर इतिहास हमसे काम कराता है। निर्दयता से काम लेता है।'

पान में चूना लगाते हुए संभलकर रायसाहब ने कहा, 'इन मातंगों को चाहिए ताड़ी, भगवान के दर्शन नहीं। वे तुम्हारे गुलाम हैं, शायद इसीलिए तुम्हारा [illegible] मान जायेंगे। नाहक तुम उन्हें मार रहे हो।'

जगन्नाथ ने कुछ नहीं कहा। रायसाहब की बात उसे अच्छी नहीं लगी।

'सारे गाँव को कलंकित करने का आरोप लेकर क्यों बदनाम होते हो? राजनीति बहुत गँदला गयी है। तुम क्यों अपने हाथ गन्दे करते हो? इस देश में चाहे जो करो, सब बेकार है। तिस पर तुमने ब्राह्मण होकर पैदा होने की ग़लती भी की है। कभी-कभी लगता है कि फ़ौजी डिक्टेटरशिप से ही ये लोग उठ सकते हैं।'

एकाएक जगन्नाथ ने पूछा, 'नागमणी के मरने की खबर मिली?'

रायसाहब के जवाब सुनने के पहले ही उठकर वह खिड़की के पास चला गया। उनकी तरफ़ पीठ किये बोला, 'हारता हूँ या जीतता हूँ, यह बात अहम नहीं है, रायसाहब! पर कोई मौलिक काम करना अगर असम्भव हो जाये तो मुझे आमहत्या कर लेनी पड़ेगी।'

बात कह जाने पर उसको संकोच हुआ कि कहीं उसकी बातें नाट-कीय तो नहीं हुईं! लौटकर कुर्सी पर आ बैठा। रायसाहब के चेहरे को गम्भीर देखकर कुछ धीरज बँधा।

रायसाहब ने कहा, "कितने ही मन्दिरों में हरिजनों के प्रवेश हुए पर उससे कुछ लाभ नहीं हुआ। यह बात तुम्हें भी मालूम है। पर तुम्हारा उद्देश्य कुछ और है; मानता हूँ। मेरा डर सिर्फ़ यही है कि मातंग भीतर जायेंगे, समाचार-पत्रों में यह खबर छपेगी, फिर सारा मामला ठंडा पड़ जायेगा।'

जगन्नाथ को फिर कसमसाहट हुई। लगा कि रायसाहब उसको ठीक तरह समझ नहीं पा रहे हैं। जी में आया, कह दे कि रायसाहब, आप मिट्टी के लोंदे बन गये हैं।

उठ खड़े होकर रायसाहब ने कहा, 'नैतिक-बल के लिए भी सामर्थ्य चाहिए, जगन्नाथ। मेरी तरह का हारा हुआ आदमी नीतिवान बनकर भी नहीं रह सकता।'

जगन्नाथ उनकी बातों से चौंक गया। रायसाहब को पहाड़ी के उतार तक पहुँचाकर वह लौट पड़ा।

अगले दिन के समाचारपत्र में आनेवाली अपनी चिट्ठी की प्रतीक्षा करते हुए उसने रात बितायी।

7

पहली बस की प्रतीक्षा थी। उसमें आये समाचारपत्र को उत्सुकता से पढ़ा। पहले पन्ने पर ही उसका पत्र समाचार के रूप में छपा था। देखते ही डर लगा; पर पीछे न हटने की खुशी भी हुई। मौसी को भी समाचार पढ़ लेने दे, इसलिए समाचारपत्र को मंझघर में ही छोड़कर वह काजू की पहाड़ी चढ़ने लगा। जल्दी-जल्दी पहाड़ी चढ़कर सिरे पर जा खड़ा हुआ। अब तक भारतीपुर के सभी लोगों ने समाचार पढ़ लिया होगा।

पन्द्रह दिन बाद मेला है। तब तक मातंगों को तैयार करना होगा। बड़ी लगन के साथ हर पल कोशिश करनी होगी।

मन्दिर के शिखर को देखते हुए याद आया—अमावस के दिन हज़ारों लोग नदी में नहाते हैं। दूसरे ही दिन रथोत्सव। बचपन में सूर्य निकलने के पहले ही उठकर माँ के साथ नहाने के लिए जाता था, उस भीड़ में भी लोग उनके लिए रास्ता छोड़ देते थे। कँपकँपी लाने वाली ठण्ड में भी कुर्ता और निकर उतारकर नंग-धड़ंग खड़ा-खड़ा पानी को देखता था। तभी डुबकी लगाकर उठी हुई माँ, पीठ और छाती पर गीले बिखेरे हुए 'आ, डुबकी लगा' कहकर हँसती थीं। 'न-न-न!' कहता हुआ वह पानी को डर से देखता था। 'पानी गर्म है, आ',

माँ। हाथ पकड़कर खींचती थीं। हँसती हुई डुबोती थीं। वह रोमांचित होकर पानी में हाथ-पाँव मारते हुए माँ के इर्द-गिर्द छींटों की झड़ी लगा देता था। पानी में उतरवाने के बाद उसे निकाल पाने में माँ को बड़ी दिक़्क़त होती थी। बालों को अच्छी तरह पोंछती थीं कि कहीं ठण्ड न लग जाये।

वहाँ से सीधा मन्दिर, मन्दिर के सामने वाले अश्वत्थ की प्रदक्षिणा। अश्वत्थ वृक्ष के ऊपर वानर, दाँत किटकिटाने वाले, अपने बच्चों की जुएँ ढूँढने वाले वानर चिढ़ाने पर काटने को दौड़ते हैं। हाथ के केले को छीन-कर खा लेते हैं। खड़िया और गेरू से पुते अहाते को पार कर आते ही बड़ का पेड़। प्राय: उसके नीचे राम नामक नाई। बच्चों के सिर अपने घुटनों में दबाकर मूँड़ने वाला। हिलने पर गालियाँ सुनाने वाला। बड़े हों तो आदर जताने के लिए उनके पीठ के पीछे बैठकर सिर के पिछले भाग को मूँड़ेगा। अमावस के दिन वह वहाँ नहीं रहता। अपनी पोटली खोलते, या पगड़ी बाँधते हुए बैठे सँपेरे वहाँ होंगे, या फ़ोटो उतारने वाले। रथ की गली-भर में मेले के लिए आयी हुई दूकानें। रथ सजकर खड़ा रहता। रथ के गोपुर के चारों ओर मेष, वृषभ, मिथुन, कर्काटक आदि राशियों के चित्र। रथ के सामने सवेरे की ओस में भीगी दो मोटी-मोटी रस्सियाँ अजगर की भाँति पड़ी रहतीं। वह रस्सी के पास से, पैर न फँसने की सावधानी के साथ, चलता हुआ माँ का पीछा करता। जीने की सीढ़ियाँ जहाँ घूमती हैं, वहाँ डर लगे तो भूतनाथ। भरपूर काले बालों वाला, विशाल सूना माथा, सफ़ेद साड़ी और चोली पहने हुए माँ; अपनी पाप-रक्षा की स्मृति को सोने के मुकुट के रूप में सिर पर चढ़ाये मंजुनाथ रथ में बैठकर सारे गाँव का चक्कर लगाकर मन्दिर लौटते थे।

जगन्नाथ कटहल के पेड़ से टिक कर खड़ा हो गया। व्यामोह को छोड़े बिना मंजुनाथ का तिरस्कार नहीं किया जा सकता—ऐसा विचार करते हुए पहाड़ी से उतर कर आया। अखबार के समाचार पढ़ चुकी मौसी का सामना करने के लिए मन को तैयार करते हुए वह धीरे-धीरे चलने लगा।

सीधे कमरे में जाकर स्वेटर उतारकर नहाने के लिए जब ज़ीने से

उतर रहा था तब मौसी सामने आयी। लाश की तरह उनका चेहरा फीका पड़ा था। ठहर गयी। उनके होंठ काँपे, पर बातें नहीं निकलीं। जगन्नाथ का दिल धक्-धक् करने लगा। मौसी एक बड़े खम्भे से टिकी खड़ी थीं। उनको घूरकर देखते हुए जगन्नाथ ने *भय का खुद भी* अनुभव किया। एक नया कदम बढ़ाने से पहले की इस बेचैनी से, परिवर्तन की सम्भावना का भरोसा होता है।

नहाकर सफेद लुंगी और कुर्ता पहने जगन्नाथ चौक की रायसाहब की खद्दर की दुकान की ओर निकला। जाने-पहचाने चेहरों को देखते हुए फिर दिल धड़क उठा। अब तक सबकी आँखों का तारा बनकर चमकता रहा था, अब उसे मिट्टी में पड़े बीज की तरह प्रतीक्षा करनी होगी। कष्ट में चटखना होगा। होटल के कृष्णय्या ने, जो गली की ओर देख रहा था, उसे देखकर सिर झुका लिया। उसके क़र्ज़दार दर्जी श्याम के सिवा आज उसे किसी ने भी अभिवादन नहीं किया। भारतीपुर के मेहतर जो पिछवाड़े से बाल्टियों में पाख़ाना ढोते चलते हैं, गलियों में दिखायी पड़े ही नहीं। इस ज़मीन में कुछ न गड़ाये हुए, पर इस ज़मीन के बिना भी कुछ न रखने वाले मातंगों की नज़र में वह अभी नहीं पड़ा।

पड़ूँगा, पड़ कर नया बनूँगा। उसने सोचा।

जगन्नाथ रायसाहब की दूकान के भीतर गया। चटाई पर मैला तकिया था। टिक कर बैठ गया। अकेले बैठकर पान-सुपारी का बटुआ खोलते हुए श्रीपतिराय प्यार से देखकर मुसकराये।

'कॉफ़ी पिओगे?' जगन्नाथ ने 'हाँ' कहा। उठकर रायसाहब ने ताली बजायी।

'न जाने क्यों राघव पुराणिक ने बुलाया है?' वे बोले, 'चलोगे?'

'अच्छा,' जगन्नाथ ने कहा।

'पुराणिक को देखा है?'

'बचपन में माँ के साथ उनके घर जाने की बात याद है। सुना है, वह किसी से मिलते-जुलते नहीं।'

रायसाहब मुसकरा उठे। कुछ कहने के बहाने जगन्नाथ बोला, 'उनके बारे में सुना है। सुना है, 1920 में उन्होंने विधवा-विवाह कर लिये

'उनकी शादी में शरीक लोगों में मैं भी था। शादी की पिछली रात एक घटना हुई। शादी के लिए कुछ लोग ट्रक में आ रहे थे। उनमें पीछे बैठा हुआ एक आदमी झपकी लेकर नीचे गिर पड़ा, और मर गया। सभी ने क्या कहा, जानते हो ? बेवा की शादी में बहत्तर बाधाएँ। सारे गाँव ने पुराणिक का बहिष्कार किया। उसके बाद पुराणिक बिलकुल बदल गये। तुम खुद देख लेना—वह कैसे जीते हैं। मैं कहूँ तो तुम हर्गिज़ विश्वास नहीं करोगे, खुद आँखों से देख लेना।'

असली बात कहने में रायसाहब को संकोच हुआ था। जगन्नाथ ताड़ गया।

'सच है ! समाज से विद्रोह करने पर कभी-कभी इस समाज से सभी जड़ें कट जाती हैं। अन्तर्जातीय विवाह की गत मैंने बेंगलूर में देखी है। अँग्रेज़ी बोलते, पार्टियाँ देते, अजन्ता-एलोरा के चित्रों को अडमायर करते, जनपद की कला-वस्तुओं का संग्रह करते, बच्चों को कॉन्वेण्ट में पढ़ाते हुए कैंटोमेण्टियन ज़िंदगी जिये जाते हैं।'

जगन्नाथ चौंक गया कि वह क्यों बे-रोक-टोक बोलता जा रहा है ! मार्गरेट से शादी करके भारत आने पर अपनी भी यही गत हो जाने का भय था ? रायसाहब चुप रहे। शायद मुख्य विषय पर आयेंगे, इस प्रतीक्षा में जगन्नाथ था; तभी दूकान में वेंकटराय प्रभु जी ने आकर 'प्रणाम' कहा।

चौक की किराने की दूकान वाले वेंकटराय प्रभु ने जगन्नाथ को रायसाहब की दूकान में आते देखा था। प्रभुजी गाँव-भर में बड़े व्यापारी माने जाते हैं। आसपास इतनी ख्याति थी कि जगन्नाथ के बाद वह ही धनी हैं। जगन्नाथ के त्यागपत्र देने के बाद उन्होंने ही महन्तगिरी को संभाला।

प्रभुजी ने भारतीपुर के सारे व्यापार को अपनी मुट्ठी में कर रखा था। बड़ा बेटा उन्हीं के साथ किराने की दूकान में था; दूसरा, कपड़े का व्यापारी; तीसरा मंजुनाथ, राइस-मिल का मालिक; चौथे के नाम पर 'मंजुनाथ लॉरी-सर्विस' थी। शिवमोगा जाकर आने वाली 'मंजुनाथ बस-सर्विस' की छः बसों के मालिक भी प्रभुजी ही थे। अपने दामादों को भी प्रभुजी ने अलग-अलग उद्योगों में लगाया हुआ था। एक मंजुनाथ सोडा-

फ़ैक्टरी चलाता था; दूसरे की साइकल-शॉप थी; और एक गाँव के सबसे बड़े होटल का मालिक था। एक का माल दूसरे को सप्लाई होता; एक की राय के बिना दूसरा क़दम नहीं बढ़ाता।

प्रभुजी की व्यवहार-नीति शिवमोगा ज़िले-भर में प्रसिद्ध हो चुकी थी। दूसरे महायुद्ध के समय चावल, मिट्टी का तेल और चीनी की काला-बाजारी करके मनमाना पैसा जोड़ लिया था; प्रभुजी को भी मालूम था कि यह बात हर कोई जानता है। दो-एक बार पुलिस की सर्च होने पर भी प्रभु जी का बाल भी बाँका नहीं हो सका था। अब स्वतन्त्रता के बाद वह खद्दर ही पहनते हैं।

प्रभुजी की नीति थी—इज़्ज़त की परवाह न कर पैसा कमाओ; पैसे के पीछे इज़्ज़त अपने-आप आयेगी। इस बात को वह खुद तराजू के सामने बैठकर गुड़ तौलते हुए ग्राहकों से कहा करते हैं। पिछली बार नगरपालिका के प्रेसिडेंट भी चुने गये थे।

जगन्नाथ को मालूम था कि भारतीपुर का सारा व्यापार मंजुनाथ के दर्शन के लिए आने वाले भक्तों पर ही चलता है, इसलिए मंजुनाथ की महिमा में प्रभुजी की विशेष आसक्ति स्वाभाविक थी।

प्रभुजी बातों में बड़े चतुर थे। आते ही नागमणि की मृत्यु के लिए आँसू टपकाये। कॉफ़ी आयी। प्रभुजी के लिए भी रायसाहब के एक कॉफ़ी कहने पर, 'बिना चीनी की कॉफ़ी, भैय्या' कहते हुए जेब से सेक्रीन की डिबिया निकाली। रह-रह कर जगन्नाथ का चेहरा देखते हुए रायसाहब को सम्बोधित कर कहते रहे।

'जानते हैं, रायसाहब, मेरे छोटे लड़के संजय को जगन्नाथ पर बड़ी भक्ति है, बड़ी ममता है। आज के ज़माने के बच्चों की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करते हुए कहता हूँ। किसी ने कहा—कौन, मत पूछिये—कि हमारे जगन्नाथ की बुद्धि को किसी अंग्रेज़ लड़की ने बिगाड़ दिया है, इसीलिए इन्होंने हरिजनों को पकड़कर...उस समय मेरा लड़का दुकान पर ही बैठा था। उसने क्या कहा, जानते हो? कहा कि मातंग भी क्या अपनी तरह इंसान नहीं हैं। उसकी बात का क्या जवाब दिया जा सकता था भला?'

आँखें बन्द किये कॉफ़ी के दो घूंट पीकर नीचे रखते हुए कहने लगा, 'ज़माना बदल रहा है, यह बताने के लिए कहता हूँ। श्रीपतिराय भी जानते हैं, पूछ लीजिये। शिवामोगा के जो डिप्टी-कमिश्नर सत्यप्रकाश हैं—सुना है वह हरिजन हैं। सुपारी सोसायटी के डायरेक्टर अपने समधी जो हैं—श्रीनिवास प्रभु—कह रहे थे, बड़े होशियार हैं। सभी वेदोपनिषद् पढ़ रखे हैं। अपने नागराज जोयिस को भी शर्म आ जाये—ज्योतिष और पुराण वह इतना जानते हैं।'

प्रभुजी ने एकाएक आवाज़ दबायी और श्रीपतिराय की ओर झुककर कानों में कहा, 'समझिये, अब वह अपने गाँव आये, मसलन कहिये कि हमारे ही घर आये। भीतर बुलाऊँगा कि नहीं? कॉफ़ी दूंगा कि नहीं? क्या खप्पर में कॉफ़ी दी जा सकेगी? चाँदी के गिलास में ही दूंगा न? कालाय तस्मै नमः। इसीलिए अपने लड़के को उस तरह कहते सुनकर कहा—शाबाश!'

जगन्नाथ आश्चर्य से ताकता रहा। प्रभुजी के गुब्बारे में छेद करने के लिए कहा, 'तब तो प्रभुजी, आप भी मेले के दिन मातंगों को मन्दिर में ले चलते समय मेरा साथ देने वाले हैं न?'

'हाँ, हाँ!' प्रभुजी ने कहा। जगन्नाथ चौंक गया।

'पहले ही कह जो दिया—कालाय तस्मै नमः। समय आने पर सब-कुछ हो जायेगा। इसीलिए आपकी शिकायत करने वालों से कहा—क्या आप समझते हैं कि अपने जगन्नाथ जी को इतनी भी सूझ नहीं? आपकी पढ़ाई क्या? उनकी पढ़ाई क्या? क्या मुक़ाबला दोनों में? इंग्लैंड हो आये हुए को आप क्या सही, क्या ग़लत सिखाना चाहते हैं? मंजुनाथ की महिमा को नष्ट करके उन्हें भला क्या पाना है? मंजुनाथ के सिर पर रखने वाला मुकुट उन्हीं का है। मन्दिर का बड़ा घण्टा! सारे गाँव को सुनायी पड़ने वाले घण्टे को उनके पूर्वजों ने बनवाकर दिया है, धर्मशाला भी उनके पूर्वजों ने बनवायी है। भगवान का तीर्थ आये बिना उनके धर्मात्मा पिता ने कभी मुँह में कौर नहीं रखा था। ऐसे वंश में पैदा होकर, एक सात्विक व्यक्ति, क्या आप समझते हैं कि बिना सोचे-समझे कुछ कार्य कर बैठेंगे? ऐसा ही कहा, बेशक। किसी से भी पूछ लीजिये। मैंने कहा, अब भारतीपुर

में जो हाई स्कूल चल रहा है, वह मन्दिर के पैसे से। इस गाँव का आधा व्यापार जो टिका है वह मंजुनाथ के दर्शन के लिए आने वाले यात्रियों पर। वरना यहाँ से सौ-पचास परिवारों का गुजारा कैसे चले ? मंजुनाथ की कीर्ति में यदि दरार पड़ जाये तो इस भगवान के भरोसे पर ही जीने वाले हम जैसे, सौ-पचास लोगों की गत क्या होगी ? हम जैसों के बच्चे चाहे शिवमोगा जाकर पढ़ लें, पर मन्दिर का स्कूल न होता तो ग़रीबों के बच्चों को विद्या कहाँ से मिलती ? ख़ैर। अब सुपारी-बाग को ही लीजिये। चोरियाँ कितनी बढ़ी हैं, मेरे कहने की आवश्यकता नहीं। भूतनाथ का डर न होता तो क्या एक सुपारी भी अपने हाथ लगती ? मैं पूछ ही बैठा—क्या तुम्हारा ख़याल है इन सारी बातों को सोचा नहीं है ?'

श्रीपतिराय गली की ओर देखते बैठे थे। दवा की शीशी लिये बड़े पुजारी के बेटे गणेश से पूछा, 'किसकी तबीयत ठीक नहीं है, रे ?' उसने कहा, 'चाची की।' उन्होंने कहा, 'ज़रा अपनी बीवी को घर की ओर भेजना, घर में देखना चाहती हैं।' गणेश ने तुतलाते हुए कहा, 'अच्छा।' वह जगन्नाथ को बड़े चाव से देखता खड़ा था। जगन्नाथ के साथ प्रभुजी को बातें करते देख कई लोग, जो किराना ख़रीदने, कपड़ा ख़रीदने, भगवान के दर्शन के लिए आये थे, खद्दर की दूकान के सामने जमा हो गये थे।

जगन्नाथ ने विनम्रतापूर्वक कहा, "प्रभुजी, आपकी आख़िरी बात के लिए मेरा जवाब है : अभी मध्ययुग की आर्थिक व्यवस्था है अपनी। इसके केन्द्र में हैं मंजुनाथ। उसकी महिमा को क्षति पहुँचने पर आपका सारा व्यापार ठप्प हो जाने का डर जो आपको है वह सहज है। पर देखिये, इस मंजुनाथ के कारण, हमारे जीवन-क्रम में तनिक भी परिवर्तन न आकर, जैसे-का-तैसा ही रुक गया है। हम सड़ते जा रहे हैं। मंजुनाथ को हटा देने के बाद हमें अपने जीवन की ज़िम्मेदारी ख़ुद ही उठानी पड़ेगी। नये-नये रास्ते ढूँढ़ने पड़ेंगे। इस गाँव में खपरैल का एक कारख़ाना खुलवायेंगे। सुना है, इस ज़मीन में ताँबा मिल सकता है। खान खुदवायेंगे। अभी केवल सुपारी उगाते हैं। प्रयोग करके देखेंगे, और क्या-क्या उगाया जा सकता है ? इस समय हम जड़ बने पड़े हैं। समझ लीजिये [illegible]
मन्दिर में चले गये—भूतनाथ के डर और मंजुनाथ के भ[illegible]

रहने वाले देश के सारे लोगों के मन में अब कुछ परिवर्तन होना चाहिए। ज़रूरी है—मातंगों का तैयार होना। मन्दिर की देहरी पर पड़ने वाला उनका पहला क़दम सदियों की जड़ता को तोड़ सकता है। इन मातंगों के के ज़रिए हम सब फिर जीवित हो सकेंगे। झटका लगे बिना कुछ नहीं होगा।'

जगन्नाथ बोलता रहा। श्रीपतिराय आँखों से ही कह रहे थे कि नाहक क्यों गला सुखाते हो ? दूकान में जमा लोग, कुछ न समझ कर जगन्नाथ का चेहरा निहारते खड़े थे।

प्रभुजी ने रायसाहब से सुर्ती लेकर उसमें चूना मिलाकर मलते हुए कहा, 'छि:-छि: ! आप ग़लत मत समझिये। अपनी हानि होने के डर से मैंने कहा ! आपके ही सामने मैं कुन्दापुर से केवल एक तराज़ू लेकर आया था। मेरी जो भी बरकत हुई है, वह मंजुनाथ का प्रसाद है, न कि अपनी निज की उपलब्धि। आज भी मुझे दो जून का सत्तू काफ़ी हैं; मेरे बच्चों को भी। एक बुरी लत जो पड़ी है, वह सुर्ती की। अच्छा ! आपने जो कुछ कहा न, बिलकुल ठीक है। पर ताँबे की खान और खपरैल का कारखाना बनने के लिए बिजली चाहिए कि नहीं ? शिवमोगा से भारतीपुर तक रेल की सुविधा होनी चाहिए कि नहीं ? इस कच्चे रास्ते को पक्का बनना होगा कि नहीं ?यही नहीं, मंगलूर में बन्दरगाह हो, फिर यहाँ से मंगलूर तक रेल की व्यवस्था हो, बताइये ग़लत है यह ?'

जगन्नाथ को लगा कि प्रभु बड़े चालाक हैं। रायसाहब की ओर देखा। रायसाहब के चेहरे पर भी शरारती हँसी फूटी थी। प्रभुजी के सवाल का ठीक जवाब ढूंढते हुए जगन्नाथ ने कहा, 'मानता हूँ, बिजली की माँग करेंगे। रेल के लिए लड़ेंगे। जन-जीवन में मौलिक परिवर्तन लाने के लिए जो भी मार्ग है ढूँढ निकालेंगे। पर हमें इस प्रकार ढूंढने की प्रेरणा तब मिलती है, जब मंजुनाथ में रखे विश्वास पर चोट पड़े। इसलिए यहाँ जिनका कोई आसरा नहीं ऐसे मातंगों को ही क्रान्ति की शुरुआत करना होगी।'

सूर्ती फूंक कर प्रभुजी ने कहा, 'बिजली को पहले आने दें, मंजुनाथ का प्रभाव धीरे-धीरे अपने-आप घटता जायेगा। देखिये, अब हम लोग ही

देवता, दया, धर्म आदि की बातों मे सिर खपाते रहते हैं, बम्बई-कलकत्ता में रहने वाले कभी परवाह करते भी हैं ?

'मैंने पहले ही बता दिया है, जगन्नाथजी, मैं आपके साथ हूँ। एक प्रार्थना-पत्र लिखिये कि गाँव को बिजली चाहिए। मैं और आप एक बार विधान-सौध चलेंगे, गुरप्पा पटेल को भी ले चलेंगे। श्रीपतिराय को भी साथ ले चलें। मुख्यमन्त्री और यह जेल मे साथ-साथ जो रह चुके हैं। आप जैसे सुशिक्षितों की बात अपने मुख्यमन्त्री हर्गिज नही टालेंगे। पहले रेल और बिजली लायेंगे। राष्ट्रपति के जाने के बाद तो सारे भारत में भारतीपुर का नाम हो गया है। आप जैसे प्रगतिशील नौजवान मिल जायें तो इस गाँव को नन्दन वन बनाया जा सकता है। देर हुई, चलता हूँ। फिर बात करेंगे।'

कहकर जैसे ही प्रभुजी चल पड़े, वहाँ से कुछ लोग भी हट गये। जगन्नाथ को लगा कि कैसा पाजी बनिया है! जो बिजली आयेगी, उससे लाभ उठाने वाला भी यही होगा। जगन्नाथ ने हँसते हुए रायसाहब की ओर देखा। रायसाहब भी मुसकराते हुए उठ खड़े हुए और बोले, 'सुनो जगू भैया, मुझे डर लगता था, सो सच है। पर मुझे यह भी लग रहा है कि मातंगों को मन्दिर के भीतर ले जाने से भी कोई हल निकलेगा नहीं। मेरी बातों में मत आना। मैं केवल इसलिए कह रहा हूँ कि उतावलेपन मे आकर तुम कहीं गाँव का विरोध मत मोल ले लेना!'

'मुझे भी डर लग रहा है, रायसाहब। पर उपाय नहीं।' जगन्नाथ को आगे की बात नही सूझी। रायसाहब की बातों से उसे कसमसाहट हुई थी। लगा कि इस घडी उसके साथ कोई नहीं, यदि रायसाहब पूछते कि क्या अपने आन्दोलन में तुम्हे पूरा विश्वास है, तो जगन्नाथ 'नहीं' कहकर मान लेता। पर कहता कि यदि इस प्रकार जोखिम न उठाता, तो जीवन का कोई अर्थ न रहता। इस समाज के भीतर क्रान्तिकारी कार्य न होने के कारण ही, धीरे-धीरे समाजिक जीवन अर्थहीन होता गया है। वह जो कहता है, वैसी बातें बडी आसानी से कहने वाले कई लोग भारतीपुर में हैं, यह जान कर जगन्नाथ को घिन भी हुई। फिर तसल्ली हुई कि आईने के

सामने खड़े रहने की पीड़ा सहने के लिए अपने को तैयार करना ही होगा।

8

पूर्व दिशा की ओर चलें तो बाँस की तीली वाली झील, उसके उस पार शिक्षा-मन्त्री द्वारा उद्घटित नया एकस्टेन्शन—ताशकन्दपुर। उससे पहले मंजुनाथ राइस-मिल के पीछे वाले खेत के भीतरी रास्ते से राघव पुराणिक का घर क़रीब पड़ता है। तेज़ी से चलें तो आधा घण्टा काफ़ी है।

जो भी मिले उनसे बातें करते, खैर-खबर सुनते रायसाहब चले। इस ज़मीन में यदि जड़ें किसी की जमी हैं तो इसी आदमी की—साथ चलते हुए जगन्नाथ ने सोचा।

बुंदकी पहने एक युवक से पूछा, 'पिताजी कैसे हैं? अन्थोनी डॉक्टर को घर ले जाकर दिखाओ, भैय्या।' हाथ जोड़े हुए एक आदमी से—'बाद में मिलना। शिवमोगा में वक़ील के नाम चिट्ठी दूंगा।' बच्चे, स्त्रियाँ सभी से जान-पहचान है रायसाहब की। उनके नाम, उनके गोत्र, उनकी गुप्त बीमारियाँ, पारिवारिक झंझट—सब-कुछ की!

मुसलमानों की गलियों से गुज़रते समय जगन्नाथ को किसी दूसरी दुनिया में आने का आभास हुआ। कलई करते, बीड़ियाँ बनाते घर के सामने चबूतरे पर चौरंगी तहमद पहने बैठे लोग 'सलाम साहब' कहते हुए खड़े हो गये। नालियों में मुर्गियाँ; कुछ घरों के सामने तारों के छींके में रखे अण्डे।

'अपने लड़के भी अब चोरी-छिपे अण्डे खाने लगे हैं।' कह कर रायसाहब मुसकराये।

'मातंगों को अक्षराभ्यास कराने की तुमने जो बात कही, जग्गू भैय्या, क्या तुमने या उन्होंने कम-से-कम एक बार अनजाने में ही सही, कभी छुआ है?'

जगन्नाथ ने कहा, 'नहीं।'

'यही मेरा कहना है। सवाल तुम्हारे छूने, या न छूने का नहीं। वे खुद

तुम्हें छूते हैं, या छूने की आशा रखते हैं—यह बात महत्व की है। छूने की तुम्हारी इच्छा सहज है। तुम पढ़े-लिखे विद्वान हो, सभी सौभाग्य से सम्पन्न हो। तुम्हारे लिए यह आदर्शवाद, एक नया शौक है, एक लग्जरी है, पर उनके लिए ?'

'सच है, रायसाहब ! जिस दिन उन्हें ऐसा लगेगा उस दिन ही मेरी जीत होगी। मैं प्रयत्न कर रहा हूँ कि भ्रातग जिस दिन एक क़दम आगे रखने की हिम्मत करेंगे, उसी दिन...।'

'केवल तुम्हारे प्रयत्नों से वह सम्भव नहीं हो सकेगा, जग्गू भैय्या !'

जगन्नाथ कुछ बोला नहीं। तेज़ी से कदम बढ़ाते हुए रायसाहब ने कहा, 'इन राघव पुराणिक ने ही मुझे इंगरसाल की पुस्तकें पहले दी थी।'

जाड़े की धूप में चलते हुए जगन्नाथ प्रफुल्लित था, मन हलका। जिधर आँखें दौड़ायी, बौर से लदे आम के पेड़। जंगल के किसी गुप्त गह्वर में महकने वाले केवड़े से सजी सामने आयी हुई चौधराइन। पेंच और कुण्डल। मेंहदी वाले हाथ। नंगे पाँव तेज़ी से मन्दिर जाती हुई छबीली। धनी कुर्मियों के अहाते में लगे पारिजात और चम्पा के वृक्ष।

जगन्नाथ ने सोचा—किसी के घर बच्चा पैदा रहा होगा; कोई मर रहा होगा; किसी गर्भिणी की कोख में करवटें लेता हुआ शिशु माँ को छोटी-छोटी ठुमकियाँ मार रहा होगा। एक गुलाब खिलकर डाली पर झूम रहा है। धूप में चारों खाने चित लेटा हुआ कुत्ता मकोड़े पकड़ने का खेल खेल रहा है। टाँगों के बीच लाठी अटका कर कोई बच्चा मोटर चला रहा है। किसी बच्चे को डाँटती हुई माँ खड़ी है। आम के बौर में शहद लगा है। सुपारी के बाग के लिए घने जंगलों में शहद के छत्ते लटक रहे हैं। मनुष्य की निगाह में न पड़ने वाले कातरता-भरी आँखों वाले प्राणी मिट्टी सूँघते हुए उछल-कूदकर रहे हैं।

श्रीपतिराय ने कहा, 'लो, यही राघव पुराणिक का घर है।'

9

जगन्नाथ ने देखा कि करीब दस फुट से भी ऊँची कम्पाउण्ड की दीवारों

वाले लोहे के गेट पर 'कुत्तों से सावधान' का बोर्ड लगा हुआ है।

'तुम्हारे घराने के बाद यही यहाँ के बड़े ज़मींदार थे,' रायसाहब बोले, 'पर अब एक दिन इनका पटवारी ही इनसे बड़ा महाजन बन जायेगा। इधर उसने एक ट्रक भी ले रखा है।' कहते हुए श्रीपतिराय ने गेट में लगी कॉल-बेल दबायी।

दूसरी बार बेल दबाने पर खाकी वर्दी पहने हुए एक गोरखा चाबियाँ ले आया। 'यह पहला आश्चर्य है; देखते जाओ,' रायसाहब ने कहा। दोनों को सैल्यूट मारकर गोरखे ने दोनों को भीतर ले जाकर छत वाले बड़े दालान में बिठाया।

दालान में एक कोने में हैट रखने का स्टैण्ड था। उसमें एक इवनिंग हैट! एक सादा सन-हैट, कश्मीरी फ़र-कैप, तरह-तरह के वाकिंग स्टिक थे। दूसरे कोने में तीन बन्दूकें लकड़ी के स्टैण्ड पर थीं। दीवार पर चारों ओर उत्तम अभिरुचि के फ्रेम किये गये पाश्चात्य चित्रकारों के प्रिन्ट थे। जगन्नाथ ने कौतूहल से देखा कि अधिकतर चित्र ब्रिटिश चित्रकारों के थे। कुर्सियाँ भी ऐसी ही थीं : बाँके पाँवों वाली, सीधी पीठवाली, विक्टोरिया के समय की। एक कागज़ पर रायसाहब ने नाम लिख कर दिये जिसे नक़्क़ाशीदार थाली में रखकर गोरखा अन्दर चला गया।

जगन्नाथ ने रायसाहब को आश्चर्य से देखा। दालान में चमकते पीतल के एक कुण्डे में आस्फडिस्ट्रा का पोधा। चारदीवारी के घेरे में तरह-तरह के कैक्टस, बाहर शायद ऊटी से लाये गये विविध जाति के गुलाब।

'अब तो इंग्लैंड के घरों में भी आस्फडिस्ट्रा नहीं लगाते।' शरारत से मुसकराते हुए जगन्नाथ ने कहा।

कुछ देर बाद ज़ीने से किसी के उतरकर आने की धीमी आहट सुनायी पड़ी। ज़ीने की सीढ़ियों पर शायद कार्पेट बिछा होगा।

'हाउ डू यू डू ?' कहते हुए क़रीब साठ की अवस्था वाले एक व्यक्ति बड़ी चुस्ती के साथ हाथ बढ़ाये दालान में चले आये। ढीला कत्थई सूट पहने, वेस्टकोट डाले, टाइ-कॉलर पहने तथा साफ़ शेव किये चमकते गालों वाले पुराणिक ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। रायसाहब ने कन्नड में परिचय कराया—'जगन्नाथ, आनन्दराव के बेटे।'

देखने में दुबले होने पर भी पुराणिक ने गर्मजोशी से हाथ मिलाया। अँग्रेज़ी में बोले, 'तुमसे मिलकर खुशी हुई। इस मनहूस जगह में मेरे एक-मात्र मित्र श्रीपति तुम्हारी बहुत चर्चा करते थे। मैं तुम्हारी माता को जानता था, बड़ी सुसंस्कृत महिला थी, वीणा बहुत अच्छी बजाती थी। अन्दर आइये।'

भीतर आते ही जगन्नाथ सन्न रह गया।

'प्लीज़ सिट डाउन,' पुराणिक ने कहा।

कश्मीरी गलीचे पर चारों ओर सोफ़े थे। एक कोने में सुन्दर दस्तकारी की बीट की राइटिंग टेबुल। उसके सामने गद्दीदार घूमने वाली कुर्सी। आमने-सामने दीवार से लगकर खड़ी काँच की आलमारियों में किताबें, बीच में फायर-प्लेस। सबेरे जलते रहकर अब बुझने वाला अँगारा, फायर-प्लेस पर काँच की मूर्तियाँ, जापानी गुड़िया, मुँह में सिगार दबाये, फ्रेम में मढ़ा चर्चिल का व्यंग्य-चित्र। एक सोफ़े के नीचे मुलायम रग पर बड़े-बड़े बालों वाला जूल कुत्ता, आँख भींचकर, मुँह लटका कर आराम से सोया था। जगन्नाथ ने आलमारी में रखी पुस्तकों पर नज़र दौड़ायी। रेनाल्ड्स के उपन्यास, रसेल, बर्नार्ड शॉ, किप्लिंग, चर्चिल, शेक्सपियर, टाल्सटॉय की कृतियाँ। फ़ॉर्स्टर की 'होवार्ड्‌स एण्ड' पुस्तक खींचकर पन्ने पलटने लगा। लाल पेन्सिल से मार्क किये गये इस भाग ने जगन्नाथ की आँखों को लुभाया—

'मिस श्लेगल! असली चीज़ रुपया है, बाकी सब छलना है।'
'तुम भूल कर रहे हो, तुम मृत्यु को भूल गये।
लीनार्ड समझ न सका।
'तुम मृत्यु को भूल गये।'

इस पंक्ति के नीचे दो लकीरें थीं। पुराणिक के आन्तरिक जीवन के बारे में, जगन्नाथ में इन दो लकीरों ने उत्सुकता उत्पन्न की। किताबें छोड़कर आगे बढ़ा। स्टडी के पूर्व और पश्चिम में काँच की बड़ी-बड़ी दो खिड़कियाँ थी; दीवार के करीब पौने हिस्से तक गयी इन खिड़कियों पर नीले रंग के मोटे परदे। खिड़की के छोर के कोने में टेबुल पर रखे वृहदाकार रेडियो को देखा। पुराणिक ने भी शायद उसके कौतूहल को ताड़

लिया होगा। पास आकर बड़े गर्व अँग्रेज़ी में बोले, 'दुनिया के क़रीब-क़रीब सारे शॉर्ट-वेव स्टेशन इस रेडियो पर आ जाते हैं।'

कुछ देर चुप रह कर अलाव के सामने खड़े, पाइप सुलगाते आँखों में मुसकराते हुए अँग्रेजी में ही बोले, 'श्रीपति ने बताया होगा—मैं पूर्ण एकान्त-वासी हूँ।'

जगन्नाथ टेबुल के पास काले सोफ़े पर बैठ गया।

सिर के बाल ही नहीं, बल्कि पुराणिक की भोंहों के बाल भी सफ़ेद थे। कानों पर भी बाल होने कारण नुकीले चेहरे और चमकती आँखों वाले पुराणिक अण्डे से निकलने वाले जीव की तरह लगे। सफ़ेदी छाया चेहरा, पतले होंठ, लम्बी नाक—पर उनकी सारी जान, आँखों में, बालों वाले कानों में समायी थी। किताब धीरे-धीरे पढ़ने के लहजे में फिर कहा, 'येस! मैं यहाँ अपनी किताबों के साथ एकान्तवास करता हूँ। श्रीपति जैसे एक-दो मित्र और मेरी बीमार पत्नी। माफ़ करना, मैंने आपसे पूछा नहीं, आप क्या पियेंगे?'

पुराणिक ने एक साइड-टेबुल का काँच का दराज़ हटाया। उसमें विलायती ब्राण्डी, व्हिस्की, जिन, शेरी थे। पुराणिक ने जगन्नाथ की ओर प्रश्नार्थक दृष्टि से देखा। भारत लौटने के बाद जगन्नाथ ने पीना छोड़ दिया था, फिर रायसाहब भी साथ थे। हिचकिचाते हुए उसने कहा, 'थेंक्स, मेरी कोई खास पसन्द नहीं।'

'हैव सम व्हिस्की! मैं यक़ीन दिलाता हूँ, यह बिलकुल खालिस है। मेरे दोस्त अवधानी इसे बम्बई से लाते हैं। आजकल बड़ी सर्दी है, यद्यपि आज धूप निकली है।'

पुराणिक ने दो सुन्दर कट-गिलास के प्यालों में व्हिस्की डाली। उसमें प्रभुजी की सोडा-फ़ैक्टरी का सोडा मिलाते हुए बोले, 'माफ़ करना, यह सोडा रद्दी है और बर्फ़ नहीं है।' जगन्नाथ को जाम थमा कर घण्टी दबायी। सफ़ेद पोशाक में रसोइया, दरवाज़े के पास आकर खड़ा हुआ। 'नायर, इनके लिए नींबू का शरबत बनाकर लाना।'

जगन्नाथ ने पुराणिक का यह पहला कन्नड़ वाक्य सुना। उनकी कन्नड़ अँग्रेज़ी से भी कृत्रिम लगी।

'इस मध्यकालीन नगर में आप क्या रहे हैं ?' पाइप को रेडियो पर रखकर व्हिस्की की चुस्की लेते हुए फिर अँगीठी के सामने खड़े होकर पुराणिक ने अँग्रेजी में पूछा।

अपने कार्यक्रम के बारे में पुराणिक की क्या प्रतिक्रिया होगी, इस कौतूहल से जगन्नाथ ने पूछा, 'आज का पेपर देखा है ?' कहते हुए राय-साहब की ओर देखा। उसकी दृष्टि कह रही थी कि आप ही इनको बताइये। इतने में ही किसी और सोच में पाइप खींचते हुए पुराणिक ने कहा, 'माफ़ करना। मेरी एक समस्या है। मिस्टर जगन्नाथ ही उसे सुलझा सकते हैं। आपको शायद मालूम होगा। मैं कभी विदेश नहीं गया। मेरे फेफड़े कमजोर हैं। ठण्डे मुल्क में मैं जिन्दा नहीं रह सकता। करीब चालीस साल से मैं इसी कमरे में अपनी किताबों और तसवीरों के साथ रहता हूँ। सुबह-शाम अपने बाग में टहलता हूँ।' कहते हुए घर के पास की ओर इंगित किया। 'यही मेरी दुनिया है। मैं किसी से मिलता नहीं। हाँ, अपने रेडियो से मैं बाहर की दुनिया में रहता हूँ। कल मैंने कहीं से 'स्वान लेक' सुना।

अपने-आप से बातें करते हुए पुराणिक कमरे में घूमते रहे। जगन्नाथ ने देखा कि उनकी कमर कुछ झुकी हुई है, उनका ऊनी पतलून के नितम्बों के पास से घिस जाने के कारण धागे दिखायी दे रहे हैं। वह अँग्रेजी में ही बोलते रहे—'अपने कम्पाउण्ड से कभी बाहर नहीं गया, फिर भी मैं पूरे लन्दन को जानता हूँ। हाँ, एक बात बताओ।'

पुराणिक ने राइटिंग टेबुल के पास जगन्नाथ को बुलाया। एक कागज़ पर रास्तों का चित्र खींच कर अँग्रेजी में पूछा, 'अगर इस ओर से फ्लीट स्ट्रीट में जाओ तो सेंट पाल का गुम्बद दीखेगा न। डॉक्टर जॉनसन वाला पब किधर है, बायें या दायें ?'

'शायद दायें।' कहकर जगन्नाथ ने कागज़ पर रेखा खींच कर बताया, 'अब वह जॉनसन म्यूज़ियम है।'

'मैं जानता हूँ। थैंक्स ! इन ऐतिहासिक स्थलों को ढूँढने के लिए मैंने कितनी किताबें पढ़ डाली ! मगर इस पब के बारे में शक था जिसे तुमने दूर कर दिया।'

फिर मुसकराते हुए जगन्नाथ की ओर देखते हुए बोले, 'यू मस्ट बी टायर्ड ऑफ़ लिस निंग टु मी। यू मस्ट मीट माइ फ्रेंड।' कहते हुए अपनी स्टडी से दूसरे कमरे में चले गये।

जगन्नाथ ने श्रीपतिराय को देखा : खद्दर की काँछेदार धोती, और आधे आस्तीन वाला कुर्ता पहने सोफ़े पर पाथली मारे बैठे थे। यही नहीं, पान में चूना लगा रहे थे। उनके चेहरे की मुसकान मानो उसे छेड़ रही थी।

'पाँव के नीचे की ज़मीन धीरे-धीरे धँसती जा रही है,' राय साहब बोले, 'कितने ही सालों से एक असामी तक ने इनका चेहरा नहीं देखा; इन्होंने उसका चेहरा नहीं देखा। पटवारी के ज़रिए ही सारे कारोबार चलाते थे। घूस खाकर मुस्टन्डा बना है वह। और यह मित्र भी जोंक है। अभी कुछ सालों में इनके सारे पैण्ट फटे होंगे।'

'माइ फ्रेंड अवधानी।'

गले-बन्द स्वेटर और ढीला पेंट पहने अवधानी का पुराणिक ने परिचय कराया। अवधानी लड़खड़ाता हुआ आ बैठा। उसके गिलास में शराब होने का जगन्नाथ ने बू से अन्दाज़ लगाया। अवधानी की अवस्था क़रीब चालीस वर्ष की होगी। इंग्लैण्ड के फ़्लैट जैसी लगने वाली पुराणिक की स्टडी में, अवधानी को देख कर कुछ विपर्यास जैसा लगा। उसके माथे के बायीं ओर भूतनाथ की मनौती में टोची गयी मुद्रा थी। पुराणिक के सफ़ाचट चेहरे, और सभ्य व्यक्तित्व के विपरीत अवधानी आँखों में मैल, चेहरे पर पाँच-छः दिनों का काला-सफ़ेद कूड़ा-करकट था। लगा कि उसने सवेरे मुँह धोया ही नहीं है।

"ड्रिंक इज़ द ओनली कंसोलेशन ऑफ़ ए लोनली लाइफ़, यू सी[1] !'

हँसते हुए पुराणिक ने अपने मित्र की हालत को छिपाने के लिए अंग्रेज़ी में कहा, 'मेरी सारी खरीदारी यही करते हैं, इसलिए यह सारे देश में भ्रमण कर चुके हैं।'

जगन्नाथ समझ गया कि अवधानी को बातें करने के लिए पुराणिक उकसा रहे हैं। गटागट शराब पीकर, अवधानी ने गिलास नीचे रख कर

1. एकाकी जीवन में शराब ही एक सहारा है

हाथ से मुंह पोंछते हुए अंग्रेजी में कहा, 'मिस्टर पुराणिक बड़े सज्जन हैं। वह मेरे आश्रयदाता हैं। मैं रोज यहां भाग आता हूँ। मेरे घर में तो तीर्थ-यात्री भरे रहते हैं।'

अपनी तारीफ़ से सकुचाकर पुराणिक ने बात बदल दी। 'मिस्टर अवधानी नास्तिक हैं। मगर वह यह भी कहते हैं कि उन पर भूतनाथ आया करते थे। मैं तो ऐसी बकवास में विश्वास नहीं करता पर इस विषय में शोध होनी चाहिए।'

अवधानी निहाल हो गया। उसने अपने में भूतनाथ का अंश रहने की बात बतायी। 'मेरी आँखें देखिये। क्या आपका मन इन आँखों को देखते ही रहने को नहीं करता—अपनी साइकिक पावर[1] से मैंने पुराणिक को कितनी ही विपत्तियों से बचाया है।' अवधानी ने यात्रियों को गालियाँ दीं। अपने सम्बन्धियों को घर में भरकर अपने को घर छोड़ने के लिए विवश करने वाली अपनी मुँहज़ोर बीवी को बुरा-भला कहा। नशे में बकने लगा कि उसे अपनी बीवी के शील के बारे में शंका है। बीवी के मामा ने उसकी जायदाद हड़पने के लिए टोना किया है, उसकी साइकिक पावर के कारण टोने-टोटके का असर नहीं हो रहा है, भूतनाथ को सब-कुछ बता दिया है। अंग्रेजी में बातें करते-करते, गुस्से में कन्नड़ पर उतर आया। सहानुभूति से, पर जबरदस्ती उसे उठाकर पुराणिक भीतर ले गये। कुछ देर बाद आकर बोले, 'यू मस्ट पार्डन माइ फ्रेंड्स मिसबिहेवियर[2]।' मिस्टर जगन्नाथ ने तो बहुत काकटेल-पार्टियाँ देखी हैं। उनके लिए यह नयी बात नहीं होगी। मिस्टर अवधानी बड़े काम के आदमी हैं। मगर शराब पीकर वह होश में नहीं रहता। बेचारा दुखी है।'

पुराणिक बोले 'लेट मी फिल योर गिलास[3]।'

'नो, थैंक्स' कह कर जगन्नाथ, तत्काल वहाँ से जाने की इच्छा से उठ खड़ा हुआ। पर पुराणिक का ध्यान कहीं और था। वह बोले, 'एक मात्र

---

1. मानसिक शक्ति।
2. मेरे दोस्त के व्यवहार के लिए क्षमा करें।
3. लाइये, अपना गिलास भरने दीजिये।

उपाय है कि हम पाश्चात्य सभ्यता को अपनायें। देखो अवधानी का हाल। देश कमजोर आदमी को नागपाश में जकड़ लेता है।'

इतनी देर चुपचाप बैठे रायसाहब ने जगन्नाथ की बेचैनी देख कर पुराणिक से पूछा, 'आज का पेपर देखा है?'

'नो। इट इज एजेज सिंस आइ हैव लुक्ड एट न्यूजपेपर्स।[1] इस मुल्क में कुछ घटता भी है!'

आश्चर्य से रेडियो दिखा कर जगन्नाथ पूछना चाहता था, तभी पुराणिक ने कहा, 'मैं न्यूज नहीं सुनता। सिर्फ़ म्यूज़िक और कभी कोई गम्भीर वार्ता और कविता।'

इनके बाल काटने के लिए महीने में, एक बार भी क्या नाई नहीं आता होगा, क्या वह भी इनको भारतीपुर की खबरें नहीं सुनाता! —जगन्नाथ को आश्चर्य हुआ। अपने आन्दोलन के बारे में श्रीपतिराय पुराणिक से बतायें, यह बड़ा अजीब लगा। पर बड़ी गम्भीरता से राय साहब की सारी बातें सुनकर पुराणिक ने कहा, 'आइ विश यू गुडलक, मिस्टर जगन्नाथ। मैं भी कभी रेबेल था।' कुछ देर चुप रह कर लम्बी साँस लेकर फिर कहा, 'आइ ऐम सारी टु से सन, बट आइ थिंक इट इज अटरली फ़्यूटाइल।[2] भारत में हम सब ईश्वर के फंदे में हैं। शायद तुम अपने को और अपने जैसे कुछ औरों को मुक्त कर सको। मगर सामूहिक कार्य असम्भव है, इसीलिए मैं कहता हूँ—पश्चिम बाना पहनो। होश रखो। मगर इस देश को बदलने की कोशिश न करो। यह पकड़ में नहीं आ सकता।'

पुराणिक ने भाषण कर्ता के लहजे में बातें कीं। अपने शब्द 'ईश्वर के फंदे में हैं, उनके मुँह से सुन कर जगन्नाथ घबराया। 'चलें रायसाहब!' उसने कहा।

'माइ यंग फ्रेंड! मेरी निराशावादिता को माफ़ करना। मैं तुम्हारी बेचैनी को समझता हूँ। यह स्वस्थ प्रवृत्ति है। मैंने भी कभी इस नगर में दिलचस्पी ली थी। मैंने भूतनाथ के बारे में शोध किया। मेरे मत से वह

---

1. नहीं। मुझे तो मुद्दत हो गयी अखबार देखे हुए।
2. मुझे खेद है, बेटे, मगर मैं समझता हूँ यह बिलकुल व्यर्थ है।

उद्दाम पैशन, ऐन्द्रियता का प्रतीक है। मंजुनाथ बौद्धिकता और धार्मिकता का, जो वास्तव में पाखण्ड है। मैंने भूतनाथ सम्बन्धी गीत और कथाएँ किसानों से सुन-सुन कर लिखीं। मैं तब नौजवान था और मिस्टर जगन्नाथ की तरह कुछ करने को बेचैन था। वे बम फेंकने के दिन थे। भूतनाथ का भूत मुझ पर सवार था। मुझे समझ में नहीं आता था कि वह कैसे...!'

'पराजित!' जगन्नाथ ने जोड़ा।

'हाँ, निर्गुण ब्रह्म द्वारा पाखण्डी हिन्दू के भगवान द्वारा पराजित हुआ। वह सब सामग्री मेरे पास पड़ी है। तुम चाहो तो मैं खोज कर दूँगा तुम्हें। तुम पढ़ना।' पुराणिक ने कहा।

'अब चलेंगे?' कहते हुए जगन्नाथ ने कदम बढ़ाया। रायसाहब खड़े ही थे। चमकते काले जूते, साफ हजामत किये गाल, हाथों को पीछे बाँध कुछ झुक कर खड़े पुराणिक का व्यक्त होने वाला आत्मविश्वास देखकर जगन्नाथ चौंक गया। उनकी पेंट घिसी हुई है। उनकी अंग्रेजी में अभी इग्लैंड की छाया है। उनके आत्मीय अवधानी को भूत-प्रेतों में विश्वास है, आदि बातों पर विचार करते हुए, उनको सहानुभूति से देखने की चेष्टा की। पर पुराणिक की सीरियस आँखों में जानकारी थी, आयरनी थी, प्रज्ञा थी। हाँ! भारतीपुर में रहकर भी पुराणिक की भाँति सदियों को लाँघा जा सकता है? सकपका कर जगन्नाथ ने सोचा कि पुराणिक को कब और कैसे असलियत मालूम होगी? प्रायः दीवाला निकलने पर!

अब तक न सूझा एक और प्रश्न जगन्नाथ के सामने आया। इतने देर तक उनके साथ रह कर भी, कितनी बातों में गम्भीर चर्चा का आह्वान करने पर भी उनसे यह क्यों नहीं कहा कि पुराणिक जी आप एक भ्रामक दुनिया का निर्माण कर उसमें जिये जा रहे हैं। तब क्या उसने अनजाने में पुराणिक को सह-भर लिया? रायसाहब ने भी क्या पुराणिक के साथ इसी तरह का सहानुभूतिपूर्ण सम्बन्ध रखा है! फिर कभी आकर इनको गहराई तक कुरेदना होगा। क्या इस परीक्षित को डसने वाला साँप कभी इस किले के भीतर आ सकेगा? कैसे?

जगन्नाथ फिर से रायसाहब से कहा, 'चलें'?

'सॉरी, इफ आइ हैव बोर्ड यू! इस जगह का सन्नाटा मुझसे मिलने

उपाय है कि हम पाश्चात्य सभ्यता को अपनायें। देखो अवधानी का हाल। देश कमज़ोर आदमी को नागपाश में जकड़ लेता है।'

इतनी देर चुपचाप बैठे रायसाहब ने जगन्नाथ की बेचैनी देख कर पुराणिक से पूछा, 'आज का पेपर देखा है ?'

'नो। इट इज़ एजेज़ सिंस आइ हैव लुक्ड एट न्यूज़पेपर्स।[1] इस मुल्क में कुछ घटता भी है !'

आश्चर्य से रेडियो दिखा कर जगन्नाथ पूछना चाहता था, तभी पुराणिक ने कहा, 'मैं न्यूज़ नहीं सुनता। सिर्फ़ म्यूज़िक और कभी कोई गम्भीर वार्ता और कविता।'

इनके बाल काटने के लिए महीने में, एक बार भी क्या नाई नहीं आता होगा, क्या वह भी इनको भारतीपुर की खबरें नहीं सुनाता !—जगन्नाथ को आश्चर्य हुआ। अपने आन्दोलन के बारे में श्रीपतिराय पुराणिक से बतायें, यह बड़ा अजीब लगा। पर बड़ी गम्भीरता से राय साहब की सारी बातें सुनकर पुराणिक ने कहा, 'आइ विश यू गुडलक, मिस्टर जगन्नाथ। मैं भी कभी रेबेल था।' कुछ देर चुप रह कर लम्बी साँस लेकर फिर कहा, 'आइ ऐम सारी टु से सन, बट आइ थिंक इट इज़ अटरली फ़्यूटाइल।[2] भारत में हम सब ईश्वर के फंदे में हैं। शायद तुम अपने को और अपने जैसे कुछ औरों को मुक्त कर सको। मगर सामूहिक कार्य असम्भव है, इसीलिए मैं कहता हूँ—पश्चिम बाना पहनो। होश रखो। मगर इस देश को बदलने की कोशिश न करो। यह पकड़ में नहीं आ सकता।'

पुराणिक ने भाषण कर्ता के लहजे में बातें कीं। अपने शब्द 'ईश्वर के फंदे में हैं, उनके मुँह से सुन कर जगन्नाथ घबराया। 'चलें रायसाहब !' उसने कहा।

'माइ यंग फ्रेंड ! मेरी निराशावादिता को माफ़ करना। मैं तुम्हारी बेचैनी को समझता हूँ। यह स्वस्थ प्रवृत्ति है। मैंने भी कभी इस नगर में दिलचस्पी ली थी। मैंने भूतनाथ के बारे में शोध किया। मेरे मत से वह

---

1. नहीं। मुझे तो मुद्दत हो गयी अखबार देखे हुए।
2. मुझे खेद है, बेटे, मगर मैं समझता हूँ यह बिलकुल व्यर्थ है।

उद्दाम पैशन, ऐन्द्रियता का प्रतीक है। मंजुनाथ बौद्धिकता और धार्मिकता का, जो वास्तव में पाखण्ड है। मैंने भूतनाथ सम्बन्धी गीत और कथाएँ किसानों से सुन-सुन कर लिखीं। मैं तब नौजवान था और मिस्टर जगन्नाथ की तरह कुछ करने को बेचैन था। वे बम फेंकने के दिन थे। भूतनाथ का भूत मुझ पर सवार था। मुझे समझ में नहीं आता था कि वह कैसे...!'

'पराजित!' जगन्नाथ ने जोड़ा।

'हाँ, निर्गुण ब्रह्म द्वारा पाखण्डी हिन्दू के भगवान द्वारा पराजित हुआ। वह सब सामग्री मेरे पास पड़ी है। तुम चाहो तो मैं खोज कर दूँगा तुम्हें। तुम पढ़ना।' पुराणिक ने कहा।

'अब चलेंगे?' कहते हुए जगन्नाथ ने कदम बढ़ाया। रायसाहब खड़े ही थे। चमकते काले जूते, साफ हजामत किये गाल, हाथों को पीछे बाँध कुछ झुक कर खड़े पुराणिक का व्यक्त होने वाला आत्मविश्वास देखकर जगन्नाथ चौंक गया। उनकी पैंट घिसी हुई है। उनकी अंग्रेज़ी मे अभी कन्नड की छाया है। उनके आत्मीय अवधानी को भूत-प्रेतों मे विश्वास है, आदि बातों पर विचार करते हुए, उनको सहानुभूति से देखने की चेष्टा की। पर पुराणिक की सीरियस आँखों मे जानकारी थी, आयरनी थी, प्रज्ञा थी। हाँ! भारतीपुर मे रहकर भी पुराणिक की भाँति सदियों को लाँघा जा सकता है? सकपका कर जगन्नाथ ने सोचा कि पुराणिक को कब और कैसे असलियत मालूम होगी? प्रायः दीवाला निकलने पर!

अब तक न सूझा एक और प्रश्न जगन्नाथ के सामने आया। इतने देर तक उनके साथ रह कर भी, कितनी बातों मे गम्भीर चर्चा का आह्वान करने पर भी उनसे यह क्यों नहीं कहा कि पुराणिक जी आप एक भ्रामक दुनिया का निर्माण कर उसमें जिये जा रहे हैं। तब क्या उसने मनजाने में पुराणिक को सह-भर लिया? रायसाहब ने भी क्या पुराणिक के साथ इसी तरह का सहानुभूतिपूर्ण सम्बन्ध रखा है! फिर कभी आकर इनको गहराई तक कुरेदना होगा। क्या इस परीक्षित को डसने वाला साँप कभी इस फिरे के भीतर आ सकेगा? कैसे?

जगन्नाथ फिर से रायसाहब से कहा, 'चलें'?

'सॉरी, इफ आइ हैव बोर्ड यू! इस जगह का -

वालों को निरुत्साहित करता है।' कहते हुए पुराणिक ने हाथ वढ़ाया। प्यार से उन्होंने उसको देखा। जगन्नाथ को अपने पर शर्म आयी। राय-साहव ने कहा, 'आपकी पत्नी से मिलना था।'

'ओ येस !' एकदम जाग कर पुराणिक ने कहा। 'यू मस्ट सी हर। तुमको देख कर उसे वड़ी शन्ति मिलती है।' जगन्नाथ की ओर मुड़ कर कहा, 'सॉरी। वह ऊपर नहीं आ सकती। अगर तकलीफ़ न हो तो नीचे चलें।'

'नॉट एट आल।' कह कर जगन्नाथ उस दोनों के साथ चल पड़ा।

दालान पार कर भीतर क़दम रखते हुए जगन्नाथ को दुसरी दुनिया में चले आने का आभास हुआ। इस घर में भी सिर झुका कर चलने वाले दरवाज़े, अँधेरे कमरों, दीपाधार, देहरी पर आटे की रँगोली, आईने में चित्रित राधाकृष्ण, सूखे वन्दनवार की कल्पना जगन्नाथ ने कहीं की थी।

'सॉरी ! आपको ज़रा सम्भल कर चलना होगा। यह मेरे घर का पुराना हिस्सा है।' कहते हुए पुराणिक आदर के साथ जगन्नाथ का हाथ पकड़ कर ले गया। एक कमरे में प्रवेश कर धीरे से 'सावित्री' कह कर आवाज़ लगायी।

सफ़ेदी छाये चेहरे वाली सावित्री ने पति की आवाज सुन कर उठने की चेष्टा की। 'प्लीज़ डोन्ट वॉदर। सोयी रहो। श्रीपति हैज़ कम टु सी यू, पुराणिक ने वड़ी कोमलता और प्यार से कहा। रायसाहव को देख कर सावित्री का चेहरा खिल उठा। उसका मुरझाया चेहरा किसी लड़के के चेहरे की तरह लगता था। रायसाहव पास जाकर खड़े हुए।

'जगन्नाथ कौन है, जानती हो ?' पूछा।

'इंग्लैंड से कव आये ?' सावित्री ने वड़े सौजन्य से प्रश्न किया। फिर रायसाहव की ओर मुड़ कर वोली, 'वेचारी, जोयिस की वह मर गयी। सुना था, वड़े लक्षणों वाली लड़की थी। खड़े ही हैं, वैठ जाइये न। 'कहते हुए अपने को उठा कर वैठने की याचना-भरी मुद्रा में पति की ओर देखा।

'तुम लेटी रहो।' कहते हुए पुराणिक ने पत्नी के माथे पर हाथ फेरा।

पति-पत्नी की इस अनन्यता से भी वढ़ कर जगन्नाथ को अधिक आश्चर्य की वात, सावित्री के सोने के कमरे में लगी मंजुनाथ की फ़ोटो की

लगी। इस तसवीर पर गुलाब के फूल चढाये गये थे। उनके पलँग के पास उडुपी श्रीकृष्ण पचांग था।

'अब तो रथोत्सव आ ही गया।' कहते हुए सावित्री ने रायसाहब की ओर देखा।

'हाँ,' रायसाहब ने कहा।

तीनों बाहर आये। दालान में रुक कर पुराणिक ने रायसाहब से हाथ मिलाया। 'थैंक्स फ़ॉर चीयरिंग अप माई वाइफ।' कह कर जगन्नाथ की ओर देखा। 'आई एडमायर यू, बट आइ एम सॉरी आलसो फ़ॉर यू।'[1] कहते हुए संजीदगी और प्यार में बोले—'कम अगेन!'

जगन्नाथ जल्दी से रायसाहब के साथ बाहर निकला। गेट पर खड़े गोरखे ने उन दोनों को सैल्यूट मार कर ताला लगा लिया।

10

मंजुनाथ परीक्षित को डँसने वाले साँप की तरह प्रवेश कर जाता है—हर कहीं। सदियों को लाँघने वाले व्यक्ति के पाँव की जमीन खिसक रही है, लेकिन उसे पता नहीं।

रायसाहब ने कहा कि 'फ़रेब के लिए ही सही, वास्तविकता के साथ रहना अधिक अच्छा है। भगवान के गर्भ में रहने वाले जैसे निष्क्रिय बने हुए हैं, उसी तरह बाहर भ्रम में रहने वाले पुराणिक भी। रायसाहब, लिबरल बनते-बनते आप भी निष्क्रिय हो गये। जब तक सारा भारतीपुर ही करवट नहीं लेता, तब तक यहाँ जीवन सृजनशील नहीं बन पायेगा।'

'ठीक है भैय्या, अभी तुममें अहं है, कुछ कर पाने के पौरुष में विश्वास है। ठीक है। तुम जैसों की भी आवश्यकता है।'

जगन्नाथ चुप रह गया। बाँस की तीली वाली झील के पास रायसाहब ने कहा—'एकदम भारी क्रान्ति में हाथ डालने पर कभी-कभी पुराणिक की तरह अन्त होता है।'

---

1. मैं तुम्हारी सराहना करता हूँ, पर मुझे तुमसे हमदर्दी भी है।

चौक आ गया। मोड़ की दूकान में चबूतरे पर छाते की मरम्मत करने वाला बैठा था। जगन्नाथ के बचपन में उसी जगह वह दूकान थी। छाते के फटे कपडों को सीकर चप्पड़ लगाना, नये तारों से काड़िया बांधना, घोड़ी की मरम्मत कर देना, आदि का कारीगर। उस दूकान के मालिक का नाम था रंगप्पा। काली टोपी पहने, ऐनक चढ़ा कर बड़ी लगन से बैठा रहता।

अब भी एक मैली टोपी पहने बैठा है। वह जहाँ बैठा है वहाँ खम्भे पर एक बोर्ड टँगा है। बेढँगे अक्षरों वाला वह बोर्ड, पहले से ही जगन्नाथ के लिए विनोद की वस्तु रही है। उस बोर्ड पर लिखा था: 'छातारि रंगप्पा।' आज भी वही बोर्ड जैसे का तैसा है।

'उसकी एक बेटी ने हाई स्कूल पास किया था।' रायसाहब ने बताया। 'किसी ट्रक ड्राइवर के साथ बम्बई भाग गयी। अब, बेचारा रंगप्पा भी अकेला है।'

अचानक रायसाहब ने अपने विचार का छोर पकड़ कर कहा—'मैं मानता हूँ कि लोगों को खुद कुछ करना सीखना चाहिए।'

जगन्नाथ हँसा।

बाँस की तीली वाली झील के पास आते समय याद आयी थी: 'कमला कैसी है?'

'कौन? बाँस की तीली वाली झील की कमला? तेरे साथ जो पढ़ती थी? सुना है, बम्बई में है।'

'रायसाहब, पुराणिक को देख कर मुझे डर लगा, शायद उन्हीं की तरह मुझमें भी क्षमता हो या कुछ और—लगता है कि हम कम से-कम इतना तो कर ही सकते हैं, लेकिन मातंग के लिए तो यह भी असंभव है।'

'तुम्हारा कहना ठीक है,' रायसाहब ने कहा।

'इसीलिए मंजुनाथ के साथ टक्कर लेना उचित लगता है,' जगन्नाथ ने तेज़ आवाज़ में कहा।

'हवा के साथ टक्कर लेने की तरह है,' रायसाहब बोले।

अपने भीतर की हलचल को रायसाहब तक पहुँचाना असम्भव है। लगा, इनके साथ बहस करने के बदले क्यों न मातंगों के साथ अधिक समय बिताया जाये?

कमला की फिर याद आयी। शायद अब वह मोटी हो गयी होगी। अचानक सुब्राय अडिग की याद आयी।...मिले बहुत दिन हुए। मिलना चाहिए। समाचार सुन कर वह जरूर आयेंगे। बचपन का गाँव, बचपन से जाने-पहचाने लोग, साथ में पढ़ा भगवान, अपने पाश्चात्य विचार से प्रभावित प्रज्ञा, नागमणी, कावेरी, मार्गरेट, मातंगों के बच्चे, ये रायसाहब, औरों की आँखों के आईने में उभरने वाली अपनी दुर्बलता, यहाँ कुछ रोपने, फूटने, खिलने की चाह, फिर सभी का गुजलक। वह बार-बार तोंदे-सा बन जाता है। इस उलझाव को काम से ही सुलझाया जा सकता है। दूसरा चारा नहीं। मार्गरेट, आइ एम डेस्परेट। नागमणी मर गयी, इसलिए जो भी करूँ ठीक है। हाथ बाँधे बैठना सम्भव नहीं। मातंग क्या मुझे छूने लिए तैयार होंगे?

घर पहुँचने तक, भूख लग आयी थी। एक बजे खाना। अभी बारह बजे हैं। माँझघर में मौसी बाट जोह रही थीं। रो-रोकर उनकी आँखें सूज गयी थीं। साथ में रायसाहब के होने के कारण हिम्मत कर पूछा—'क्या बात है, मौसी?'

बड़ी वेदना से मौसी ने जवाब दिया—'आज कोई खाने पर पाता दिखायी नहीं देता।'

इस घर में कभी ऐसा नहीं हुआ था। कम-से-कम बीस लोग तो खाने पर रहा ही करते थे। पर आज किसी ने इस ओर झाँक कर नहीं देखा था। जगन्नाथ क्या कहे, कुछ समझ में नहीं आया। कहा, 'रायसाहब आज खाने के लिए रहेंगे।' मौसी का चेहरा खिलते देख खुशी हुई।

मौसी को धीरज बँधाने के लिए आँखों में इशारे से समझा कर वह किसी दूसरे काम के बहाने आँगन में आया। बड़ी खुशी हुई। सिर पर सूखे पत्तलों की गाँठ लिये, दोनों हाथों में दोने के कट्ठों को लटकाये नंगे बदन सुब्राय अडिग खड़े थे। चेहरा पसीने से तर-बतर था। पीठ और कन्धे पर पड़ा चकत्ता, पिछली बार से अधिक बढ़ा हुआ था। इस चकत्ते को मंजुनाथ का भस्म बता कर हँसा करते थे।

'इन्हें मन्दिर में देकर आता हूँ, जग्गू भैय्या।' [illegible]

कहो, खाने के लिए आऊँगा। तुम्हारे साथ भी बहुत

अडिग जी की आँखें प्रसन्न थीं। चौक से आते हुए उनको भी बेशक ख़बर लगी होगी। फिर भी वह निर्भीक आये थे। जगन्नाथ ने, 'आइये; ज़रूर बातें करेंगे' कह कर भीतर मौसी को बताया। लेकिन मौसी को अडिग जी के खाने पर आने का विश्वास नहीं हुआ।

'उनको मालूम है। फिर भी आने की बात कह गये हैं।' जगन्नाथ ने कहा।

हड़बड़ा कर मौसी रसोई में घुस गयी।

11

कॉफ़ी पीकर रायसाहब सुर्ती में चूना मलते हुए बैठ गये। जगन्नाथ ने अपने बचपन की कहानी शुरू की।

'मेरे और अवधूतपन के बीच पाँच रुपयों की खाई है, रायसाहब। पता है आपको—सुब्राय अडिग से चुराये हुए पाँच रुपये जिस दिन लौटाऊँगा, शायद उसी दिन मंजुनाथ के सामने ताली बजाता हुआ नाचने लगूँगा।' मौज में आकर जगन्नाथ ने कहा। स्मृति ने उसे झकझोरा था। ऐसी मानसिक बारीकियों में उतनी आसक्ति न रखने वाले रायसाहब ने जगन्नाथ की बातों को सहानुभूति से सुन लिया।

हाई स्कूल में पढ़ते समय सुब्राय अडिग उसके बड़े प्रिय व्यक्ति थे। शादी के बाद अचानक विरक्त होकर सारे भारत का भ्रमण कर आये हुए, वह मनमौजी व्यक्ति थे। अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों भाषाओं में बोलना और पढ़ना जानते थे। उसकी माँ के बड़े चाहने वाले थे। वह मीरा के भजन गाते, माँ वीणा बजाती—कारिन्दे कृष्णय्या सुनते बैठे रहते। हिमालय में हृषिकेश, बदरी आदि की यात्रा की साहस-भरी कहानियाँ; वहाँ निष्ठुर सौन्दर्य का हावभाव-युक्त वर्णन—जगन्नाथ को बचपन में मुग्ध कर देते थे।

'धूप में उस पहाड़ पर चढ़कर देखोगे तो दंग रह जाओगे, जग्गू भैया! नीचे हज़ारों फीट गहरी, पहाड़ की ढलान। पर सभी कितना साफ़ कितना स्पष्ट! इतना साफ़ कि एक चवन्नी तुम ऊपर से फेंक दो तो

नीचे गिरने तक चमचमाती हुई आँखों को स्पष्ट दीखती रहेगी ।' वर्णन करते समय वह एक चुटकी सूँघनी चढ़ाने लगते और आँखें फाड़ कर तन्मय बैठा रहता था, जगन्नाथ।

संस्कृत पढ़ाने अडिग जी रोज आया करते थे। भावावेश इतना कि उँगलियों से विष्णु-क्रान्ति को घास से हटाकर नील-घनश्याम का स्मरण कर वह रोने लगते थे।

एक बार भारतीपुर से बहुत दूर जंगल में ले जाकर उन्होंने जैनालय के खण्डहर वाली झील के किनारे जगन्नाथ को बिठाया था। सुनसान प्रदेश। शाम का समय। अवतारों के बारे में वह बोलते-बोलते बेसुध होकर नाचने लगे। किसी चरवाहे की बंसी की आवाज सुनायी पड़ी। 'हे, बंसीधर। तुम आओ सत्वर!' कह कर सुरीली आवाज में गाना शुरू कर दिया। जगन्नाथ को संकोच था। जब पता चला कि उसको ही कृष्ण समझ कर गा रहे हैं तो बड़ी बेचैनी हुई। पर अपने बाल-मन पर अडिग के आवेश के प्रभाव के कारण आँखों में आँसू आ गये थे। जब उन्होंने कहा था, 'तुम मामूली लड़के नहीं हो, जगू भय्या! शुक मुनि की भाँति तुम भी बड़े भगवद्भक्त हो' तो सुनकर चकली के प्रति अपनी विशेष रुचि के लिए उसे शर्म आयी थी।

अडिग जी का जीवन परिशुद्ध और भगवान के नशे से ओत-प्रोत था। केले के पत्ते काट कर उन्हें धूप में सुखा उनमें पत्तल और दोने बनाना; तकली पर जनेऊ तैयार करना; नदी किनारे जाकर कुश काट लाना—फिर बेचना। जहाँ बुलायें, वहाँ जाकर पौरोहित्य करना। जो कुछ मिला, कमर में खोंस कर ले आना। इस प्रकार की कमाई से गृहस्थी चलाना। पर जो भी घर आये, उनका खाना हो; कॉफ़ी हो; कम-से-कम गुड़ का पानक तो जरूर हो। किसी में भी कमी न आये। घर-भर में बच्चे थे, साल में एक के हिसाब से। उधर एक रोता है; इधर कोई मूत कर लीप रहा है, और किसी की नाक बह रही है—इसके बीच सुप्राय अडिग, तकली पर सूत कातते हुए भगवान की महिमा गाते रहते हैं, या किसी मूर्ख बाबा की, भक्त विधवा की, किसी उपनिषद् शंकर, रामानुज और माध्व के भाष्य की सराहना

रहते हैं।

सुब्राय अडिग किसी में भी ऐब नहीं देखते। किसी के हृदय में भगवान का स्वरूप स्पष्ट दिखायी पड़ता है तो किसी में वह धूमिल रहता है। उनका सिद्धान्त है कि वह अहंकार से आवृत्त रहता है।

प्रतिदिन अच्युत अनन्त गोविन्द के नाम पर कितनी दूर चलना हुआ, इसका हिसाब लगाते हुए बस्ती से बाज़ार का नाप कर, केले के पत्ते बेच कर, अन्थोनी डॉक्टर की दवा लेकर गृहस्थी चलाते रहे। कितने मरे, कितने बचे, किसकी वर्षगाँठ कब है—इन सबका हिसाब रखने वाली उनकी पत्नी आखिर प्रसव में ही मर गयी थी। बेचारी! उसने तो आँखें बन्द कर लीं, पर इधर घर भी तो चलना था। गाँव-गाँव भटकने वाले अपने से, चूं-चाँ करने वाले बच्चों की देखभाल कैसे हो सकती थी — इसलिए मरी हुई पत्नी की बहन से ही अडिग ने दूसरी शादी कर ली। उससे कुछ और बच्चे पैदा हुए। कितने? क्यों? 'इस देह की दुर्बलता की तृप्ति के लिए न जाने और कितने जन्म लेने पड़ेंगे'—कहते हुए सुब्राय अडिग विषाद से हँस देते हैं। मंजुनाथ विरागियों का ही भगवान नहीं—अनुरागियों का भी है। कहते हैं, 'मैंने गृहस्थी, निभाने की मनौती ढोयी है।'

कुछ दिन उनको विरक्ति हुई थी। अपने पाँव के चक्र के कारण, उन्होंने तब भारत के कोने-कोने में छाँट कर साधु-सन्तों से भेंट की थी। उसी समय वर्धा में कर्म-योग के द्वारा मोक्ष के मार्ग पर चलने वाले गांधीजी की प्रार्थना-सभा में वे गये थे। हरिजन फ़ण्ड के लिए अपने कानों की बुंदकियाँ और यज्ञोपवीत में बँधी अँगूठी देकर, उनके कृपा-पात्र बने थे।

वैराग्य की आग बुझने लगी तो घर की ओर पाँव बढ़ाया। आने पर क्या देखा? बाल-विधवा छोटी बहन को गर्भ ठहरा हुआ था। किससे, क्यों गर्भवती बनी—खोद कर पूछा नहीं; बहन को भला-बुरा सुनाया भी नहीं। बीबी की किटकिट पर कान नहीं दिये। पेट बढ़ता गया। सारा गाँव बातें करने लगा। किसी को पकड़ कर पेट उतार लिया—क्या कर सकती थी भला? उसका प्रारब्ध! पर घटश्रद्ध किये बिना कैसे चल

सकता ? पौरोहित्य से बच्चों का पेट जो पालना था। कर्म-फल के घड़े को पूरा जो भरना था। इसलिए बहन को जाति से बाहर कर लिया। पर रहती घर में ही है। चौपाल में सोती है; चौपाल में खाती है; केले के पत्ते काट कर लाती है; सिर मुंडाकर रहती है—उसकी विरक्ति को अपने से भी महान कह कर प्रशंसा की थी। उसकी तरह सारा दिन मन्दिर का कौन भला फेरा लगाता है? भीतर नहीं आती, अशुचि नहीं करती। लड़कियों के बालों में कंघी करती है। रोज आँगन को वही लीपती है। कमल के पत्ते पर पड़े पानी की बूँद की तरह जिये जा रही है, कर्मों को काटती हुई। 'भाई' पर उसकी प्रीति नहीं गयी; बहन का मोह अपने से नहीं कटा। सही-गलत सभी जगन्नाथ पर छोड़ देंगे। अहिंग की बातों को गाँव ने भी मान लिया—किसके घर के छिलड़े में छेद नहीं होते ?

सुधाय अहिंग का जगन्नाथ पर मोह था। माँ के भी चहेते होने के कारण वह भी उनका आदर करता था। कुर्ता न पहनने वाले अहिंग का अंग्रेजी जानना आश्चर्य की बात थी। पूरे भारत की यात्रा के समय हिन्दू-धर्म सम्बन्धी अनेक ग्रंथ प्राप्त किये थे। हृषिकेश के स्वामी शिवानन्द जी ने अपनी पुस्तकों को आटोग्राफ करके आशीर्वादस्वरूप उन्हें दिया था।

जगन्नाथ को वह अपनी किताबें देते। सामने बैठ कर गाते। 'ब्रह्मचर्य ही जीवन, वीर्यनाश ही मृत्यु' नामक पुस्तक देकर कहते, 'यह कठिन रास्ता मेरे लिए दुर्गम बना; देखो, शायद तुम्हें साध्य हो। हृषिकेश में रहते हुए ही जब मुझे स्वप्नस्खलन हुआ तो समझ लिया कि इस जन्म में विरक्ति मेरे लिए सम्भव नहीं।' अपनी देह के सुख की सम्भावनाओं को जो समझने लगा था, उस जगन्नाथ को उस पुस्तक के पढ़ते समय कुछ मन्द कुछ कम लज्जा नहीं हुई थी।

शरीर के वस्त्रों को भस्म कहने वाला, गाते-गाते रो पड़ने वाला, रोते-रोते हँसने वाला, निर्जन प्रदेश में नाचने वाला, वर्ष-भर की बचायी हुई कमाई को कार्तिक मास में सन्तर्पण कर देने वाला, यहाँ रह कर भी किसी और जगत में रमने वाला, भगवान का वह रसना एक बार वास्तव में पागल बन गया था। भागो पागल। पत्थर फेंकना, पास जाने पर काटना; थूकना; आधी रात में उठ कर हो, हूँ कर रोना; पत्नी

देखकर आग-बबूला होना—आदि बातें गाँव-भर में फैली हुई थीं। पर जगन्नाथ हिम्मत करके जब उनसे मिलने गया तो वह रोते हुए बैठ गये। जगन्नाथ को लगा कि बस, अब अवधूत बन जायेंगे। पर उनका पागलपन उतर गया और झक लग गयी। जगन्नाथ ने इस झक को ध्यानावस्था समझा।

अडिग का अनुचर बन कर अपने बेटे की बदलती चाल-ढाल को देखकर माँ घबरा गयी थीं। माँ की घबराहट देखकर जगन्नाथ अपने वैराग्य को और भी बढ़ा कर सवेरे का कॉफ़ी-नाश्ता छोड़कर तुलसी-दल का ही नाश्ता करने लगा था। जगन्नाथ का बोलते समय कभी-कभी आँखें बन्द करना, फिर आँखें फाड़-फाड़ कर देखते हुए चुप रह जाना, बीच-बीच में हँसना, दोनों हाथों को ऊपर उठा कर गरदन को दायीं ओर घुमाते हुए चौंकाने वाली बातें करना—सभी अडिग का ही अनुकरण था।

उस समय वही बाँस की तीली वाली झील की कमला जो अब बम्बई में है, स्कूल में पढ़ती थी। जगन्नाथ की ही कक्षा में। उसको जब 'ओह लोट्स लव' कह कर दूसरे लड़के चिढ़ाते रहते तब उनके बीच अडिग का चेला जगन्नाथ गम्भीर मुख-मुद्रा बनाये घूमा करता था। दीवारों पर हर रोज़ लिखी इन बातों को मिटाता था। शरत बाबू के 'देवदास' और 'शेष प्रश्न' से प्रभावित जगन्नाथ की नज़र में, वेश्या की बेटी कमला एक आदर्श नारी थी। ज़मींदार का बेटा होने के कारण दूसरे बच्चे उसकी इज़्ज़त करते, जिससे उसका गांभीर्य और भी बढ़ता गया। अडिग का स्नेह, उपाध्याय का वात्सल्य, घर की सामन्ती, माँ का दुलार, शरत बाबू के उपन्यासों की भावुकता—इन सबके मिलन से जगन्नाथ को पाँव-तले की ज़मीन दिखायी नहीं पड़ती थी।

भीतर-ही-भीतर जगन्नाथ पक रहा था। मन-मन्दिर की देवी बनी कमला के प्रति उसका परिशुद्ध प्रेम था फिर भी सहपाठी गोबर-गणेश रंगय्या की—'उसके गाने पर तबला बजाता हूँ, उसे रूमाल भेंट देता हूँ, साथ पढ़ने के बहाने उसी के घर रहता हूँ' आदि बातें सुनकर जगन्नाथ बड़ा दु:खी हुआ था। कारिन्दे कृष्णय्या के कमरे में देखी 'कलयुग' पत्रिका के चित्र की तरह रंगय्या कमला को परत-दर-परत नंगी करता जा रहा है;

फिर वह खुद भी नंगा हो रहा हो, जैसी कल्पना किये बिना वह नहीं रह पाता था। किसी से कह भी न पाता। इस अनिवार्य बेचैनी से खाना, पढ़ना, नींद—सब हराम। फिर अड़िग के अनुभवों की शरण जाने की जगन्नाथ ने जो भी चेष्टा की थी, वह सब बेकार हुई थी।

इसी बीच उसके जीवन की गति को बदलने वाली एक घटना हुई।

अड़िग जी ने उसे एक किताब दी थी। सन्तों की जीवनी के बारे में लिखी स्वामी शिवानन्द की पुस्तक। उस पर 'मातृभूमि' पत्रिका का कवर चढ़ा था। उस पत्रिका का पुराना समाचार पढ़ने के कौतूहल से कवर खोला था। कवर के अन्दर से एक पाँच का नोट गिर पड़ा था। क्या नोट इस कवर के भीतर अड़िग ने क्यों यह पैसा छिपाकर रखा होगा ? किसकी नजर से छिपा कर रखा होगा, क्यों ? क्या स्वामी शिवानन्द जी का दिया हुआ पैसा है ? विपत्ति में काम आये, इसलिए तो कहीं छिपा कर नहीं रखा है ?—इत्यादि कई प्रश्न एकदम उठ खड़े हुए। जीवन के व्यावहारिक झंझट से कोसों दूर रहने वाले अड़िग को इस प्रकार पैसा छिपाते देख जगन्नाथ को बड़ा आश्चर्य हुआ था।

आज भी जगन्नाथ नहीं समझ पाता कि क्यों उसने उस पाँच के नोट को कवर के भीतर न रख कर, अपनी जेब के हवाले किया था ? जगन्नाथ को किसी बात की कमी नहीं थी। माँ भले ही उसके हाथ में पैसे न देती हों, पर माँगी हुई हर चीज दिला देती थीं। फिर बिना किसी सोच-विचार के जिस क्षण इस प्रकार पाँच का नोट अपनी जेब के हवाले किया था, उसी क्षण उसमें धीरे-धीरे परिवर्तन होने लगा था। अपनी दुनिया में नये गवाक्ष खोलने वाली यह घटना आज भी जगन्नाथ की समझ में नहीं आ सकी।

उस दिन के पहले तक माँ से कोई बात छिपा कर नहीं रखी थी। पर पाँच रुपये जेब में रखने के बाद कपड़े बदलते समय माँ की नजर चुरा कर उसे एक जेब से दूसरी जेब में बदलता रहा। माँ जब पीठ रगड़ती, बालों में उँगलियाँ फेरती हुई दुलार से बातें करने लगतीं, तब इस छिपाये हुए पाँच के नोट ने माँ की ममता का सम्पूर्ण अनुभव करा दिया था। अपने को जग्गू भैय्या कह कर प्यार से सम्बोधन करने वाली मौसी, व [illegible]

सबसे छिपा रहस्य अपने पास है, इसके चलते उसके मन में सूक्ष्म परिवर्तन होने लगे। तभी से वह अलग हो गया। बड़ों के अनजाने किसी अँधेरे कोने में उसकी प्रज्ञा है, इस बात ने उसको सम्मोहित कर रखा था। इस घबराहट ने उसे एक नया ही ज़ायका दिया। यदि कोई मित्र तब पूछ लेता कि यह पैसा क्या करोगे, तो कह देता कि किताब लौटाते समय कवर में रख कर लौटा दूंगा।

पर आश्चर्य की बात है कि उसने ऐसा नहीं किया। चोरी की उत्कटता को अनुभव करने की स्थिति तक जगन्नाथ पहुँचा। इतवार की एक सुबह अडिग जी आये। नहा कर शरीर में चन्दन लगाये। तेज़ी से आने के कारण उनका सारा बदन पसीने से भीग गया था। उनकी आँखें खुशी से चमक रही थीं। आँगन में जगन्नाथ को देखते ही, 'अरे जग्गू भैय्या, जानते हो क्या हुआ? रास्ते में श्मशान पार कर आया हूँ। अभी अँधेरा-सा था एक मातंग कब्र खोद रहा था—मरे हुए बछड़े को गाड़ने के लिए। उसकी देह, जटा बँधे बाल, पुष्ट मांस-पेशियों वाली भुजाएँ, खोदते समय उसकी तन्मयता—सबने एकदम मुझे भगवान नीलकण्ठ की याद दिलायी। कन्याकुमारी तीर्थ में एक योगी की कही बात याद आयी। इस देह को पहले परिशुद्ध हो जाना चाहिए। इतना कि मल विसर्जन करने के बाद फिर धोने की आवश्यकता ही न पड़े। ऐसा बनने के लिए देह और मन को कितना कम खाने का आदी बनना पड़ेगा—सोचो। तब वास्तव में मनुष्य पशु-पक्षियों के निकट आ जायेगा। हाँ, तो क्या कह रहा था—वह श्मशान वाला मातंग भी परमेश्वर क्यों नहीं है? ऐसा मुझे लगता है—यहाँ', कहते हुए सिर को छुआ, फिर सीने पर हाथ रख कर बोले—'यहाँ पर भी ऐसा ही लगे, तो ये सभी बेड़ियाँ कट जाएँगी।' फिर जनेऊ को तिरस्कार से दिखाते हुए उन्होंने पूछा—'माँ कहाँ हैं?' और भीतर चले गये।

जगन्नाथ की सारी देह में भय का संचार होने लगा था। माँ ने उन्हें उपमा और कॉफ़ी दी। अडिग ने कहा, 'उड़ीसा में जयदेव कवि के गीत बड़ा अच्छा गाते हैं। वह उसकी जन्मभूमि जो है। मैं गाऊँगा, आप वीणा बजाइये, कल।' जगन्नाथ वहाँ से किसी काम के बहाने गोशाला की ओर

गया। गोशाला में बंधी और बछड़ा-जनी गंगा ने [illegible] सीग मारने दौड़ी। कांपते हाथों से जगन्नाथ ने जेब [illegible] निकालकर हड़बड़ी में बनियान में ठूंस लिया। जेब [illegible] होते-होते, नोट पसीने में भीगकर पुराना पड़ [illegible]। [illegible] मद में खोस कर गोशाला से बाहर आया। [illegible] हाथ धोने आते देख, सहजता से कहा, "गंगा ने [illegible] दौड़ती है।"

फिर जीने पर चढ़ कर कुछ पढ़ने लगा।

अडिग जी उसके सुपुर्द किये हुए नील[illegible] उसके लिए उन्हें वर्ष में एक बोरा चावल और [illegible] मिलते हैं। माँ का कहना 'चावल गाड़ी [illegible] साठ रुपये एकदम हाथ लगते ही अडिग जी [illegible]

"अबकी बार किधर ?" माँ ने पूछा। [illegible]

'कालड़ी क्षेत्र जाकर मलयालम देश देख [illegible]' अडिग ने कहा।

वे जीना चढ़ चुके थे। पास आते-से लगे। [illegible] गया। उसे लगा कि अब भी पाँच का नोट चाहे तो [illegible] रखा जा सकता है। पर न जाने क्यों, वह उठा नहीं। [illegible] पसीना। खोया-खोया-सा देखता रहा। अक्षर [illegible] और अडिग के वहाँ आने से बेखबर होने का अभिनय [illegible] रहा।

'ऐसी तन्मयता हो तो, भगवान भी [illegible]' हँसते हुए अडिग ने पूछा—

'शिवानन्द जी की पुस्तक पढ़ ली हो तो दे देना, [illegible]'

एकाएक सचेत होने का नाटक कर जगन्नाथ [illegible] ढूँढ़ने का अभिनय किया। समय बिताया। [illegible] या वैसे ही उसने चढ़ाया है या नहीं, देखा। [illegible] उसे किसी गाँव के सत्याग्रह का समाचार पढ़ते हुए [illegible]

पैसा अडिग को लौटाये या नहीं लौटाये—दुविधा में फंस गया, जगन्नाथ।

'पूरी न पढ़ी हो तो बाद में देना। कोई जल्दी नहीं' कह कर अडिग कमरे से बाहर चले गये। माँ अपने टेबुल पर रखी पुस्तकों को सजा रही थी। किसी को भी शंका नहीं हुई थी। किताब को एक दिन और रख कर, रुपये उसके अन्दर छिपा कर लौटाया जा सकता था। पर जगन्नाथ के मुँह से निकला—'पढ़ चुका हूँ, ले जाइये।'

किताब अडिग को दी। उसके पैसे चुराने की बात का आज भी अडिग को पता नहीं होगा। उनके भूल जाने में भी कोई आश्चर्य नहीं। जो भी हो, जब उसने पुस्तक लौटायी तब उसका दिल मारे खुशी के नाच उठा था। अब तक अपरिचित एक बिलकुल नयी स्वतन्त्रता मानो मिली थी।

अडिग के साथ माँ भी चली गयी। आज जहाँ बैठा है, तब भी जगन्नाथ उसी कमरे में बैठा था। किवाड़ बन्द कर कुण्डी लगा ली। लगा कि वह जो चाहे कर सकता है। बनियान के भीतर हाथ डालकर देखा तो बनियान गीली, नोट गीला, जनेऊ गीला। नोट को बाहर निकाल कर जेब में डाल लिया। शरीर से चिपके हुए जनेऊ को निकालना चाहा। पता नहीं, क्यों? शास्त्रोक्त ढंग से जनेऊ निकालना हो तो पाँव से उसका विसर्जन कर नया जनेऊ पहनना चाहिए। पर दायीं आस्तीन में जनेऊ को फैलाकर कन्धे से ही उसे बाहर खींच निकाला। निषिद्ध ढंग से जनेऊ उतारने के कारण डर और हँसी-मिश्रित भाव को आईने में देख लिया। जनेऊ को सन्दूक में रखा। उपनयन के बाद इस प्रकार, एक पल के लिए भी वह कभी बिना जनेऊ के नहीं रहा था। कुर्ता पहने रहने के कारण माँ को पता नहीं चलेगा। बिना जनेऊ के रहने से कुछ नहीं होगा; है न? इसे खुद जानने के लिए निरायास नीचे उतर कर आया। पूजागृह के सामने खड़ा हुआ। अर्चक गन्ध निकालते बैठे थे। आँगन में गया। अनाज-घर में घूमा। सुना है अनाज-घर में एक बूढ़ा साँप है, कहाँ? बिना जनेऊ के अपने वहाँ घूमने से कहीं अशुचि हो जायेगी! धूप में पेड़ के नीचे झुरमुट को, बांबी को देखा। सीटी बजाते हुए 'पाहि श्री गौरी, करुणा लहरी' गाना गाया। सुना है, सीटी सुन कर साँप बाहर निकलते हैं, देखें तो सही।

सीटी बजाते हुए पेड के नीचे खडा रहा। दौड़ते हुए पहाड़ी से उतर कर बाजार के रास्ते पर आ गया। शिवमोगा जाने वाली दूसरी बस हाँफती हुई चढ़ रही थी। बस उसे देखते हुए खड़े यों ही सीटी बजाते हुए, बीच के रास्ते से चल कर बाँस की तीली वाली झील तक चला गया।

गली में कमला का घर था। क्या वहाँ रंगय्या होगा? कमला की दी हुई सुबह की कॉफी पीता हुआ? होटल से क्या खिलड़े मँगाये होंगे? रंगय्या के पिता को शर्म नहीं आती!

'लम्बोदर, लकुमिकर—सा री मा ग री सा री ग री सा'—हार्मोनियम पर कमला के घर में संगीत का अभ्यास चल रहा था। बेशक रंगय्या बिस्तर में लेटा हुआ कमला का गान सुन रहा है। जगन्नाथ को कसमसाहट हुई। गली में कोई नहीं था। फिर चल पड़ा। देह में फिर से पसीना छूटा। किराने की दूकान, तेली की दुकान, पोते से पीठ खुजलवाते बैठे दादा, माँ के हाथ से खिसक कर भागने वाला नँगे बदन वाला लड़का, 'मालिक, कैसे इतने सबेरे!' पूछने वाले घर के नौकर आदि सबका ध्यान रखते हुए, वह चौक में चला आया। दुकानों की गली में चला, फिर रथ की गली में चल कर सीधे मन्दिर। बिना जनेऊ के नंगे बदन ब्राह्मण को मन्दिर में नहीं जाना चाहिए, इस बात की याद आते ही वह देहरी पार कर भीतर पहुँच गया।

जमींदार के बेटे को देख कर सभी ने बड़े गौरव से रास्ता दिया। गर्भ-मंदिर का द्वार अभी खुला नहीं था। गर्भ-मंदिर के अँधेरे में जलते रहने वाले दो नंदा दीप खिड़की से दिखायी पड़े। आदतन हाथ जोड़े। मीठा तेल, अगरबत्ती, धूप चम्पा की मिली-जुली गंध।

जुड़े हुए हाथ यों ही ऊपर उठाये। पता नहीं, क्यों! दोपहर में बजने वाले, अपने पूर्वजों के दिये हुए बड़े घंटे को हाथ से टटोला। उँगली के सिरे का घंटे की चिकनी जिह्वा को सिरा (लटकन) छू गयी। बजाया। वहाँ के सभी बेचैनी से उसकी ओर देखने लगे।

"महा मंगल-आरती के समय बजाने का है वह,' कोने में खड़े ने घबरा कर चीखा। पर जगन्नाथ मानो आवेश से काँप रहा था के नाद से पुलकित होकर उसकी देह ने फिर से उछल कर घंटा

उसका घोष पहाड़ों में गूंज कर सारे भारतीपुर को दिग्भ्रान्त कर देगा। इस विचार से उन्मत्त उछल-उछल कर जगन्नाथ ने कितनी बार घंटा बजाया, पता नहीं।

किसी ने उसे पकड़ लिया था। उसकी पीठ सहलायी गयी। तीर्थ (चरणामृत) पिलाया गया। 'भूतनाथ ने जगन्नाथ के शरीर में प्रवेश किया होगा'—किसी की कही इस बात को सभी ने मान लिया था। गौरव के साथ अपने माथे पर सिन्दूर लगाये, उसने भूतनाथ को हाथ जोड़े।

सभी की नजर में हीरो बन कर जगन्नाथ बाहर आया। चुपचाप घर की ओर चला। चेहरा लाल, कान गर्म थे। घंटे का घोष अभी उसके कानों में गूंज रहा था।

अचानक फिर बाँस की तीली वाली झील के रास्ते की ओर मुड़ा, क्योंकि देखा कि उसका एक हितचिन्तक मन्दिर से ही उसके पीछे-पीछे आ रहा है। वह सीधा कमला के घर वाली गली की ओर चला।

गली के मोड़ पर एक पान की दुकान थी। होटल सुन्दरय्या की रखैल से पैदा हुआ सुब्ब, गिलौरियाँ बना रहा था। जैसे ही छड़ी लिये खड़े एक पुलिसवाले ने प्रणाम किया, जगन्नाथ चल पड़ा। बस्ता लिये एक नाई सामने आया। दाईं ओर के घर से चिलड़ा डालने की आवाज़, बू। धूप चढ़ रही थी। कमला के घर के सामने आकर जगन्नाथ ठहर गया। हार्मोनियम की आवाज़ नही थी। खिड़की से भीतर का दरवाज़ा, दरवाज़े के पास रवि वर्मा की दमयन्ती, दरवाज़े पर पुरनी और चूड़ियों के वन्दनवार दिखायी पड़े। पास में कहीं कोई नहीं था।

वह कमला के घर के चबूतरे पर चढ़ा, खिड़की से पाँच का नोट उसने भीतर फेंका, रास्ते में कूद कर भागा। अपनी पीठ पर गाँव की पीछा करती आँखें होने का भ्रम था, पर मुड़ कर देखा तो कोई नहीं था।

भागते हुए ही घर आये बेटे को माँ ने व्यग्रता से देखा। तभी किसी ने मन्दिर से आकर उसके शरीर पर भूतनाथ के आवेश होने की बात बतायी होगी। पर माँ ने उनके बारे में कुछ कहा ही नहीं। जगन्नाथ सीधे कमरे में जाकर हड़बड़ी में जनेऊ पहन कर नीचे आया। मूक खड़ी माँ ने जगन्नाथ की नज़र उतारी थी।

12

जगन्नाथ की कहानी खत्म होने के बाद, 'चलो मौसी क्या कर रही हैं, देखें', कह कर रायसाहब उठे। कहानी सुन कर वह यों ही हँस दिये थे। मौसी के दिये हुए चौके पर दोनों बैठे।

भीतर मौसी खुद जलेबी बना रही थी। प्रहिग को जलेबी बहुत पसन्द थी। रोज की तरह बीस-पच्चीस ब्राह्मणों के न आने से हुआ मौसी का दुःख अब कम लगा। शायद उन्होंने तसल्ली कर ली थी, कि नौकर खायेंगे या गोशाला का काम करने वाली मातंगी ले जायेगी।

मौसी की गोशाला का काम करने वाली मातंगी पर ममता थी। मौसी को मसखरी करते सुना है कि सूअर की तरह उसके बच्चे हैं।

'कितने पिल्ले हैं री तेरे', इस मसखरी से शुरू होकर उसके पति के व्यभिचार, बड़े बेटे की पीने की आदत, छोटी लड़की का तीर्थ हल्ली के किसी मातंग के साथ भाग जाने, चिक्कमगलूर कॉफ़ी बाग के लिए गये, बेटे के एक बार भी लौट कर न आने, बच्चे पर भूत आने—इत्यादि की बातें होती हैं।

आटा घोलती हुई मौसी ने श्रीपतिराय से कहा, 'मतंगों के पाँव पसारने को काफी जगह है। मन्दिर में घुस कर उन्हें क्या लेना है, भला?'

मौसी को सीधे विषय पर आते देख जगन्नाथ को खुशी हुई।

'बात ऐसी नहीं, मौसी। अपने देश में जब ये पतित लोग आन्दोलन करने के लिए उठेंगे, तभी जीवन का कोई अर्थ होगा। वियतनाम के गरीबी खेतिहरों को देखो—अमेरिका जैसे देश से डट कर लड़ रहे हैं। इसी तरह अमेरिका के नीग्रो लोगों का आन्दोलन। ऐसे लोग जब उठ खड़े होंगे तभी उनका जीवन ही नहीं निखरेगा, बल्कि उनके आदमी बने बिना अपना भी मनुष्यत्व अधूरा ही रह जायेगा।'

मौसी के चेहरे पर खीझ देख कर जगन्नाथ को शर्म आयी कि उसकी बात भाषण जैसी हो गयी।

'तुम्हारी बातें मेरी खोपड़ी में नहीं उतरतीं, जग्गू भैय्या। अब

मातंगों के बच्चों को स्कूल भेजने पर, सुना है, उन्हें पैसे मिलते हैं। उन पैसों का वे क्या करते हैं, पता है ? पीकर बरबाद करते हैं। जब तक अपने उद्धार की धुन उन्हें ही नहीं होती, तब तक तेरे सारे काम जल में किये हवन की तरह हैं।'

'ना मौसी ! हमारे उपकार करने से वे ठीक नहीं होंगे, सच है। वास्तव में हमें धिक्कार कर उन्हें उठ खड़े होना चाहिए। तभी उन्हें लगेगा कि वे भी मनुष्य हैं। अपने-आपको वे नीच समझें, यह हमने ही उन्हें बताया है ...।'

'जो चाहे करो जग्गू भैय्या, पर घर की इज़्ज़त मत भूलो। सूरज को खाने गया था हनुमान। अपना मुँह ही जला लिया। रायसाहब से पूछो, बतायेंगे। तू बच्चा था। तीन दिनों तक होश नहीं आया था। अपनी गोद में सुला कर मृत्युंजय का जाप करते अडिग बैठ गये थे। तुम्हारी माँ ने पूजागृह के सामने बैठ कर आँसू बहाते हुए भगवान से प्रार्थना की थी, इकलौता बेटा है, बचाओ। मेरी आँखों के सामने अभी भी ज्यों का त्यों धरा है। घर में किसी के मुँह में पानी नहीं उतरा। तेरे शरीर पर टोच लगाये गये, पर होश नहीं आया। आखिर जब तुम्हारी माँ ने मंजुनाथ जी को सोने का मुकुट बना कर देने की मनौती की, उसी क्षण तुमने आँखें खोलीं। इन सबको भुला देना क्या ठीक है ?'

रायसाहब बड़ी सहानुभूति से मौसी की तरफ़ देख रहे थे। मौसी को उद्वेग में देख जगन्नाथ चुप रहा।

'चिन्ता मत करो, बहन। यह मत समझो कि जग्गू भैय्या नासमझी करेगा।'

रायसाहब ने सांत्वना-भरी बातें कीं। दोनों धीरे से उठ कर ज़ीने पर गये। एक बजा था। इतने में सुब्राय अडिग भी आये। 'खाने में अभी आधा घण्टा है। ताश खेलने में अडिगजी को आपत्ति तो नहीं होगी ?' हँसते हुए रायसाहब ने पूछा।

'तीन हाथ होते हैं, अच्छा। अट्ठाईस का खेल खेलेंगे।' कह कर अडिग बैठ गये। उत्साह न होने पर भी जगन्नाथ भी तैयार हो गया।

'ताश खेलना नहीं जानते तो जेल में पागल हो गये होते, साब'।

अडिग ने कहा।

'बरसात में अपना काम भी क्या रहता है ? तकली पर सूत कातते रहना या कटहल के पापड़ बेल कर भून कर खाते हुए ताश खेलना।' कह कर सुब्राय अडिग हँस दिये।

हर बात के लिए तैयार रहने वाले. पर मैं क्यों ऐसा नहीं ? सोचते हुए जगन्नाथ ने तारा ढूँढा। रायसाहब ने क्या मिल का कपड़ा नहीं जलाया था ? क्या अडिग भगवान की भक्ति में पागल नहीं हुए थे ? कहीं भी रमने वाले लोग कोई और होते हैं। शायद माँ ऐसी थी। बछड़े, भोजन, उपचार, ईद-त्यौहार, सगे-सम्बन्धियों को भेंट, मंगलाचार आदि में वे डूबी रहती। अडिग बताते हैं कि प्रयोग से पहले ध्यान, धारण, स्मरण, मनन, अध्ययन, अनुष्ठान, सिद्धि जैसे सोपान होते है। पता नहीं वह किस सोपान पर है ?

ताक में ताश नहीं। मार्गरेट राजनीति पर बात करती, म्यूज़ियम जाना चाहती है, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनना चाहती है, गप-शप चाहती है, कौतूहल से विण्डोशॉपिंग करती बाजार घूमना चाहती है, पर वह केवल एक उद्देश्य के लिए बद्ध है।

अडिग का कहना है कि एकाग्र रहने पर योगभ्रष्ट होते है। 'योगो चित्तवृत्ति निरोधः'—अडिग ने ही कहा था। केवल एक ही बिन्दु के दायरे में उसका मन घूमता। पर इस केन्द्र में मातंग, अभी जीवित व्यक्तियों के रूप में दिखायी नहीं पड़ते। ढलती शाम के समय आनेवाली लम्बी-लम्बी छायाएँ दूर ठहर कर ही, सुनने वाली काली देह। फिर अपनी-अपनी झोंपड़ियों को चले जाने वाली। वे पीते समय क्या बातें करते होंगे, कैसे संभोग करते होंगे, क्या सोचते होंगे ? बच्चों को कैसे दुलारते होंगे, कैसे रोते होंगे—पता नहीं। उनके नाम ही भूले जाते हैं। कौन पिल्ल, कौन करिय, कौन मुद्द...!

उन दिनों में उसके पास एक नार्थपोल पेन थी। फिर ब्लैकबर्ड । माँ की दी हुई शाल को लेकर मार्गरेट कैसे हँसी उड़ाती। पैबन्द लगी मुलायम शाल। काशी से माँ ने लाकर दिया था। अब भी उसे ओढ़कर सोता है।

जगन्नाथ ने वही खोली । पन्ने के ऊपर 'श्री मंजुनाथ प्रसन्न' लिखा था । दूसरी वही में भी 'श्री मंजुनाथ प्रसन्न' । जब कभी बाईं आँख फड़कने लगती, बाएँ पाँव को ठोकर लगती, प्रश्न-पत्रिका के लिए हाथ बढ़ाते समय मंजुनाथ का ध्यान । गजब की बात है कि अब भी मंजुनाथ का ध्यान, केवल ढंग अलग है । पेटी में ताश का पैक था। कान मुँड़े हुए पत्ते । 'फिसलते ही नहीं । बहुत पुरानी हैं', ऊँची आवाज़ में बोला । 'चलेगा', रायसाहब ने कहा ।

रायसाहब ने ही तीनों को पत्ते बाँटे ।

'आपका बड़ा लड़का क्या कर रहा है, अडिग जी ?'—जगन्नाथ ने पूछा ।

'वह एक कहानी है । घरवाली और बहू के बीच छत्तीस का सम्बन्ध है । हर दिन कुरुक्षेत्र । बेटे को पौरोहित्य में रुचि नहीं । कह दिया कि जैसी मरज़ी हो करना । शिवमोगा के एक होटल में काम करता है । दूसरी लड़की की सगाई सागर में जो हुई थी, पति मर गया । अब वह घर आ बैठी है। उसकी तीन लड़कियाँ हैं । मुझे ही शादी करनी होगी । बेटी और घरवाली में पटती नहीं । फिर भी चला जा रहा है।'

बड़े खेद से अडिग ने कहा। फिर भी चेहरे पर मुसकराहट थी । नहले को फेंक कर बोला—'मेरी भी तबीयत इधर ठीक नहीं, जग्गू भैय्या । पहले की तरह अब दौरे नहीं कर सकता ।'

खेल में हार जगन्नाथ की ही हुई । मौसी ने आकर भोजन के लिए बुलाया । तीनों खाने के लिए बैठे। घर के अर्चक, रसोइया, उनके बच्चे —सभी का खाना हो गया था, अब खाने पर तीन ही रह गये थे ।

बड़े चाव से दाल-भात खाते हुए अडिग ने इधर-उधर की बातें करते हुए अन्त में कहा—'मैंने जो सुना, क्या सच है, जगन्नाथ ?'

अडिग को प्रमुख विषय पर आते देख जगन्नाथ को खुशी हुई ।

'देखो, जगन्नाथ, तुम समझदार हो। अहंकार से मुक्त हुए बिना ऐसी क्रिया के लिए हाथ डालना ठीक नहीं। सारे गाँव का ही भविष्य इस प्रश्न में समाया हुआ है।'

बातें सुनने की उत्सुकता से मौसी पकौड़ियाँ परोसने आयी। अडिग की पसन्द तुरई की पकौड़ियाँ सभी के पत्तलों में यथेष्ट पड़ीं। मौसी को 'बस, बस' कहने की सुध तीनों को नहीं रही। जगन्नाथ ने कहा—'आपकी दलील जानता हूँ, अडिग जी। आपका कहना केवल यही है कि सिर्फ संन्यासी ही इन सामाजिक बन्धनों को धिक्कार सकता है।'

अडिग निश्चिन्त भाव से बोले—

'हाँ, ठीक है। संन्यासी के लिए नैवेद्य भी समान है, अभेद्य भी समान है। समदर्शी होता है वह। परमहंस जी को यज्ञोपवीत का अहंकार आया तो उन्होंने उसे निकाल कर फेंक दिया। जूठे पत्तलों से कुत्ते और कौवों के साथ जूठन खाने वाले को गुरु माना। ऐसे आदमी के लिए चमार-मातंग और ब्राह्मण में फ़र्क ही क्या है?' इस जानी-मानी दलील ने जगन्नाथ को झकझोरा नहीं। पर अडिग की बातों के पीछे छिपे आवेश को मानकर सोचने लगा कि अब क्या कहने से बात बने!

"अवधूत बने बिना, यदि आपका कहना है, कि कोई क्रिया सम्भव नहीं, तो इस सामाजिक जीवन में संसारी बनकर कोई अर्थपूर्ण मौलिक काम कर पाना असम्भव हुआ, आपका यही मतलब है न? अर्थात समाज के भीतर कोई अर्थ नहीं! नतीजा यह हुआ कि जो भी अर्थ है वह इस समाज को कुचल कर खड़े रहने में है।'

रायसाहब कुतूहल से उसकी बातें सुन रहे थे। मौसी ने जलेबी परोसी। 'बस' कह कर अडिग के पत्तल को हाथ से ढँकने पर भी मौसी ने 'तुझे पसन्द जो है', कहकर दो जलेबियाँ डाल ही दीं। इस आग्रह में रायसाहब को जगन्नाथ की बातें सुनायी नहीं देती दीखीं। बड़े चाव से जलेबी खाते हुए बोले—

'देखो जग्गू भैया, मैंने जनेऊ पहन रखा है। यह मेरे जीविकोपार्जन का चिह्न मात्र है। इसके रहने से ही पौरोहित्य के लिए बुलाते हैं, मन्दिर में सामवेद की सेवा के लिए बुलाते हैं, नीलकण्ठेश्वर की पूजा के लिए

तुम्हीं ने नियोजित किया है। पर भगवान के हाथों में पड़ने पर मैं आरती के कपूर की तरह जल जाता हूँ। कर्म से चिपके रहने तक, व्यामोही बने रहने तक, यह सारी दुनियादारी चाहिए ? अन्त में कुछ नहीं।'

अडिग कहने कुछ जा रहे थे और कह कुछ और ही दिया। उनकी बातों का ढंग ही ऐसा है। जिधर भावनाएँ चलीं उस ओर बहक गये।

'पुराण क्या कहते हैं : ब्रह्मर्षि वशिष्ठ उर्वशी नामक अप्सरा का बेटा था ! इस वशिष्ठ ने अरुन्धती नामक एक चाण्डलिनी से शादी की थी। विवाह के समय वर-वधू को इसीलिए चाण्डालिनी के दर्शन करना चाहिए। देखा, कितना क्रान्तिकारी धर्म है अपना। है न ?' हामी में मौसी और अडिग को सिर हिलाते देख, जगन्नाथ लाल हुआ।

"इसी को मैं आत्मवंचना कहता हूँ। भोलेपन से बड़ा खतरा दूसरा नहीं है, अडिग जी। इस प्रकार की बातें करने वाले धर्म ने अपने देश को क्या बनाकर रखा है, देखिये। जिसने इतनी सारी क्रान्तिकारक कहानियाँ बनायीं उस देश में समाज सदियों से जैसे का तैसा ही जो है। उसका कारण क्या हो सकता है भला ? ऊपर वालों को ऊपर और नीचे वालों को नीचे ही रखने लायक मक्खन लगाने का काम करते हैं ये पुराण ौर ये विश्वास।'

सुब्राय अडिग को गुस्सा नहीं आया। इस चर्चा को बेकार समझने के भाव से रायसाहब जगन्नाथ पर आँखें लगाये खाना खत्म कर बैठे थे। 'और एक लो' कहकर मौसी की परोसी दो जलेबियों में से अडिग ने एक को उठा लिया। मीठे को पसन्द न करने वाला जगन्नाथ कभी का अपना खाना समाप्त कर चुका था। इधर वह यथासाध्य कम खाने के प्रयोग में लगा था। दूसरों का भोजन खत्म होने से बेखबर अडिग जी धीरे-धीरे जलेबी तोड़कर मुंह में डालते हुए बातें कर रहे थे।

'मेरा कहना इतना ही है, जगन्नाथ। क्या तुम्हें वास्तव में मातंगों से प्यार है ? यदि ऐसा प्यार वास्तव में तुम में हो तो तुम पशु-पक्षी, चाण्डाल में तादात्म्य स्थापित कर अवधूत बन जाओगे। तब संघर्ष की बात ही नहीं रहेगी। आन्दोलन की जरूरत ही नहीं। तन्मय होकर जीते

ने देखा, अडिग इतने स्वाद सुख के साथ भोजन करते हैं कि जिसे भूख न हो उसे भी भूख लग जाये।

पानी देने के लिए चमकता ताँबे का लोटा लिये कोने में खड़ी मौसी ने कहा—'तुम्हारा कहना क्या है, जग्गू भैया? पूजा करने से ही भगवान, पोषण करने से ही बच्चे, पालन करने से ही प्रजा, क्या यह कहावत झूठ है?'

अपनी बातों का और मौसी के कहने का कुछ तालमेल न देखकर, क्या कहें कुछ समझ न पाकर जगन्नाथ चुप हो गया। फिर मौसी बोलीं, 'शादी कर लेने पर सब ठीक हो जायेगा। तुम्हारी माँ जीवित रहती तो इन सबके लिए अवकाश ही नहीं रहता।' कहती हुई मौसी ने पानी दिया, भीतर से और कुछ सेवई की खीर लायीं।

अब तक चुप बैठे हुए रायसाहब ने कहा—"मौसी के कहने में सचाई है। मंजुनाथ की कीर्ति इसलिए बढ़ी है क्योंकि सदियों से उसने करोड़ों लोगों के अत्यन्त निजी दुख-सुखों को सुना है। मैं नहीं कहता कि उसने सुना है। लोग इस विश्वास पर जी रहे हैं कि वह सुनता है।'

'ऐसे एक विश्वास के नष्ट होने पर ही...।'

'मनुष्य-स्वभाव को ऐसे एक विश्वास की अनिवार्यता है...।'

'अर्थात् इस ज़मीन में छिपे ताँबे को खोदकर निकालने से, गाँव में बिजली आने से, अस्पताल के एक्स-रे प्लेट मँगवाने से, पानी धीरे-धीरे वैज्ञानिक दृष्टि के बढ़ने से अपने-आप...।'

'नहीं जायेगा, भैया, नहीं जायेगा। रूस में भगवान को नाश किया गया, क्या हुआ? क्या स्टालिन ही भगवान नहीं बन गया?'

'यह तो इसी तरह की बात हुई कि जब एक न एक दिन मरना ही है तो कुछ करने से क्या फायदा?'

दोनों के हाथ सूख रहे थे। उठना ही चाहते थे कि अडिग ने बात शुरू की। 'अन्त में मेरा कहना इतना ही है कि उत्कटता न हो तो जीते जी मरने के बराबर है। परमहंस के चरण-स्पर्श होते ही विवेकानन्द को पाँव तले की ज़मीन ही खिसकती हुई-सी लगी थी। भगवान के हाथों में पड़ने पर हम भी उसी तरह झकझोरे जाते हैं, जलते रहते हैं। ऐसी वेदना

को एक बार भी अनुभव नहीं किया हो तो सब बेकार है। सच ही—भारी डर लगता है। सब-कुछ खोया-खोया-सा लगता है, रोम-रोम में हर्ष होता है। सृष्टि में घुल जाते समय अपने भिन्न होने की भावना का तिरोभाव हो जाना चाहिए—वही बड़ा कठिन है, भैया। बद्रिकाश्रम में गोविन्द गुरु नामक एक व्यक्ति ने मुझसे यही कहा था : वहाँ तक जाता हूँ, अडिग ! पर तब मुझे डर लगता है। हाथ-पाँव मारते हुए किनारे आकर पड़ा रहता हूँ। अब जग्गू भैया में यदि उत्कण्ठा हो, उसके मन को यदि मंजुनाथ ने द्वेष में भी घेर लिया हो तो वह बड़ा भाग्यशाली है। यही मेरा कहना है। माने या न माने—मुख्य नहीं। वह उत्कटता, वह वेदना जग्गू भैया को भी जरूर होगी। अहंकार की निवृत्ति होनी ही चाहिए।

जन्मना जायते शूद्रः
कर्मणा जायते द्विजः
वेदपारायणात् विप्र.
ब्रह्मजानेति ब्राह्मण.

—कहा जो जाता है, क्यों ? अधिक से अधिक हम सभी द्विज होंगे, बस। ध्यान, धारण, मनन में जग्गू भैया विप्रावस्था को पहुँचे होंगे। क्रिया के द्वारा वह मंजुनाथ और जनता के सम्बन्धों को बदलने निकले हुए हैं। इसे बदलने की झंझट में, सब-कुछ समझ पायेगा, साफ होगा। दर-असल किसी से छुटकारा पाने के लिए उसके भीतर की कोई शक्ति खटपट करती रहती है। गर्भ का शिशु जैसे माँ की कोख में ठुमकियाँ लगाता है, उसी तरह यह मंजुनाथ के अंग-अंग को पुलकित करने वाली बात है यह। फिर ?'

आँखें बन्द किये हुए अडिग ने धुन्ध में बातें शुरू की थीं। साथ ही सेवईं की खीर से किशमिश और काजू चुन-चुन कर बड़े मजे से खा रहे थे। उनकी कुछ बातें किसी भी गँवार ब्राह्मण-सी थी; और कुछ आवेश से चमकने वाली। प्यार और बेचैनी से अडिग की बातें सुनता हुआ जगन्नाथ अब अडिग के आवेश के सहज होने की प्रतीक्षा करने लगा।

'भ्रान्ति ! कौन-सी भ्रान्ति ? कौन-सा सच ? मंजुनाथ पर विश्वास

कर लोग भ्रान्ति में जी रहे हैं, उन्हें जगाऊँगा। जगन्नाथ कहता है कि वे वेदना से जाग जायेंगे। कल नींद में जो सपना देखा था वह आज जागृति में भ्रान्ति लगता है। आने वाले कल की जानकारी में आज की जागृति भ्रान्ति लगती है। इस जानकारी के परे वाला दर्शन हो जाने पर भगवान कौन, द्विज कौन, मातंग कौन...!' बात बदलने के लिए रायसाहब ने कहा, 'मौसी की बात इतनी आसानी से मत टाल देना। बीवी-बच्चे वाले को ज़िम्मेदारी समझ में आती है। उस ज़िम्मेदारी को निभाते हुए भी यदि तुम्हारा सोचा काम सम्भव हो तो ही उसका कोई अर्थ है। बीवी के साथ जीना क्या होता है, बच्चों को संभालना क्या होता है, इसे जाने बिना ही 'क्रान्ति' करने का कोई अर्थ नहीं। सुख-दुःख का मुँह जब तक न देखा हो तो किसके लिए क्यों क्रान्ति करनी चाहिए, बताओ! गांधीजी द्वारा की गयी क्रान्ति तो ऐसी नहीं थी।'

इसी भाँति बातें चलती रहीं तो कहीं तमाशा न हो जाये, इस डर से जगन्नाथ उठ खड़ा हुआ।

तीनों ने हाथ धोये।

जगन्नाथ अडिग की बग़ल में खड़ा रहा। भीतर के सारे सन्तोष को व्यक्त करने के ढँग से अडिग ने भीगी आँखों से जगन्नाथ को देखा। भग्न जैनालय के सामने अपने को बिठाकर अडिग ने जो कहा था, उसे याद कर जगन्नाथ घबरा गया।

'जगन्नाथ, तुम छिपे भक्त हो।'

जगन्नाथ हँस पड़ा। कहा कि 'अडिग कितने भोले हैं!' उसकी पीठ पर अडिग ने दुलार से हाथ रखा। चन्दन लगी उनकी नंगी देह ने उसके शर्ट से स्पर्श किया। उसको बाँहों में भरने के लहजे में उनका हाथ पीठ पर घिरा। बेचैन होकर जगन्नाथ ने हिचकते हुए कहा—"ऊपर चलिए।"

रायसाहब निंदाये चटाई पर आँखें बन्द किये सोये थे। पान खाते हुए अडिग जो कहानी कहना चाहते थे खुशी से कहने लगे—

'योगो चित्तवृत्ति निरोधः। एकाग्रता की महिमा बताने वाली कहानी है यह। उड़ीसा में किसी गोसाई की कही हुई। मौसी के सामने यह कहानी

कहने लायक नहीं थी इसलिए तुम्हें वहाँ नहीं कहा।

'किसी जमाने में एक मेहतर था। रजवाड़े में पायखाना ढोने का उसका काम था। रजवाड़े के बारे में पूछना ही क्या है! ऊँचे पायखाने। एक दिन जब वह मल उठाने गया था, तब रानी बैठी थी। मल उठाने के लिए मेहतर जब बाहर से भीतर झुका तो रानी का योनि-प्रदेश देखकर चौंक गया। जीवन में गौर वर्ण की स्त्री के उन अंगों को उसने देखा ही नहीं था; इसलिए दिन-रात उसे इसी की धुन लग गयी। रानी का नंगा बदन कैसा होगा, इसकी कल्पना करते हुए उसने खाना-पीना छोड़ दिया, नींद हराम हो गयी, नहाना-धोना छोड़ दिया। उसका चेहरा मुरझा गया, आँखें धँस गयीं, दाढ़ी बढ़ गयी, और सिर के बाल जटा बन गये। मेहतर की स्त्री परेशान हुई। उसके पति को ऐसा क्या हुआ? पति के पीछे पड़ी। जब सुना कि बात ऐसी है तो मेहतरानी ने कई दिनों तक सोचा। पति की जान बचाना बहुत जरूरी था। आखिर एक दिन किसी तरह वह रानी के पास पहुँच ही गयी। रानी उसकी कहानी सुनकर हँस पड़ी। ठीक है—उसने कहा, तुम अपने पति को लाओ, कहो कि वह मेरे सारे शरीर को नंगा देख सकता है।'

'मेहतर आया। खड़ा रहा। देखा कि रानी नंगी होकर खड़ी है। पर आश्चर्य की बात है कि उसी का ध्यान करते-करते, रानी के नंगे शरीर को देखने के समय तक, वह देखने के मोह से पार हो गया था। वह योगी हो गया था। जटा-जूट और दाढ़ी वाले मेहतर को रानी ने देखा। नंगी रानी को मेहतर ने देखा। उसके पाँव छूकर मेहतर ने प्रणाम किया। मेहतर के पाँव छूकर रानी ने प्रणाम किया।

'मैं जो कुछ कहना रहा हूँ उन सारी बातों का तात्पर्य इस कहानी में है। धीरे-धीरे इसका अर्थ तुम्हारी समझ में आयेगा।'

13

अडिग और रायसाहब कुछ देर आराम कर और कॉफी पीकर चले गये थे।

दोनों के चले जाने के बाद जगन्नाथ मातंग युवकों की बाट जोहने लगा। चौपाल में कुर्सी पर बैठकर सोचने लगा—देखें, आज आने वाले मुझे छुयेंगे या नहीं ? अब तक इस बारे में सोचा ही नहीं था। रेत पर अक्षराभ्यास करने वालों के लिए लायी गयी नयी तख्तियाँ और खड़िया उन्हें देने के लिए पास रख लिये। उनको सिखाने को ज़रूरी अक्षर कौन-से ? पढ़ना सीखने के बाद उन्हें दी जाने योग्य पुस्तकें कौन-सी ? 'चोम का ढोल'[1] पढ़ाना होगा। उसे सरल भाषा में लिखना होगा; बसवेश्वर के बारे में, ईसूर के बारे में फ्रान्स और रूस की क्रान्तियों के बारे में, चीन की सांस्कृतिक क्रान्ति के बारे में। कुछ पन्ने लिखे थे। उसे कल पढ़ने की ठानी। उनके साथ कोई बात करते हुए हिचकना नहीं चाहिए। उनको सच्चा लगने लायक़ सच्चा कठिन व्रती बनना चाहिए। अपने को जो कुछ सच लगा है, उसे उनको भी जानना चाहिए। जब वे खुद छूने के लिए आगे बढ़ेंगे, उसी क्षण बाक़ी सब धीरे-धीरे सच बनता जायेगा और मंजुनाथ पीछे हटता जायेगा। वह उत्सुकता से उनकी राह देखने लगा।

आखिर वे दूर से आते हुए दिखायी पड़े। जटामय काले बालों में लाल गर्द; नंगे बदन पर काला कम्बल। कमर में केवल लंगोट, उसमें अटकायी छुरी।

आँगन में उस पार आकर वे खड़े हुए। 'आओ' कहा। वे आँगन में आये। फिर और भी नजदीक आने को कहा। डरते हुए वे आँगन में खड़े रहे। मानो आना ही अपराध हो। उनसे चौपाल के पास आने को कहा। धीरे-धीरे पाँव घसीटते हुए आये। चौपाल पर चढ़कर बैठने के लिए कहने की जगन्नाथ को हिम्मत नहीं हुई। बैठने के लिए कहा। नीचे कम्बल डालकर बैठ गये। तनाव कम करने के लिए पास की तश्तरी से सुपारी और सुर्ती फेंकी। एक ने बड़े चाव से पकड़कर साथियों में बाँटा। 'खा लो' कहते हुए वह भी पान में चूना लगाते हुए सुपारी चबाने लगा।

---

1. मातंगों की समस्या को लेकर लिखा हुआ डॉ० शिवराम कारंत का ख्यात उपन्यास जिसकी कन्नड़ में फिल्म भी बनी है, जिसका निर्देशन बी० वि० कारंत ने किया है। इसी नाम से अब हिन्दी में अनूदित भी हुआ है।

पर मातंगों ने उसके सामने सुर्ती में चूना नही लगाया। घबराये बैठे थे। जगन्नाथ ने जो मुँह में आया वह नाम पुकारा : 'पिल्ल !'

'जी' कहकर एक आदमी खडा हुआ। यही पिल्ल है; फिर से पहचानते हुए, कैसा लम्बा हट्टा-कट्टा काला है...! सिर पर बालों का झुरमुट। चेहरे पर कँवली छूँछें, खुरखुरी दाढ़ी सुदृढ शरीर वाला सुन्दर युवक। इसी को नायक बनाना चाहिए।

'बाकी पाँच लोग क्यों नही आये ?'

'बेस्तूर गये हैं, मालिक।'

'मुँह मे डाल लो।'

पान चबाते हुए जगन्नाथ ने प्रतीक्षा की। मातंग सुपारी मुँह मे डालकर सुर्ती में चूना मलने लगे। वह आगे जो कहना चाहता था, वह कितना असंगत लगा। सरल शब्दो मे बोला : 'अमावस के दूसरे दिन रथोत्सव है; तुमको उस दिन मेरे साथ मन्दिर मे चलना होगा।' मातंग चुपचाप बैठे थे। क्यों? उन्होंने पूछा नही। जाने किस दिशा मे उनका मन बह रहा था! अपनी बातें पकड़ने लायक उन्हें कैसे बनाया जाये ? 'क्यों' कहकर स्वयं प्रश्न पूछकर जवाब देने की चेष्टा की। सुर्ती मुँह मे भरकर मातंग चुपचाप बैठे थे। गांधी, अम्बेडकर, नीग्रो, गुलाम—वह न जाने क्या-क्या बडबड़ाता रहा। मातंग जैसे के तैसे बैठे रहे। सब-कुछ कितना असंगत, कितना हास्यास्पद लगा !

'अब तुम्हे तख्ती पर लिखना, पढना सीखना होगा।' कहकर बात बदली। एक तख्ती पर 'कमल' लिखकर चौपाल से 'लो पिल्ल', कहकर उसकी ओर बढाया। पिल्ल खडा हुआ। जगन्नाथ ने 'लो' कहा।

फिर जगन्नाथ तख्ती को पिल्ल के हाथों के पास ले गया। पिल्ल ने झट हाथो को नीचे कर लिया। 'गिरेगी तो तख्ती टूट जायेगी', कहकर जगन्नाथ और भी झुका। पिल्ल के हाथ और भी नीचे गये। जगन्नाथ और भी झुका। अब पिल्ल अधिक न झुक कर चबूतरे के नीचे हाथ फैलाकर जमीन पर बैठ गया। जगन्नाथ यदि और झुकता तो शायद पिल्ल जमीन के भीतर धँसने का भी प्रयत्न करता। हाथ बढाने और दूर हटाने का यह नाटक कितना हास्यास्पद है ! इससे उदास होकर जगन्नाथ ने

तल्ली छोड़ दी ।

जगन्नाथ ने फिर मातंगों को समझाया कि उन्हें मन्दिर में प्रवेश क्यों करना है। अपनी सारी बातें स्वगतोक्ति जैसी लगने पर भी सारी बातें बताकर कहा, 'कुछ तो पूछो ।'

किसी ने जबान नहीं हिलायी ।

'ए, पिल्ल, कुछ तो पूछ, रे ।'

कोई और देख ले तो शरमा जाने वाला सन्निवेश ! इन मातंगों के साथ लगाव से बातें करने की चेष्टा मानो चोरी करना हो ।

शरमाते हुए पिल्ल ने सिर खुजाया—'मेरे बाप ने कहा है, मेरे लिए मातंगी लानी है, पचास रुपये महर देना है ।'

'किस मातंगी को, रे ?'

जगन्नाथ ने मसखरी से उसे हँसाने की चेष्टा की । दूसरे मातंग ने मुसकराते हुए कहा—'पिल्ल के लिए एक मातंगी, मालिक । उसे लाने के लिए महर जो बांधना पड़ेगा । वह मातंगी आप ही के घर में नौकरी करके कर्जा चुका देगी ।'

पिल्ल के लिए एक मातंगी ! कौन मातंगी ? कैसी है वह ? पिल्ल ने क्या उससे प्यार किया है ? सुना है, उम्र बढ़ते ही मातंगों के बच्चे अपने मां-बाप के पीछे पड़ते हैं कि शादी कराओ । बूढ़ी मातंगियों को मौसी से सुख-दुख की बातें करते समय जगन्नाथ ने सुन रखा था ।

'कल पटवारी से मांग लेना, कह दूंगा । शादी कब है ?'

मातंगों ने बताया कि अभी दो माह की देरी है । इतनी आसानी से महर मिल जाने से पिल्ल का चेहरा खिल उठा ।

मातंगों के चले जाने के बाद जगन्नाथ को एक उपाय सूझा । उसकी तरह मातंगों को भी सफ़ेद कुर्ता और सफ़ेद तहमद पहनना चाहिए । शायद तब उनमें मुझे छूने की भावना उत्पन्न हो सकेगी । इस विचार के सूझते ही खुशी हुई । रायसाहब की दूकान से दसों के लिए कपड़ा खरीदा जाये; श्याम की दुकान से आधे आस्तीन के रेडिमेड कुर्ते खरीदने चाहिए, कल ही—सोचकर भीतर जाने के लिए उठ खड़ा हुआ ।

कावेरी इंधन ढोये, ढोरों को हांकती हुई आंगन में आयी । तिरछी

नज़र से देखा। शर्म से मुसकरायी। उसके सामने इस तरह चलने-फिरने की हिदायत शायद जनार्दन सेट्टी ने दी होगी। वह टार्च लिये फुर्ती से आया और कहने लगा—'इस मातंगों के साथ मेल-जोल क्यों, मालिक?'

उसकी हिम्मत देख कर जगन्नाथ को गुस्सा आया।

'काम कैसा चलता है?' अधिकारपूर्वक पूछ कर जवाब की प्रतीक्षा किये बिना वह भीतर चला गया।

नौकर गैस-लाइट जला रहा था। दोपहर का खाना देर से होने के कारण, मौसी से 'अब कुछ नहीं' कह कर, अपने कमरे में जाकर लेटा। कोई किताब उठा कर पढ़ने की चेष्टा की। कभी-कभी पुराणिक से मिलते रहने का विचार आया। पर व्यर्थ ही समय बरबाद होगा। उसके सूखे कपड़ों को रखने के बहाने कावेरी कमरे में ही चक्कर काट रही थी। कंदील की रोशनी नाकाफ़ी थी। उसने नीचे से गैस-लाइट लाकर टेबुल पर रखी। उद्वेग से साँसें लेते हुए जगन्नाथ कावेरी को अनदेखा कर पढ़ने की चेष्टा करने लगा। जब कावेरी चली गयी तो उसे तसल्ली हुई।

दूसरे दिन सवेरे उठते ही रायसाहब की दुकान से दस जोड़े तहमद और श्याम से दस जोड़े कुर्ते खरीद लाया। दुकान से जगन्नाथ के लौटने की प्रतीक्षा में बैठा पटवारी शास्त्री बही-खाता लेकर कमरे में आया। जब से रायसाहब के बेटे रंगय्या को काम पर लिया था, तब से शास्त्री को अव्यक्त खीझ में देख जगन्नाथ ने मृदुता से पूछा, 'क्या बात है?' शास्त्री ने बताया कि स्वर्गीय कृष्णण्णा का बेटा गोपाल मेले के अवसर पर घर आना चाहता है, अतः सौ रुपये भेजने के लिए मैसूर से पत्र लिखा है। फिर पूछा कि भेजें या नहीं? घर के लड़के जैसे गोपाल को पैसा भेजने में पटवारी की संकुचित मनोवृत्ति देख जगन्नाथ चिढ़ गया। बोला—'मुझसे क्या पूछना है? भेजिये।'

डाक की बस आयी। अपनी डाक में मार्गरेट की चिट्ठी देख कर, उतावलेपन से जगन्नाथ ने उसे खोल लिया। प्यार से हड़बड़ी में एक छोटा-सा पत्र लिखा था। 'तुम विश्वासपात्र बदमाश हो, इतने दिनों से चिट्ठी क्यों नहीं लिखी? अब इंग्लैंड में चुनाव की गर्मी है। मैं चाहती

जगन्नाथ जानता था कि ये बच्चे साँस लेने से भी डरते हुए पलते रहे हैं। पर वह कुछ कर नहीं सकता।

भोजन से निवृत्त होकर कमरे में आते समय मौसी का सामना हुआ। उनको देखते ही कसमसाहट हुई। उनके सारे हौसले को तोड़ देनेवाला क्रोध उनके चेहरे पर था। उनको अच्छा लगे इसलिए, 'गोपाल ने मेरे पर आने को लिखा है,' कहकर जगन्नाथ ज़ीना चढ़ गया। तभी हड़बड़ी में रायसाहब हाथ में समाचारपत्र लिये आये।

'जगन्नाथ, तुम समाचार बन गये हो,' कहते हुए रायसाहब ने शिवमोगा से निकलने वाले दैनिक 'जागृति' को हाथ में थमा दिया। स्वभावतः राजनीतिक रायसाहब के लिए, समाचार बनने की बात कितनी महत्त्व की है, जगन्नाथ को हँसी आयी। 'जागृति' ने जगन्नाथ की सामन्ती पर उल्लेख कर उसकी क्रान्तिकारिता की प्रशंसा की थी।

'इसका सम्पादक तीन-चार पार्टियाँ बदल चुका है' —रायसाहब ने कहा—'कल बैंगलूर की पत्रिकाओं में भी सम्पादक के नाम पत्र रहेंगे।' —कहकर रायसाहब उत्साह से पढ़ते हुए बैठ गये।

जगन्नाथ ने देखा कि रायसाहब को उसके काम में उत्साह न होने पर भी उसकी कितनी चिन्ता है।

रायसाहब की भाँति स्वभाव से वह राजनीतिक व्यक्ति नहीं है। इस बात को रायसाहब भी जानते हैं।

रायसाहब बड़ी देर तक चुप बैठे रहे। जगन्नाथ लिखता रहा : कुछ बात किये बिना भी उनके साथ रहना अच्छा लगता है। पास रहना-भर काफी है। बहुत कम लोगों के साथ ऐसा सम्बन्ध सम्भव है। मार्गरेट के साथ तब यह सम्भव नहीं हो सका। सदा परस्पर छेड़-छाड़ या प्यार-दुलार करते रहना चाहता था।

रायसाहब के चले जाने के बाद प्रभु आये। आराम से बैठ कर पासिंग-शो सिगरेट जलायी। बोले—'अगली बार के चुनाव में आपको ही उम्मीदवार होना होगा। बुड्ढियों को यह सीट नहीं छोड़नी चाहिए।' इन बातों में अरुचि दिखाने के लिए जगन्नाथ ने जम्हाई ली। जगन्नाथ की खुशामद करने लगा—'मैं और आप बैंगलूर जाकर मिनिस्टर से मि

आयेंगे, और बिजली के लिए प्रार्थना-पत्र दे आयेंगे—आप तो हरिजनों के उद्धार के लिए कमर कसकर खड़े हैं। पर क्या आप समझते हैं कि वे ज़रा भी एहसान मानेंगे? देखना, कल वे वोट डालेंगे तो वह सरकार की पार्टी को ही'—कहकर खड़े हुए। जाने से पहले बोले—

'आप जैसे विद्वान के साथ बातें करने में बड़ा लाभ है। दूसरी बार अपने लड़के को भी लेता आऊँगा। आप ही देखकर बताना कि वह इंजीनियर बनने लायक है या आई० ए० एस० कराना होगा?'

हाथ जोड़कर चले गये। जगन्नाथ फिर लिखने बैठा। अपने मन में जो कुछ चल रहा था, उसे लिख रखने की इच्छा हुई। इस प्रकार शुरू किया :

प्रारम्भ से ही मैंने सीमाओं के बारे में नहीं सोचा; विचार उमड़-उमड़कर आते हैं; यथार्थ से मैं असन्तुष्ट हूँ। मेरी समस्या यह है : मार्गरेट के साथ पीटर टाम, रूबेन्स् के साथ हाइडपार्क में धूप सेंकते हुए या यूनियन बार में बियर पीते हुए, मैंने विचारों की गेंद खेली है। मित्रों के बीच मनमानी बात कहने के कारण मैं अपने को स्वतन्त्र मानने के भ्रम में पड़ा रहा...। मनमाने ढंग से सोचते हुए, बन्धन-मुक्त होकर जिधर चाहे उधर डोलते हुए, उत्साह में खिलते रहना धीरे-धीरे मुझे अवास्तविक लगा। विचार कितना सच है, इसे जानने के लिए, उसे यथार्थ की कसौटी पर कसना होगा। अर्थात अब मातंग युवक जिस हद तक तैयार होंगे, मेरे विचार भी उतने ही सच होंगे। इस कसौटी की ज़रूरत है।

रायसाहब जैसे मुक्त विचारक से, भगवान के गर्भ में बन्द हाथ-पैर चलाने वाला गांधी कहीं अधिक सच्चा है। पुराणिक के साथ विचारों की गेंद खेलने से प्रभु के साथ जूझना ही अधिक अर्थपूर्ण है।

उदाहरण के लिए कम्युनिस्ट पार्टी का दीक्षित। कभी बेंगलूर में उसके साथ चर्चा हुई थी। तब मुझे बड़ी कसमसाहट हुई थी। चारमीनार पीते हुए अँग्रेजी में उसने बहस की थी। किसी भारतीय भाषा को भी ठीक-ठीक न बोल पाने वाला, फटा कुर्ता, ढीला पैण्ट, लापरवाह मस्त आदमी। उसके लिए गांधी एक फ़रेब था।

'ये लोग आपके परिचित नहीं; गांधी इस ज़मीन को जानता

है। उसने कहा : मथने वाली मथनी को खुरदरा होना पड़ता है। ध्वनि तरंगों को पकड़ने वाले एरियल की तरह बुद्धिजीवी बने रहने से नहीं चलेगा। हिन्दू धर्म के आकर्षण को जो अपने में भी पहचान सके, वह यहाँ पर कोई सच्चा विचार कभी नहीं कर पायेगा।

दीक्षित मान गया था। पर हँसते हुए कहा था कि पहले आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन होना चाहिए।

बंगाल के काली भक्त में तथा, गला काटना चाहने वाले उग्र कम्युनिस्ट में कितना सम्बन्ध है ?—इस तरह बड़ी देर तक बहस करता रहा।

अपने को अकेला पाने वाली निवृत्ति, या प्रयोजनहीन होने का एहसास ही है यह सारी झंझट। सभी से मुक्त हुए भ्रान्त अडिग की तरह हो सकूँगा; अपने कमरे को इंग्लैंड बनाया जा सकेगा; जो है उसी को स्वीकार कर पंखुड़ियों की सीमा में भी खिलने वाला वास्तववादी बन सकूँगा। एक क्षण को मन्त्रमुग्ध बनाकर खिसाने वाले क्या संगीतकार नहीं हैं ? यह परिवर्तन की हिंसा ही क्यों चाहिए ? आग उत्पन्न करने वाली क्रिया है वह। मार्गरेट के साथ जाड़े में नंगे बदन सोया था, फूलदान में लाल गुलाब। गर्मी में गर्मी बनती हुई, और भी पास सटकर देह से चिपकी मार्गरेट की साँसें कन्धों पर रहतीं। उसके बालों को गालों से सटा कर बिताये निडर क्षण। बिना आतुरता, के, आलाप की तरह कुछ चढ़ते,कुछ उतरते हुए, विस्तृत कर लेने वाला सुख, चरम स्थिति को पहुँचाने की आतुरता को निरन्तर आगे बढ़ाते रहने वाला सम्भोग...।

फिर भी मार्गरेट ने मेरा निराकरण क्यों किया ? मुझे भी क्यों वह यथेष्ट नहीं लगी ? इस धरती में कुछ बोकर फल न पा सकने वाले, यों ही जन्म लेकर यों ही झड़ जाने वाले मातंगों के लिए क्यों सच्चा बनना चाहता हूँ ? अडिग का अनुभव, मार्गरेट का सहवास क्यों यथेष्ट नहीं हुए ?

जो लिखा था उसे पढ़ा। अतृप्ति हुई। छह मास पहले भी शायद यह लिख सकता था। भीतर के सभी विचारों को हूबहू देख नहीं सकता। अभी आदर्शवादी ही बना हुआ है।

मातंगों के आने तक कुछ घूम आने के विचार से जगन्नाथ

की तरफ़ गया। इधर ज़मींदारी में अभिरुचि दिखाने का अभिनय कर रहा है। 'क्या है शीनप्पा, कैसे हो शेट्टी,' कहता, पूछताछ करता घूमता रहा। अखबार में मन्दिर-प्रवेश का समाचार छपने के बाद उनके वर्ताव में परिवर्तन आया था। उसने भाँप लिया था कि अपने महाजन का मातंगों के साथ मिलकर नीच बनना, उनकी यातना का विषय बना था। जितना वह निर्दयी बनेगा उतनी ही उसकी दया की क़ीमत उनकी नज़र में बढ़ेगी। पर केवल परिवर्तन की क्रिया से ही तो इन लोगों की नज़र में नया बना जा सकता है!

आम के पेड़ के नीचे खड़ा हुआ। इस बार भरपूर बौर आये हैं। शायद मौसी ने दो वर्ष का अचार डालने का हिसाब लगाया होगा। शायद इसलिए शिवमोगा से काँच के छह बड़े मर्तबान लाने के लिए कल मौसी शास्त्री से कह रही थीं।

छाल पर चींटियाँ। भूनकर खाये जाने वाले झींगुर। रात के समय पिछवाड़े आग जलाकर पानी गर्म कर नहाते हैं। सुख के बीसयों चोर रास्ते हैं। पर उसकी खोज कुछ और ही है। चलकर आँगन में आया।

दूर से मातंग आते दीखे। काम पर जाने वालों की भाँति चल रहे हैं। फुर्ती नहीं। पिल्ल को अपने गठे बदन का ज्ञान ही नहीं होगा। तय किया कि आज उन्हें कुछ पढ़ायेगा नहीं। 'ठहरो, आया,' कहकर कमरे से धोती और कुर्ते ले आया। साथ में इन कपड़ों को धोने के लिए साबुन के टुकड़े लाया। केवल छः लोग ही आये थे। आने के लिए आग्रह करना उसे पसन्द नहीं था। हर एक को एक-एक सफ़ेद कुर्ता, एक-एक धोती और साबुन के टुकड़े दिये। उसके कपड़ों जैसे ही थे वे। जेब, कालर, आधा आस्तीन, किनारदार धोतियाँ—पहनने पर अपने दर्जे के लोगों की तरह ही लगे।

'कुर्ता पहनो तो सही, देखें ''

किसी पर चुस्त, किसी पर ढीला। धोती बाँधने को कहा तो सभी ने आना-कानी की। आग्रह करने पर बांध लिया। जीवन में कभी उन्होंने घुटनों के नीचे धोती नहीं पहनी थी। बेचैनी से खोल लिया। कांख में खोंस लिया। जगन्नाथ ने पिल्ल से कहा—

'कल इसी समय आना। काम खत्म होते ही नहाकर इन कपड़ों को पहनकर आना। शरमाना नहीं। औरों को भी आने के लिए कहना। उनके लिए भी कुर्ते-धोतियाँ हैं।'

पिल्ल सिर खुजलाता हुआ खड़ा रहा। जगन्नाथ को याद आयी। 'शादी से पहले पैसा मिल जाये न ? अभी दो महीने हैं। अभी क्या जल्दी है ?' आये हुए लड़कों को चवन्नी (सुर्ती और सुपारी) देकर विदा किया।

दूसरे दिन श्रीपतिराव बेंगलूर से निकलने वाली पत्रिकाएँ ले आये। 'चिट्ठी-पत्री' कालम में जगन्नाथ के बारे में आये सभी पत्रों को जोर से पढ़ा। मातंगों के सामने अपने को स्पष्ट करने में जब अभी सफल नहीं हो पाया है तो पत्रिकाओं की स्तुति-निन्दाएँ जगन्नाथ को विपर्यास-सी लगीं। विरोध करने वाले एक पत्र ने यों कहा था—'जान-बूझकर सवर्णों के मन को दुखाने के लिए, हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश का दुराग्रह, गांधीवाद से दूर है...।' एक ने विश्लेषण किया था कि एक देवभक्त के हरिजन-प्रेम से मन्दिर-प्रवेश की बात करने और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित एक निरीश्वरवादी की हिन्दू धर्म के नाश की दृष्टि से मन्दिर-प्रवेश की बात में फर्क है। कम्युनिस्ट पार्टी के दीक्षित ने बयान दिया था कि जमींदारी वर्ग के एक आदर्शवादी व्यक्ति का यह कार्यक्रम अवश्य विफल हो जायेगा। क्योंकि केवल आर्थिक क्रान्ति से ही जातिभेद का खात्मा किया जा सकता है फिर भी उसने जगन्नाथ जी की हिमायत की थी। सर्वोदय के कार्यकर्ता मागडी अनन्तकृष्ण जी ने महात्मा गांधी और सन्त विनोबा के इस प्रिय कार्य के लिए आगे आयें जगन्नाथ के साथ सभी को सहयोग करने का आह्वान किया था। अहिंसा पर जोर दिया था।

'यह अनन्तकृष्ण कौन है, जानते हो ?' श्रीपतिराव ने कहना शुरू किया' 'स्वतन्त्रता की लड़ाई में अपना साथी था, बताता है। यह देखकर कि चित्रदुर्ग के सभी कांग्रेसी नेता जातिवादी हैं यह खीज गया। असेम्बली का टिकट नहीं मिला।...जयप्रकाश की अपील पर जीवनदान किया। बड़ा बुद्धिमान और स्नेहशील व्यक्ति है.। घर-बार छोड़कर आन्दोलन में कूदा हुआ आदर्शवादी। पीता था। मेरी तरह पत्नी से दूर रहने के लिए कितने

उपाय ढूँढ़ता रहता है, मैं जानता हूँ।' रायसाहब दिल खोलकर बात कर रहे थे।

'कैसी बातें करता है, जानते हो? 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में उसका दिया हुआ भाषण अभी मुझे याद है। बड़े मजे में रह सकता था, पर आन्दोलन में इसने सब खो दिया। फिर कांग्रेस के भीतरी झगड़ों से घिना गया था। जातिभ्रष्ट हुआ। रोष में आकर सर्वोदय में शामिल हुआ। वह भी मेरी तरह एक सपने देखने वाला है।'

रायसाहब की आँखें स्नेह से चमक रही थीं।

रायसाहब के चले जाने पर नयी नोटबुक में लिखने बैठा। दोपहर की अपने कुल-देवता की, नरसिंह सालिग्राम की पूजा के मन्त्र, घण्टा-नाद सुन कसमसाहट हुई। इस पूजा के खत्म होते-होते मंजुनाथ की महामंगलारती का घण्टा-नाद। लगा कि इस गाँव में वह प्रेस बन गया है।

लिखा: मेरे घर में भी पूजा चलती है। हर कहीं भगवान व्याप्त है। मेरे बचपन की मनौती का मुकुट उसके सिर पर है। माँ के साथ उसके दर्शन के बाद कितने ही दिन बाहर सीढ़ियों पर आकर बैठा है। प्रसाद के केलों को बन्दर हाथ से छीनकर ले जाते हैं। बालिपाड्य, अक्षत तृतीया, गणेश चौथ, उत्थान द्वादशी, महालया अमावस आदि तिथियाँ देवताओं में बाँटकर, छोटी-मोटी घण्टियाँ बनवाते जन्म, मैथुन, मृत्यु को घेरता हुआ समय यहाँ जम्हाइयाँ ले रहा है। मेरा भरोसा है कि मातंग उसे झकझोर देंगे, पर वे छाया की भाँति आते हैं। मेरा विचार अभी तो प्रेस बनकर ही रह गया है।

शाम के समय आँगन में आकर बाट जोहने लगा। ढोरों को गोशाला में जाते देखती मौसी खड़ी थी। जगन्नाथ को पता था कि उसकी योजना जब से उन्हें मालूम हुई है, उस दिन से वह केवल एक ही जून खाती हैं। यह मौन-युद्ध उसके लिए असहनीय बन गया था। उनके साथ बातें करके अपनी ओर ले आना असम्भव था। मौन ही उनका हथियार था। जगन्नाथ को मौसी के प्रति चिढ़-सी हुई। लगा कि जीवन का सारा बाँझ-पन उसमें घनीभूत हो गया है।

मातंगों के पास आने पर जगन्नाथ को पता चला कि उन्होंने धोती

को आधी फाड़कर पहन ली है। कपड़े के लालच से, दूसरे भी लँगोटी लगाये हाज़िर हुए थे। जगन्नाथ ने गुस्सा निगल कर देखा। हास्यास्पद बने वे सामने खड़े थे। कालर वाले कुर्ते न पहनने की हिचक से उन्होंने कालर भीतर मोड़ रखा था; किसी काज में कोई घुण्डी फँसाई हुई थी। डरे हुए नये कपड़े पहनने से अपमानित खड़े थे।

'धोती का क्या किया ?' पिल्ल को घूरते हुए जगन्नाथ ने पूछा।

जवाब सुनकर जगन्नाथ को हँसी आयी। घर में बाप, चाचा, भाई, घर आये मेहमान इसी तरह कइयों में धोती फाड़कर लँगोटी बनाकर बाँटनी पड़ी। जब घर में डाँट पड़ी कि आधी तुम्हारे लिए काफ़ी है तो दूसरा चारा नहीं था।

जगन्नाथ ने कहा—'इस आधी धोती को भी लँगोटियाँ बनाकर बाँट दो। तुम्हें अलग धोतियाँ दूँगा। तुम्हें पूरी धोती पहननी होगी। मेरी तरह बिना शरमाये बाज़ार में घूमना होगा। तुम मेरे साथ मंजुनाथ के मन्दिर में चलने वाले हो। दूसरे मातंगों को अन्धविश्वास से जगाने वाली नयी पीढ़ी के हो तुम।'

अपनी ही बातें उनकी समझ में न आ सकने के कारण वे टकटकी बाँधे देख रहे थे। जगन्नाथ को फिर शर्म आयी। अपने को निरुपयोगी समझकर घिनाता हुआ भीतर गया। अपने को और कुछ ठोस बनाना होगा, लेकिन कैसे ? रात-भर सोचता रहा। निराशा के युग्ध में सवेरे उठकर काजू की पहाड़ी पर घूम आया। लगा कि घर-भर में मौसी की गर्म साँसें सुनायी पड़ रही हैं।

अपने अनजाने में ही मौसी अपने को साल रही थी। कॉफ़ी देते समय उनका देखने का ढंग। बालों को बिखराये, उपवास से मुँह सुखाये। सबसे बढ़कर भोजन के समय सूनी भोजनशाला को देखकर गर्म साँस छोड़ते हुए, उनका जगन्नाथ की आँखों को ढूँढने वाला वेदना-भरा मौन।

दोपहर की डाक के साथ श्रीपतिराय आये।

'जग्गू भैया, देखो, गुरप्पा पटेल ने कोई बयान दिया है !...पाजी कहीं का। कभी नहीं कहेगा कि हरिजनों को मन्दिर में नहीं चाहिए—कांग्रेस का आदमी जो ठहरा। 'आयें—यह भी नहीं द

क्योंकि वोट नहीं मिलेंगे। कुछ भी कहो, जग्गू भैया—मूलभूत राजनीति के लिए तैयार होने वाले इस देश में ब्राह्मण ही हैं, शूद्र कभी नहीं। क्योंकि वर्तमान व्यवस्था से उनको काफ़ी लाभ पहुँच रहा है। नौकरियाँ अब बहुत कुछ गौडा या लिंगायतों को मिल रही है। पहले अँग्रेज़ों के ज़माने में भी यही था—ये सभी जस्टिस पार्टी में थे। मज़े की बात जानते हो ? ये सारे शूद्र नव-ब्राह्मण बनते जा रहे हैं। सुना है, रेवेन्यू मिनिस्टर बिण्टे गौड़ एक बार गुरप्पा पटेल के घर खाने आया था। गुरप्पा पटेल ने बिरयानी परसी। बिण्टे गौड़ ने बिरयानी खायी। खाने के बाद दही-भात आया, दही-भात ब्राह्मणों का खाना जो ठहरा ! बिण्टे गौड़ ने शूद्र बिरियानी खाये मुँह को धोकर ब्राह्मण का दही-भात खाया था। पेट में सब मिल जाये तो परवाह नहीं—पर मुँह में ब्राह्मण और शूद्र का आहार मिलने न पाये। ऐसे ये लोग...!'

रायसाहब कुछ कहने जाकर कुछ कह गये थे। वास्तविकता कैसे रायसाहब को सनकी बना रही है, इसे देख जगन्नाथ को वेदना हुई। शूद्र के ऐसे आचरण से व्यथा के बदले रायसाहब खुश हो रहे थे। ब्राह्मण की प्रज्ञा में घुसी हुई विडम्बना उसे कैसे पराया बनाती है, इसे जान कर जगन्नाथ को खेद हुआ। बात बदलने के लिए पूछा—

'रायसाहब पेपर में क्या है ?'

रायसाहब ने पेपर खोलकर मैसूर समाजवादी दल के नीलकण्ठस्वामी का आन्दोलन में खुद भी भाग लेने का स्टेटमेण्ट पढ़ा।

'इस पर विश्वास मत करना, भैया। समाजवादी दल का कार्यदर्शी ब्राह्मण है। उसने मैसोर नामक नया दल बनाया है। लिंगायत जो ठहरा, कब कांग्रेस में मिल जायेगा पता नहीं। उसके साथ रंगराव नामी और एक है। नाम तो ब्राह्मण का है—पर है वह गौडा। पक्का ब्राह्मणद्वेषी। अपने सर्वोदय के अनन्तकृष्ण के ये सभी जाने-पहचाने हैं। हाँ तो उसने भी पत्र लिखा है—आने वाला है। मक्खी मारते बैठे हुए राजनेताओं को तुमने एक अच्छा मंच दे दिया।'

रायसाहब हँसे। पर जगन्नाथ को अपनी सारी योजना को इस प्रकार

फीकी होते देख डर लगा। उसे बचाये रखने का यत्न करना ही आगे का संघर्ष होना चाहिए।

फिर मातंगों की प्रतीक्षा में बैठ गया। शाम के समय जगन्नाथ की भाँति ही कपड़े पहनकर टेढ़े-मेढ़े पाँव रखते हुए, दस मातंग युवक मुँह लटकाये आये।

कपड़े मैले हो जाने के डर से मिट्टी के आँगन में बैठ नहीं पा रहे थे; सिमेण्ट का चबूतरा चढ़कर बैठने का साहस नहीं हो रहा था। भारी अपराध सिर पर ढोये आँगन में खड़े रहे। इस प्रकार खड़े-खड़े इनके साथ बोलना या पढ़ाना जगन्नाथ को असम्भव लगा। चहलकदमी करते हुए न जाने क्या कह गया। सब कुछ अनसुनी किये वे खड़े ही रहे। मञ्जूषा के पास वाली एक बस्ती की घटना बतायी। 'देखो, उस मातंग ने जो किया था वह गलती हर किसी से भी हो सकने वाली है। पर उसके मातंग होने के कारण हिन्दुओं को बुरा लगा। सुना है, उसे पेड़ से बाँधकर उँगलियाँ छुरे से काट दी गयीं। इस देश में तुम्हारी संख्या बहुत है। तुम यदि उठ खड़े होगे तो सब बदल जायेगा। इसलिए तुम्हें मेरे साथ जो देश-भर में चमत्कारी प्रसिद्ध है, उस मञ्जुनाथ के मन्दिर में चलना होगा। हमारी आँखों में अभी तुम लोग मनुष्य ही नहीं हो। भेड़-बकरियों से भी बदतर हो। इसलिए अगर तुम गुस्सा करोगे, तो हमारी आँखों को मनुष्य की भाँति दिखायी देने लगोगे...।

सीधी-सादी बातें थीं पर उनके सुनने का अभ्यास नहीं हुआ। सामने रहकर भी वही खोये-खोये-से, अपने को सफ़ेद कपड़ों में किसी के देख लेने के डर से वे खड़े थे। उनकी खड़ी दयनीय मुद्रा देखकर उसके और मातंगों के एक होकर, पार किये जाने वाले सारे कठोर सत्य जगन्नाथ की आँखों के सामने आ गये।

सहसा जगन्नाथ को एक विचार आया। ठेस लगे बिना ये जागेंगे नहीं। पर उसके जैसा व्यक्ति क्या ऐसी ठेस लगा सकेगा?

मातंगों को विदा कर अपने कमरे में आकर सो गया। खिड़की के उस पार धूमिल होते पेड़, पहाड़ियों को निहारते हुए, अपनी दुर्बलता के प्रति खिन्ना गया। टेबुल के सामने बैठकर नोटबुक में यों लिखा :

है।' शायद वह मुझसे द्वेष करता होगा, पर जाहिर होने नहीं देता
चौक में वासु मिला। बड़ी हमदर्दी का चेहरा बनाकर नसीहत दी, 'इ
मातंगों का साथ बढ़ाकर भैया, क्यों भला गाँव-भर से मनमुटाव करते
हो ?' जोयिस के घर के भीतर जाने का हौसला नहीं हुआ। रायसाहब
से मिला; किसी की दरख्वास्त लिख रहे थे। उनके पल्ले ऐसे बेगारी के
ही काम पड़े रहते हैं।

विलायत से लायी हुई 'रीगल व्हिस्की' एक दिन पुराणिक को
आने की बात सोची। उनकी वर्षगाँठ का पता होता तो ठीक होता।

दवा की बोतल लिये, मन्दिर के पुजारी का बेटा गणेश सामने मिला
उसका चेहरा बड़ा विचित्र-सा लगा। बच्चे की देह; पर धँसी हुई आँखें
वाला बूढ़ा चेहरा। मुँह पर मानो ताला लगा रखा हो। अपनी ओर ताकते
हुए गणेश की ओर, जगन्नाथ ने जवाब में मुसकरा दिया। बतियाने के
लहजे में गणेश को खड़ा देख कुछ आश्चर्य हुआ। जगन्नाथ भी रुक गया
गणेश को कुछ कहने के प्रयत्न में तुतलाते देखकर जगन्नाथ को तकलीफ़
हुई। पर उसे व्यक्त न कर सन्निवेश को सहज दिखाते हुए, गणेश की
बात धीरज से सुनी। चेहरे को विकृत करके गणेश ने पूछा, 'आपके पास
शरत् बाबू के उपन्यास मिल सकेंगे ?' उसकी रुचि पर आश्चर्य हुआ
'हैं ! आइये !' प्यार से कह जगन्नाथ चल पड़ा।

दोपहर को पुजारी भट्ट, और रसोइये भट्ट के बच्चों के साथ भोजन
गोसी से बात करने के प्रयत्न से हारकर, हाथ धोकर अपने कमरे में
जाने से पहले पूजा के नये फूल और नये तुलसीदल की मीठी महक से भरे
पूजागृह के सामने रुककर सोचने लगा। उसकी सोच और भी ठोस बनी
फिर कमरे में जाकर एकाध घण्टे सोना उचित समझकर आँखें मूँद लीं
शाम को जो उसकी तीव्रता थी, शक्ति थी उसका उपयोग करना, आवश्यक
होने के कारण पाँव पसारकर उबलते मन को शान्त करने की चेष्टा
करने लगा।

वेस्टइंडीज़ वालों द्वारा आयोजित एक नृत्य में संगीत आरम्भ होते
ही मार्गरेट ने नाचने के लिए उसे खींचा था। पाँव मिला न सकने के
कारण वह पसीने से तर-बतर होकर कितना बोखला गया था ! मार्गरेट

कैसी हँसी थी। 'जगन, रिलैक्स', कहती हुई, उसकी अकड़ी देह को संगीत की लय के साथ, लचकदार बनाने की लाख कोशिश करके थक गयी थी। बेसुध होकर नाचने वाले कालों में वह कैसा गोबर-गणेश बना खड़ा था! मार्गरेट चिढ़ गयी थी, 'नाचना-गाना नहीं जानते, कैसे बुद्धू हो तुम!' पीने पर भी उसमें पूरी तरह लोच नहीं आयी थी।

सहसा उठ बैठा। बक्से में से शिवास् रीगल् व्हिस्की की बोतल निकालकर, कागज में लपेट, बालों में कंघी कर बाहर निकला। कार को गैरेज से बाहर निकाल सीधा पुराणिक के घर की ओर चला। कार से रास्ता लम्बा पड़ता है। तिस पर पथरीला। उनके घर पहुँचकर दो बार बेल बजाने पर यथाक्रम गोरखे ने आकर गेट खोला। सैल्यूट किया। बरामदे में बिठाकर स्लिप पर जगन्नाथ का नाम लिखवाकर उसे तश्तरी में ले ऊपर गया। पुराणिक उतर कर आये। स्लीपर पहने, बहुत पुराना, पर रेशम का सुन्दर गाऊन पहने, पुराणिक ने बढ़कर हाथ मिलाया, 'एक्सक्यूज मी, आई एम नाट ड्रेस्ड (माफ करें। मैं कपड़े नहीं पहने हूँ)।' कहा। जगन्नाथ ने कहा, 'कोई बात नहीं। पहले से सूचना दिये बिना आ जाने पर क्षमा कीजिये।' 'नाट एट आल। जब चाहे आयें।' कहकर उसे ऊपर ले गये।

'कैसे आना हुआ?' लक्ष्य किया।

'मुझे काम है, पाँच मिनट आपसे मिलने के लिए आया हूँ।' कहते हुए जगन्नाथ ने हिचकते हुए व्हिस्की की बोतल उन्हें दी।

'यह तो मखमली पेय है?' अंग्रेजी में कहते हुए बड़े संभ्रम से जगन्नाथ से बोतल लेकर धन्यवाद कहा।

'आइये, इस मुलाकात को सेलिब्रेट करें।'

'न, अभी-अभी भोजन किया है।' कहते हुए जगनाथ ने क्षमा माँगी।

'तब तो थोड़ी लेनी चाहिए।' अनुरोध करते हुए काँच की सुन्दर लम्बी प्याली में भरकर दी।

'लेबर पार्टी जीत रही है।' कहकर बात शुरू की। जगन्नाथ को रेडियो पर रखी एक मैली तसवीर दिखायी पड़ी। पिछली बार उसने इस तसवीर पर गौर नहीं किया था। उठकर फ़ोटो देखता हुआ बोला—'यदि

लेबर सत्ता में आयेगी तो कंज़र्वेटिव पार्टी की तरह ही वर्ताव करेगी। पर कंज़र्वेटिव आयेगी तो कई बातों में वाम नीति ही अपनायेगी। इंग्लैंड की राजनीति बड़ी विचित्र है।' जगन्नाथ को देखकर अँग्रेज़ी में पुराणिक ने कहा—'बहुत पहले मेरी शादी के वक्त ली गयी थी।'

फ़ोटो बहुत ही विस्मयकारी थी। पुराणिक की बग़ल में उनकी पत्नी खड़ी थीं। पुराणिक पगड़ी बाँधे, कोट व कसौटीदार धोती पहने थे। बग़ल में खड़ी उनकी पत्नी, आँचल ढँके बीच में माँग काढ़े मुसकराती हुई पुराणिक से सटकर खड़ी थीं। तीन बटनवाले पौराणिक के काले कोट के बड़े-बड़े कालरों ने जगन्नाथ को लुभाया। उनके सुधारवादी विवाह के प्रमाण के रूप में ऐसी फ़ोटो में जैसे प्रायः पति-पत्नी माला पहने या सेहरा बाँधे खड़े रहते हैं, ये उस ढंग की न होकर दोनों हाथों में किताब लिये हुए थे। पति-पत्नी दोनों कॉन्वोकेशन की मुद्रा में पुस्तकें छाती से लगाये खड़े थे। इस प्रकार किताब लिये खड़े पति-पत्नी दोनों की आँखों में अपने को औरों से भिन्न समझे जाने की भावना थी। फ़ोटो के नीचे दोनों के नाम तथा विधवा-विवाह के सन्दर्भ में खींचे जाने की बात लिखी थी।

तन्मय होकर फ़ोटो को देखते खड़े जगन्नाथ से पुराणिक ने पूछा—'हैव यू सक्सीडेड इन शाकिंग द मेडीवल सिटीज़न्स ऑफ़ आवर टाउन?'[1]

हँसते हुए जगन्नाथ ने कहा—'कुछ प्रयत्न तो चल रहा है।' प्याली को नीचे रखकर 'फिर मिलूँगा, क्षमा करें।' कहकर हाथ मिलाया।

'इस उम्दा ह्विस्की के लिए धन्यवाद।' कहकर पुराणिक ने फिर से हाथ मिलाया। 'कम अगेन।'

जगन्नाथ बड़े हर्ष के साथ घर लौट आया। पर शाम के काम की याद आते ही खेद हुआ।

जगन्नाथ को आँगन के पार मातंग आकर खड़े दीखे। ज़ीने से उतरते समय पाँव सुन्न-से लगे। हथेली में नमी थी। आँगन के उस पार वे खड़े हैं; अयाचित वे खड़े हैं।...मन-ही-मन कहता चौपाल में आया। 'ठहरिये, अभी आया।' कहकर भीतर गया। जो चाहे कहिये, मुँह सीकर सुनते रहते हैं। अब धोती पहनकर अपराधियों की भाँति खड़े हैं।

1. क्या तुम हमारे मध्यकालीन नगर के लोगों को झकझोर पाये?

जगन्नाथ को पीड़ा हुई। चाबुक की चोट-सी पड़ने पर शायद जग जायेंगे। धोखा, फ़रेब दुराशा की इस दुनिया में आकर शायद हाथ फँसायेंगे, कामना करेंगे, सीखेंगे।

निश्चय ठोस बना। जगन्नाथ पूजागृह के सामने रुका।

अँधेरे कमरे में टिमटिमाते काँसे के दीप। सम्पुट में कुल-देवता नरसिंह का शालिग्राम। विश्वास है कि उसके अशौच होने से घर में कालिया नाग आता है, बाग में आग लगती है। सुना है, हजार साल पुराना शालिग्राम है। सदियों से प्रतिदिन उसका तीर्थ-पान करने के बाद ही इस घरवालों ने भोजन पाया है।

दूसरी बार नहाकर आये पुजारी भट्ट ने नन्दादीप में तेल डाला। लगा कि दिन-रात जलने वाले इस दीप में एक सोंधी-सी बू भी है। गन्ध, तुलसी, शंख, पुष्प, गुलाब, चम्पा, तेल, अगरबत्ती—इन सबकी मिश्रित मीठी बू। बत्ती से बत्ती सुलगकर जलते रहने वाले दीप की नुकीली जीभ। इससे सुलगी आग के सामने उपनयन और इसी आग से विवाह का होम। मौसी का ख़याल है कि प्रायः हजार साल से यह आग जलती आयी है। सनातन दीप है।

इस निरन्तरता की मरपना से कभी-कभी जगन्नाथ को हँसी आती है। मट्ठे से जामन, इस जामन के मट्ठे से कल का जामन, उसके मट्ठे से परसों का दही; इस प्रकार साल-भर उसी मट्ठे से दूध के जमते रहने के कारण मौसी वर्ष में एक बार स्वाती वर्षा का पानी दूध में मिलाकर नया जामन जमाती हैं। पर यह दीया-मात्र घर को अग्निदान करता हुआ सदियों से जलता ही रहा है।

किसी दिन भूल से तेल ख़त्म होने पर वह बुझा भी होगा? भट्ट जी ने तत्काल दियासलाई से फिर जलाया होगा? फिर भी विश्वास जो ठहरा; ख़ानदानी दीप, हजार सालों से जलता आया दीप, पितरों द्वारा जलाकर रखा दीप।

पुजारी भट्ट के सामने ही जाकर क्या नरसिंह शालिग्राम को ले आये? कुर्ता पहने क्या अशौच में भीतर जाये? क्या सम्पुट , ले आये? जगन्नाथ का दिल धड़कने लगा। तलुओं में पसीना

अब पीठ फेरना असम्भव जानकर भीतर गया। अशौच में महाजन को भीतर आते देखकर भट्ट जी अवाक् रह गये।

जगन्नाथ के लिए यह अभिनय अनिवार्य था कि उसके बर्ताव में कोई असहजता नहीं है। फिर भी घबराये हुए भट्ट जी की देखा-देखी मानो बौखलाकर जगन्नाथ को हाथ बढ़ाना पड़ा। किसी के विरोध न करने पर भी साँस रोककर यों आगे बढ़ा, मानो घर वाले सभी उसको पीछे खींच रहे हैं, फिर सम्पुट के साथ शालिग्राम को उठाया। आँखें जल रही थीं। चेहरा तमतमा रहा था। जलते दीप के पीछे खड़े भट्ट जी लम्बी छाया बने हुए थे। मुसकराने की चेष्टा कर जगन्नाथ ने उनकी ओर विकृत नज़र डाली। किंकर्तव्यविमूढ़ होकर भट्ट जी ने बत्ती उकसाकर, हँसने की चेष्टा करते हुए पूछा, 'क्या चाहिए ?'

जगन्नाथ ने इतमीनान से दबी आवाज़ में कहा—'कुछ नहीं, बस पाँच मिनट, वापिस ले आऊँगा।'

भागने की लालसा को दबाकर सिर झुकाकर पूजागृह की देहरी पार की। धीरे क़दम बढ़ाकर चौपाले में आया। उसके हाथ ने शालिग्राम वाले सम्पुट को मज़बूती से धर रखा था।

चौपाले से उतरकर आँगन में आया। रुका। पीछे मुड़कर देखने की चाह को दबा गया। फिर भी लगा कि दरवाज़े में मौसी, पुजारी भट्ट, रसोइया और उनके बच्चे उसे देखते खड़े हैं। मानो उसकी मौसी की आँखें उसकी पीठ को साल रही हैं। पर पीछे मुड़कर देखने का साहस न था। आँखों में आँखें गड़ाकर उनका तिरस्कार करने में मन की पीड़ा के बढ़ने की सम्भावना थी। सम्पुट धरे हाथ से पसीना छूट रहा था। इस नरसिंह शालिग्राम ने शायद कभी देहरी लाँघी ही नहीं थी। मौसी शायद काठ बनी खड़ी होगी। अपने प्राणों को आँखों में समाकर, शायद उसके लौट आने के लिए प्रार्थना में खींच रही होगी। वह क्यों इस प्रकार चुपचाप खड़ा है ?

सफ़ेद धोती पहने मातंग आँगन में उस पार अनाथ-से खड़े थे। उनकी आँखों में किसी की प्रत्याशा नहीं थी। दरवाज़े में खड़ी मौसी को तथा

उसे सिर्फ़ देख-भर रहे हैं। आगे क्या विस्फोटित होगा, इसकी कल्पना उनको नहीं हो सकती थी।

जगन्नाथ धीरे से आगे बढ़ा। दूर पहाड़ी के कन्धे पर सूर्य लाल गोला बना था। हरियाली से भरे टीले पर शाम की छूटती पीली धूप बिखरी थी। पहाड़ी के नीचे साँप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी सड़क पर शिवमोगा से आनेवाली आख़िरी बस धूल उड़ाती आती दिखायी पड़ी। गले की घण्टियाँ बजाती हुई गायें और बछियें गोशाला में आयीं। इस समय मौसी को सामने खड़े रहना था। सिर पर भारी ईंधन ढोये, साड़ी ऊपर किये, भार के कारण तेज़ी से कदम बढ़ाती हुई कावेरी आँगन पार कर गयी। इन बुद्धू मातंगों का मालिक की भाँति सफ़ेद कुर्ता पहनना और सफ़ेद धोती बाँधना उसे हास्यास्पद लगा होगा; 'खोक' कर हँस दी।

यह शालिग्राम उसके लिए पत्थर का एक टुकड़ा मात्र है। फिर भी उसके गिर्द कैसा उत्कट नाटक! इस पत्थर के टुकड़े को छूना मातंगों के लिए मैंने क्यों महत्त्व का समझ रखा है?

जगन्नाथ को सहसा आभास हुआ कि इस पत्थर के टुकड़े को मातंगों से छुआकर वह ख़ुद शालिग्राम की उपाधि देने जा रहा है। बड़े प्रयत्न से मुड़कर देखा। मौसी से लेकर घर का हर व्यक्ति खड़ा था। चबूतरे के किनारे नौकर खड़े थे। उस पर ही आँखें गड़ाये थे। मौसी का हुलक़ शायद सूख गया था; वरना वह बेशक पुकारती। वह ऐसे खड़ी थी, मानो श्मशान को बेटे की लाश जाते देखती खड़ी माँ हो। कभी देहरी न लाँघने वाले हज़ार वर्ष पुराने नरसिंह शालिग्राम के प्रति वह जो भी सोच रही होंगी, वह सारा जगन्नाथ की प्रज्ञा का एक अंश बन गया था। हाथ में कसकर पकड़ा हुआ काला पत्थर अंगारे की भाँति जलने लगा था।

मातंगों के लिए यह कर रहा है या अपने लिए? या ब्राह्मणत्व के विसर्जन के लिए? कहीं वह अडिग जी के बनाये अवधूत-मार्ग का तो अनुसरण नहीं कर रहा है? उसके पढ़े हुए मार्क्स, रसेल सभी कैसे सूखे जा रहे हैं!

किसी की अभिलाषा न रखनेवाले मातंग अभी भी प्रेत बनकर सामने खड़े थे। वह इस प्रकार वहाँ खड़ा नहीं रह पायेगा। जिस पल

अब पीठ फेरना असम्भव जानकर भीतर गया। अशौच में महाजन को भीतर आते देखकर भट्ट जी अवाक् रह गये।

जगन्नाथ के लिए यह अभिनय अनिवार्य था कि उसके बर्ताव में कोई असहजता नहीं है। फिर भी घबराये हुए भट्ट जी की देखा-देखी मानो बौखलाकर जगन्नाथ को हाथ बढ़ाना पड़ा। किसी के विरोध न करने पर भी साँस रोककर यों आगे बढ़ा, मानो घर वाले सभी उसको पीछे खींच रहे हैं, फिर सम्पुट के साथ शालिग्राम को उठाया। आँखें जल रही थीं। चेहरा तमतमा रहा था। जलते दीप के पीछे खड़े भट्ट जी लम्बी छाया बने हुए थे। मुसकराने की चेष्टा कर जगन्नाथ ने उनकी ओर विकृत नज़र डाली। किंकर्तव्यविमूढ़ होकर भट्ट जी ने बत्ती उकसाकर, हँसने की चेष्टा करते हुए पूछा, 'क्या चाहिए ?'

जगन्नाथ ने इतमीनान से दबी आवाज़ में कहा—'कुछ नहीं, बस पाँच मिनट, वापिस ले आऊँगा।'

भागने की लालसा को दबाकर सिर झुकाकर पूजागृह की देहरी पार की। धीरे क़दम बढ़ाकर चौपाले में आया। उसके हाथ ने शालिग्राम वाले सम्पुट को मज़बूती से धर रखा था।

चौपाले से उतरकर आँगन में आया। रुका। पीछे मुड़कर देखने की चाह को दबा गया। फिर भी लगा कि दरवाज़े में मौसी, पुजारी भट्ट, रसोइया और उनके बच्चे उसे देखते खड़े हैं। मानो उसकी मौसी की आँखें उसकी पीठ को साल रही हैं। पर पीछे मुड़कर देखने का साहस न था। आँखों में आँखें गड़ाकर उनका तिरस्कार करने में मन की पीड़ा के बढ़ने की सम्भावना थी। सम्पुट धरे हाथ से पसीना छूट रहा था। इस नरसिंह शालिग्राम ने शायद कभी देहरी लाँघी ही नहीं थी। मौसी शायद काठ बनी खड़ी होगी। अपने प्राणों को आँखों में समाकर, शायद उसके लौट आने के लिए प्रार्थना में खींच रही होगी। वह क्यों इस प्रकार चुपचाप खड़ा है ?

सफ़ेद धोती पहने मातंग आँगन में उस पार अनाथ-से खड़े थे। उनकी आँखों में किसी की प्रत्याशा नहीं थी। दरवाज़े में खड़ी मौसी को तथा

उसे सिर्फ़ देख-भर रहे हैं। आगे क्या विस्फोटित होगा, इसकी कल्पना उनको नहीं हो सकती थी।

जगन्नाथ धीरे से आगे बढ़ा। दूर पहाड़ी के कन्धे पर सूर्य लाल गोला बना था। हरियाली से भरे टीले पर शाम की ढलती पीली धूप बिखरी थी। पहाड़ों के नीचे साँप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी सड़क पर शिवमोगा से आनेवाली आखिरी बस धूल उड़ाती आती दिखायी पड़ी। गले की घण्टियाँ बजाती हुई गायें और बछिये गोशाला में आयीं। इस समय मौसी को सामने खड़े रहना था। सिर पर भारी ईंधन ढोये, साड़ी ऊपर किये, भार के कारण तेजी से कदम बढ़ाती हुई कावेरी आँगन पार कर गयी। इन बुद्धू मातंगों का मालिक की भाँति सफेद कुर्ता पहनना और सफ़ेद धोती बाँधना उसे हास्यास्पद लगा होगा; 'खोक' कर हँस दी।

यह शालिग्राम उसके लिए पत्थर का एक टुकड़ा मात्र है। फिर भी उसके गिर्द कैसा उत्कट नाटक! इस पत्थर के टुकड़े को छूना मातंगों के लिए मैंने क्यों महत्त्व का समझ रखा है?

जगन्नाथ को सहसा आभास हुआ कि इस पत्थर के टुकड़े को मातंगों से छुआकर वह खुद शालिग्राम की उपाधि देने जा रहा है। बड़े प्रयत्न से मुड़कर देखा। मौसी से लेकर घर का हर व्यक्ति खड़ा था। चबूतरे के किनारे नौकर खड़े थे। उस पर ही आँखें गड़ाये थे। मौसी का हलक़ शायद सूख गया था; वरना वह बेशक पुकारतीं। वह ऐसे खड़ी थी, मानो श्मशान को बेटे की लाश जाते देखती खड़ी माँ हो। कभी देहरी न लाँघने वाले हजार वर्ष पुराने नरसिंह शालिग्राम के प्रति वह जो भी सोच रही होगी, वह सारा जगन्नाथ की प्रज्ञा का एक अंश बन गया था। हाथ में कसकर पकड़ा हुआ काला पत्थर अंगारे की भाँति जलने लगा था।

मातंगों के लिए यह कर रहा है या अपने लिए? या ब्राह्मणत्व के विसर्जन के लिए? कहीं वह अडिग जी के बनाये अवधूत-मार्ग का तो अनुसरण नहीं कर रहा है? उसके पढ़े हुए मार्क्स, रसेल सभी कैसे सूखे जा रहे हैं!

किसी की अभिलाषा न रखनेवाले मातंग अभी भी प्रेत सामने खड़े थे। वह इस प्रकार वहाँ खड़ा नहीं रह पायेगा।

निश्चय दुर्बल होगा उसी पल मौसी की आँखें उसको झपटकर जीत लेंगी। इस पल शालिग्राम को आगे बढ़ाकर निकला हुआ वह और घबराहट से पीछे हटने वाला वह—दोनों भिन्न नहीं हैं। क्यों यह सनक माथे पर सवार हुई कि गाँव के मंजुनाथ से पहले घर के कुलदेवता का शूद्र-स्पर्श होना चाहिए? वरना उसका निश्चय सच नहीं बन पायेगा, दृढ़ नहीं बनेगा। पुराने को छोड़कर मातंग नयेपन को नहीं अपना पायेंगे। इसके लिए आवश्यक हिंसा के लिए तैयार होना परिवर्तन की हिंसा का पहला पाठ होगा। अपनी आलोचना को ठीक समझ कर आगे क़दम-भर बढ़ाना होगा।

धोती पहने पहले ही अपराधी से बने खड़े मातंगों में इस डर और आतंक ने शायद घबराहट पैदा की होगी। आगे क़दम उठाकर यदि हाथ के पत्थर को उनके सामने नहीं बढ़ायेगा तो शायद वे चले जायेंगे। तत्काल कुछ-न-कुछ करने का भान होते ही जगन्नाथ ने तेजी से क़दम बढ़ाये।

असल प्रश्न है कि पत्थर समझकर जिसे प्रस्थापित किया जा था वह शालिग्राम क्यों बना? बिना किसी स्पष्ट अभिलाषा के चरते-चरते मुंह उठाकर देखने वाले पशु की आँखों की भाँति मातंगों की आँखें उसे देख रही हैं, बिना किसी प्रत्याशा के। उनके लिए न भूत है, न भविष्य।

मातंगों के पास जाकर रुका। मालिक को बिलकुल निकट आये देख मातंग पीछे हट गये। सम्पुट का ढक्कन खोलते समय जगन्नाथ को लगा कि यदि अब शंख और झाँझ बज उठेंगे तो बस व्याख्यान शुरू हो जायेगा। पर नंगे काले पत्थर को हथेली पर रखे, मातंगों के सामने धरा हुआ क्षण धीरे-धीरे अनजाने में ही उस पर आक्रमण कर रहा था। गले की शिराएँ फूल गयीं। गहरी काँपती आवाज़ में उसने कहा—

'छुओ!'

चारों ओर देखा। सूर्य डूब रहा है। दरवाजे में मौसी, पुजारी भट्ट भयभीत खड़े हैं। जनार्धन सेट्टी भी आँगन में एक कोने में खड़े हैं। ओक्कलिग जाति के मज़दूर कमर में कोयला अटकाये दूसरे कोने में दल बना कर खड़े देख रहे हैं। मुंह पोंछती कावेरी टट्टी से टिकी खड़ी है। सामने

मतंग गोबर-गणेश बने खड़े हैं।

जगन्नाथ की देह काँप उठी। फुसलाने के स्वर में दूसरी बार याचना की —'छुओ!'

जो कहना चाहता वे सारी बातें गले में ही धँस गयीं।

'इस नाचीज़ वस्तु को छुओ! अपने जीवन को ही हथेली पर धर दिया है, छुओ; मेरे अन्तरंग के अत्यन्त मर्मस्थल को छुओ; साँझ की पूजा की यह बेला है। छुओ! कभी न बुझने वाला दीप वहाँ सूना-सूना जल रहा है। पीछे खड़े लोग कितने ऋणानुबन्धों की दुहाई देते हुए खींच रहे हैं! किसकी प्रतीक्षा कर रहे हो? मैंने तुम्हारे सामने क्या धर दिया है! मेरे 'लो यह पत्थर' कह कर आगे बढ़ाने के कारण ही यह शालिग्राम है। तुम सभी के छू लेने से, उन सबके लिए यह पत्थर बन जायेगा। मेरे आगे बढ़ाने से, तुम्हारे छूने से, उन सबके देखने से इस स्याही साँझ में पत्थर शालिग्राम बने, शालिग्राम पत्थर बने। जंगली सूअर शेर, किसी से भय न खाने वाले पिल्ल—छुओ! सीखो। बाद में मन्दिर की देहरी लाँघेंगे—एक ही एक क़दम। सदियाँ बदल जायेंगी। अब छुओ। सीखो। छुओ! कितना सहल है। छुओ।'

हाथ में पसीना छूट रहा था। घबराकर मातंग पीछे हट गये।

जगन्नाथ ने परिस्थिति को समझने की चेष्टा की। वह जानता था: चोरों का पता लगाने के लिए अभिमन्त्रित नारियल चलाना इन लोगों ने देखा है। इन्होंने देखा है थाली में लाल मंत्राक्षत; उस पर सिंदूर लगा शिखायुत नारियल।

'यह निरा पत्थर है, छू कर देखो, तुम खुद जान लोगे।'

जगन्नाथ ने अपने रोज़ के अध्यापकीय लहजे में धीरज बँधाया। सहसा पता नहीं, मातंगों को क्या हुआ—सब पीछे हट गये। जगन्नाथ ने गुस्से से तमतमा कर कहा—'हाँ, छुओ!'

मालिक को आगे बढ़ते हुए देख कर मातंग विवशता में पीछे हट गये।

'ऐ पिल्ल छू, ले; छू ले!'

पिल्ल आँखें फाड़े खड़ा रहा।

जगन्नाथ के गले से एक निकली आवाज़ मानो बौखला गये पशु की आवाज़ जैसी थी। अपनी आवाज़ से ख़ुद उसी को घबराहट हुई। 'छुओ, छुओ, छुओ !'

इस आवाज़ से लाचार होकर मातंग यन्त्रवत् आगे आये और जगन्नाथ की बढ़ाई हुई वस्तु को छूने की रस्म अदा करके झट पीछे हट कर खड़े हो गये।

क्रूरता और दुःख से दुर्बल जगन्नाथ ने शालिग्राम को वहीं फेंक दिया। तन कर खड़ी हुई एक आर्तता का विकृति में पर्यवसान हुआ था। मातंगों को अछूत समझने वाली मौसी की मानवीय भावनाओं को भी उसने एक पल के लिए भुला दिया था। उसको मातंग अर्थहीन वस्तु जैसे लगे। जगन्नाथ सिर झुकाए खड़ा था। मातंगों का चला जाना वह जान नहीं सका। अपने ऊपर भिन्नाते हुए यों ही टहलता रहा। छू कर रही-सही मानवीयता को भी खो कर वे और वह दोनों मर जो गये; इसका कारण क्या अपने भीतर है, या समाज के भीतर ? कुछ समझ न पाकर बौराया हुआ घर आया। मौसी ने मुँह नहीं दिखाया; अपने कमरे के किवाड़ बन्द किये सोयी थीं। पुजारी भट्ट, रसोइए—सभी बिस्तर-बोरिया लेकर घर छोड़ रहे थे।

अब सारे घर में वह और मौसी, केवल दो जन रह गये थे !

15

'राजनीति काफ़ी नहीं है,' देसाई जी कहा।

और जगन्नाथ को लगा जैसे बातों के प्रवाह में उन्होंने बहस की धारा ही बदल दी। जगन्नाथ चाहता था, ड्राईवर बुडन से कह दे कि कार सर्विस के लिए ले जाये। भारतीपुर से बेंगलूर तक गाड़ी चला कर वैसे भी शायद वह थक गया होगा। 'क्षमा कीजियेगा', कहकर जगन्नाथ बाहर आया। बुडन को पैसे देकर भेज दिया और जब वह अन्दर आया तो ऐसा लगा जैसे देसाई जी उसे भूल चुके हों। उनके चेहरे पर एक मिनट पहले तो तीव्रता थी वह ग़ायब हो चुकी थी। एक पाँव पर दूसरा पाँव रखे

आराम से एक पांव हिलाते हुए वह पढ़ते बैठे थे।

कैलेण्डरों पर देखा हुआ उसका नुकीला एवं लम्बा चेहरा। साफ़ हजामत, विशाल ललाट। विशाल आँखें नहीं मगर तीक्ष्ण रूप से देख सकने वाली छोटी-छोटी आँखें। नाटे और मोटे-से नज़र आने वाले ये शुभ्र चेहरे वाले व्यक्ति हलवाई जैसे लगते थे। उन्नीस सौ बयालीस में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के हीरो। जेल से भागे इस व्यक्ति का पता बताने वाले को दस हज़ार रुपये का इनाम देने का एलान ब्रिटिश सरकार ने किया था। आज इन्टरनेशनल स्कूल के मालिक हैं।

फिर जगन्नाथ के आते ही प्रेम से उन्होंने हाथ मिलाया था। फिर दोस्तों जैसे अन्दाज़ में बताया था कि इधर उनकी तबीयत अच्छी नहीं है। पाँच मिनट में जगन्नाथ का काम हो चुका था।

'मार्गरेट ने मुझे भी लिखा है, अगले जून से वह स्कूल में काम शुरू कर सकती है। उसके पिता मेरे परिचित भी हैं'— बताकर देसाई जी ने कहा था कि इसके लिए जगन्नाथ को इतनी दूर आने की आवश्यकता ही क्या थी?

देसाई जी के व्यक्तित्व से उभरी कुलीनता से जगन्नाथ को धीरे धीरे आराम मिला। चाय लाने के लिए नौकर से कहकर देसाई जी ने कहा कि इधर तो आप चर्चा के विषय बन गये हैं?

जगन्नाथ को लगा था कि देसाई जी के सामने अपने मन के ऊहापोह का क्यों न ज़िक्र किया जाये? कहना चाहता था— मैं या मातंग सचमुच कोई तैयार नहीं हुए हैं, देसाई जी। इसलिए अपने ग्रहं के वास्ते उन्हें मन्दिर के भीतर ले जाना शायद मूर्खता होगी। अतएव, सोच रहा हूँ कि मैं अपने सारे प्लान को स्थगित कर दूँ। इस मामले में कम-से-कम एक दिन के लिए ही सही शान्तिपूर्वक सोच-विचार करने के लिए गाँव से निकल आया हूँ। बताइये, आपकी क्या राय है?

मगर जगन्नाथ ने कहा नहीं। मन में ही अपने विचारों को रखे देसाई जी की बातें सुनता रहा। लगा कि इधर उन्होंने जो नये दांत लगाये हैं, उससे कष्ट हो रहा होगा।

हर शब्द पर ज़ोर देकर अत्यन्त आत्मीयता से देसाई जी ने बातें

कीं। वताया कि राजनीति क्यों उसके लिए पर्याप्त नहीं ? अत्यन्त निजी वातचीत को सार्वजनिक भाषण के ढाँचे में विठाने वाली उनकी भाषा की वजह से जगन्नाथ उनकी ओर ध्यान नहीं दे पाया।

वह वातें आरम्भ करते-करते जगन्नाथ पर आँखें गड़ा कर चुप हो गये।

कहते हैं, भारत जव आज़ाद हुआ तव देसाई जी पेरिस में थे। अखवारों से खवर पाते ही उन्हें एक अजीव अनुभव हुआ। उन्हें ऐसा लगा कि वयालीस आन्दोलन में जान को जोखिम में डालकर उनके संघर्ष न करने पर भी यह आज़ादी किसी-न-किसी प्रकार हासिल हो ही जाती, तव लगता कि उनके जीवन में वड़ी खाई पड़ चुकी है। अव तक मानो वह प्रवंचना में जी रहे थे। प्रेम तथा सफलता के लिए छटपटाने वाले इस जीवन को एक निश्चित खूंटे से वाँध रखना भी ग़लत है। इतिहास तो अवैयक्तिक होता है...।

वह वोलते जा रहे थे ! जगन्नाथ का ध्यान उनके हाथों की ओर गया। भाषण की गति में उनके हाथ हिल रहे थे। मैंने वाद में अरविन्द को पढ़ा ; जे० के० से मुलाक़ात करके उनके साथ थोड़ा समय विताया। सचमुच क्रान्ति, याने, सर्वकालिक अर्थपूर्ण क्रान्ति, याने 'द ओनली रिवोल्यूशन कहते समय देसाइ जी ने हर शव्द को कठोर वना दिया था। उसके मन के भीतर घुसकर कव्ज़ा जमाने के लिए मानो शव्दों की वौछार किये जा रहे थे।

'सुनो, वह अनुभव कैसा था, एकाएक तुम्हारे मौन में कैसी सिद्धि होती है! व्हेन द व्रेक थ्रू कम्स' कहते हुए देसाई जी उठ खड़े हुए थे। उसकी ओर देखते हुए उनकी आँखों से आँसू छलक कोमल वन चुके थे। उनका यह व्रेक थ्रू फिर से उन्हें सच लगे इसके लिए सुनने वाले की ज़रूरत है— जगन्नाथ को लगा।

चाय आ चुकी थी। इन्टरनेशनल स्कूल के किचन में तैयार क्रीम-केक को वड़े चाव से जगन्नाथ ने खाया। चाय पीते-पीते उदास होते जा रहे देसाई जी को देखकर विषयान्तर करने की कोशिश की।

देसाई जी ने फिर वातें शुरू कीं कि संघर्ष के परे की स्थिति को हासिल

गेट तक आकर विदाई देने के लिए देसाई साथ चल पड़े। पेड़ों से घिरी सुन्दर पगडंडी पर खड़े-खड़े फिर बातें शुरू कीं।

'देखिये न, सेक्स के सम्बन्ध में हम किस प्रकार सोचते हैं। मेरा नेफ़्यू जब अध्ययन के लिए अमेरिका जा रहा था तब मैंने पूछा था, तुम युवक हो! सेक्स के बारे में तुमने क्या सोचा है? अमेरिका भारत जैसा नहीं है। सेक्स की आज़ादी वहाँ यहाँ से अधिक है। पर, सुनो भई, सैक्स ग़लत भी नहीं, ठीक भी नहीं। उसमें एक समस्या है, बस। स्त्री के साथ सम्भोग करते समय हमारा शरीर और मन दोनों फूल जाते हैं। सम्भोग की क्रिया में शरीर हलका बन जाता है, मगर मन नहीं। मनुष्य को सैक्स में सचमुच का शमन प्राप्त नहीं होता। वास्तव में यही समस्या है। इसलिए ही कोमलता (टेंडरनेस) चाहिए। ऐसी आशा होनी चाहिए कि जैसा सुख मिलेगा वैसा सुख स्त्री को भी प्राप्त हो। देखो, असली समस्या यही है कि मन को डिट्यूमेसेंट स्थिति में कैसे लाया जाये? राजनीतिक या आर्थिक तनाव से भी ज़्यादा आदमी को सताने वाली मूलभूत समस्या यही है।'

चूँकि गेट नजदीक था, देसाई जी ने हाथ बढ़ाया। जगन्नाथ ने आज्ञा माँगी।

जगन्नाथ कार में बैठकर जब चलने को हुआ तो बेंगलूर सिटी जाने की तैयारी में खड़े स्कूल के मैनेजर ने लिफ्ट माँगी। रास्ते में उनसे जगन्नाथ ने पूछा, 'क्या आप बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार नहीं कर रहे हैं?' इतने पैसे खर्च करने के पश्चात पेरेंट्स क्या चुप रहेंगे?' उन्होंने कहा, 'कंडिशनिंग न होने देकर, बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करने के लिए देसाई जी बड़ा प्रयत्न करते हैं। मगर कम्प्रोमाइज़ किये बिना कोई चारा नहीं।'

दस मील के बाद बेंगलूर आया।

'आपको फिर आना पड़ेगा। कल ही मार्गरेट के नाम एक और पत्र भेज रहे हैं।' कहकर मैनेजर उतरे।

रेस्तराँ में जगन्नाथ ने भोजन किया। यह सोचकर बेंगलूर आया था कि मन यहाँ आकर कुछ हलका हो जायेगा। शालिग्राम को जिस

रात वह मातंगों को देने गया था, उस रात उसे नींद नहीं आयी थी। आधी रात में उठकर मातंगों की झोंपड़ियों तक जाकर उन्हें जगाने का साहस न कर सका और वापिस आ गया था। मातंगों को मन्दिर ले जाने का निर्णय क्या कच्चा निर्णय था? यह बात और स्पष्ट हो जाये, इस उद्देश्य से भी वह बेंगलूर आया था। बिना किसी भी अहं के अपनी घोषित योजना छोड़ने के लिए जगन्नाथ तैयार था। मगर उसे यह सन्देह भी था कि क्या वैसा करना ठीक रहेगा?

देसाई जी ने जो बातें कहीं उनसे जगन्नाथ का मन बेचैन हुआ था। लगा था, कहीं योजना कृत्रिम तो नहीं? मातंगों के साथ उसने इतने दिन जो बिताये हैं उनमें कम-से-कम एक क्षण ही सही, सच्चा अनुभव न अपने लिए हुआ था और न उनके लिए।

भोजन समाप्त करते ही कार में बैठकर कहा, 'वुडन, सीधे भारतीपुर चलेंगे। तुम थके हो तो थोड़ी दूर मैं कार चलाऊंगा।'

जगन्नाथ को सहसा महसूस हुआ कि बेंगलूर में रहकर किसी भी निर्णय पर आना संभवतः कठिन है। फिर उसी घर जाना चाहिए। एक कीड़ा भी जहाँ न रेंगता हो वहाँ घूमना चाहिए, दुख से सूखती जा रही मौसी को देखना चाहिए। इस यथार्थ का सामना करके, आराम से सोचना चाहिए कि उसकी योजना की इन मातंगों को कितनी आवश्यकता है? इन्तजार करना चाहिए। जिस किसी भी घड़ी अनुभव हो कि जो कुछ वह कर रहा है, वह कृत्रिम है, अहं से जन्मा है, उसे फ़ौरन वहाँ से बाहर निकल आने का साहस दिखाना चाहिए।

देसाई जी से मिलते वक्त एक अजीब अनुभव हुआ था। व्यंग्य से उनको देखा और आदर से उन्हें सुना। सब झूठ लगा। फिर भी उनकी उत्कटता मजबूर करने वाली थी। यदि उन्होंने यह कहने का प्रयत्न किया कि मातंगों को मन्दिर के अन्दर ले जाना अनावश्यक है? इसके बदले कौन-सा सच है, यह बताने की देसाई जी की तड़प में मुझे दरार दिखायी पड़ी थी। वह जो कर रहा है, आलोचना से समझी जाने वाली बात यह नहीं है। भारतीपुर के मातंग उसका निर्णय करेंगे। भरसक आगे बन्-का कारण बनना, प्रतीक्षा करना, फिर सब यदि कृत्रिम

जाना—इतना ही उससे संभव है। एक महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए अपने को उत्सर्ग नहीं कर पाया तो आत्मरत बनकर रह जायेगा।

16

जगन्नाथ जब भारतीपुर पहुंचा तब रात के नौ बज रहे थे। घर में मौसी और नौकरानी के अलावा कोई दूसरा नहीं था। मौसी के सूखे चेहरे को देख कहने की इच्छा हुई—मैं कायर नहीं हूं मौसी, मेरा निश्चय यदि अपक्व लगेगा तो मैं सारी योजना से हाथ धो लूंगा।

मगर सम्भव नहीं हुआ। 'थका हूं। नहाकर खाना खाऊंगा।' कहकर स्नानघर में घुस गया। खूब नहाया। मौसी ने परोसा। थोड़ा दाल-भात खाकर कमरे में गया।

दिसम्बर की जाड़े की रात। थोड़ी देर तक पढ़ा, फिर दीया बुझाकर सो गया। उल्लास के अभाव में कुछ भी किया जाये, कोई प्रयोजन नहीं। कुछ तो सारा वातावरण उदास करनेवाला था। दुःशाला ओढ़े, पांव फैलाये ज्यों ही पलकें बन्द कीं, थोड़ा आराम मिला। दिन का जीवन सार्वजनिक होता जा रहा था, रात को बिस्तर पर लेटकर नींद आने तक उसने जिस एकान्त का अनुभव किया वह अत्यन्त प्रिय था।

उस दिन अखबारों में छपे पत्रों का स्मरण किया। खण्डन-मण्डन करनेवाले पत्र और प्रशंसात्मक—दोनों ही अर्थपूर्ण नहीं लगे। मन हलका हुआ। क्या मार्गरेट इस स्कूल को पसन्द करेगी? देसाई जी के आदर्श और स्कूल के यथार्थ के बीच की दरार देखकर क्या उसको निराशा तो नहीं होगी? देसाई जी के बारे में मार्गरेट को लिखने का निश्चय किया। मां की याद आयी। बचपन में रात-भर जाग करके देखे यक्षगान नाटक याद आये। हर साल मेले पर एक यक्षगान नाटक उसके घर के खर्चे से होता था। मगर अबकी बार यक्षगान खेलवाने की मांग लेकर कोई नहीं आया।

नींद आने ही वाली थी, किसी ने बाहर से 'हाय भगवान' कहकर आवाज़ दी। भयग्रस्त स्वर! जगन्नाथ उठकर टॉर्च लेकर नीचे आया।

अमावस का घना अन्धकार। आँगन के उस पार खड़ा कोई रो रहा है।

टॉर्च की रोशनी में पिल्ल के माँ-बाप नजर आये। पिल्ल का बाप मात्र लँगोट पहने सर्दी के कारण थर-थर काँप रहा था। उसके बाल बिखरे हुए थे। और आँखें लाल थीं। मुँह से दारू की बू आ रही थी। जगन्नाथ ने धीमे स्वर में पूछा, 'क्या बात है?'

बार-बार पूछने पर भी जो मालूम हुआ, वह इतना ही कि रात को पुलिस आकर पिल्ल को ले गयी।

'अपनी झोंपड़ी को जाइये, मैं उसे छुड़ा ले आऊँगा।' जगन्नाथ ने धीरज बँधाया।

कार लेकर वह भारतीपुर के पुलिस-स्टेशन गया।

जगन्नाथ को देखते ही घनी मूँछों वाले एक दफेदार ने खड़े होकर नमस्ते की।

जगन्नाथ ने अधिकार से पूछा, 'ड्यूटी पर कौन है?'

'मैं ही हूँ साहब, क्यों?'

'जरा दारोगा को तो बुलाइए?' जगन्नाथ मेज पर के बिलकुल सामने वाली कुर्सी पर बैठा। दफेदार खड़ा ही रहा।

'साहब सोये हुए हैं, सर!'

'यह पूछने के लिए आया कि हमारे घर के नौकर पिल्ल को क्यों थाने पर लाया गया है?' जगन्नाथ ने थोड़े कठोर स्वर में कहा।

'वह केस बन गया है सर, क्रिमिनल केस।'

'बताइये वह कौन-सा केस है, चाहें तो मैं जमानत दूँगा। उसे पहले लॉकअप से मुक्त कर दो।'

लगा, दफेदार अवाक् रह गया हो। खड़े-खड़े विनम्रता से कहा—'ये साले मातंग के बच्चों की करतूतों की कोई सीमा नहीं है, सर। सुना, वह पिल्ल किसी सेट्टियों की किसी लड़की का शील हरण करने गया था। कम्पलेंट आया इसलिए...।'

'स्टेटमेंट दिखाइये।'

'लड़की वालों को यहाँ आकर केस दाखिल न करने दो। हो-हल्ला मच जायेगा। चार थप्पड़ लगाकर बाहर ढकेल देने को कहा

दफेदार ने डरते हुए कहा ।

जगन्नाथ लाल हो गया ।

'ऐसा करना क़ानून के विरुद्ध है, दफेदार । यदि मैं आपके खिलाफ़ डी० एस० पी० को कम्पलेंट कर दूं तो क्या होगा, जानते हो ? पिल्ल कहाँ है ? लड़की के पक्ष वाले कहाँ हैं ?'

'वह भी आप ही के नौकर हैं, सर । शैट्टियों में से शीनप्पा नाम का एक है न ? वही । मालिक गाँव में नहीं हैं, वर्ना वे खुद कम्पलेंट करते—ऐसा शीनप्पा ने स्वयं आकर कहा ।'

'पिल्ल कहाँ है ? पहले उसे दिखाइये ।'

'तो हम केस दाखिल कर लेते हैं, सर !'

जगन्नाथ महसूस करने लगा कि पिल्ल को आसानी से छोड़ने के लिए दफेदार तैयार नहीं है। थोड़ी-सी और डाँट पिलायी—

'सुनिये, क़ानून के अनुसार आप लोगों ने बर्ताव नहीं किया है—मुझे शोरगुल मचाना पड़ेगा । पहले, मुझे पिल्ल को दिखाइये ।'

'बड़ों की बात से मैं इन्कार नहीं करता सर, मगर ये हरामजादे मातंग बच्चे.. !'

'दफेदार, दिखाओ कि पिल्ल कहाँ है ?'

जगन्नाथ काँपता हुआ उठ खड़ा हुआ । दफेदार चाभी हाथ में लिये चला । लॉकअप का ताला खोलकर दफेदार मौन खड़ा रहा । जगन्नाथ ने टॉर्च की रोशनी जलायी और देखा, एक कोने में पिल्ल सिकुड़कर बैठा था । ऐसा दिखायी पड़ा कि मानो उसे अपने शरीर का बोध ही न हो । 'पिल्ल', कहकर बुलाने के बाद उसने यातना से आवृत्त अपना मुंह ऊपर उठाया । आँखें सूजी हुई थीं । नाक और होंठों से रक्त निकल चुका था । उसकी आँखों में उसे पहचान सकने की दृष्टि नहीं-सी दिखायी पड़ी । जगन्नाथ ने और थोड़ा नजदीक आकर टॉर्च जलायी । उसने जो सफ़ेद कपड़ा उसे दिया था, उस पर रक्त के धब्बे पड़े थे । कुर्ते का कालर, आस्तीन सभी फट चुके थे ।

'आप मनुष्य हैं या जानवर ?'

'उसके मुंह पर शीनप्पा के पक्ष वालों ने ही मारा, सर । मुंह खुल-

वाने के लिए, हाँ, मैंने भी चार थप्पड़ दिये हैं। वरना इनकी जबान ही नहीं हिलती, सर।'

जगन्नाथ को थकावट महसूस हो रही थी। अनायास अभिव्यक्त हो रही इस क्रूरता के पीछे शताब्दियों की मूढ़ता थी। कुलीन लड़की को मातंग ने चाहा था। परन्तु किसी से भी हो सकने वाली यह गलती, मातंग से हो जाने के कारण घोर पातक जैसी नजर आ रही थी जगन्नाथ जानता था कि ऐसा लगना सहज है, अतः दफेदार पर आग बरसाना निष्प्रयोजन समझकर और अपनी यातना का घूंट स्वयं पीकर बोला—'पिल्ल उठो, आओ मेरे साथ।'

फ़ौलादी युवक पिल्ल डर के मारे चूहे की तरह कोने में पड़ा था। उसके सफेद कपड़े पर रक्त के धब्बों को देखते ही जगन्नाथ का कलेजा मुँह को आ गया। दफेदार ने गरजकर ज्यों ही 'उठ रे' कहा, पिल्ल भयग्रस्त कीड़े की भाँति और भी सिकुड़ गया। 'दफेदार, आप चुप रहिये।' कहकर जगन्नाथ ने स्वयं पिल्ल के पास आकर उसे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया।

'उसे आप क्यों छूते हैं? उस कम्बख्त को क्या हुआ है, उठता है?' दफेदार ने उसी रोब से कहा। जगन्नाथ ने उसकी परवाह न करके पिल्ल की भुजा को मृदुता से पकड़ा। जगन्नाथ के उसे स्पर्श करते ही पिल्ल भय के मारे फिसलता-सा दिखायी पड़ा। 'डरो मत, पिल्ल, मेरे साथ आओ।' कहकर पिल्ल के भय पर ध्यान न देकर उसे लॉकअप से बाहर, धीरे-धीरे लाकर कार में बिठा लिया। दफेदार को देखकर जगन्नाथ ने कहा—'चाहो तो कल दारोग़ा जी से मैं खुद आकर कहूँगा।' और कार ड्राइव करके चला आया।

पिल्ल चबूतरे पर चढ़ता नहीं। मजबूर करके चबूतरे पर लिवा लाया गया तो मँझधर में आता नहीं। जगन्नाथ ने नौकर को जगाकर गैस-लाइट जलवायी। अन्दर जाकर टिंचर, रुई, डेट्टाल लाकर, पिल्ल के कुरते को निकाला। जगन्नाथ की सेवा से पिल्ल कराह उठा। पिल्ल के काले शरीर पर चोटें थीं। घाव धोकर, टिंचर लगाकर उसे चटाई पर सुलाया, और अन्दर से ब्राण्डी लाकर, थोड़ा उसे पिलाने के बाद लगा कि उसे

थोड़ी चेतना आ रही है।

नंगे शरीर के कारण पिल्ल सर्दी से काँप रहा था। जगन्नाथ ने अपना एक कुर्ता-धोती दिया, और ओढ़ने के लिए कम्बल। पिल्ल का चेहरा घबराहट से विकृत था। जगन्नाथ ने पूछा—'शाम को खूब पी थी ?'

हामी में सिर हिलाया। मुश्किल से उठकर बैठा।

'तुमने जो कुछ किया, क्या वह सच है ?'

पिल्ल जगन्नाथ के पाँवों पर गिर पड़ा। जगन्नाथ ने कहा—'छिः छिः, उठो !'

'कावेरी थी न ?'

पिल्ल के मौन ने 'हाँ' कहा।

'तुम्हारे मन में जो वासना उत्पन्न हुई, वह ग़लत नहीं है, पिल्ल। चूँकि तुम मातंग हो, न, इसलिए वह बड़ा पातक-सा दीख पड़ता है। न चाहने वाली लड़की से ज़बरदस्ती नहीं करनी चाहिए। जो कुछ हुआ मुझसे बताओ।'

जगन्नाथ को ही आश्चर्य हुआ, क्योंकि उन दोनों के बीच का वातावरण पहली बार साफ़ हुआ था। पिल्ल तुतलाता हुआ बोलने लगा था। पहली बार उसके मुँह से ये बातें निकली थीं। गैस की रोशनी में चौपाले में इस प्रकार आमने-सामने बैठक जो बातें हुईं, वह जगन्नाथ के मस्तिष्क में सदा के लिए रह जानेवाली घटना बन गयी।

पिल्ल ने उस पर आक्रमण किया नहीं था, मगर पी चुका था। कुछ गुनगुनाते हुए अकेला जा रहा था। उसको सफ़ेद कपड़ा पहने देख बार शराबखाने में सभी ने उसका परिहास किया था। रोष आया था। खुशी भी हुई थी। आते समय रात में टट्टी की आड़ में कुछ दीख-सा पड़ा। नज़दीक आकर देखने पर पता चला कि जनार्दन सेट्टी कावेरी के सारे कपड़े उतार रहा था। उसकी उपस्थिति को उन लोगों ने लक्षित नहीं किया। वैसे देखते-देखते क्या हुआ—मालूम नहीं। सीधा वहाँ पहुँचा, जहाँ कावेरी नंगी खड़ी थी। बाँह फैलाये आये पिल्ल को देखकर शेट्टी चम्पत हो गया। कावेरी ने अपना बदन ढँक लिया। वह उसी प्रकार खड़ा रहा।

सहसा, पीछे से जनार्दन शेट्टी ने आकर सिर पर मारा। बस, मूर्च्छित जब होश में आया तब कोई नहीं था वहाँ। पिल्ल उठ कर घर गया। किसी से कुछ कहा नहीं। माँ-बाप ने समझा होगा, पीकर या झगड़ा करके आया है। रात में थोड़ी देर के बाद एक पुलिस वाला आकर घसीट ले गया और मार-मारकर हड्डी-पसली एक कर लॉकअप में डाल दिया।

अपनी चहेती युवती पर पिल्ल का भी मन ललचाता है, यह देख जगन्नाथ को अजीब अनुभव हुआ। गैस की रोशनी में बैठा काला एवं बलिष्ठ शरीर, उसके शरीर के ही जैसा वासनायुक्त है, जीवन्त है। अब वह उसे बेशक छू सकता है।

'पिल्ल, आप लोगों को बिना डरे मेरे साथ मन्दिर के अन्दर आना चाहिए, समझे ?' कम्पित स्वर में जगन्नाथ ने कहा। पिल्ल के चेहरे पर स्नेह भाव दिखायी पड़ा, जिसमें खुशी हुई। उसे लगा, आइन्दा अवश्य बातें कर सकते हैं।

'यहीं सोओगे, या झोंपड़ी को जाओगे ?'

'चला जाऊँगा, मालिक,' पिल्ल मुश्किल में उठ खड़ा हुआ।

'थोड़ी दूर तक मैं भी साथ दूँगा,' कहकर टॉर्च लेकर जगन्नाथ चल पड़ा। मुश्किल से चल रहे पिल्ल का साथ पकड़ा।

'छुइयेगा मत, मालिक,' पिल्ल को कहते देखकर जगन्नाथ को खुशी हुई।

'ऐ गधे, छूने से क्या होगा रे ?' जगन्नाथ ने मजाक किया।

मातंगों की झोंपड़ियों तक जगन्नाथ गया। अन्दर जाने को मन हुआ, मगर मातंगों की झोंपड़ियों में ब्राह्मणों के प्रवेश से उनका बुरा होने के विश्वास के कारण, उनके बुलाये बिना स्वयं जाना अच्छा नहीं समझा। अतएव बाहर ही खड़े होकर बोला, 'डर मत पिल्ल, कल आकर सब लोग मुझसे मिलना।' वापिस घर आकर सो गया। मौसी अभी सोयी नहीं थी। पर जगन्नाथ से उन्होंने कुछ पूछा नहीं।

उसने पिल्ल के सामने शालिग्राम धर दिया था। उसके मन में भी वासना जगाने वाली कावेरी के देह के लिए पिल्ल में इ[illegible] था -

अपने अडिग जी के पैसे चुराने या बाग़ में शीनप्पा को चोरी करते हुए पकड़ने की घटनाएँ याद आती जा रही थीं ।

17

दूसरे दिन सवेरे कावेरी घर के काम पर नहीं आयी । शेट्टी ने अपना मुँह नहीं दिखाया। शानुभोग शास्त्री जी बड़ी नम्रता से सामने खड़े होकर बीती घटना से अनजान दिखायी देने का अभिनय करते हुए बोले—'कह रहे हैं कि आइन्दा शेट्टी के मज़दूर काम पर नहीं आयेंगे। क्या किया जाये ?' 'कन्नडा जिले से मज़दूरों को ले आये ।' कहकर जगन्नाथ ने रायसाहब के बेटे रंगण्णा से पूछा, 'क्या पिता जी घर पर हैं ?'

जगन्नाथ कचहरी से बाहर आकर टहलने लगा। दूर से रायसाहब को आते देखकर उसे खुशी हुई । आँगन में उनकी प्रतीक्षा करता खड़ा रहा । तेज़ी से आये रायसाहब घबराये जैसे लगे । शालिग्राम का मातंगों को स्पर्श जो कराया था उसके पुजारी पुजारी भट्ट तथा रसोइये ने सारे गाँव में प्रचार किया था । लोगों के बीच फैली अफ़वाहें सुनकर कल रायसाहब घर आये थे । एकाएक जगन्नाथ के बेंगलूर जाने की खबर सुन कर घबरा गये थे ।

जगन्नाथ रायसाहब को ऊपर ले गया और पिल्ल के पुलिस द्वारा पीटे जाने की बात बतायी । 'मैं सुन चुका हूँ', कहकर रायसाहब ने आशंका ज़ाहिर की कि 'यह हिंसा के लिए मौक़ा दे रहा है ।'

'मेरा निश्चय पूर्ण रूप से जब अपक्व लगे तो मैं पीछे हट जाऊँगा, रायसाहब।'

'इतना सब हो जाने पर पीछे हटना भी सम्भव नहीं, जग्गू भैया।' कहकर रायसाहब ने लम्बी साँस ली ।

'आज के अखबार में क्या है ?'

'कुछ नहीं, पाठकों के कुछ पत्र हैं । यह खबर भी है कि मैसूर की सोशलिस्ट पार्टी के नीलकण्ठस्वामी और रंगराव मन्दिर-प्रवेश आन्दोलन

में भाग लेने भारतीपुर के लिए चले हैं। भागड़ी के अनन्तकृष्ण ने मुझे लिखा है कि वह सर्वोदय कार्यकर्ताओं की ओर से आ रहा है।'

'रायसाहब, मौसी मुझसे बोल ही नहीं रही हैं। लगता है, वह बहुत डर गयी हैं। खाना पकाने के लिए आदमी नहीं है। जरा उन्हें ढाँढस बँधा सकेंगे?'

'अच्छा जग्गू भैया, मैं इसलिए तुम्हारे पास आया कि तुम्हें तुरन्त एक काम करना है। शिवमोगा में हरिजन डी० सी० सत्यप्रकाश हैं। उससे तुम एक बात कह दो कि मेले के समय पर आशंकित हिंसा को रोकने के लिए पुलिस भेजें। तुमने अखबारों में पढ़ा होगा कि आन्ध्र में मातंगों को जला दिया गया। कहा नहीं जा सकता कि वैसी घटना इस गाँव में नहीं हो सकती।'

जगन्नाथ को रायसाहब का कहना बिलकुल ठीक लगा।

'तो मैं अभी शिवमोगा जाऊँगा और शाम तक लौट आऊँगा। आप थोड़ा मौसी के साथ रहकर उन्हें ढाँढस दीजिये।'

रास्ते में वासु ने हाथ दिखाकर उसकी कार रोकी। उसके संग प्रभु और नागराज जोयिस भी थे। जगन्नाथ को अकेलेपन की आवश्यकता थी। मगर जब वासु यह पूछ बैठा कि 'शिवमोगा जा रहे हो तो हम भी चलेंगे', तब कार में बिठाना पड़ा। वासु बातें करने लगा। 'शिवमोगा में मिठाई बनानेवाला कारीगर है, उसे बुलाना चाहिए। मेले तक दूकान तैयार होनी चाहिए। यह सब अपने ऊपर क्यों ढो रहे हो जग्गू भैया, तुम्हें यह सब नहीं करना चाहिए था'—इत्यादि।

जगन्नाथ उत्तर दिये बिना ड्राइव करता रहा। जोयिस ने वासु से कहा कि 'इस सवाल से भी बढ़कर कि जगन्नाथ जो कर रहे हैं वह ठीक है कि नहीं, एक दूसरा सवाल है। उपनिषद् का कहना है—एक ऋषि को यदि सब-कुछ दीख पड़ना सम्भव होता तो उसकी वाणी ही सारी बन जाती। अलग-अलग ऋषियों की आवश्यकता क्यों होती? जो स्थिर है, वह जंगम बन जाये। इस उद्देश्य से जगन्नाथ काम कर रहे हैं, न कि...।'

'शिवमोगा में किस काम से जा रहे हैं, जोयिस जी?'

'बेटा अभी तीस साल का है। नागमणी की हालत तो ऐ

आखिर किया क्या जा सकता है ? दूसरी सगाई के लिए कोई आया है । पढ़ा-लिखा लड़का—उससे पूछ कर अगले साल शादी तय करनी है।' जोयिस जी ने लम्बी साँस लेकर कहा।

प्रभु जी ने जगन्नाथ से पूछा—'आप इंग्लैंड से आते समय कार क्यों नहीं लाये ?'

बिना दिलचस्पी लिये जगन्नाथ ने यों ही कहा—

'इस रोड पर अच्छी कार चार दिन नहीं टिकती। महाराज, आज़ादी के बाद मुट्ठी गरम किये बिना, कोई काम बन नहीं पाता।'

यह दिखाने के लिए कि ड्राइव करते समय बतियाना उसे पसन्द नहीं है, आइने को ठीक करते हुए जगन्नाथ गाड़ी चलाने लगा। प्रभु जी ने वासु जी से कहा—'यह नया डी०सी० है न, महाराज। अव्वल तो बिना रिश्वत के कोई काम करता ही नहीं, फिर हरिजन है। उसे पकड़ने वाला है कौन भला ? कहते हैं, किसी मंत्री का रिश्तेदार है।'

जगन्नाथ को सुनाने के उद्देश्य से ही वासु ने मातंगों की उन्नति से होने वाली दुर्घटनाओं का बयान करना शुरू कर दिया। इस किस्से से कोई हरिजन, मातंग एस० पी० ने दिल्ली में बग़ल वाले कमरे की किसी लड़की को छेड़ने के लिए नेहरू से किस प्रकार गालियाँ खायी थीं, उसका व्याख्यान शुरू हुआ था। फिर चुटकुलों पर उतर आया—'किसी मातंग मंत्री का किस्सा है। जिस दिन वह मंत्री बना उसी दिन अपनी पत्नी के साथ बेंगलूर आकर एक रेस्तराँ में ठहरा। पत्नी पायखाने के लिए गयी। अवाक् रह गयी। बड़ी देर के बाद भी पत्नी के न आने पर पति महाराज ने अन्दर जाकर देखा। देखा कि महारानी जी जमीन पर बैठी हैं। पति को देखकर बोलीं: 'देखा न, कित्ता अच्छा है। हम यहीं तो सो सकते हैं।'

जगन्नाथ ने कार को धीमी कर दी और बग़ल में ही बैठे वासु की ओर क्रूरता से देख कर कहा—'शट अप, यू हैव बिकम डिसगस्टिंग।' वासु हक्का-बक्का हो गया था।

प्रभुजी ने बात बदल दी।

'आपने मेरी बातें समझी नहीं। इस गुरप्पा पटेल पर विश्वास करने से गाँव का उद्धार कैसे होगा ? जो चाहिए वही करेगा। पटवारी को

कराने, श्रमीर गौड के घर के सामने वाले रास्तों को दुरुस्त करवाने के सिवाय और किसी काम के लायक़ है नहीं। यदि श्राप चाहें तो कुछ कर सकते हैं।'

नेशनल लॉज के सामने तीनों को उतारकर जगन्नाथ सीधा डी० सी० के श्रॉफिस गया।

'सत्यप्रकाश बी० ए० एस० इन' बोर्ड देखकर जगन्नाथ ने एक चिट पर अपना नाम लिखा और वहीं ऊँचे स्टूल पर बैठे एक दुबले व्यक्ति के हाथ में दे दिया। उसके माथे पर श्रँगार मराम, दोनों आँखों की कोर में मिट जाने वाली स्थिति में दास-चक्र की मुद्राएँ थी। पाँव में जूते नहीं थे। प्यून के यूनिफॉर्म का सफेद कोट, सफेद ढीला पैंट पहने गऊ जैसा दुबला ब्राह्मण। साहब के घंटी बजाते ही तीर जैसा अन्दर जाने वाला, बाहर आने वाला प्यून। हर बार चिट देते समय सत्यप्रकाश का स्पर्श अनिवार्य रूप से करते हुए, और इसी वजह से रोज़ घर में शाम स्नान करके, जनेऊ बदले, गोमूत्र, गोबर का सेवन करके गृहस्थी निभानी पड़ती है शायद इस प्यून को।

जगन्नाथ ने दया-भाव से उसका उदास चेहरा देखा। उसने कहा—'साहब कुछ काम कर रहे हैं—प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।' जगन्नाथ के विनम्रता से कहने पर—'कृपया यह चिट उन्हें पहुँचा दीजिये।' वह मुँह तिरछाकर अन्दर गया। बेचारा! सवर्णियों के अपने सारे द्वेष का बदला इस गरीब प्राणी पर सत्यप्रकाश ले रहा होगा।

चूँकि साहब ने तुरन्त अन्दर से आने के लिए कहा, प्यून के चेहरे पर अब विनम्रता थी। दरवाज़ा खोलकर आदर-भाव से झुका। सत्यप्रकाश ने खड़े होकर जगन्नाथ से हाथ मिलाया। नाटे—काले रंग के सत्यप्रकाश के चेहरे पर चेचक के दाग स्पष्ट थे। उसके बड़े-बड़े कान ध्यान खींच लेते थे। उसके हाव-भाव में दूसरों को प्रसन्न कर लेने की चुस्ती थी।

'आइये, तशरीफ़ रखिये। आकर आपने बड़ी कृपा की।'

सत्यप्रकाश की कन्नड़ कितनी कृत्रिम लगी थी! अछूत प्रकार अफ़सर के रूप में परिवर्तित होने पर अपनी सारी सह

धो लेता है न ? 'आपका कौन-सा गाँव है।' इत्यादि औपचारिक प्रश्न पूछते-पूछते जगन्नाथ ने उनकी कचहरी को कौतूहल से देखा। गांधी गुलाब धारण किये नेहरू, मैसूर के मुख्यमन्त्रियों की तसवीरें एक दीवार पर टँगी थीं। जगन्नाथ की पीठ के पीछे मंजुनाथ स्वामी की एक बड़ी फ़ोटो थी। अगरबत्ती, सिन्दूर और हल्दी के धब्बों से ज्ञात होता था कि बहुत दिनों से फ़ोटो वहाँ लगी है। शायद आज लगायी गयी अगरबत्ती की राख फ़ोटो के फ्रेम पर पड़ी थी। मेज़ पर बिछे खादी के कपड़े पर हाथ फेरते और घण्टी से खेलते हुए सत्यप्रकाश यों बोले मानो पुस्तक पढ़ रहे हों।

'हमारा तुमकूर है महाराज, हमारे समाज का उद्धार होना है। आप जैसे युवक को देश-सेवा के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। जैसा कि कारन्त जी कहते हैं आप वापस गाँव ही आये हैं। परसों जबकि डेप्युटी कमिश्नर्स कांफ्रेन्स के लिए बेंगलूर गया था, तब नारायण जी ने बताया। जानते हैं न नारायण जी को—हमारे रिश्तेदार—मेरी पत्नी और उनकी पत्नी सगी बहनें हैं। वे स्वास्थ्य विभाग के सचिव हैं—जानते होंगे आप। आपके विषय में उनसे बताया। वह बहुत खुश हुए।'

जगन्नाथ चुप रहा। सारे वातावरण की कृत्रिमता से उसे संकोच हो रहा था। मेज पर कागज़ के फूल थे। कॉफ़ी के धब्बों से धूमिल पड़ा टेबुल क्लाथ। घण्टी बजाने के लिए तरसने वाली उँगलियाँ।

'सुना है आप इंग्लैंड में थे। मैं भी एक टूर पर गया था जापान को। यही कोआपरेटिव मूवमेंट के सिलसिले में। कैसा गजब का देश है वह। देखकर अचम्भा हुआ। हमारे लोग अव्वल नम्बर के आलसी हैं। अब अपने ही लोगों को लीजिये, सरकार ने कितनी सहूलियतें दी हैं! मगर वे सभी का दुरुपयोग कर रहे हैं। होस्टलों में लड़के मुफ़्त में खाकर, दारू पीकर समय बरबाद करते हैं। इसलिए मैं उनसे कहा करता हूँ कि देखो ब्राह्मण लड़कों को। कितना कष्ट उठाकर रास्ते के दीप के तले वे पढ़कर पास करते हैं। अब देखिये, मेरे प्यून गोविन्दाचारु का लड़का भी एस० एस० एल० सी० है, मेरा लड़का भी एस० एस० एल० सी० है। उसका लड़का थ्रू-आउट फर्स्ट-क्लास। मेरे लड़के को क्या कमी है? मगर

हर क्लास में वह बिना प्रेस मार्क सिर्फ पास हो नहीं होता।'

सत्यप्रकाश ने घण्टी बजा ही दी। प्यून दौड़ता आकर झुककर खड़ा हुआ।

'आचार जी, घर जाकर अच्छी कॉफी बनवाकर फ्लास्क में लाइये।' आदेश देकर फिर जगन्नाथ की ओर मुड़कर कहा—'कैंटीन में कॉफी अच्छी नहीं बनती, मिस्टर जगन्नाथ।'

ब्राह्मण होने के कारण चपरासी को भी 'आप' कहने वाले सत्यप्रकाश में जगन्नाथ की दिलचस्पी बढ़ी। कॉफी पीता है कि नहीं, यह देखने के लिए घर से कॉफी मँगा रहा है। ब्राह्मण को प्यून तो बना लेता है, मगर आदर से बोला करता है। दीनता से कृत्रिम कन्नड़ में बोलता है। मगर अन्दर-ही-अन्दर जलता है। पिल्ल भविष्य में शायद यह सत्यप्रकाश बनेगा। उसे इसके लिए भी तैयार रहना होगा।

'आपको मालूम हुआ होगा कि मैं क्यों आपके यहाँ आया हूँ ?'

'उसी का अनुमान कर रहा था मिस्टर जगन्नाथ। आप जो यह काम कर रहे हैं, वही महत्तर है। अब मुझे देखिये—मैं करीबन सारे मन्दिरों में हो आया हूँ—तिरुपति, रामेश्वर, मदुरै—कहीं भी किसी ने मुझे रोका नहीं। पहले हमारे लोगों को एजुकेटेड बनना चाहिए। आज भी उन्हीं अन्धविश्वासों में जीवन काट रहे हैं। आई हैव नो सिम्पैथी फॉर सम ऑफ माई पीपुल। आप जैसे लोगों को उनके हाथ पकड़कर ऊपर लाना चाहिए। मालूम है कि मुझे किसने एनकरेजमेंट दिया ? गुब्बी हाई स्कूल के एक ब्राह्मण अध्यापक ने।'

कॉफी आयी। पिल्ल हो या सत्यप्रकाश, सम्बन्ध सहज न बन पाने की त्रासदी है। कोई-न-कोई कृत्रिमता बीच में आ ही जाती है।

'मेले के दिन शोरगुल मच सकता है। हरिजनों के विरुद्ध हिंसा हो सकती है। इसलिए पुलिस का बन्दोबस्त करने की प्रार्थना करने के लिए मैं आया हूँ।'

सत्यप्रकाश की प्रतिक्रिया की जगन्नाथ ने
चेहरा बनाये सत्यप्रकाश ने बताया—'यही बता
जगन्नाथ। मेरे पास बहुत रेप्रेजेंटेशन आये हैं।

कार्यक्रम मत रखियेगा। और किसी दिन इत्मीनान से कर दीजियेगा। मैं भी आपके साथ आऊँगा। शान्ति के लिए मशहूर है हमारा देश। जिस दिन मैंने डी० सी० बनकर रिपोर्ट दी उस दिन आपके मन्दिर की कमेटी वालों ने स्पेशल पूजा करवाकर मुझे प्रसाद भेजा था। क्रमशः हर कोई बदल जाता है। स्लो एण्ड स्टडी—धीरे-धीरे—यही मेरी पॉलिसी है। एक हरिजन की तरह मैं भी आपसे विनती करूँगा।'

सत्यप्रकाश नमस्कार कर उठ खड़ा हुआ। कॉफ़ी की बुरी मिठास जगन्नाथ के मन में अब भी थी। वह भी उठा।

'जो निर्णय किया है, उससे पीछे हटने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ।' जगन्नाथ ने कहा—'यह अलग बात है कि हरिजन ही न तैयार हों। मैं तो सिर्फ़ यह बताने के लिए आया था कि ला एण्ड ऑर्डर के लिए आप ज़िम्मेदार हैं।"

जगन्नाथ की गम्भीर एवं कटु वाणी सुनकर सम्भवतः सत्यप्रकाश अप्रतिम था। जगन्नाथ के साथ वह पैदल उसकी कार तक आया। फिर नमस्कार करके उसने जगन्नाथ को विदा किया।

18

मैसूर सोशलिस्ट पार्टी के नीलकण्ठस्वामी और रंगराव हाथ में एक थैली व झण्डी लिये सीधे जगन्नाथ के घर आये। श्रीपतिराय ने उनका स्वागत करके, चाय-पान कराया और कचहरी से लगे एक बड़े कमरे में ठहराया। जगन्नाथ के आते ही नीलकण्ठस्वामी ने खुद अपना परिचय दिया—'पोलिटिकल साइंस एम० ए० करने के बाद फ़िलहाल ला विद्यार्थी, ला कॉलेज एसोसियेशन का अध्यक्ष। इनके भाषण के बगैर कोई भी फ़ंक्शन मैसूर में चलता ही नहीं...आदि प्रशंसा रंगराव ने की। उसका परिचय बाद में नीलकण्ठस्वामी ने यों कराया—'पोलिटिकल साइंस एम० ए० किया है, रिसर्च कर रहे हैं, संघ बना रहे हैं।' क्यों सोशलिस्ट पार्टी से बाहर आकर एक अलग पार्टी का निर्माण करना पड़ा—इसकी भी कैफ़ियत नीलकण्ठस्वामी ने दी।

'आराम कर लीजिये, बाद में आपसे मिलूंगा।' कह के जगन्नाथ अपने कमरे में आया। धीरे से श्रीपतिराय भी आये। दरवाजा बन्द करके जगन्नाथ से धीमी आवाज में बोले—

'थोड़ी होशियारी से इन लोगों से बरतना, जग्गू भैया। मुझे बाहर खड़े उन लोगों ने नहीं देखा। वे आपस में क्या बातें कर रहे थे, जानते हो? नीलकण्ठस्वामी ने कहा—जगन्नाथ को अपनी पार्टी का अध्यक्ष बना लेंगे तो कैसा रहेगा, रंगराव? रंगराव ने उत्तर दिया—ब्राह्मण ब्राह्मण ही रहेगा। रंगराव ओक्कलिग है, नीलकण्ठस्वामी लिंगायत है। नीलकण्ठस्वामी ने कहा—यह तो चाल है, रंगराव। अगली बार जगन्नाथ हमारे दल का अच्छा उम्मीदवार बन सकता है। आते ही रंगराव ने क्या किया, मालूम है? कपड़े बदलकर सीधे मन्दिर जाकर प्रसाद लेकर आया। जब मैंने कहा—यह आपने अच्छा नहीं किया। तो उसने कहा—मेरा परिचय यहाँ किसी को नहीं है न? मंजुनाथस्वामी पर मेरी माँ का अपार विश्वास है। नीलकण्ठस्वामी ने भी उसे गलियाँ दीं, कारण—लिंगायत होने के कारण उसे ब्राह्मणों के मन्दिर के प्रसाद के प्रति उतना आदर नहीं। मैं यह सब तुमसे इसलिए कहने आया कि राजनीति तुम्हारे लिए नयी है, होशियारी से रहना।'

नाटकीय ढंग से रायसाहब ने जो कुछ कहा उसे जगन्नाथ ने चुपचाप सुन लिया। 'अपने मतलब के लिए ऐसे लोगों से भी लाभ उठाना पड़ता है'—कहा। रायसाहब हँस दिये और कहने लगे—'तुम [illegible] वे ही लोग तुम्हें एक्सप्लाइट करते हैं, देख लेना।' डी॰ सी॰ [illegible] अपनी मुलाक़ात का ब्यौरा दिया। यह कहते हुए [illegible] कि यह उन्हें मालूम था। वह बहुत भ्रष्ट है।

जगन्नाथ ने पलंग पर पाँव फैलाये।

'जाने कौन-कौन लोग घर आयेंगे? [illegible] नहीं जा सकती।'

'अपनी पत्नी को भेज दूंगा,' [illegible]

'मौसी को क्या आपने [illegible]

'उन्होंने अडिग जी को [illegible]

जाने के लिए। वह रोती हैं कि उसके तीर्थ (चरणोदक) के बिना वह खाना कैसे खायें ? उनको देखने पर मुझे तरस आता है। कल गोपाल आयेगा न—यही उनके लिए तसल्ली की खबर है।'

कारिन्दे कृष्णय्या के बेटे के बारे में माँ और मौसी के हृदय में जो वात्सल्य रहा है, वह जगन्नाथ के लिए आश्चर्य की बात थी। गोपाल के आने की खबर सुनकर खुशी हुई। किसी भी तरह, वह चाहता था कि मौसी खुश रहें।

रायसाहब ने चलते समय कहा—'सफ़ेद कपड़े पहनकर रास्ते पर चलने के लिए मातंगों से कह दो, जग्गू भैय्या। लोगों की आँखों में यदि ज़्यादा खटकने लगेंगे तो उपद्रव मच सकता है।'

शाम को मातंग युवक आये। शरीर पर चोट होते हुए भी पिल्ल आया था। जगन्नाथ को खुशी हुई। उसके चेहरे पर कभी न देखा गया स्नेह जो था। जगन्नाथ ने कहा कि वह डी० सी० से मिल आया है। वह भी आपकी ही जाति के हैं, कहकर ढाढ़स बँधायी। 'मन्दिर-प्रवेश करने में आपकी मदद करने के लिए मैसूर से ये दोनों आये हैं,' कहते हुए नीलकण्ठस्वामी और रंगराव का भी परिचय कराया। मातंग युवकों को समाजवाद पर भाषण देने के लिए नीलकण्ठस्वामी से कहकर, वह अन्दर चला आया।

रायसाहब की पत्नी भाग्यम्मा और छुट्टी के दिनों में आयी बेटी सावित्री मौसी की सहायता करने आयी थीं। जगन्नाथ टहलने के लिए पहाड़ी उतरकर गया। रात के भोजन के लिए रायसाहब भी थे। भोजनालय में पहली बार एक लिंगायत और एक ओक्कलिग को भोजन करते देख कर जगन्नाथ को सन्तोष हुआ। मौसी ने चुप्पी साधे परोसा। नीलकण्ठस्वामी ने कहा कि कल उसके पार्टी वाले और कुछ लोग आ रहे हैं। यहाँ एक किसान संघ स्थापित करने का सुझाव रंगराव ने दिया।

अगले दिन अखबार में हरिजन-मन्दिर-प्रवेश के खण्डन में भारतीपुर के ब्राह्मण युवक संघ वालों का लिखा एक पत्र था। डाक-गाड़ी से जगन्नाथ के नाम दो चिट्ठियाँ आयीं। मैसूर यूनिवर्सिटी के समाजशास्त्र के रीडर रमेशचन्द्र का एक पत्र था। रमेशचन्द्र से जगन्नाथ का

पुराना परिचय है। नंजनगूड के एक प्रसिद्ध होयसल कर्नाटक खानदान का है वह। बी० ए० पास करने तक कानों में बुंदकियाँ पहने था, इंग्लैंड में थ्री-पीस सूट की, जरा सा क्रीज खराब न करने में पहनना सीख चुका था। चश्मे को रूमाल से साफ करते हुए थोड़ा झुककर गम्भीर चर्चा करते, उसे देखने वाले उसे बुद्धिजीवी समझते थे। भारत की जाति-व्यवस्था का सूक्ष्म रीति से समर्थन करता था।

'देखिये न जी, आप जानते हैं कि कुम्हार कैसा रेवेड लाइफ लीड करते हैं? मगर इंग्लैंड की कलर फीलिंग (वर्ण-भेद) का उतनी ही उग्रता से खण्डन करता था। जगन्नाथ यदि कहता, 'आप हिपोक्रिट हैं' तो सिगरेट सुलगा कर कहता था—'तुम्हारे आक्रोश को समझता हूँ। मगर जगन, उन शूद्रों की हालत देखो जो एजुकेटेड बन गये हैं। मैसूर यूनिवर्सिटी की क्या गत हुई? ओक्कलिग और लिंगायतों के बीच रोज झगड़ा है वहाँ। एक जमाने में हिरियण्ण, राधाकृष्णन, जिस यूनिवर्सिटी में थे, वहाँ आजकल कालप्पा, सिद्धप्पा का दरबार लगा है। इसका खण्डन करने की अपेक्षा, जाति-व्यवस्था को गालियाँ देने से क्या बन सकता है?'

रमेशचन्द्र भारतीय हिपोक्रसी की सटीक तसवीर था। गहरे विश्वास से वाद-विवाद करता था। शूद्र औरतें व्यभिचार करें तो ठीक है। मगर ब्राह्मण औरतें करती नहीं। इंडिया में न्यूरोटिक्स नहीं। यूरोपीय संस्कृति से भारतीय संस्कृत बढ़िया है। अंग्रेज़ी यदि भारत आकर अंग्रेज़ी नहीं सिखाते तो हमारे यहाँ इलेक्ट्रिसिटी व रेलें ही नहीं होतीं, आज़ादी और भी देर से प्राप्त होनी चाहिए थी। अनपढ़ व्यक्तियों को वोट का अधिकार जो दिया गया है, वह ग़लत है। क्लिनलिनेस की रट लगाने वाले ये अंग्रेज़ लोग आबदस्त नहीं लेते—आदि-आदि। रमेश-चन्द्र की मूँछ तथा दोनों हाथ छाती तक ले जाकर, बोलने के ढंग को देख कर जगन्नाथ जम्हाईयाँ लेता था।

जगन्नाथ के अनुमान के मुताबिक ही रमेशचन्द्र का भविष्य रूपा-यित हुआ था। भारतीय स्त्री के पातिव्रत्य का गुण गाने वाले रमेश ने इंग्लैंड की एक लड़की से प्यार किया। प्यार करते समय भी वह जानता

था कि इस लड़की से शादी कभी भी नहीं करनी है और इसका जगन्नाथ को भी पता था। उससे विदा लेकर, वापस लौटते समय, अँग्रेज़ी साहित्य की दुखान्त कविता का पारायण करता रहा। फिर इंडिया आकर पाश्चात्यों की स्वच्छता, आनेस्टी, पोलिटिकल मैच्योरिटी की प्रशंसा करता रहा और इसी दौरान होयसल कर्नाटक जाति के एक एक्ज़िक्यूटिव इंजीनियर का प्रिय बना। चार-पांच लड़कियों की इन्टरव्यू के बाद, इन्हीं की मामूली शक्ल-सूरत की बेटी से शादी की। निमन्त्रण-पत्र में अपने नाम के आगे 'एम० ए० लन्दन' लगाया था।

रमेशचन्द्र ने सुन्दर अक्षरों में यों लिखा था—भारतीपुर में एक्सटेन-सियलिस्ट सोशलिज़्म को लाने के आपके साहस की सराहना करता हूँ। परन्तु सोशियोलॉजिस्ट की हैसियत से मुझे लगता है कि आपका यह प्रयत्न कामयाब नहीं होगा। हरिजनों की यह समस्या अर्बनाइजेशन के द्वारा हल होनी चाहिए न कि आपके कार्यक्रमों द्वारा। अब अधिकार कर रहे नवब्राह्मण ओक्कलिगों तथा लिंगायतों का विरोध करने का कार्य आप जैसे बुद्धिजीवियों को करना चाहिए। आप जानते नहीं, बेंगलूर विश्वविद्यालय में लिंगायत और ओक्कलिग लोग वाइसचान्सलर पद के निमित्त आपस में संघर्ष करते हुए, किस प्रकार बौद्धिक कार्य की पवित्रता भ्रष्ट कर रहे हैं। मैसूर में भी यही बात है। यदि मैरिट के लिए मौक़ा होता तो मुझे ही प्रोफ़ेसर बनना चाहिए था, मगर...इत्यादि।

दूसरा पत्र इंग्लैंड से चन्द्रशेखर ने लिखा था। अपने अन्दर तीव्र उद्वेग के कारण बने उस पत्र को जगन्नाथ ने बार-बार पढ़ा।

'प्रिय जगन !

मार्गरेट ने सब बताया। बेंगलूर से मेरे भाई ने भी लिखा था। औरों की अपेक्षा मैंने आपको अच्छी तरह समझा है। दिवास्वप्न में पले अपने आदर्शवाद को यों आज़मा कर ठोस रूप देने के लिए आप प्रयत्न कर रहे हैं। आप सफ़र करना (दुख भोगना) चाहते हैं। आपकी ट्रैजिडी यह है—कि अब भी आप एक दूसरे किस्म से 'हीरो' बन जाते हैं, क्योंकि आप मातंगों से बिलकुल प्यार नहीं कर सकते। आत्मरत व्यक्ति के लिए सचमुच का प्रेम सम्भव नहीं है। ईर्ष्या में तड़पने वाले में अर्थात्

मुझे मनुष्य की दुर्बलता के द्वारा जितने गहरे सत्य के साक्षात्कार होते हैं, उतने उदात्तता में जीने वाले आपको नहीं होते। एक प्रकार की पम्पासिटी (दम्भ) से दूसरी पम्पासिटी की ओर आप करवट ले रहे हैं। हालाँकि मुझे मालूम है कि आप खोखले हैं, तथापि आपको देखकर मुझमें क्यों इतनी ईर्ष्या, प्रीति, द्वेष की भावना उभर आती है—यही आश्चर्य है। जिन्दगी में आप जैसे भाग्यवानों से ईर्ष्या करते हुए जीवित रहना मेरी त्रासदी है। यह जानने कारण कि मेरे सिवा और कोई भी इतने निष्ठुर सत्य को आप से नहीं कह सकता, आपके इस निबरल नाटक का खण्डन करते हुए मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। मार्गरेट मेरी बातें नहीं मानती। फिर भी मुझे मालूम है कि दिल से मेरे शब्दों की असलियत वह जानती है।

सप्रेम

तुम्हारा

चन्द्रशेखर'

चन्द्रशेखर की चिट्ठी को भुलाने के उद्देश्य से जगन्नाथ नीलकण्ठस्वामी की खोज में निकला। मातंगों के साथ मै०सो०पा० के मन्त्री महोदय ने मीटिंग की—इस बात की रपट अखबारों को भेजने के लिए बना रहा था। जगन्नाथ को देखते ही कहा, 'यहाँ के एम० एल० ए० का खण्डन करके, आपको एक वक्तव्य देना है।'

'देंगे, पर उसके पहले उनसे बातचीत करना बेहतर होगा?'

'गुरप्पा गौड़ महाठग है, इस मामले से बचने के लिए बेंगलूर गये हैं।'

जगन्नाथ को ये बातें पसन्द नहीं थीं। चन्द्रशेखर के पत्र में अनेक झूठ थे, पर उसका एक-एक शब्द बर्छे की तरह उसे चुभ रहा था।

नीलकण्ठस्वामी, रंगराव को अन्दर ले जाकर उनके साथ कॉफ़ी पी। फिर कहा—'थोड़ा काम है, खत्म करके आऊँगा।' वहाँ से सीधे वह रायसाहब को ढूँढ़ने चला। रायसाहब सवेरे आये नहीं थे। परन्तु उनकी पत्नी और बेटी उसके ही घर में सोमी की सहायता में लगी थीं।

जगन्नाथ ने गाँव के रास्ते तक पहुँचते ही झण्डे लिये पाँच-छः

को आते देखा। झण्डों से अनुमान लगाया कि वे नीलकण्ठस्वामी के लोग हैं। अपना घर दिखाया और कहा कि 'वहाँ जाकर आराम करें। कोई एक घण्टे में मैं आऊँगा।" युवक हँसते हुए खुशी में, ऐसे लगे मानो किसी मेले या पिकनिक में शामिल होने आये हों। रायसाहब की दूकान की तरफ़ जगन्नाथ चला।

बाज़ार के सारे रास्ते मेले के निमित्त सजाये गये थे। किसी ने उससे बात नहीं की। अपने गाँव में इस प्रकार तिरस्कृत होने के कारण उसे दुःख हुआ। दूकान बन्द करके घर जाने के लिए रायसाहब तैयार थे। मागड के अनन्तकृष्ण के आने की खबर ही उनकी खुशी का कारण थी। सत्याग्रह के दौरान जेल के आत्मीय साथी को देखने की आतुरता उनमें थी।

रास्ता पार करते-करते रस लेकर उसकी कहानी सुनायी।

19

'अनन्तकृष्ण मुझसे छोटा है, बहुत छोटा भी नहीं, चार-पाँच साल, बस। मुझसे उसने कभी कुछ नहीं छिपाया। उसके जीवन की एक ट्रजिडी सुनाता हूँ। हम जैसे आदर्शवादियों के लिए उसमें एक सबक़ है।

'अनन्तकृष्ण जब लड़का था, तभी स्वातन्त्र्य आन्दोलन में शामिल होकर इन्टरमीडिएट की पढ़ाई छोड़ कर जेल गया। यह शिक्षा हमें गुलामी के लिए तैयार करती है। सचमुच का ज्ञानार्जन कॉलेज में सम्भव नहीं है, हज़ारों युवकों को जैसा लगता था वैसे ही उसे भी लगा था। साहित्य का अच्छा विद्यार्थी था। आज भी वह कितने सुन्दर ढंग से लिखता है, भाषण देता है। घर वाले पक्के सम्प्रदाय के लोग थे। पिता शिरस्तेदार थे। उन्होंने अनन्तकृष्ण की माता की मृत्यु के बाद दूसरी शादी कर ली थी। सौतेली माँ परम क्रूर थी।

'सरकार की निन्दा करना बेटे का घर में रहना नौकरी करने वाले बाप को पसन्द नहीं था। बड़ी लड़कियों का घर था, अतएव जात-कुजात में खानेवाले बेटे को अपने घर रखकर गाँव-भर की लानत लेना

सौतेली माँ को पसन्द नहीं था। कुल मिला कर ममता-विहीन घर श्यामल-सा बन गया। ऐसे सन्दर्भ में स्वतन्त्रता का आन्दोलन प्रायः एक बहाना रहा होगा—अनन्तकृष्ण और उसके जैसे अनेकों के लिए। बेटे ने घर छोड़ दिया।

'स्वतन्त्रता आन्दोलन के उन दिनों में पेट पालना, उतनी बड़ी समस्या नहीं थी। गाँव-गाँव यात्रा। जहाँ ठहरा वहीं भाषण और भोजन। भाषण की क्या कहूँ ? वाह, अनन्तकृष्ण का भाषण कितना बढ़िया होता !

'इस प्रकार कांग्रेस नेताओं को अनन्तकृष्ण प्रिय बन गया। नींद से जगा कर भी, भाषण करने के लिए कहा जाये तो वह अनायास शुरू कर देता था। अनन्तकृष्ण इसी मस्ती में सब-कुछ भूल कर देश-भर में घूमता फिरा। घर का सम्पर्क पूर्ण रूप से छूट गया था। अपने निजी जीवन को एकदम मिटा दिया। हमेशा लोगों के बीच जीया। मेरा इस्तेमाल करने लोग आते हैं, यह जानकर जो भी बुलाये उनके प्रचार का यन्त्र बन गया। अनेकों बार मुझे लगा था कि आडम्बर-युक्त शब्दों के अलावा मानो कुछ भी नहीं।

'अनन्तकृष्ण देखने में आकर्षक व्यक्ति था। वह आदर्श की मस्ती में एक बार गांधी जी के आश्रम गया। वहाँ गांधी जी का प्यारा शिष्य बना। जब गांधी जी सोयें, तब पंखा करना उनके साथ टहलने जाना, 'हरिजन' में वह जो कुछ लिखते, उसे कन्नड़ में अनुवाद करना—आदि काम करता था। अनन्तकृष्ण कुछ भी करे उसमें एक विशेषता रहती थी। गांधी जी के आश्रम में जब वह था, तभी वह कुएँ में गिर पड़ा था।

'आश्रम में एक नायडु जाति की अनाथ लड़की थी। अनुशासन में पाली-पोसी गयी थी। वालंटियर कार्य करते-करते उसका परिचय अनन्तकृष्ण से हुआ। परिचय और स्नेह बना। अपने आदर्श को जगत के सम्मुख पेश करने के मौके की प्रतीक्षा में अनन्तकृष्ण था। वह भी सोच रही थी कि सेवा-कार्य में एक स्वयंसेवक साथ रहेगा, तो अच्छा रहेगा। अन्तर्जातीय विवाह करने का अपना निर्णय उसके सामने रखा। महात्मा जी ने

सलास लेने की बात भी उसने की। जानते हो नगांधी जी के बारेमें ? काम-तृप्ति के लिए विवाह नहीं करना चाहिए, केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए पत्नी से सम्भोग करना चाहिए, दोनों को एक साथ ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, वग़ैरह उपदेश देकर अनन्तकृ॰ ॰ से उसका विवाह एक दिन सामूहिक समारोह के अवसर पर करने का ॰श्चय किया गया।

'आज सवेरे शादी है। शादी के एकघण्टे के पूर्व एक पेड़ के तले अनन्त-कृष्ण और वह नायडु लड़की दोनों खड़े थे। वह पेड़ से पीठ सटाये खड़ी बता रही है, दोनों को मिलकर देश-सेवा करनी है। अब तक उसने इसको छुआ नहीं था और इसने भी उसको छुआ नहीं था। ऐसा लगा भी नहीं। यों खड़े होकर बातें कर लेते थे, बस। उनके बीच कुछ और नहीं घटा था। शादी का मुहूर्त नज़दीक आ रहा है। दोनों खुरदरे खद्दर के कपड़े पहने खड़े हैं—क़ैदी की तरह। अनन्तकृष्ण चेहरे को बहुत गम्भीर बना कर, बातें सुनता खड़ा है। कोई शब्द नया नहीं है, क्योंकि अब तक उन्हीं शब्दों को वह स्वयं कहता आ रहा है।

'एक ज़माने में अनन्तकृष्ण बड़ा रसिक था। मुद्दण्णा-मनोरमा का वार्तालाप तथा कालिदास की 'शकुन्तला' उसने कण्ठस्थ कर रखा था। लड़की जो बातें कह रही थी, उन्हें सुनते-सुनते उसके उभरे हुए दाँत, लम्बी नाक, पिचकी हुई छाती, हाथी की आँखों जैसी छोटी-छोटी आँखें, छोटे ललाट की ओर उसका ध्यान गया। अब वह जो चिर-परिचित बातें कर रही थी, वे शहद की मक्खियों की तरह भिन्नानें लगीं। इसका अनुमान करके ही, कि जाने कितने सालों तक यही ललाट, यही नाक, यही मुँह, इसी भंगिमा में इन्हीं बातों को कहते रहते हैं, अनन्तकृष्ण को डर लगा। उसका मन चीख उठा कि यह बदसूरत है और इससे शादी करना सम्भव नहीं है। उसकी संगीत की कल्पना करके उसका शरीर काँपने लगा। यहाँ से इसी पल भाग निकलने का मन हुआ। मगर पाँव जड़ थे। आँखें उसके ललाट, नाक, दाँतों में अटक गयी थीं। भाग लाने

1. कवि मुद्दण्णा द्वारा रचित कन्नड की ख्यात रचना 'रामाश्वमेध' के व्याख्यात दम्पत्ति।

के प्रबल निश्चय के साथ ही अपनी असहायता भी बढ़ती गयी।

'क्यों इस प्रकार उदास होकर देख रहे हो ?' उसने अपनी बातें रोक कर ऊँची आवाज में पूछा। उसने अपना उदास चेहरा हिलाया। बातें करने के लिए थूक निगल कर प्रयत्न किये।

'श्रीरंगपट्टण में एक आश्रम की स्थापना करनी चाहिए, अनाथ बच्चों को पालना चाहिए।' वह कहती रही।

'शादी हुई। बच्चा हुआ। अनन्तकृष्ण परिस्थिति में जम गया, पछ-ताया; दुबला हुआ। खैर, यह आज भी कहा करता है—देखो श्रीपति, अपनी सारी जिन्दगी मेरे मन में से यह भावना गयी नहीं कि वह बदसूरत है; मगर जिस तरह के सामने में झुक गया था उससे अलग नहीं हट सका।

'इस प्रकार उसकी समस्त भावनाएँ कृत्रिम होती गयीं। उसे तीखा-पन बहुत पसन्द था। पुलिओगरे और बिसी बेलेभात (कर्नाटक के विशेष व्यंजन) इसके प्रिय व्यंजन थे। मगर वह व्यंजनों में मिरचें नहीं डालती थी। तरकारी उबाल कर रखती और खाने को कहती। चाय-कॉफी घर में बनाती नहीं थी। किसी तरह एक साल तक तो अनन्तकृष्ण यह सब सह कर पत्नी के अनुसार चलता रहा। बाद में चोरी से मसालादोसा खाने लगा, पीने की लत भी पड़ गयी। पत्नी ने घर से बाहर कर दिया। कांग्रेस कचहरी जाकर पति के खिलाफ शिकायत की।

'कांग्रेस पार्टी ने भी जितना सम्भव था, उतना चूस कर उसे ईख के छिलके की तरह बाहर फेंक दिया। उसे ब्राह्मण मान कर सीट भी नहीं दी। इन सबसे ऊब कर अनन्तकृष्ण जीवनदानी बन गया। पत्नी के साथ रहने की अपेक्षा, विनोबा जी के साथ पद-यात्रा करना बेहतर समझकर उनके साथ चल निकला।

'फिर भी मुझे लगता है कि है कि अनन्तकृष्ण बड़ा आदमी है। उसके जीवन पर एक विषाद की छाया आवृत्त है। भले ही वह मगर सर्वोदय के बारे में असली तीव्रता से बोलता है। मनुष्य की निश्चित रूप से दी नहीं जा सकती हैं। हाँ, उसके जीवन में ...

परन्तु यह भी सच है, एक आदर्श के लिए आज भी जी रहा है। मेरी तरह हार कर वह थका नहीं है, आज भी जूझ रहा है।'

20

चन्द्रशेखर की चिट्ठी, अनन्तकृष्ण की कहानी, अभी आत्मीय न वन पाने वाले मातंग, ज्यों का त्यों रहने वाला भारतीपुर, किसी भी मूलभूत परिवर्तन को असम्भव वनाने वाले रायसाहव का विवेक—इन सवके कारण जगन्नाथ उदास था।

पहाड़ी चढ़ते हुए रायसाहव से कहा—'रायसाहव ! चाहें तो इसे आप हिपोक्रेसी कह सकते हैं। मातंगों से प्यार करना अभी मुझसे भी सम्भव नहीं हो पाया है। मगर अभी जो असम्भव है, उसे इतिहास सम्भव वना सकता है, जिसका 'विश्वास' मुझे है। फिर भी मेरा 'अस्तित्व' सत्यप्रकाश को देख कर असह्य अनुभव करता है। मातंगों के साथ कृत्रिमता से व्यवहार करता है। इसी को मैं यातना कहता हूँ। समझने और अस्तित्व जमाने के लिए जीना मनुष्य के लिए अनिवार्य है। पशुओं के लिए यह समस्या ही नहीं है। इतिहास यों मेरी सृष्टि करके एक दूसरे प्रकार की वास्तविकता की सृष्टि करने की ताक में रहता है—मेरे अस्तित्व के द्वारा भी मगर उसका कार्यक्षेत्र जितना मेरे अन्दर है, उतना ही भारतीपुर में है। इतिहास में पड़े हुए सभी बीजों के अंकुरित होने के लिए जाने किस-किस की आवश्यकता पड़ती है ! जव तक भारतीपुर की वास्तविकता में परिवर्तन नहीं आता, मातंग तैयार नहीं होते, पिल्ल में जो अंकुरित हुआ-सा दीखा है, वह जड़ नहीं जमाता—तव तक मेरे ये सव विचार प्रेत वने रहेंगे।'

जगन्नाथ खाने पर वैठा तो उदास था। इस पंक्ति में वैठे किसी से भी प्यार कर नहीं सकता। प्यार करने वाली मौसी को मैंने रुलाया है। अपने लगाव का कोई आदमी, अव इस भोजनशाला में कौर मुँह में नहीं डालेगा। वग़ल में वेढंगे लुंदे वना कर पूरे हथेली से उसे मुंह में ठूंस रहा था। भात की ढेरी को अलग किये विना उसी का खत्ता वना कर उसी में

एक चम्मच दाल डलवा ली थी, फिर मानो पिण्ड-दान करने के अन्दाज़ में लुँदे बनाने के ढँग को मौसी ने जुगुप्सा से देखा। घर के बाहर बैठ कर शूद्र को यों खाते देखना मौसी के लिए नया नहीं था। परन्तु अपने भोजनगृह में ही बैठ कर किसी शूद्र के इस खाने के ढँग से मौसी को घिन हुई।

शौच से लेकर भोजन करने के विधान तक अलग-अलग संस्कारों का सृजन करके समस्त मानवीयता को ही इस प्रकार जड़ बना रही इस जाति-पद्धति का नाश कैसे किया जाये—पता नहीं। क्लीव रोष से अपने को दुत्कारने के सिवाय कोई दूसरा चारा नहीं है। इस समाज में अन्तर पिशाच बने बग़ैर कोई मार्ग नहीं है। भले ही कितना ही कृत्रिम लगे, अपनी भावनाओं को उलटी दिशा में जाने देना ही शायद ठीक है, अथवा अनिवार्य है। इस रंगराव से, सत्यप्रकाश से प्यार करना अथवा उन्हें समझाने की चेष्टा करनी चाहिए। नीलकण्ठस्वामी ने कहा—'मिस्टर जगन्नाथ, पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन पर मैंने एक पुस्तक लिखी है।'

'अच्छा ?'

'उसे पब्लिश करवा रहा हूँ। महाराजा से प्रार्थना करने वाला हूँ कि वह इसकी भूमिका लिखें।'

'आप सोशलिस्ट होकर···?' जगन्नाथ ने मसखरी में प्रश्न किया।

नीलकण्ठस्वामी जी ने भी हँसते हुए कहा—'वरना, बताइये कि कौन इस पुस्तक को प्रकाशित करेगा ? कन्नड पब्लिकेशन में जातीयता की भरमार है।'

'सच ?'

'जी हाँ, मेरी पुस्तक कन्नड और अंग्रेज़ी दोनों में प्रकाशित हो रही है। टैक्स्ट बुक बनने की भी सम्भावना है। तब मेरी बातों [redacted] वज़न रहेगा और उससे पार्टी का लाभ भी होगा।'

नीलकण्ठस्वामी ने बिना लज्जा के ये बातें कह दीं। मगर जगन्नाथ को उसके आशावाद तथा उसी एनर्जी पर आश्चर्य हुआ। गन्दा है!

यही भविष्य को संकेतित करने वाला व्यक्ति है—तब तक ज

जैसे व्यक्ति, ऐसे बदमाशों को हटा कर खड़े नहीं होते।

अता है। दिल की बातों को अमल में न ला सकने की कायरता है; जलने की हिपाक्रेसी है। परन्तु इन गौड़ों और लिंगायतों में बेशर्म धैर्य है; एनर्जी है; बदलते समाज में सब अन्तरपिशाच बन जाते हैं। लुटने के लिए सब तुले रहते हैं। लालच के मारे मुंह खोले इन ब्राह्मणों पर कल पिल्ल लात मारेगा। बाद में शायद यह भी सत्यप्रकाश की तरह मुंह खोलेगा। इतिहास में मौजूद बीजों में कुछ-कुछ सड़ जाते हैं; कुछ अंकुरित होते हैं। उस जैसों को खाद बनना चाहिए। उसने कहा—'आपकी महाराज से भूमिका लिखने की स्ट्रैटजी, सबका समर्थन कर लेना है। और यह मुझे खतरनाक लगता है। वलगर भी। सुना, कि रंगराव आते ही मन्दिर जाकर वहाँ से प्रसाद ले आया। मेरे साथ इस काम में शामिल होते समय आपको प्यूर (शुद्ध)होकर बर्ताव करना चाहिए।'

नीलकण्ठस्वामी अथवा रंगराव दोनों इस बात से नाराज़ नहीं हुए। केवल सफलता को ही प्रधान मानने वाले समाज में यह समझ में नही आता कि कौन-सा अस्थायी है और कौन-सा स्थायी है ? नीलकण्ठस्वामी के लिए जीत ही मुख्य है। पहले ब्राह्मण फांके मारते थे, अब ये फांके मार रहे हैं। धर्म के चलते भी हज़ार सालों से इस देश में मातंगों को उसी परिस्थिति में रहते देखकर भी किसी ने नींद खराब करके कुछ सोचा तक नहीं।

रायसाहब ने मौन भोजन किया। ब्राह्मणेतर ऐसे ही होते हैं—इस निर्णय पर पहुंचे हुए उनके मन में परिवर्तन लाना अपने से असम्भव जानकर जगन्नाथ को रोष आया। उन्हें दुखाने वाले शब्दों की खोज करते हुए हाथ धोये। नीलकण्ठस्वामी के अनुयायी घर के पिछवाड़े जाकर अमरूद तोड़ रहे थे। मुझसे अथवा मौसी से इन लोगों ने पूछा तक नहीं कि इन्हें तोड़ा जा सकता है कि नहीं ?

थोड़ा आराम लेने के उद्देश्य से जगन्नाथ ऊपर गया। सोशलिस्ट गांव देख आने के इरादे से नीलकण्ठस्वामी के नेतृत्व में गये। रायसाहब भी उनके साथ चल निकले।

मन्दिर के पुजारी के बेटे गणेश को सीधा अपने यहाँ आया देखकर जगन्नाथ

को आश्चर्य हुआ। उठ बैठा और बैठने के लिए कहकर कुर्सी की ओर इशारा किया। उमंग-भरी आँखों से जगन्नाथ को देखते हुए गणेश कमरे का दरवाज़ा बन्द करके कुर्सी पर बैठ गया। मैला कुरता, मैली धोती, मूर्ति फन जैसे शरीर का बूढ़ा चेहरा, बिना यौवन एवं बिना बुढ़ापे की विषाद मूर्ति, सिर पर जाने कितने दिनों की केश-राशि, इस केश-राशि से बड़ी हुई चोटी, ठुड्डी पर खुरदरी दाढ़ी और कानों में बुंदकियाँ।

बतियाने का प्रयत्न करते हुए गणेश तुतलाने लगा।

'पुस्तक चाहिए ?'

जगन्नाथ स्वयं बोला और अपनी माँ के प्रिय शरतचन्द्र के उपन्यास ला दिये।

'मेरे, यहाँ आने की खबर किसी को भी मत दीजिएगा।' गणेश ने तुतलाकर कहा।

जगन्नाथ को बातें करने के लिए कुछ नहीं सूझा तो पूछा, 'क्या आप ही ज्येष्ठ पुत्र हैं ?' गणेश ने 'हाँ' कहा। फिर जगन्नाथ को गौर से देखने लगा।

'क्या आपकी शादी हो गयी ?'

फिर लगा कि ऐसा पूछना नहीं चाहिए था। क्योंकि हमारा दृष्टि से गणेश ने जगन्नाथ को देख कर सिर हिलाया था। उसे तो कुछ कहना था। मगर उसे कहलवाने योग्य स्वतन्त्र वातावरण का सृजन जगन्नाथ को करना था। सहानुभूति से गणेश को देखते हुए बैठ गया। गणेश जैसे बैठा था, उससे कुछ अज्ञात भाव झलक रहा था। ऐसा लग रहा था कि यौवन से बुढ़ापे तक की किसी भी उम्र का हो सकने वाला गणेश मानो खोलता बैठा था। जगन्नाथ को शून्यदृष्टि मातंगी की याद आयी। गणेश को जो विकृत कर रहा था, वह मात्र उसका रूप ही नहीं था, मगर अपने गोरे रंग में सैकड़ों वर्षों के इनब्रीडिंग की कहानी सुना रहा उसका घिसा हुआ चेहरा भी था।

'आप जो कुछ कर रहे हैं वह ठीक है।'

अपने भीतर का सब-कुछ बाहर उगल कर पसीजने लगे

'चलता हूँ,' कहकर वह खड़ा हुआ और लम्बे डग भरता हुआ चल दिया। जगन्नाथ नीचे उतर आया और पहाड़ी से उतरते गणेश के नाटे एवं रोगग्रस्त शरीर की फुर्ती को आश्चर्य से देखता खड़ा रहा।

21

दरवाज़ा बन्द कर चारपाई पर पड़ा बड़ी आतुरता से जगन्नाथ मार्गरेट-का पत्र पढ़ने लगा।

पहले इन्टरनेशनल स्कूल का ब्योरा, देसाई जी का पत्र आया है, अगले साल आ रही हूँ, चन्दर का भी कहना है कि बेंगलूर में ही नौकरी करेगा, इत्यादि...। बाद में वेदर, तीन दिन से लगातार स्नो पड़ रहा है। दिल करता है कि हर समय आग के सामने बैठी रहूँ। बियर पी-पी कर शरीर मोटा हो गया है। फिर, पिताजी के सम्बन्ध में लिखा है—नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त बड़े आराम से हैं, माता जी की नैगिंग (कोचने) की परवाह नहीं करते। एक दुकान खोली है, काला पाउडर, अचार, पापड़ -- ऐसी ही अनेक चीज़ों की दूकान। तड़के ही उठकर तिरुपति भगवान के सामने अगरबत्ती जला कर पूजा करते हैं; रोज़ शाम को थियॉसोफ़िकल सोसाइटी जाकर लेक्चर सुनते हैं। भारत से हरि-कथा सुनाने वालों, सितार, सारोद्‌वादकों को आमन्त्रित करने का आर्गनइज़ेशन बना रहे हैं।

मैं समझ सकती हूँ कि तुमने क्यों भगवान के विरुद्ध विद्रोह शुरू किया है? मगर तुम्हें जरूर समझना चाहिए कि डैडी को भगवान की आवश्यकता क्यों पड़ी? चन्दर के साथ इसी की चर्चा की। वह तुम्हें रोमांटिक कहता है; नेहरू युग का प्रॉडक्ट बताता है। उस क्रेज़ी फैलो की बतायी सारी बातों से मैं सहमत नहीं हूँ।

चिठ्ठी का अन्तिम पैरा पढ़ते-पढ़ते जगन्नाथ का चेहरा पीला पड़ गया।

'डार्लिंग जगन, हम दोनों ने एक-दूसरे के लिए ल्यूसिड होकर ज़िन्दगी गुज़ारने का निश्चय किया था न? अब मैं जो खबर बताऊँगी, उससे

दुःखी मत होना। तुम्हारे जाने के बाद चन्द्रशेखर मेरे प्रेम के लिए तड़प रहा था। उसकी ईर्ष्या तथा उसकी इनटेनसिटी (आक्रोश) से मुझे ऐसा नया अनुभव हुआ है, जैसा पहले कभी न हुआ था। जाने क्यों, एकदम उसके प्रति आकृष्ट होकर मैंने अपने को उत्सर्ग कर दिया है। मैं जानती हूँ, इससे तुम्हें दुख होगा। तथापि मेरी दुर्बलता से परिचित, तुम अकेले ही मुझे समझ अथवा माफ़ कर सकते हो— इत्यादि।

जगन्नाथ का हाथ पसीज गया था। अन्तिम पैरे को बार-बार पढ़ा। घाव-लगे स्थान पर ही बार-बार घाव करके पीड़ा से मुक्त होने का प्रयत्न किया। उठ कर नीचे उतर आया। नीलकण्ठस्वामी कार पर पोस्टर चिपकाता खड़ा था। कल शाम के अमुक बजे भाषण, अमुक स्थान पर। बैटरी से चालू होने वाली माइक, कार के अन्दर रख कर 'हलो-हलो' कहते हुए रंगराव टेस्ट कर रहा था। सर्वोदय के अनन्तकृष्ण सोशलिस्ट लड़कों के साथ लोहिया और गांधी के सम्बन्ध में चर्चा कर रहे थे। पटवारी शास्त्री ने कचहरी से झाँक कर देखा और तुरन्त बाहर आकर 'दुपहर की बस से कन्नाडा जिले जा रहा हूँ, मजदूरों को ले आने के लिए' कहकर अपनी निष्ठा का प्रदर्शन किया और अन्दर चला गया। नीलकण्ठ स्वामी ने खुशी से कहा—'लोगों का आना शुरू हो गया है। अच्छी अपार्चुनिटी है। सारे स्टेट से, नार्थ इंडिया से भी लोग आते होंगे। कल अच्छा प्रचार करना चाहिए।' भाषण झाड़ने के मौके की ताक में खड़े अनन्तकृष्ण का चेहरा खिल गया।

'माइकसेट अच्छा नहीं है,' रंगराव बुदबुदाया।

'पिछली बार गुरप्पा गौड़ के चुनाव के वास्ते खरीदा गया था इसे,' श्रीपतिराय जी ने कहा।

इन सबसे दूर रहने की इच्छा से जगन्नाथ काजू की पहाड़ी पर चढ़ गया। सहसा, सब-कुछ-भार ढील लगा था। अपने-आप कहने लगा— खैर, और चार दिन हैं, मातंग भगवान के मन्दिर में पाँव रखेंगे। एक पग आगे रख कर सदियों का परिवर्तन करेंगे। उसके लिए डोर बन कर, प्रतीक्षा करते बैठे मुझ पर तुमने कैसा आघात कर दिया, मार्गरेट!

आज तक पता नहीं था कि उसके प्रति कितना प्रेम था ! असहनीय वेदना इस बात की थी कि उसकी देह से परिचित एक नंगी देह इस क्षण किसी दूसरे के बाहुपाश में बँधी है। मुझे उसने जीवन से निकाल फेंका और अब अनिवार्य मात्र हैं; करता है, करूँगा। क्रूरता से देखने वाली आँखों से वर्ज्य होकर मातंगों के साथ चलूँगा। जाने वे कौन हैं ? मैं कौन हूँ ? कौन-सा भगवान हैं ? कोई विश्वास नहीं है। मैंने जिस किसी को छूकर टटोला है उसे कोई दूसरा छूकर टटोलेगा ! मुझे मारकर वह खुशी मनायेगा।

पहाड़ी की चोटी पर खड़े होकर शून्य दृष्टि से मन्दिर के शिखर की ओर देखा। नीलकण्ठस्वामी ऊँची आवाज़ में कल शाम की सभा के लिए लोगों को बुलाने की ध्वनि सुनायी पड़ी—

"जनता से प्रार्थना है—
इस देश के नेताओं में से नामी
अपने सर्वस्व का त्याग करके हरिजन-सेवा के लिए
कटिबद्ध श्री जगन्नाथ राय जी द्वारा उद्घाटित
आन्दोलन का समर्थन करने के लिए
सोशलिस्ट नेता श्री नीलकण्ठस्वामी
सहायक मन्त्री श्री रंगराव,
गांधी जी के खास शिष्यों में से एक
अनन्तकृष्ण......
सुनिये...सुनिये !
कल शाम के पांच बजे
मन्दिर के बाहरी मैदान में
भाषण देने वाले हैं।"

भारतीपुर के मौन को भंग करने वाले ये शब्द जगन्नाथ को असह्य लग रहे थे। अब, यदि वह अपने मन को क़ाबू में न रख पाया तो इतने दिनों के सारे प्रयत्न मिट्टी में मिल जायेंगे। वह कैसा मनुष्य है भला ? हाँ, संकट तो है ही, मगर काम में अपने को डुबो कर भूल जाना ही एक-मेव रास्ता है, याने पत्थर बनना है, अपने वैयक्तिक जीवन से हाथ

धोना है।

किसी के आने की आहट सुनकर जगन्नाथ चौंका। सामने से सुब्राय अडिग खड़े थे।

'तुम्हारा चेहरा देखा। लगा, तुम बहुत दुख में हो। इसीलिए चला आया।'

इतना कहकर अडिग चुप हुए। उनके साथ पहाड़ी उतरते समय उन्होंने उससे पूछा तक नहीं कि तुम क्या सोच रहे हो? कहाँ चुप्पी अच्छी है, कहाँ बतियाना अच्छा है—इसके मर्म को जानने वाले उनके उदार दिल के प्रति जगन्नाथ ने आभार महसूस किया।

दोपहर के भोजन के लिए चूँकि अडिग जी भी थे, मौसी ने जलेबी बनायी थी। नरसिंह शालिग्राम को पवित्र करके अडिग द्वारा पूजे जाने की बात से शायद मौसी को खुशी हुई थी। इतना ही नहीं, मैसूर से गोपाल भी आया था। कॉलिज में स्ट्राइक है। ओक्कलिग लड़कों और लिंगायत लड़कों के बीच संघर्ष जारी है। प्रिंसिपल को ओक्कलिगों का पक्ष लेते देख कर अन्य जाति के विद्यार्थियों से उनके इस्तीफे के लिए मजबूर किया जा रहा है। 'हरामजादे' कहकर गोपाल ने सबकी निन्दा की। यह खबर सुनकर नीलकण्ठस्वामी और रंगराव मैसूर में अपनी अनुपस्थिति पाकर दुखी होने लगे। अपने को गैर-जातिवादी सिद्ध करने के इरादे से तत्सम्बन्धी लोगों में से एक लिंगायत को गालियाँ दीं। दूसरे की प्रशंसा की। ऐसे ही रंगराव ने भी ओक्कलिग प्रिंसिपल को गालियाँ सुना दीं; तथा ओक्कलिग रजिस्ट्रार की प्रशंसा की। इन दोनों के बीच के शीत-युद्ध की ओर गौर किया। अडिग जी ने अन्दर बैठकर खाना खाया। अनन्तकृष्ण ने बड़ी खुशी से रसोई की तारीफ की। आज शाम को मार्गों में बोलने के लिए जब जगन्नाथ ने कहा तो अनन्तकृष्ण ने मान कर कहा—'आपके बारे में विनोबा जी को लिखा है। उनसे आशीर्वाद आ जाये तो हमारे आन्दोलन के लिए बड़ा बल मिलेगा।' [illegible] को यह बातें पसन्द नहीं थीं। खाना खाकर कमरे में जाकर सो

नीलकण्ठस्वामी खाने के तुरन्त बाद फिर प्रचार कर

कार लेकर गया था। अपनी खुद की तथा अनन्तकृष्ण की तारीफ़ करते हुए नारे लगा-लगाकर वह जो कुछ कह रहा था उससे जगन्नाथ को उबकाई आ गयी।

दिन ढलते ही पुराणिक के घर गया। सुनसान गलियों की खोज करके चोर की तरह चल निकला। माइक से निकल रहे नारों को सुन कर कहीं लोग अपने को देख न लें, जगन्नाथ को शर्म लग रही थी। पगडंडियों से तीव्र गति से चल कर पुराणिक जी के घर गया। घंटी बजायी। यथाक्रम गोरखा आया। चिट पर नाम लिखवा अन्दर ले गया। पुराणिक नीचे आकर मिले। टाई से विभूषित कमीज़ की कालर फटी थी।...मगर इस्त्री के कारण सूट उनके शरीर पर ठीक-ठाक से जमा था। उन्हें थोड़ी भी तोंद न निकले, देख कर जगन्नाथ को आश्चर्य हुआ। 'मैं बड़ा अकेला महसूस कर रहा था। अवधानी बहुत बीमार है। आने के लिए धन्यवाद।' कहते हुए ज़ीने पर ले गये। जगन्नाथ के मना करने पर भी दो गिलासों में व्हिस्की डालकर सोडा मिला दिया। 'आपकी कल्पित क्रान्ति की सफलता के लिए!' कह कर गिलास से गिलास टकराया।

जगन्नाथ ने व्हिस्की की चुस्की लेते हुए सब-कुछ भूल जाने का प्रयत्न किया। परन्तु पुराणिक जी दुमंज़िले कमरे के अन्दर भी नीलकण्ठस्वामी का गर्जन क्षीण स्वर में सुनायी पड़ रहा था। पुराणिक जी जब फिर गिलास भरने आये तो जगन्नाथ ने मना नहीं किया। पाँव फैलाये आराम बैठ कर आँखें मूंद लीं। मार्गरेट की चिट्ठी के अन्तिम पैरे के शब्दों को बार-बार मन में स्मरण कर रहा था। पुराणिक जी ने रेडियो ऑन किया। कहीं से पियानो के संगीत की लहरें आ रही थीं। पुराणिक का दिया सिगार जगन्नाथ ने सुलगाया। पुराणिक जी बातें शुरू कीं। उन्होंने भूतराय से सम्बन्धित एक विचित्र लोकगीत की चर्चा की और उससे सम्बन्धित दो कहानियाँ सुनायीं तथा जगन्नाथ को कुछ साहित्य पढ़ने के लिए दिया।

पुराणिक जी से कागज़ों की पोटली लेकर जगन्नाथ निकला। जब घर आया तब नीलकण्ठस्वामी, रंगराव और उनके अनुयायी आँगन में बैठ

कर बतिया रहे थे। आँगन के उस पार अनन्तकृष्ण जी मातंग युवकों के सामने भाषण दे रहे थे। नीलकण्ठस्वामी को देखते ही जगन्नाथ का पारा चढ़ गया।

'जी, मिस्टर नीलकण्ठस्वामी, मेरी प्रशंसा करके मेरे ही गाँव में आपने जो प्रचार किया, वह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं आया। बड़ी भद्दी बात थी। अपनी राजनीति को यहाँ मत ठूँसिये।'

इतना कह चुकने के बाद अपनी बात अप्रत्याशित रूप से क्रूर महसूस हुई। मगर उसका चेहरा आग-बबूला होकर सारा शरीर काँप रहा था। बेशर्मी से नीलकण्ठस्वामी ने कहा—'राजनीति आपके लिए नयी है मर, इसलिए ही आप ऐसी बातें कह रहे हैं। ग्लौस पहने हाथों से क्रान्ति नहीं की जा सकती। हाथ मैले कर लेने के लिए कभी घिनाना नहीं चाहिए।'

"अपनी राजनीति के लिए इस सिचुएशन को कृपया एक्सप्लाइट मत कीजियेगा।"

ऐसा लगा, नीलकण्ठस्वामी ने उसकी चिढ़ की परवाह तक न की हो। तथापि अपने को कुपित हुए देख कर जगन्नाथ को तसल्ली हुई। ऐसे कूटनीतिज्ञों की कठपुतली न बनने का निश्चय करके सीधे कमरे में आया। सोचा कि क्या मेरी चिढ़ के लिए अकेला नीलकण्ठस्वामी ही कारण है? जगन्नाथ का शरीर गरम हुआ था, लेट कर उसने आँखें मूँद लीं।

22

त्रयोदशी थी। सवेरे जल्दी उठ कर मुँह धोकर जगन्नाथ स्वेटर पहन कर बाहर आया। मार्गरेट का दिया स्वेटर। याद कर फिर पीड़ा होने लगी। ठण्ड थी। तेज़ी से पहाड़ी चढ़ने लगा। भारतीपुर वाली घाटी में सूर्य की किरणों से धीरे-धीरे पिघलता हुआ रेशमी कपास जैसा हलका-सा कुहरा, इसी सवेरे की वेला में माँ का हाथ थाम कर वह जाता।

सवेरे भगवान को जगाने के लिए प्रभाती गाते हैं। मैं

गाँव के जागने की प्रतीक्षा में मैं हूँ। आज मातंगों की झोंपड़ियों में जाऊँगा। जो होगा देखा जायेगा।

घर आकर सभी के साथ बैठ कर उप्पुमा खाये, कॉफ़ी पी। भोजन-शाला में बड़ी धूम थी। शाम के कार्यक्रम का प्रचार करने फिर नीलकण्ठ-स्वामी, रंगराव और उनके साथी चले गये। सवेरे से मौसी दिखायी नहीं पड़ी थीं। क्या कर रही होंगी, देखने के लिए रसोई में गया। भाग्यम्मा सब्ज़ी काट रही रहीं थीं। मौसी लगन से मिट्टी का चूल्हा बना रही थीं। उनके तराशे चूल्हे के अच्छे जलने की ख्याति थी। मौसी या भाग्यम्मा ने उसे देखा नहीं। मौसी की तन्मयता देख कर आश्चर्य हुआ। आये हुए मेहमानों को अपनी वेदना को पीकर खाना पका कर देने वाली मौसी के प्रति कृतज्ञ होकर चुपचाप अपने कमरे में आकर मार्गरेट को पत्र लिखने बैठा।

'डीयर मार्गरेट' से प्रारम्भ कर एक गम्भीर वज़नदार पत्र झूठा लगा। टेबुल पर रखी उसका फोटो देखकर, उसे खोने का दुःख हुआ। गालों पर लटकते हुए बाल; कोई शरारत-भरी बात करने के लिए झुकी है। आँखें हँस रही हैं। उसके पीठ पीछे अपने फ़्लैट के, पिछवाड़े वाला सेव का पेड़ है। उसका खींचा फोटो। उसी पेड़ के नीचे सोकर मार्गरेट ने उसका तिरस्कार किया था। फिर त्याग दिया।

'डार्लिंग' से शुरुआत कर दूसरा पत्र लिखा—उदात्त होकर उसे माफ़ करने का प्यार भरकर। पर यह पत्र भी उसकी आज़ादी को छीन-कर उसमें दोष-भावना को अंकुरित कराने का सूक्ष्म उपाय लगा।

फाड़कर फिर से लिखा, 'डीयरेस्ट मार्गरेट, जहाँ मेरी उदात्तता हार गयी, वहाँ उसकी ईर्ष्या, वंचना की जीत हुई है। मेरी उदात्तता को फिर तुमने बाज़ी पर लगाया है। मैं अपनी हार को समझता हूँ।' मैं समझने की चेष्टा कर रहा हूँ कि मेरे व्यक्तित्व को ठीक-ठीक पहचानते हुए भी मुझे छोड़कर तुम्हें उसकी चाह क्यों हुई? क्या, दिखाने की आवश्यकता नहीं, तुम्हें मेरी सच्ची तलब् की घड़ी आयेगी। उसके लिए ठोस बनकर, प्रतीक्षा करता रहूँगा—जगन्।'

लिखा हुआ पत्र फिर से पढ़ा। पत्र में कहीं चन्द्रशेखर के नाम का

उसने क्यों उल्लेख नहीं किया ? नाम लेने से कसक होने के कारण 'उसकी' कहकर लिखा। मार्गरेट के चाहने को अनामधेय के रूप में देखना भोंडा लगेगा। फिर एक बार पत्र को यहाँ-वहाँ सुधार कर लिखा; मार्गरेट के प्यारे नाम 'चन्दर' का ही प्रयोग किया। ऐसा लिखते समय उन दोनों के एक होने की कल्पना कर मसोस गया। फिर एक बार पढ़ा। पर इस परिवर्तन से पत्र में चन्द्रशेखर के प्रति अपनी ईर्ष्या न होने की झूठी उदारता झाँक रही थी।

कागज के कोने में लिखा कि आज मैं मातंगों की झोंपड़ियों को जाने का साहस कर रहा हूँ। फिर खुद जाकर पत्र को डाक में डाल आया। मन हलका हुआ।

दोपहर के भोजन के समय बताया, 'आज [redacted] भाषण नहीं करूँगा। आप ही प्रोग्राम चला लीजिए।' नीलकण्ठस्वामी को सदमा पहुँचा होगा।

'छिः, आपको ऐसे पीछे नहीं हटना चाहिए।' नीलकण्ठ ने कहा।

'पीछे हटने की बात नहीं। दूसरा प्रोग्राम है।'

इस पर अनन्तकृष्ण ने कहा, 'हरिजनों के प्रति सवर्णियों के प्यार का व्यवहार पाना चाहिए। गांधी जी का भी यही आदेश है। आपके बोलने पर लोग आकर्षित हो सकेंगे।' जगन्नाथ ने कहा, 'मेरा उद्देश्य वह नहीं। मातंगों को विद्रोही बनाना ही प्रमुख है। मातंगों को पहले आदमी बनाना है। इसलिए लेक्चर झाड़ना बेकार समझता हूँ।' रायसाहब ने चर्चा में भाग नहीं लिया।

'आपका भाषण हो तो लोग आयेंगे।' रंगराव ने कहा।

फिर सभी प्रचार के लिए चले गये। कमरे में जाकर जगन्नाथ नेनोट-बुक में लिखा- मौसी जैसे व्यक्तियों को मातंगों की पहचान है। कौन कामचोर है, कौन पेट से है, किसको किसने रख लिया है, उसके कितने बच्चे कितने मरे हैं ? पर मैं किसी दूसरे ही नाते से उनको और गहराई से पहचानने निकला हूँ। उसके लिए मंजुनाथ, मेरी पूर्व-स्मृति, भीतर गूँजने वाली मन्दिर की घंटियाँ, लोगों का आदर—सभी का ध्वंस कर दूँगा। इन क्षुद्र जीवों की आजादी को बढ़ाने में ही मेरी आजादी बढ़ेगी। नयी वास्तविकता में मार्गरेट को फिर से पा लूँगा।

रायसाहब तेज़ी से आये। जगन्नाथ ने प्रश्नार्थक दृष्टि से उन्हें देखा। 'मज़दूरों को काम से किसने छुड़ाया, तुम्हें मालूम है?' कहते हुए बैठकर पान खाते हुए प्रभु की सारी मसलहत का बयान करने लगे। 'तुम्हें उससे खतरा है।' चेतावनी देकर अनन्तकृष्ण के साथ चले गये।

जगन्नाथ शाम की प्रतीक्षा करने लगा। वह जानता था कि कोई भी मातंग भाषण में नहीं गया है। मुँह धो, साफ़ कपड़े पहनकर, मातंगों की झोंपड़ियों की ओर चला। बचपन में माँ की बात याद आयी। अपनी झोंपड़ियों में यदि ब्राह्मण आये तो मातंग मारकर भगा देंगे। उन्हें पाप लगने का डर रहता है। जगन्नाथ दहल गया।

पहाड़ी पर फूस बिछी झोंपड़ियों को देखते चला। भीतर जाने पर मातंगों में होनेवाली घबराहट का अनुमान कर उसे पसीना छूटा। लगा कि हर बात का सामना किये बिना चारा नहीं। सीधा चला। कोई दिखायी नहीं पड़ा। पिछवाड़े में कोई मातंगी तीन पत्थरों को जोड़कर उस पर बड़ी हाँडी रखकर कुछ पका रही थी। शायद रात के नहाने के लिए पानी होगा। शाम की ठण्ड में भी बिलकुल नंग-धड़ंग कुछ नेटले बच्चे ज़मीन पर खेल रहे थे।

'पिल्ल ?'

आवाज़ लगाते हुए जगन्नाथ एक झोंपड़ी के सामने रुक गया। पता नहीं, किसकी झोंपड़ी थी ? 'पिल्ल', फिर से पुकारकर पीछे मुड़कर देखा। न जाने कहाँ-कहाँ से मातंग प्रत्यक्ष होकर खड़े थे —सिर के बाल बिखराये, सिर्फ़ लँगोटी बाँधे, नंगे बदन। निश्चेष्ट। तराश कर पत्थर की मूर्तियों की भाँति। कुछ मुसकराने की चेष्टा करते हुए जगन्नाथ ने पूछा—पिल्ल है?' जवाब नहीं। डर लगा।

'कुछ काम था। कहाँ है ?'

उसकी बात से मातंगों में घबराहट बढ़ गयी होगी। कोई हिला तक नहीं। बच्चे घूमते ही रहे। सूरज डूब रहा था। सारा माहौल स्तब्ध होकर कृत्रिम बना था। कोई इधर, कोई उधर खड़े मातंगों का अपने को घूरते रहना जगन्नाथ को बोझिल लगा। अधिकार से पूछा—

'मुझे घूर-घूरकर क्यों देख रहे हो ? बताओ पिल्ल कहाँ है ?'

शायद तभी पिल्ल आया होगा। सफ़ेद कपड़े पहन कर हड़बड़ी में लँगड़ाता हुआ पास आया। उसके चेहरे पर भी घबराहट थी। फिर भी कहा—

'आइये, मालिक। बैठिये।'

पिल्ल अपनी झोपड़ी की ओर चला। आशा से अधिक सन्निवेश के परिवर्तन को देख कर, जगन्नाथ भीतर गया। छत मे टँगी कुछ टोकरियाँ और दो-एक कमोरियों को छोड़कर पिल्ल की झोपड़ी में कुछ नहीं था। पर चमरखी-सी लिपी हुई मिट्टी की ज़मीन साफ़-सुथरी थी। जगन्नाथ को बैठने के लिए क्या दे, इस दुविधा में फँसे पिल्ल से 'कुछ नहीं चाहिए' कहकर जगन्नाथ ज़मीन पर बैठ गया।

दूर में खड़े सभी मातंगो ने पिल्ल की झोपड़ी को घेर लिया। उन सबमें एक बुज़ुर्ग मातंग ने भीतर आकर घबराहट-भरी काँपती आवाज़ में कहा, 'मालिक को इस तरह हमारी झोपड़ी में नही आना चाहिए।' जगन्नाथ ने पिल्ल को देखते हुए, 'तुम्ही उन्हें समझाओ'—कहा। पिल्ल ने प्रयत्न किया—'मालिक कहते हैं कि मातंगो को छुआ जा सकता है...' इत्यादि। पर वह बात किसी की खोपड़ी में उतरती नही दीखी।

'बाकी लड़के कहाँ हैं?' जगन्नाथ ने पूछा।

'अब आयेंगे, मालिक।' पिल्ल को सहजता से बातें करते देख जगन्नाथ को खुशी हुई।

'कोई डरना नही, पिल्ल। मेरे साथ तुम सीधे चले आना। लड़ने पर उतर जाना। बताना कि तुम सूअर नही, इन्सान हो। समझे?'

और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, पर सब-कुछ निगल गया और उठ कर सभी के सामने पिल्ल के कन्धे पर हाथ रख कर पूछा—

'तुम्हारा बाप कहाँ है?'

पिल्ल ने दूर खड़े बाप को बताया।

'अगले महीने में तुम्हारे बेटे की शादी करायेंगे, मियाँ।' जगन्नाथ ने हँसते हुए कहा। सारे मातंगो को मानो साँप सूँघ गया था।

'मेरे आने की बात दूसरे लड़को से भी कहना।' —पिल्ल से कह कर जगन्नाथ चला। घर तक छोड़ने के लिए लँगड़ाता हुआ पिल्ल भी

साथ चल पड़ा।

घर आने पर जगन्नाथ खुश था। परिवर्तन से घबराहट होना सहज है—मातंगों को और उसे भी। बाद में अपने-आप वातावरण ढीला पड़ने लगता है।

भाषण खत्म करके निहाल होकर अनन्तकृष्ण, रंगराव, नीलकण्ठ स्वामी आये थे। अपनी बातों की चर्चा कर रहे थे। रायसाहब ने अनन्त-कृष्ण से कहा, "बहुत अच्छा रहा, पर सर्वोदय वालों की सफ़ाई की दलीलों की राजनीति मैं नहीं मानता।' नीलकण्ठस्वामी ने समर्थन करते हुए समालोचना की। जगन्नाथ ने भी चर्चा में भाग लिया। 'जाति वाद का प्रश्न आया ?' जगन्नाथ ने कहा—

'मान लेंगे कि लिंगायतों को जातिवादी बनने का पचास प्रतिशत अधिकार है, क्योंकि अभी उनकी जाति में पिछड़े हुए हैं। ओक्कलिगों को सत्तर प्रतिशत जातिवादी बनने का अधिकार कहा जा सकेगा। पर ब्राह्मणों को शत-प्रतिशत जातिवादी बनने का अधिकार नहीं। इसी भाँति शत-प्रतिशत बनने का यदि अधिकार है तो वह मातंगों को। पर ग़नीमत है कि उनमें वह प्रज्ञा नहीं। नौकरी के लिए छीना-झपटी करने वाले ब्राह्मण, लिंगायत, गौडा ही जातिवादी बनते हैं।'

नीलकण्ठस्वामी ने जगन्नाथ का समर्थन किया। रंगराव ने दलील दी कि जाति-प्रज्ञा से वर्ण-प्रज्ञा ही उत्तम है। अनन्तकृष्ण ने कहा कि प्रेम के बिना कुछ सम्भव नहीं।

भोजन के बाद सभी सोने चले गये। जगन्नाथ आँगन में टहलने लगा। आकाश में महर्षि वशिष्ठ, बग़ल में मातंग अरुंधती। हँसी आयी। अमावस से पहले रात में नक्षत्र सुई की नोक बनकर चमक रहे थे। जगन्नाथ का मन उमंग से खिल उठा था। भीतर जाकर मौसी के कमरे का दरवाज़ा खोला। सिर्फ़ एक साड़ी ओढ़े, दीया बुझाये बिना मौसी सोयी थीं।

'ओढ़कर सोइये, मौसी। ठण्ड नहीं लगती ?' कहते हुए बेंच पर रखे कम्बल को खोलकर ओढ़ाने लगा। 'हाय, किसलिए ?' कहती हुई

मौसी की बातें सुनकर हँसते हुए जगन्नाथ ने उन्हें जबरदस्ती कम्बल ओढ़ाया। लालटेन की बत्ती धीमी की। मौसी खुश हुई। घर रहती या शादी लायक एक बहन होती तो शायद उसमें यह आन्दोलन सम्भव नहीं होता।

या यह मध्य वर्ग का होना ?

कमरे में आकर कन्दील बुझाकर सो गया। बदन गरम रहने के कारण शाल के ऊपर कम्बल की जरूरत नहीं जान पड़ी। सालों पहले माँ का लाकर दिया शाल था वह। कत्थई रंग का मुलायम शाल! बीस साल से ओढ़ा हुआ। ओढ़-ओढ़कर घिस गया है। जहाँ कहीं फटा था उसने खुद सीकर मरम्मत की है। मार्गरेट ने मजाक उड़ाकर दो पैबन्द लगाये थे। पिता के मरने के बाद माँ दस साल के लिए तीर्थ-यात्रा पर गयी थीं। काशी से यह शाल खरीद लायीं। जगन्नाथ उसे ओढ़ कर, टाँगें मोड़कर जाँघों की सांदों में हाथ दबाकर बचपन में जैसे सोता था अब भी उसी तरह सोता है। बड़ी गहरी और प्यारी नींद लेने के लिए ऐसे सोया जाता है। 'गर्भ का बच्चा' कह कर मार्गरेट ने हँसी उड़ायी थी। उसके मुड़े हुए घुटनों को पाँव से दबाकर हटाती थी। 'ऐसे तुम सोओगे तो दोनों के लिए जगह नहीं होगी,' कहकर खींच कर सीधा सुला देती थी।

नींद की चेष्टा में अचानक पीड़ा हुई। फिर [illegible] नहीं। अचानक गहरी नींद में चिल्लाहट सुनकर उठा और सीधे [illegible] भागा। आँगन में उससे पहले ही बाड़ी वाले सब खड़े हैं।

23

पहाड़ी पर आग जल रही है। [illegible]
जितने भी वीर थे, नौकर सभी जलाकर [illegible]

यह नींद है या सपना—जगन्नाथ [illegible]

छूने का नतीजा।' मौसी को माडिग से [illegible]

रंगराव ने परिस्थिति को क़ाबू में लाने का प्रयत्न किया। भीतर से एक हाँडी-भर शहद लाकर रंगराव ने जले पर लगाया। बूढ़े मातंग रो रहे थे। नीलकण्ठस्वामी मातंगों को डाँटता, समझाता, हौसला बँधाता घूम रहा था। डॉक्टर को बुलाने एक सोशलिस्ट लड़के के साथ अनन्तकृष्ण गये थे। जगन्नाथ ने पिल्ल को खोजकर पूछा, 'क्या हुआ ?'

सभी के सोते समय झोंपड़ियों में आग लगी। चीख मारकर पिल्ल बाहर भाग आया। सभी को जगाकर बाहर ले आया। आग से बाहर निकलते समय कुछ लोगों को जलने से घाव थे।

याचना-भरी नज़र से अपनी ओर टकटकी लगाये मातंगों से क्या कहे, कुछ न समझकर जगन्नाथ ने नीलकण्ठस्वामी को एक कोने में ले जाकर पूछा, "कोई मरा तो नहीं ?"

"लगता है, एक लड़का मर गया है। डॉक्टर के आने तक चुप रह जाइये।"

नीलकण्ठस्वामी ने सिगरेट जलायी। 'इस प्रकार वायलेंस होने का अनुमान मुझे पहले से ही था।'—कहकर मातंगों को सांत्वना देने के लिए चला गया। जगन्नाथ ने भी उसके साथ जाकर घावों पर शहद लगाने में मदद की। मंड्या में एक मातंग की उँगलियाँ काटे जाने की घटना का एक सोशलिस्ट लड़का वर्णन कर रहा था। एक मातंगी दहाड़े मारकर रो रही थी कि अब सोयें कहाँ, रहें कहाँ, अपनी क्या गत होगी ? जगन्नाथ ने उसे धीरज बँधाने का प्रयत्न किया, फिर हार-कर डाँट पिलायी।

तत्काल क्या करना होगा ? अभी अँधेरा है, दिन निकलने में देर है। मातंगों को सोने के लिए एक आसरा चाहिए। आकाश के नीचे ठण्ड में नहीं सो सकेंगे। दूसरे मातंग इन्हें पास आने नहीं देंगे। नीलकण्ठ-स्वामी को बताया कि सुपारी छीलने के लिए, उपयोग में लाये जानेवाले अपने घर के बग़लवाले लम्बे दालान में सभी को ले जाये।

पर भीतर आने में मातंग हिचकिचाने लगे। डाँट दिखाकर उन्हें भीतर भेजना पड़ा।

लड़के की लाश सामने रखकर उसके माँ-बाप जैसे के तैसे बैठे ही

ये। उठने के लिए कहा तो उठे नहीं। [illegible] को बता- 'डाक्टर आकर उसे दवा देंगे, तुम लोग अंदर जाओ।' उन्हें [illegible] नहीं दिया। मरे हुए लड़के के सारे बदन पर फफोले पड़े थे। चेहरा जल कर विकृत हुआ था। फिर भी [illegible] लड़के के उस क़दर जलने का कारण मार्तंड ने बताया।

जब आग लगी तब लड़का छत पर [illegible] था [illegible] का शौक था, लालची लड़का। हमेशा इसी तरह बैठे हुए [illegible] आदत थी। दलिद्दर मना करने पर भी नहीं [illegible] आग की लू चेहरे को झुलस गयी। [illegible] उसे पता चला कि झोंपड़ी में आग लगी है।

लड़के के मर जाने की बात [illegible] कहने लगा—"देखिये, तुम्हारा लड़का...।"

जगन्नाथ को अकेला खड़ा देख कर पिल्ल उसके पास आया। अडिग भी आये, चुप खड़े रहे। उनका मौन असहनीय था।

'शालिग्राम छूने के कारण ऐसा हुआ, इसमें विश्वास रखते हो न ?'

जगन्नाथ ने तीखी आवाज में पूछा।

अडिग ने कुछ नहीं कहा।

'बताइये, चुप क्यों खड़े हैं ?'

'गुस्सा करने का यह समय नहीं, जग्गू भैया।'

जगन्नाथ कड़ाई से बोला—

'मेरे प्रश्न का जवाब दीजिये, अडिग जी। आप जैसों की अकल कैसे काम करती है, यही मुझे आश्चर्य होता है।'

'शालिग्राम छूने से उस लड़के को मरना पड़ा, यह बात परोक्ष रूप से सच है। इस चक्र को चलाने के लिए, यदि तुम हाथ नहीं लगाते तो हर चीज़ अपनी जगह जैसी की तैसी ही रहती है—है न ?'

सुराय अडिग की ठण्डी बातों का लहजा देखकर जगन्नाथ के सारे बदन में आग लग गयी।

'अद्वैत की बातें करते तुम्हें शर्म नहीं आती ?'

'केला खाते हुए एक लड़के की मौत हुई, देखकर तुम्हें दुख होना चाहिए, गुस्सा नहीं।'

'यदि ब्राह्मण का लड़का मरता तो ?'

'बहस मत करो, जग्गू भैया। पहले तुम्हारी जिम्मेदारी क्या है, यह सोचो।'

'आपके अनुभव, आपके शंकराचार्य सभी इस व्यवस्था की हिमायत करनेवाले हैं।'

'अपने गुस्से से, तुम कमजोर पड़ते जा रहे हो।'

अँधेरे में जलते गैस की आवाज़ और नातंगों का रुदन मिलकर, पहाड़ी पर का मकान श्मशान जैसा लग रहा था।

'जो तुम्हें देखना चाहिए वह तुम देख नहीं रहे हो, जग्गू भैया। तुम्हारा मन क्षुब्ध हुआ है।'

जगन्नाथ ने कुछ नहीं कहा। पिल्ल अब क्या सोच रहा होगा, उसे समझने के लिए उसका चेहरा देखा। अडिग ने शान्ति के साथ बात आगे बढ़ायी—

'दक्षिणेश्वर में एक साधु कहा करते थे। देह पर झपट आये व्यक्ति पर तुम भी झपट पड़ोगे तो, बताओ भला क्या होगा? हड्डियाँ टूट जायेंगी। उसके बजाय हटकर खड़े हो जाओ, सो वह पारो खाने चित्त हो जायेगा। तुम बच जाओगे। यही चाल का गुर है। मातंग अपनी हालत के आदी बन गये थे। पीते-नाचते मस्त थे। मैं तुझे नहीं छुऊँगा, कहने पर उन्होंने मैं भी तुझे नहीं छुऊँगा, कहा। यों ही सहते आये। वैसे सब-कुछ लीला ही लगता है—यह आग, यह हिंसा, इस चक्र के सचालन में हाथ लगाये हुए तुम—सभी।'

न जाने कितनी सदियों की साध अडिग के विचार-क्रम में समायी थी। जगन्नाथ ने झल्लाकर कहा—

'क्या आपको गुस्सा ही नहीं आता, अडिग जी? मातंगों के [illegible] में आग लगवाने वाला आदमी क्या आपको जलील नहीं लगता? प्रभु ने किया होगा यह काम। या शेट्टी ने। फिर भी आपको गुस्सा क्यों नहीं आता, यह बताइये? आपको क्यों नहीं लगता कि इस जाति-व्यवस्था ने आपकी मानवता को कुंठित किया है? जानवरों की भाँति, आपसे लात खाते रहने में ही मातंग आपके प्यारे बने रहेंगे। इस पर आपको शर्म क्यों नहीं आती? आपके शंकराचार्य, मध्वाचार्य, आपके परमहंस, आपके रमण महर्षि—सभी आप ही की भाँति छिन्न हुए हैं।'

'मेरी हस्ती ही क्या है, छोड़ो।' अडिग ने बिना गुस्सा किए कहा—'बस पेट पालने के लिए भेस बनाया है। गुस्से में तनना और पीटने वाले मुझ जैसे आदमी को कुछ भी कहने का अधिकार नहीं। पर तुम्हारा जो यह गुस्सा है वह कपूर में लगी आग की भाँति है या गीली लकड़ी में लगी आग की भाँति सुलग रही है? इसका मुझे अनुमान हो रहा है।'

जगन्नाथ एक पल भौंचक हो गया।

मुझे अन्तर्मुखी बनाकर, ऐसे विचार निष्क्रिय बना देंगे, मेरा सोच-

कर, पिल्ल से बात करने के लिए उसकी ओर बढ़ा। सुब्राय अडिग अनन्तकृष्ण के पास गये।

आँगन में बैठे मातंगों का विलाप का ढंग देखकर जगन्नाथ को निराशा हुई। जिस मात्रा में दुःख था, उसी मात्रा में उसकी सहानुभूति पाने की चाल भी थी। लगा कि इन लोगों को मैं सच्चे दिल से प्यार नहीं कर पाऊँगा।

नीलकण्ठस्वामी ने जगन्नाथ को बुलाया। अँधेरे में नीलकण्ठस्वामी ने कहा— 'सर, इसे एक दृश्य बनाना होगा। मैं सीधा शिवमोगा जाकर बेंगलूर को प्रेस टेलिग्राम दूँगा। फ्रण्ट पेज का समाचार होगा। अपने कैमरे से फोटो लूँगा—उस लड़के का नाम चौड बताया गया है। चौड को अपने आन्दोलन का हीरो बनाना चाहिए।'

बिना किसी दुख या शोक के साथ सन्नद्ध नीलकण्ठस्वामी का इस प्रकार का व्यवहार उसे भद्दा लगा। लगा जैसे वे कोई अपराध या षड्यंत्र कर रहे हों। पर उसकी आलोचना को भंग करते हुए, नीलकण्ठस्वामी की फुसफुसाहट तेज़ी से चली—

'हमारे दुश्मनों को आपकी भाँति भले-बुरे का विचार नहीं है, सर। आग लगायेंगे, जान से मार डालेंगे, डरायेंगे। हमारा हाथ बाँधकर बैठे रहना सम्भव नहीं। लोगों के कांशंस को डिस्टर्ब करना होगा। उसके लिए न्यूज़ पेपर, रेडियो सभी का उपयोग करना चाहिए कम।'

''जानता हूँ। पर मरकर विकृत पड़े लड़के की स्थिति ? मेरी ज़िम्मेदारी ? रोने वाले वे निरीह बेचारे ? इन सभी बातों पर आत्मालोचन के लिए मौन की आवश्यकता थी। एकान्त की आवश्यकता थी। पर अब एकान्त सम्भव नहीं। मातंगी की दहाड़ें असह्य हो रही थीं। 'अच्छा' कहा।

नीलकण्ठस्वामी दौड़ कर कैमरा लाया। रंगराव ने सभी गैस लाकर मातंगों के आस-पास रखा। अँधेरी रात में आँगन का एक भाग कृत्रिम प्रकाश से जगमगा उठा। इस प्रकाश में लँगोट पहने नंगे बदन मातंग दीखे थे। काले झंखाड़ की भाँति उनके बाल। नीलकण्ठस्वामी ने

है।'

अडिग ने जवाब नहीं दिया। चुप रहे। अनन्तकृष्ण ने गांधी जी के साधन और साध्य का सिद्धान्त बताया। तब तक सूर्योदय की वेला निकट आते देखकर, अमावस के स्नान के लिए, लोटा लेकर निकलते-निकलते रुककर अडिग ने एक कहानी कही—'ब्राह्मणों की नीति भ्रष्ट होने से ही अपने समाज की यह हालत हुई है; इस सन्दर्भ में एक कहानी कहता हूँ : गुजरात में एक वैरागी ने मुझसे कही थी। किसी ज़माने में एक अग्रहार था। वहाँ बड़े निष्ठवान ब्राह्मण निवास करते थे। हर ब्राह्मण के घर यज्ञ-कुण्ड। हर रोज़ हवन के बाद ही उनका भोजन होता था। एक दिन क्या हुआ! एक बुजुर्ग ब्राह्मण ने अपने बेटे का विवाह किया। बहू छोटी थी, उसी दिन घर आयी थी, रात में पेशाब के लिए हड़बड़ाकर उठी। नया घर, नयी जगह, पिछवाड़े जाने में डर लगा। इसलिए जलते हुए यज्ञ-कुण्ड में पेशाब करके किसी से कहे बिना चुपचाप जाकर सो गयी। सवेरे उठकर ब्राह्मण देखता है तो यज्ञ-कुण्ड में सोने की एक ईंट। उसका मन बड़ा क्षुब्ध हुआ। पवित्र यज्ञ-कुण्ड में सोने की ईंटें? कहीं अशुचि होने के अनुमान से बड़ी पीड़ा हुई। तब डरते-डरते ससुर को दण्डवत् प्रणाम कर बहू ने बताया कि उसने ऐसा किया है। ससुर बड़ा सज्जन था। कोई बात नहीं, कहकर धर्मग्रन्थों को छानने लगा। इस पाप के लिए परिहार मिल गया। उसी तरह यज्ञ-कुण्ड का शुद्धीकरण कर, फिर अपने विधि-नियमों को शुरू किया ही था कि उसे एक विचार आया। यह कुण्ड अपवित्र हो जाने पर उसके लिए परिहार तो है ही। फिर बहू को बुलाकर कहा कि कल भी तुम पेशाब करो।

'पड़ोसी ब्राह्मण को इस बात का पता चल गया। उसने भी अपनी बहू से कह दिया कि शास्त्र-सम्मत परिहार तो है ही—तब तुम भी यज्ञ-कुण्ड में पेशाब करो। इसी तरह घर-घर में बात फैली और सभी ने यह धन्धा शुरू कर दिया।

'पर एक दरिद्र ब्राह्मण इसके लिए तैयार नहीं हुआ। पत्नी के बहुत अनुरोध करने पर भी वह न मानकर अग्रहार ही छोड़कर चला गया।

जैसे ही वह घर खाली कर गया, पड़ोसी ब्राह्मण सोचने लगा—मेरे एक यज्ञ-कुण्ड में सोने की एक ईंट मिलती है तो क्यों न पड़ोसी के यज्ञ-कुण्ड को भी कब्जा कर दो ईंटें प्राप्त करूँ ? परिणामस्वरूप सभी ब्राह्मणों को सभी यज्ञ-कुण्डों पर कब्जा करने की दुराशा उत्पन्न हुई। अन्त में सारा अग्रहार आग में जलकर भस्म हो गया।'

इस प्रसंग से अपनी कहानी का क्या सम्बन्ध हो सकता है, इसकी शंका हुई होगी, अडिग को। सहसा वह 'स्नान कर आऊँ' कह कर चल पड़े।

24

मौसी ने चार हाँडियाँ भरकर काँजी, एक कट्ठा पत्तल, और एक पत्तल पर कैरी का अचार लाकर बाहर रखा। उसे उठाकर मातंगों ने पहाड़ी के एक कोने में बैठकर खा लिया। पिल्ल और उसके साथियों को बुलाकर जगन्नाथ ने कहा—

'देखो, कल हम मन्दिर के भीतर जाने वाले हैं। यह सब हो जाने के कारण तुम लोग डरना नहीं। आज ही तुम्हारे लिए टीन की झोंपड़ियाँ बनवाने की व्यवस्था करूँगा।'

पिल्ल से पूछने की इच्छा हुई कि वह क्या सोच रहा है ? पर सोचने का शब्द ही शायद उसके लिए अजनबी होगा। पिल्ल को छोड़कर दूसरे अभी अपने से खुले नहीं। कौन करियं, कौन माद, कौन यस्या ? और एक लड़का चोड जो पास आया था मर गया।

नाश्ता कर निकला। जाड़ा। सुहावनी धूप। चलते-चलते बदन गर्म हुआ। रास्ते-भर लोग। उनमें नदी से नहाकर लौटते हुए कुछ जाने-पहचाने चेहरे, झोंपड़ियाँ बनवाने की जिम्मेदारी को रायसाहब ने उठायी है। इसलिए कुछ चैन की साँस ली जा सकती है। न जाने देश के किस-किस कोने से मनौती लेकर आये हुए लोगों को देखते इसी प्रकार घूमा जा सकता है। उनके कार्यक्रम से कोई भी आहत दिखायी नहीं पड़ता। सदियों से लोगों ने इसी तरह इसी दिन नहाया है। ...
कहानी सुनी है। जैसे माँ उसे ने बतायी थी—

जमदग्नि बड़े क्रोधी थे। पत्नी में व्यभिचार की बुद्धि को अंकुरित होते देख कर पुत्रों से कहा, अपनी माँ को काट डालो। परशुराम को छोड़कर कोई आगे नहीं बढ़ा। उसने कुल्हाड़ी उठा कर माँ का सिर काट दिया। पिता की आज्ञा का उल्लंघन न करने के लिए वह प्रतिबद्ध था। फिर भी माँ जो ठहरी, सिद्धान्त से बढ़कर प्रेम जो होता है।... प्रसन्न होकर पिता ने वर माँगने के लिए कहा तो, उसने माँ को जीवित कर देने का वर माँगा। माँ जी गयी। पर कुल्हाड़ी में लगा खून किसी भी पानी से धोने पर गया नहीं। आखिर उसने भारतीपुर की इस तुंगा नदी में कुल्हाड़ी डुबोयी। खून ग़ायब हुआ। उस परशुराम ने मंजुनाथ की प्रतिष्ठापना की। पाप धुल जाने की स्मृति में। जिस घाट में उसने कुल्हाड़ी धोयी थी उसी घाट पर अमावस के प्रातकाल में हज़ारों लोग डुबकी लगाते हैं। पाप-मोचन होने के भ्रम में हर्षित होकर घूमने लगते हैं। यह पापनाशिनी, यह कूप, तत्त्व और तत्व से बढ़ कर प्रेम। अपने निश्चय के प्रारम्भिक साफ़, शुभ्र विचारों को जगन्नाथ अपने अन्तर्मन में लौटाने की चेष्टा करता हुआ नदी के किनारे आ खड़ा हुआ।

कितने हज़ार लोग, बूढ़े, बच्चे, बच्चे जन-जन कर पीले पड़े और फीके चेहरे वाली स्त्रियाँ, पानी टपकाने वाले बाल।

इनमें शंका भरनी चाहिए। जाग जायें। भगवान को लात मारकर खड़े हो जायें। भूतनाथ की शक्ति मातंगों में उमड़ पड़े। अपने जीवन के लिए खुद ज़िम्मेदार बनें। उनका केवल एक क़दम भीतर रखना काफ़ी है, जो सदा से बाहर ही रहे हैं। पिल्ल का पहला क़दम, सुषुप्ति में रहने वाले इस प्राचीन क्षेत्र में कुहराम मचा देना। चौड का शव, पिल्ल का खून, आग में जली झोंपड़ियाँ—एक नयी वास्तविकता को कुरेद कर निकालना चाहिए।

खुशी हुई कि किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। जगन्नाथ लौट चला। कल के लिए सजाया हुआ रथ। वही गीली मोटी रस्सियाँ। उसी पेड़ के नीचे बन्दर को नचाते हुए कोई बैठा है। डोम होगा। रास्ते-भर दुकानें। हलुवे की दूकान खोलते हुए वासु ने पूछा जगन्नाथ से — 'क्यों भैया, क्या समाचार हैं?'

25

'मिस्टर जगन्नाथ, मे ग्राइ ग्रास्क यू एनदर क्वेश्चन ? क्या ग्राप एविमस्टेन्सियलिस्ट हैं ? क्योंकि मार्त्र के प्रतिपादित कमिटमेण्ट की तरह ग्रापके विचार लगते हैं।'

बेंगलूर से ग्राये सम्वाददाता पी० ग्रार० टी० ने पूछा। नीलकण्ठ-स्वामी के ट्रंककाल ने काम किया था। उसके साथ ही ग्राये, कहकहे मारकर हँसने वाले एक पुर्तीले ठिगने व्यक्ति ने ग्रलग-ग्रलग ऐंगल में खड़े होकर जगन्नाथ के फोटो खींचे। नोटबुक में जवाब लिखता हुग्रा पी० ग्रार० टी० जगन्नाथ के सामने बैठा था।

नीलकण्ठस्वामी ने बड़ी उत्सुकता से जगन्नाथ के जवाब सुनते हुए, फ़ोटो में खुद भी शामिल होने की वांछा से धीरे-धीरे जगन्नाथ की ग्रोर ग्रपनी कुर्सी खींच ली। बिना किसी उत्साह के जगन्नाथ ने कहा—

'ग्राप जिन शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं, उन शब्दों में ग्रपनी योजना का विवरण देना मैं नहीं चाहता।'

'तब क्या ग्रापको मार्क्सिस्ट कहें ?' मन्त्रियों के मुँह खुलवाने में बड़ा नाम कमाया था पी० ग्रार० टी० ने।

'भारतीय धरातल पर जड़ें जमाकर ग्रभी हमारे कम्युनिस्टों ने सोचा ही नहीं। या तो रूस की ग्रोर, या चीन की ग्रोर ताकते रहते हैं।'

'तब क्या ग्राप लोहिया समाजवादी हैं ?'

'जगन्नाथजी का विचार-क्रम मुझे लोहिया के बिलकुल समीपवर्ती लगता है।'

लोहिया के ग्रनुयायी नीलकण्ठस्वामी का यह कहने में स्वार्थ था। जगन्नाथ ने कहा—'हाँ, सच है कि लोहिया की विचारधारा मुझे बहुत भाती है। पर पार्लियामेंटरी राजकारण में उनकी रुचि न रहने के कारण नीलकण्ठस्वामी की पार्टी में मैं भर्ती नहीं हुग्रा। हर को जो इस ग्रान्दोलन में विश्वास रखता है, उन सभी का सहयोग ... चाहिए।'

पी० आर० टी० ने इतने पर ही नहीं छोड़ा। भीतर से आयी कॉफ़ी पीते हुए 'फोटोग्राफ़र' ने एक एक्सपोर्ट चारमीनार सिगरेट लेकर सुलगायी। जगन्नाथ की ओर सिगरेट बढ़ायी। 'आइ डोंट स्मोक, मच, बट, आल राइट।' कहकर जगन्नाथ ने भी सिगरेट सुलगायी।

'कल रथोत्सव से पहले आपने हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश का कार्यक्रम रखा है। इससे कोई बड़ी क्रान्ति होने का आपने अन्दाज़ा किया है?'

'अन्दाज़ा तो था ही। मगर अब नहीं। किसी भी क्रान्ति से पहले इस मध्य युग के विश्वास को चीरना मेरा उद्देश्य है। यदि वह सफल हुआ तो समझिये कि हमने पहला क़दम रखा है। हो सकता है, डर के कारण मातंग मन्दिर के भीतर न जायें। ठीक है? मेरा उद्देश्य है कि वे अपनी स्वेच्छा से ही विद्रोह करें। कल चाहे हमारी जीत हो, या हार, मैं समझता हूँ कि आन्दोलन शुरू हो चुका है।'

'ठीक है।'

नीलकण्ठस्वामी ने जगन्नाथ की प्रशंसा की।

'एनेदर क्वेश्चन। हम जो मंजुनाथ की हर तसवीर देखते हैं, उसमें दिखायी पड़ने वाले सोने के मुकुट ने, बताया जाता है कि आपकी प्राण-रक्षा की थी। ऐनी कमेंट?' (इस पर आपको कुछ कहना है?)

जगन्नाथ ने कहा—'नो!'

'मातंगों की झोंपड़ियों में आग लगने का कारण, कुछ लोगों का कहना है कि शालिग्राम को छूना ही है। और कुछ लोगों का यह भी कहना है कि आपके एक अनुचर का मतंगों की लड़की को रेप करने का प्रयत्न ही है। आप क्या कहते हैं?'

'अपराधी कौन है, इसका पता लगाना पुलिस का काम है।'

'यह भी अनुमान है कि इस गाँव के किसी व्यापारी का उसमें हाथ है?'

रंगराव ने ज़ोर देकर कहा कि यह बात पी० आर० टी० के ध्यान में पड़े।

सिगरेट को बूट से रगड़कर पी० आर० टी० ने कहा—'कुछ

लोगों ने कहा कि आप एक आदर्शवादी हैं। और कुछ लोगों का अभिप्राय है कि आप इस क्षेत्र से अगली बार चुनाव लड़ने वाले हैं। कहते हैं कि यह सारी उसी की तैयारी है ?'

हँसते हुए जगन्नाथ ने 'ना' कहकर सिर हिलाया।

'आज के मंत्रि-परिषद के बारे में आपका क्या अभिप्राय है ? क्या आप समझते हैं कि ये सोशलिस्ट पैटर्न ऑफ सोसाइटी ला सकेंगे ?'

'नहीं। हमारे राष्ट्रपति ने काशी में ब्राह्मण के चरण धोकर तीर्थपान किया। शृंगेरी स्वामी के चरणों पर माथा टेका। सुना है, वे सकेशियों को तीर्थ नहीं देते। इस मंजुनाथ के वह परम भक्त हैं। मेरा अभिप्राय है कि पहले इस देश में लोगों को भगवान के चंगुल से छुड़ाना होगा।'

'थैंक यू।'

फोटोग्राफ़र के साथ गाँव में घूमने के लिए पी० आर० टी० उठ खड़ा हुआ। दोनों के जेबों में मंजुनाथ के प्रसाद की पुड़िया जगन्नाथ को दीख पड़ी।

'आप यहाँ आने से पहले क्या मन्दिर होकर आये ?' जगन्नाथ ने पूछा।

'येस ए ब्यूटीफुल प्लेस। कैसा ट्रेमण्डस चप्पा है, वहाँ ! सुना कि आपके पुरखों ने लगवाया था।' पी० आर० टी० ने कहा। फोटोग्राफर ने हाथ जोड़कर झुककर प्रणाम किया, बड़े आत्मीय की भाँति मुसकराकर, हड़बड़ी के साथ पी० आर० टी० के पीछे चल दिया।

पी० आर० टी० ने तसवीरों के साथ स्टोरी बनाकर बेंगलूर को रवाना किया। उसकी कहानी में जगन्नाथ की प्राण-रक्षा के सोने के मुकुट को विशेष महत्व दिया गया था। उसके बाद जगन्नाथ की इंग्लैंड की पढ़ाई : वहाँ के जीवन, लम्बे बाल, सादा ड्रेस, लम्बी नाक, ऊँचा क़द; शालिग्राम का स्पर्श, अत्याचार की चेष्टा; सदियों की वास्तविकता को परिवर्तित करने वाले प्रथम पग की अस्तित्ववाद की थियरी, घर से बहिष्कार, भारतीपुर की आर्थिक व्यवस्था ठप्प होने का बनिए प्रभुजी का भय; मंजुनाथ के दूत भूतनाथ की सर्व रोग-परिहारक शक्ति,

बाँझ स्त्रियों को सन्तान देने की शक्ति; क्या जगन्नाथ अगला चुनाव लड़ेंगे ? कुछ किंवदंतियाँ, वर्तमान असेम्बली के सदस्य गुरप्पा पटेल का मौन; झोंपड़ियों में आग, शहीद चौड, उसका अनुयायी पिल्ल; अपनी मर्ज़ी के विरुद्ध भी सभी का आवभगत करनेवाली जगन्नाथ की मौसी; इन सभी बातों के अन्त में यों लिखा था—

'पहाड़ियों के बीच अन्तर्मुखी होकर हज़ारों वर्षों से सोया हुआ सुन्दर गाँव है—भारतीपुर। भारतीय संस्कृति के सत्व को अपने में छिपाये बैठे इस पुरातन शहर की स्थिति प्रक्षुब्ध समझ बैठना ग़लत होगा। यहाँ की गलियों में चलते मंजुनाथ के प्रसादस्वरूप सिन्दूर लगाये हज़ारों चेहरे आते हैं सामने। इनसे पूछकर देखिये कि रथोत्सव के दिन क्या मातंग मन्दिर की देहरी लाँघ सकेंगे ? बेफ़िक्री से मुसकराते हुए वे सिर हिला देंगे। इनका पक्का विश्वास है कि भूतनाथ टाँग पकड़कर घसीटेगा, रक्त की क़ै करके मातंग मर जायेंगे युवक ब्राह्मण संघ के एक युवक ने कहा—यदि जगन्नाथजी सच्चे क्रान्तिकारी हैं तो उन्हें मन्दिर का ही धिक्कार कर देना चाहिए। एक निरीश्वरवादी का मातंगों के लिए भी मन्दिर की चाह रखने का कोई अर्थ नहीं।

'जो भी हो, भारत के राष्ट्रपति की भी भक्ति का पात्र यह मन्दिर, यदि कह दें कि सामान्य विश्वासों पर ही प्रवृद्धमान हुआ है तो कोई ग़लत नहीं होगा। भारत में सभी वर्ग-भेदों को चीरना हो तो वह भगवान और संतों से सम्भव है। मातंगों के लिए भी इस भगवान को प्राप्त कराने का उद्देश्य जगन्नाथ जी का नहीं; फिर भी उनके उद्देश्य से बढ़ कर ऐसी सम्भावना के इस देश में कई दृष्टान्त हैं। शिवमोगा डी० सी० खुद हरिजन हैं। उन्होंने मुझसे यों कहा—गांधीजी की अहिंसा द्वारा ही हमारे समाज में परिवर्तन आना चाहिए। हमारे प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश शान्तिपूर्वक समाजवाद के मार्ग पर क़दम बढ़ाने लगा है। देर-सवेर मंजुनाथ के मन्दिर का द्वार हरिजनों के लिए भी खुल जायेगा। क्या वेदान्त ने उद्घोष नहीं किया : पण्डिता: समदर्शिन: ? मेरे यहाँ तैनात होने पर मन्दिर की कमेटी वालों ने मेरे लिए जो प्रसाद भेजा था उसे मैं कृतज्ञतापूर्वक याद न करूँ तो वह महान अपराध होगा। आक्रोश

गलत है। सारा जनाग शान्ति के साथ मिलकर जियें। हरिजनों को विद्वान बनकर और अपने भीतरी भेदभावों को मिटाकर हमारे प्रधान-मंत्री के नेतृत्व में भव्य समाज का निर्माण करना चाहिए।'

पी० आर० टी० की आखिरी बातें इस प्रकार थीं : 'जब सत्यप्रकाश से उनके निवास पर मिलने गया था तब सुबह थी। उनके माथे पर सिन्दूर का टीका था। यह शायद मंजुनाथजी का प्रसाद होगा।'

26

चूल्हा सूख गया होगा। राख और गोबर से लीपकर उस पर मौसी रँगोली डाल रही थीं।

आँगन के एक किनारे नीलकण्ठस्वामी अपने साथियों से प्लेकार्ड लिखवा रहा था। 'अस्पृश्यता इसी क्षण दूर हो जाये'; 'मैसोसा की जय'; 'इन्कलाब ज़िन्दाबाद'; 'किसानों का शोषक भूतनाथ, भूतनाथ का शोषक मंजुनाथ'—इत्यादि। श्रीपतिराय मातंगों की झोंप-ड़ियाँ बनवाने में लगे थे।

किसी मातंग ने दूर खड़े होकर 'मालिक' कहकर पुकारा। जगन्नाथ की ओर वाला मातंग नहीं था। हाथ जोड़कर याचना करने लगा—'आपके मातंग मन्दिर में जायेंगे' इस पर गुस्सा होकर हमारे मालिक हमें भगा देने की बात कह रहे हैं। मालिक रक्षा करें।' जगन्नाथ कुछ कहने की सोच में था कि श्रीपतिराय ने धोती ऊपर बाँधकर कहा—

'अबे बुड्ढ, चुपके चला जा। तुझे भगा देंगे तो बाल्टी भर-भरकर उनका पाखाना कौन ढोयेगा, बता? वह भी इस मेले के समय। हाँ, कहीं झोंपड़ी में आग न लगा दें। बारी-बारी से पहरे पर तैनात रहना।'

रायसाहब की बात जगन्नाथ को भायी। मातंगों से कहना होगा। तुम्हारी हीनता ही तुम्हारी शक्ति है। इस समाज की तुम्हारी अनि-वार्यता है। कह दो कि मल नहीं ऊठायेंगे। मंजुनाथ को हर दिन घेरे रहने वाली अगरबत्ती-धूप-दशांग की मारी खशबू को गाँव में फैली उसकी नाश करने की शक्ति तुममें है। मातंग मल न उठायेंगे

पर देश-भर में फ़्लश पाखाने बनेंगे। बाल्टी भरकर मल का सिर पर ढोना बन्द हो जायेगा। गांधी और बसवेश्वर के सपने खिल उठेंगे। ये काली मातंगियाँ मल के बदले सिर में मोगरा चमेली पहनकर, गंधधारी ब्राह्मणों के लिए आप्यायन बनेंगी। ब्राह्मण लड़कियाँ काले चौड़े सीने वाले पिल्ल जैसों पर मोहित होंगी। जगन्नाथ दूसरे ही विचार के घोड़े पर सवार हुआ। सुना है, कापालिक और शाक्त, सिद्धि-प्राप्ति के लिए मुर्दे को उखाड़कर खाते हैं। इसके द्वारा अवधूत बनते हैं। अवधूत तो पूरे क्रान्तिकारी ठहरे। कहीं मुझे भी उनकी भाँति विसर्जन का मार्ग न अपनाना पड़े? अडिग के अनुसार सामाजिक व्यक्ति रहकर क्रान्तिकारी बनना सम्भव नहीं।

रंगण्णा डाक देकर गया। स्थानीय डाक का लम्बा लिफ़ाफ़ा खोला। फुलस्केप कागज़ के दोनों ओर भौंडी लिपि में एक पत्र था। ऊपर बायें छोर में 'क्षेम,' बीच में 'श्री मंजुनाथ प्रसन्न' लिखा वह पत्र किसका है? पीछे देखा तो हस्ताक्षर नहीं थे। कौतूहल से पत्र पढ़ना शुरू किया। कारिन्दे कृष्णय्या की भौंडी लिपि पढ़ने का आदी होने के कारण, इसे पढ़ने में दिक्क़त नहीं हुई।

'गाँव के बड़े भारी ज़मींदार, एक समय श्री मन्दिर के महन्त जिसकी प्राणरक्षा के लिए स्वर्ण-मुकुट मंजुनाथ के सिर पर चढ़ा, भारतीपुर की प्रजा को अपने पिता की भाँति पालन करने के उत्तरदायी श्री जगन्नाथ की सेवा में, एक ग़रीब का नम्र निवेदन है कि...'

ऊबकर जगन्नाथ ने कागज़ मोड़ फाड़ना चाहा, पर पुराने ढंग की शैली से आकर्पित होकर आगे पढ़ने लगा —

'जगन्नाथराय जी, यह लिखते हुए इस कंगाल को अत्यन्त खेद हो रहा है कि आप शायद अपने पूज्य पिता की सन्तान नहीं हैं। आपके पूज्य पिता महान् भगवद्भक्त थे। उनसे विवाहित होकर आपकी माताश्री ने उनके साथ किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखा था। आपके पूज्य पिता इसे सहन कर कैसे जिये, हमें पता नहीं। यदि आप अपने पूज्यपिता की सन्तान होते तो अभिजात ब्राह्मण-कुल में पैदा होकर आप हर्गिज़ ऐसे नीच कार्य में हाथ नहीं डालते। पूछोगे कि आप किसके बेटे हैं? आप

अपने घर के भूतपूर्व कारिन्दे कृष्णय्या के बेटे हैं। कृष्णय्या बड़े ही नीच कुल के ब्राह्मण होने पर भी, आपकी माताश्री का उनके साथ लगाव था। 'पाप कहने वाले के मुँह।' लाचार होकर कहना पड़ रहा है। आपके घर में जो गोपाल है, उसका भी कारिन्दे कृष्णय्या से आपकी माताश्री की कोख से जन्म का मैं खुद प्रत्यक्ष साक्षी हूँ। आपके बचपन में आपकी माताश्री, कारिन्दे और उनकी श्रीमती जी के साथ तीर्थ-यात्रा के बहाने गयी थीं। तब किसी कारणवश मैं मद्रास गया था, वहाँ आपकी गर्भवती माताजी को मैंने देखा। वहीं जचगी कराकर नवजात शिशु का गोपाल नामकरण कर, कृष्णय्या की रोगग्रस्त पत्नी के यात्रा के समय इस बच्चे के जन्म देने की घोषणा करते हुए वापिस आये। कारिन्दे की स्त्री ने निम्नस्तान होने के कारण, जबान सी कर गोपाल को अपना बेटा कह कर पाला। आगे दो-एक वर्ष में जब उसकी आँखें बन्द हो गयी, तब तो आपकी माताश्री ने कृष्णय्या के साथ निरान्तक रूप से अपना पाप-भरा जीवन बिताया।

'इस विषय का उल्लेख करने का मेरा अभिप्राय केवल यही है कि पहले आप अपनी गन्दगी को धो लें, फिर गाँव को सुधारने की चेष्टा करें। मेरा आशय आपके पूज्य पिता के पुण्य स्मरण पर कालिख पोतना नहीं है। शास्त्र का कहना है कि गाँव के लिए एक व्यक्ति की बलि दे दो। अतः आपके प्रभाव को घटाने के निमित्त यदि हमें इस बात को जाहिर करना पड़े, तो विश्वास है कि श्री मंजुनाथ स्वामी हमें अवश्य क्षमा करेंगे। अन्त में मैं फिर से एक बार कहते हुए बड़े खेद के साथ पत्र समाप्त करता हूँ कि अभिजात पिता की यदि आप सन्तान होते तो इस प्रकार गाँव को मिट्टी में मिलाने के लिए हर्गिज आगे नहीं बढ़ते।

सदा आपका शुभचिन्तक
भारतीपुर का एक निवासी।'

जगन्नाथ नीचे उतर कर आँगन में गया। उसे पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है। नीलकण्ठस्वामी पोस्टर लिखवाता बैठा था। राय-साहब भाले, लाठी, रस्सी आदि की व्यवस्था कर रहे थे। जगन्नाथ चुप-चाप खड़ा रहा। उसे खड़े देख रंगराव ने कहा—

'क्या है सर ! जी ठीक नहीं ?' कहते हुए पास आकर व्याकुलता से मुंह देखा ।

रायसाहव ने भी घवराकर कहा—'भीतर जाकर सो जाओ !'

'कुछ नहीं', कहते हुए जगन्नाथ ने कमरे में जाकर, विस्तर पर लेट आँखें मूंद लीं । टेवुल पर कागज़ पड़ा था । किसी के पढ़ लेने के डर से उसे फाड़कर टोकरी में फेंक दिया ।

पिल्ल कहाँ है ? कल के वारे में उसे क्या-क्या वताना होगा ? सारे कपड़े जल गये हैं। नये कपड़े लाने होंगे। वताना भूल गया; फिर नीचे उतरकर रायसाहव से मातंगों के लिए कपड़े खरीदने को कहा। सफ़ेद कुर्ता, सफ़ेद धोती । रायसाहव ने कहा, 'तुम्हारी तवीयत ठीक नहीं लगती । कल सारी रात सोये नहीं । कुछ देर सो जाओ ।'

जगन्नाथ चौपाल में जा वैठा । पाँव दुर्वल हुए थे । उसे वैठा देख नीलकण्ठस्वामी भी आ वैठा ।

'रंगराव वाज़ार गया था । देखिये मिस्टर जगन्नाथ, कल होने वाले हरिजन-प्रवेश की वात पर वाज़ार में कोई विश्वास ही नहीं करता । कहते हैं कि भूतनाथ आकर मातंगों को टांगे घसीट कर फेंक देगा ।'—कहकर मुसकराते हुए नीलकण्ठस्वामी ने सिगरेट सुलगायी । जगन्नाथ उससे एक सिगरेट ले सुलगाकर आँखें मूंद वैठ गया । नीलकण्ठस्वामी की वात के जवाव में मुस्कराया । काम का वहाना वना कर उठ खड़ा हुआ । 'तवीयत ठीक नहीं लगती । जागते रहे हैं, सो जाइये'—कह कर नीलकण्ठस्वामी फिर पोस्टर लिखवाने चला गया । जाते हुए कहा—'परिवर्तन ही जीवन का धर्म है—ऐसा एक वड़ा पोस्टर लिखवा रहा हूँ ।'

अच्छा—किसी जहरीले कीड़े के लिखे पत्र से वह कितना वेचैन हो गया है—'धत्' कहकर अपनी मूर्खता की भर्त्सना की । माँझ-घर के आइने के सामने गोपाल कन्घी करता खड़ा था । मुड़कर गोपाल प्यार से मुसकराया । अपने को ही घूरकर देखते हुए जगन्नाथ से पूछा—'क्या झूठ है ? सच या, झुठ वताने वाला कोई नहीं । रायसाहव झूठ कहेंगे; गौसी भी चाहिए था मैया ?, जगन्नाथ चौंक गया । कहीं सच तो नहीं ?

या झूठ है ? सच या झूठ बताने वाला कोई नहीं । रायसाहब झूठ कहेंगे, मौसी भी । झूठ ही कहेगी, पर उनका विश्वास कैसे करे ? इस विष-जन्तु के लिखे पत्र का भी कैसे विश्वास करूँ ? सच-झूठ के इस प्रश्न का कभी कहीं निदान नहीं ।

गोपाल को कोई जवाब न देकर जगन्नाथ सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर गया ।

शंका की गुंजाइश न होती तो इस प्रकार सोचना क्या सम्भव था ? रोज वह माँ के साथ सोया करता था । तब मिडिल स्कूल में पढ़ता था । नींद नहीं आयी थी । माँ ने उठकर पान-सुपारी खायी । पिताजी के मरने के बाद पान नहीं खाना चाहिए । फिर भी माँ खाती थीं । मुँह में पान डालकर, उठ कर चली गयी । मैं जागा ही था । पान खाकर माँ क्यों उठ कर गयी, इसका विचार क्या उसने तब किया था ? याद नहीं आता । जागते रहने की ही बात अभी तक कैसे याद है ? बड़ी देर के बाद फिर आकर बगल में सो गयी । कहाँ गयी थी ? दफ्तर के बगल वाले कृष्णय्या के कमरे में या स्नानघर में ? कृष्णय्या की पत्नी साकम्मा रसोई के बगल वाले कमरे में सोया करती । दूध-मक्खन की देखभाल उन्हीं की थी । कृष्णय्या की सगी बहन की बेटी थी वह । छोटी-छोटी आँखें, तिरछा चेहरा । तब क्या मौसी घर में थी ? हाँ, जीने पर दूसरे कमरे में, जहाँ वह अब सोती हैं । मौसी को भी जब शंका नहीं हो पायी तो पत्र में जो कुछ लिखा है, वह सरासर झूठ है । यदि शंका होती तो वह माँ को इतना आदर न देती । रायसाहब को भी माँ के प्रति कितना गौरव था ! तब तो माँ हमाम में ही गयी थी । पर हमाम में जाते समय माँ हर्गिज पान नहीं खाती थी । माँ जब लौटकर उसके पास आकर सोयी थी, तब क्या उन्हें पसीना आ रहा था ? उनके बाल बिखरे हुए थे ?

जगन्नाथ ने खिड़की से देखा । काम में व्यस्त रायसाहब, नीलकण्ठ-स्वामी, रंगराव, लँग डाला हुआ पिल्ल रायसाहब के पास आया । ना । वास्तव में यह पीड़ा की बात थी; क्योंकि इसके परिहार का कोई उपाय नहीं था ।

माँ कारिन्दे कृष्णय्या के साथ बैठ कर चौसर खेलती थी भी साथ रहती थी । साकम्मा भी रहती थी । जब . . ५ . .

तभी पिता का देहान्त हुआ था। चौसर खेलते समय पिता भी रहते। पिता का खेलना या गाना कुछ याद नहीं। कृष्णय्या कुमारव्यास भारत को वड़ी सुरीली आवाज़ में पढ़कर सुनाते थे। मौसी वताती हैं कि पिता जी को कृष्णय्या पर कितना विश्वास था। जव वह मिडिल स्कूल में था तव कृष्णय्या, साकम्मा और माँ क़रीव आठ-दस महीनों तक सारे भारत की यात्रा कर आयी थी। तव उसके साथ मौसी थीं। जव लौटे थे तव गोपाल नन्हा वच्चा था। साकम्मा उससे दुलार करतीं ; माँ भी। इसलिए सारी वात झूठ है। माँ हिन्दी जानती थीं। काशी से उसके लिए शाल ले आयी थीं। उनके मद्रास में रहने की वात सरासर झूठ है। वहाँ गर्भावस्था में देखने की वात लिखनेवाला जलील कीड़ा होगा।

लम्वी साँस खींचकर जगन्नाथ ने पाँव फैलाये। पिताजी से माँ ही अधिक धनवान थीं। आज की सम्पत्ति में पौन हिस्सा उन्हीं का है। पिता अच्छे कृपक थे। रायसाहव को कहते सुना है कि घुटनों तक धोती वाँधे मजदूरों से काम कराने वाले पिता जी महाजन हैं, या फ़िनले धोती व रेशम का अचकन पहने, तहसील अदालत घूमने वाले कारिन्दे महाजन हैं, यह शंका होती थी।

इंग्लैंड में स्त्री-पुरुप के मुक्त सम्वन्ध देखने पर भी, उसका इस प्रकार शक करना आश्चर्य की वात है। कृष्णय्या के नाम से दूसरों को ईर्ष्या हुई होगी। स्वाभाविक भी है। संशय आना भी कितना स्वाभाविक है।

जगन्नाथ उठकर फिर नीचे आया। नीलकण्ठस्वामी से और एक सिगरेट लेकर जलायी। 'तुमने आन्दोलन को नया आयाम दिया। तुम्हारा वड़ा आभारी हूं।' अँग्रेज़ी में कहा। इससे नीलकण्ठस्वामी को सन्न होते देख खुशी हुई। मातंगों के लिए कपड़े लाने रंगराव के हाथ में पैसे दिये। 'जल्दी आइयेगा।' कह कर सिगरेट का कश खींचते हुए पोस्टरों को देखते हुए आँगन में घूमा।

सहसा पीड़ा फिर लौट आयी। उस रात माँ पान खाकर हमाम में नहीं गयी थीं। मुंह में कुछ रखकर माँ गुसलखाने में कभी नहीं जाती थीं।

यह घटना तीर्थ-यात्रा पर जाने से पहले की है ? या बाद की ? किस रंग की साड़ी पहने थीं ? सारी घटना को याद करते हुए जगन्नाथ एक कटहल के पेड़ के नीचे खड़ा रहा।

माँ उठकर बैठीं। मुझे छूकर देखा। क्यों छुआ था ? क्या यह देखने के लिए कि मैं नींद में हूँ या जाग रहा हूँ ? फिर मुँह में पान डाल लिया। सिरहाने ही थाली थी। नहीं— खाकर आने के बाद, सोने से पहले माँ ने पान खाया था। माँ पान खाने लगती तो उनके मुँह की महक उसे प्यारी लगती थी। इलायची, लौंग चूना, कँवले पान मिलकर मुँह में रंग बनने की महक। नहीं—हमाम में जाकर आने के बाद ही उन्होंने पान खाया था; पहले नहीं। पर माँ कुछ घबराती हुई सोने वालों में नहीं थीं। उसे कभी सोये-सोये खाने नहीं देती थीं। निकर की जेब में चकली भर कर सोये-सोये खाना उसे बहुत भाता था। पर माँ डाँटती रहती थी। कृष्णय्या के सोने वाले कमरे में माँ रोज जाती। मौसी के खनखाने में रोज जाया करती थी... . ।'

स्नान-पूजा से निपटकर मंडिश लौट आये।

'कार्रवाई चल रही है ?'—बड़े उल्लास से पूछ कर शायद उसका मुँह देखकर चुप हो गये। सीधे भीतर चले ग ये। अब शालिग्राम की पूजा करेंगे। उसके सारे प्रयत्न इस तरह, पानी में किये जाने वाले हवन बनते जायेंगे।

रायसाहब से पूछा जाये। कुछ जी हल्का हो जायेगा। इसे सरासर झूठ कह कर वह हँस देंगे। तब उसे बड़ी खुशी होगी। पर रायसाहब के मन में भी इससे शंका का बीज बोया जायेगा। वह इसे झूठ कहेंगे। पर वह भी, उसकी तरह आलोचना करेंगे कि कहीं सच तो नहीं है। वह माँ के प्रति अन्याय होगा।

वह कटहल के पेड़ को शून्य दृष्टि से देखता खड़ा रहा। किसी मजदूर का काम होगा। छुरे से पेड़ को काटी जगह में दूध निकल कर गोंद बना था। बूढ़ा होने पर भी फल देता है। लाल फाँकें। शहद जैसे मीठे। पिता खेती पर जान देते थे। श्री कृष्णराज वोडेयर जब मंजुनाथ के दर्शन के लिए आये थे, तब इस पेड़ के फल की फाँकें

उन्होंने मेडल दिया था। पिता देखने में कैसे थे, कुछ याद ही नहीं आता।

पिता की याद करता है। कौन हैं उसके पिता ? उनके मरने पर माँ रोयी थीं। कृष्णय्या रोये थे। क्यों रोये थे ? नहीं, यह सच है या झूठ; कभी सुलझने वाला नहीं। साकम्मा को माँ ने चन्द्रहार बनवाकर दिया था। आखिरी बस से शिवमोगा से कृष्णय्या के आने की ही प्रतीक्षा में रहती थीं माँ। साकम्मा भी प्रतीक्षा करती थी।

जगन्नाथ के अन्तराल में तीव्र वेदना से सहसा स्फटिक की भाँति स्फुट एक विचार उठा। सीधा कमरे में जाकर नोट-बुक में लिखा—

'मंजुनाथ की महिमा को नष्ट करके जनता में तीव्र यातना उत्पन्न कर, उसके द्वारा उन्हें अपने जीवन को खुद बनाने के लिए निकले, मुझ में भी अपनी माँ के दुराचार की शंका क्यों इतनी वेदना उत्पन्न कर रही है ? इतने सच और झूठ के लिए क्यों छटपटा रहा हूँ ? पिल्ल ने कावेरी की ओर हाथ बढ़ाया, तो मैंने उसे ठीक कहा। शालिग्राम को मातंगों को छुआया। सारे समाज से, अपने घराने को दूर करने का साहस किया। फिर भी कुल, गोत्र, जाति, परिवार की भावनाएँ अभी मुझमें प्रमुख हैं, इसका अर्थ हुआ। वरन् औरस पुत्र न होने की भावना इस प्रकार सालती नहीं।

'गर्भ-मन्दिर में मातंगों का प्रवेश कराकर लोगों को आघात पहुँचाने की इच्छा रखने वाला मैं, क्यों चाहता हूँ कि अपनी माँ के साथ अग्नि-साक्षी करके पाणिग्रहण करने वाला व्यक्ति मात्र ही सम्बन्ध रखे ? माँ के दुराचार की सम्भावना से इतनी पीड़ा होने वाले मुझे, मन्दिर की प्रतिष्ठाको नाश करने का क्या अधिकार है ?

'पर यह भी सच है कि इस तरह स्पष्ट आलोचना करते हुए भी मुझे दुःख हो रहा है ? जो कुछ लगता है उसे आलोचना झुठला देती है। विचारों को रौंदकर भावना उठ खड़ी होती है।'

इतना लिखकर जगन्नाथ खड़ा हो गया। सोचा—वह मातंगी जो आर्त होकर कह रही थी कि चौड के चुराकर खाये केले, मेरे बाग़ के नहीं—उसके साथ मैं प्यार नहीं कर सकता। ये सभी मातंग पढ़-लिख जायें, उनमें कुछ सत्यप्रकाश की भाँति बनें, युवक कसे हुए पैंट पहनें,

बाल्टी में मल ढोने की अनिवार्यता समाप्त हो जाये। मंजुनाथ के बदले एल० एस० डी० आ जाये—यों ही सोचते जायें, तो सभी परिवर्तन अर्थहीन लगते हैं।

सब के साथ खाने बैठा तब भी यही चिन्ता रही। आज तक अमीरी और घराने की धाक रक्षा-कवच बनी थी। इस अवस्था को नाश करने के लिए हाथ बढ़ाया। तब तो इन कानों को किसी भी बात को सुनने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। आखिर अडिग की बात सच लगती है कि अवधूत बने बिना शान्ति असम्भव है।

खाना खाते-खाते रंगराव ने कहा—'ब्राह्मणों को घर पर भोजन के लिए बुलाने पर मेरी माँ नाराज होती हैं, जानते हो ? अपने घर खाना खिलाकर, उन बेचारों को क्यों जाति-भ्रष्ट करें ?'

रसोई में खाने बैठे अडिग ने कहा—

"ब्राह्मणार्थ पर कहीं पानी फिर न जाये, इसलिए यहीं बैठकर खा रहा हूँ। हृषिकेश के रास्ते में हर कहीं खाया है। कहावत जो है—'बी ए रोमन, ह्वेन यू आर इन रोम।'

सभी ने हँसते हुए खाना खाया। हाथ धोकर पिछवाड़े टहलते हुए जगन्नाथ ने अपने विचार को और भी स्पष्ट करने की चेष्टा की। अपनी इस क्रिया में उसका पूरा विश्वास है या नहीं, इसकी सार्थकता बेकार है। क्योंकि कार्यरत होने पर ही जड़ जमाने वाला विश्वास है यह। यह किसका बेटा है, यह बात निस्सार है—ऐसे समाज की सृष्टि के लिए इन सभी यातनाओं को सहना पड़ेगा। जब तक मेरी माँ, मेरा बेटा, मेरी पत्नी की भावनाएँ आज के स्वरूप में रहेंगी तब तक जाति रहेगी, सम्पत्ति रहेगी। या जाति और सम्पत्ति के रहने तक ऐसी भावनाएँ बनी रहेंगी। इन भावनाओं के स्वरूप को बदलने की चेष्टा ही क्रान्ति है।

जूड़े में फूल गूँथकर चलने वाली काली मातंगी ब्राह्मण-पत्नी, खुरदरे बालों वाले काले मातंग को ब्राह्मण मरघट ...

इस प्रकार वह अपनी पीड़ा को भूल पायेगा ...

कौन है !

मुर्गी में चूना मलते हुए आँगन में खड़े

रोककर कहा—'ग्राज मैं मातंगों के लड़कों से मिलकर बात करूँगा। तुम जाकर सो जाग्रो। तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं लगती।'

'रायसाहब,' जगन्नाथ अपने विचारों में डूबकर बात टटोलता खड़ा रहा। 'कल मन्दिर के प्रवेश करने से शायद मेरी पूरी योजना अपूर्ण ही रह जायेगी। ग्रापसे कह दूं कि मैंने क्या निर्णय किया है। इस सम्पत्ति ग्रादि का सारा कारोबार धीरे-धीरे गोपाल को सौंप दूंगा। यही एक भार है। ग्राज भी मुझे मातंग 'मालिक' कहकर पुकारते हैं। मैं संगठन करना चाहता हूँ। कुमियों को संगठित करना होगा। भूतनाथ के डर से जमींदार की मुंहमांगी लगान देने से उन्हें रोकना होगा। मातंगों को भी संगठित करना होगा। कोई भी काम, नाटकीय रूप से नहीं बनेगा। इसको समझकर, प्रतीक्षा करना सीखना होगा।'

रायसाहब ने सुर्ती मुंह में रखकर मुसकराते हुए कहा—

'तुमसे एक बात कहना चाहता था। कुछ करके भी शायद बन न पाये।...इस मिट्टी का गुण ही ऐसा है। फिर भी कल मातंगों के साथ जुलूस में चलने का मैंने निश्चय किया है।'

जगन्नाथ की ग्रांखों में कृतज्ञता का जल देखकर रायसाहब ने परिहास से कहा—

'ग्ररे बाबा, ऐसा मत समझना कि तुम जो कुछ कहते हो उसे मैं मानता ही हूँ। पर जब तुम इस तरह कमर कसकर खड़े हो, ग्रौर मैं डरकर पीछे क़दम उठाऊँ तो मुझे मरते दम तक शर्म बनी रहेगी।'

27

श्री मंजुनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी सीतारामय्या तेज़ी से चलते, कोई मन्त्र गुनगुनाते मन्दिर के पिछवाड़े की गली के ग्रपने घर ग्राये। इधर उनके पट्टीदार नागराज जोयिस के सींग निकलने लगे थे। कहता था कि ग्रदालत जायेगा। पूजा से निवृत्त होकर लौटते समय प्रभु जी के भांजे वेंकटराय कामत ने रोक कर जब यह बताया तो सीतारामय्या घबरा गया। 'बताइये सीतारामय्या जी, कि ग्राज तक

अदालत क्यों नहीं गया ? भूतनाथ के डर के कारण न ? उस डर को अब जगन्नाथ राय मिटा देंगे, तो लोग पाप-भीरु कैसे रह पायेंगे भला ? क्या आप जोयिस की धूर्तता को नहीं जानते ? जिस पर बेटा भी तो वकील है। कल हरिजनों का प्रवेश होने दो—देखूँगा कि सीतारामय्या की पूजा में क्या जोर है !'

सीतारामय्या ने अपनी घबराहट कामत के सामने व्यक्त होने नहीं दी। 'पतोहू ने आत्महत्या की है। जोयिस को भगवान देख लेगा।' इतना कहकर घर आ गये थे।

सीतारामय्या बड़े टीमटाम के व्यक्ति थे। कानों में वज्र की मुरकी, पीठ पर झूलती अधपकी भरपूर शिखा। गले में सोने से गुंथी रुद्राक्ष माला; माथे पर मंजुनाथ जी का लोबान प्रसाद, कस्तूरी-मिश्रित सिन्दूर।

पिता के पाँवों की आहट सुनी होती तो भीतर के कमरे की बगल वाली खिड़की के पास 'देवदास' उपन्यास पढ़ता बैठा गणेश किताब छिपा देता। केले के पत्ते काटने में या दोने बनाने में व्यस्त हो जाता। पर उपन्यास में वह इतना खो गया था कि पिता के भीतर आने की खबर तक उसे नहीं हो पायी। पास आकर खड़े होने का भी ध्यान नहीं रहा। घूरकर देखने का भी पता नहीं चला। जब पिता ने दो चाटें लगाये, किताब छीनकर बाँह झकझोरी, गणेश कुनमुनाता हुआ उठ खड़ा हुआ। पिता का कचूमर निकालकर मार डालें, ऐसा गुस्सा ! तुतलाहट के कारण बातों में व्यक्त नहीं कर सका। उसे पास उमगने वाली आँखों से व्यक्त किया। 'देवदास' उपन्यास ने उसमें जिन सुकुमार भावनाओं को अंकुरित किया था। उसे सामने खड़ा देख सा गया था।

पिता का सहस्रनाम शुरू हुआ यथा रीति—'कमबख्त अहमक ! कहानी की किताबें पढ़ते हुए मरता है, तुझे कोई लाज-शर्म भी है ? मन-माना खाकर उजड्ड बनता चला जा रहा है। शादी होने के बाद भी तुझे अक्ल नहीं आयी—गालियों के साथ ही बीच-बीच में दो तमाचे पड़ रहे थे कि जैसे शिव-पूजा में रह-रहकर बिल्वपत्र चढ़ाते जा रहे हों। गणेश का गुस्सा भी बढ़ते-बढ़ते, इन गालियों और मार के कारण

होने के मुहूर्त में, अपने हाथ भी किसी क्षण ऊपर उठेंगे, पिता के हिलने वाले निकले दाँत झड़ जायेंगे, ऐसे ही समय सुब्राय अडिग भीतर आये। 'यह क्या सीतारामय्या, रुद्रावतार बन गया है!' कहा तो पिता का क्रोध करवट लेकर दु:ख में बदल गया।

'देखिये अडिग जी, कब तक भला मैं बक-झक कर मर जाऊँ? तीनों जून, यह लफंगा कोई घटिया किताब लिये बैठा रहता है। शादी के बाद भी यदि जिम्मेदारी नहीं आयी तो क्या करें, बताइये!'

अब पिता की शिकायत निरन्तर चलती रहती है। इसकी भी कभी-न-कभी रुकने की घड़ी आती है। भोजन के समय भूख लगने लगती है। फिर मेरे दोपहर के स्नान का समय होता है। सवेरे ठण्ड में नदी का स्नान किया था। दोपहर घर में ही गरम पानी उँडेल लिया जा सकता है। पिता न हों तो किवाड़ बन्द कर लिये जा सकेंगे; लँगोट भी उतार-कर नंग-धड़ंग खड़ा रह सकेगा; नंगे बदन पर मनमाना गरम पानी डाल लिया जा सकेगा। आँच पर सेंके केले के पत्तों से गणेश दोने बनाने लगा।

सुब्राय अडिग न दबी आवाज में कहा—

'देखिये, मेरा भी जवान बेटा है। एक नहीं सुनता,। पर पीटना बेकार है। आप ऐसे पीटेंगे तो कहीं गणेश फिर से बौरा न जाये, सीता-रामय्याजी!'

'मेरे मरने के बाद मंजुनाथ की पूजा का उत्तराधिकारी बनने वाले की हालत ऐसी हो तो, बताइये क्या करें? मैं नाहक बकझक नहीं करता, अडिग जी—मेरी कमजोरी बढ़ रही है। फिर भी शादी-ब्याह आदि का पौरोहित्य मुझे ही निभाना पड़ता है। इस लफंगे को न कोई शुचि है न...।'

गणेश ने दोनों को बना-बनाकर एक पर एक रखते हुए अपने अप-मान को भूलने की चेष्टा की। पिता की हर बात में इस उत्तराधिकार की बात अवश्य आती है। माँ की मृत्यु के बाद, उनकी दूसरी शादी का मूल कारण यह था कि मंजुनाथ के पुजारी बनने वाले उसकी देखभाल के लिए घर में एक औरत जात हो। अपने से कुछ ही साल बड़ी, छोटी माँ की

दो सन्तानों में एक भी लड़का न होना क्या अपनी गलती थी ? फिर उसकी शादी हुई भी तो, इस छोटी माँ के भाई की लड़की से। वजह केवल यह थी कि पिता के मरने के बाद जब वह पूजा का उत्तराधिकारी बनेगा, तब पौरोहित्य की दैनिक विधियाँ, सुगमता से शुचि के साथ निभाने वाली कुलीन कन्या चाहिए, या कौरवी छोकरियों की भाँति टेढ़ी माँग बनाये, सिनेमा देखने वाली छोकरी चाहिए।

भारतीपुर में गणेश के लिए चोरी-छिपे बीड़ी पीने लायक एक गुप्त जगह तक नहीं थी। एक बार बीड़ी पीते हुए किसी धसामी ने देखकर, किसी के कानों में फुसफुसाया, तो उसका सारे गाँव में ढिंढोरा पिट गया। बात पिता के कानों तक पहुँची और पीठ पर मार से सांट उभर आयी।

मंजुनाथ की पूजा के उत्तराधिकारी को अंग्रेज़ी की पढ़ाई किस लिए ? कहानी की पुस्तकें किस लिए ? सिनेमा किसलिए ? प्यार करने वाली बीवी किसलिए ? कालर वाला कुर्ता किस लिए ? चप्पल किसलिए ? बीवी यमुना का बिस्तर छोटी माँ के साथ। तिथि, वार देखकर महीने के कुछ दिन मात्र उसके साथ सोती है। पर आये दिन पत्नी के सामने पिटने वाले की बगल में जब वह आकर सोती है तो वहीं, कुछ दूरी पर पिता के सोते रहने का भाव, किसी भी घड़ी वे उठ पड़ेंगे—इसके डर से पत्नी से क्या प्रेम की कोई बात का हौसला हो सकता था ?

यमुना और भी कुछ सेंके हुए पत्ते रख गयी। सेंके हुए केले के पत्तों की बू सदा नाक में भरी रहती है। खैर है कि पिता का क्रोध उस पर से हटकर, जगन्नाथ की ओर मुड़ पड़ा था।

"कोई बेटा, बड़े बाप की औलाद होकर, कभी ऐसे घटिया काम के लिए आगे बढ़ सकता है ? बताइये। हर कहीं ब्रह्म-द्वेष का ही बोलबाला है। तहसीलदार ब्रह्मद्वेषी, डी० सी० ब्रह्म-द्वेषी, मन्त्री-परिषद् ब्रह्म-द्वेषी—आखिर मन्दिर का महन्त जो बना, वह भी ब्रह्मद्वेषी—तो फिर...!'

गणेश के अन्दाज़े के अनुसार ही सीतारामय्या ने ब्राह्मण-धर्म के बारे में अस्खलित व्याख्यान शुरू किया—

'वेदांत क्या कहता है—

जन्मना जायते शूद्रः । कर्मणा जायते द्वि जः ।'

वेद पारायणत् विप्रः—ब्रह्मज्ञानेति ब्राह्मण ॥'

इस गणेश से मैं कहा करता हूँ—रे, कैसी-कैसी भद्दी पुस्तकें पढ़ता है ! इस कन्नड में लोग क्या लिखेंगे भला ? ललिता सहस्रनाम के केवल एक श्लोक की बराबरी करने वाला, तुझे कुछ मिला है ? कलियुग है। वरन् एक सत्कुल-प्रसूत व्यक्ति जो भूल गया है कि भगवान के मुकुट ने उसके प्राण बचाये थे—ढोर खाने वाले मातंगों को मन्दिर में लाने की इच्छा करे, आश्चर्य है ! प्रतिभा-प्रतिष्ठा की विधि जानने वाले आपसे मैं क्या कहूँ भला ! जगन्नाथ चाहे लाख ऊटपटांग करे—पर इस मन्दिर में चण्डालों का प्रवेश बिलकुल असम्भव है। कितने लाख वर्षों से यह मन्दिर टिका है। कहते हैं कि काशी के बाद ऐसा पुण्यक्षेत्र कहीं नहीं है। शताय, सहस्राय, लक्षाय, आचंद्रार्काय कह कर भगवान की प्रतिष्ठा जो करते हैं—परशुराम ने मंजुनाथ की आचंदार्काय प्रतिष्ठापना की थी। धायन्वास, दधिवास, क्षीरवास, जलवास के उपरान्त प्रस्थापित मंजुनाथ को नष्ट करने वाला आदमी पैदा नहीं हुआ और वह होगा भी नहीं।'

पिता की हर बात में निकले दाँत होंठों से टकराकर हिलते रहे; कानों की वज्र की बुंदकियां चमकती रहीं। अडिग चले गये। सहसा गणेश को फिर डर लगा। कोई दोना टेढ़ा है, घिसा हुआ चन्दन काफ़ी नहीं, वह पुस्तक किस हरामजादे ने दी—कहकर कहीं फिर गालियों की बौछार न हो !

अँगोछा पहने, अँगोछा ओढ़े बैठा गणेश हड़बड़ी से उठकर स्नान-घर में चला गया। मंजुनाथ को नष्ट करने वाला आदमी पैदा नहीं हुआ और होगा भी नहीं—पिता की यह बात उसके मन में गड़ गयी थी। हमाम के किवाड़ बन्द करके, सारे कपड़े उतारकर, नंगा चूल्हे के सामने खड़ा हुआ। रात में बिना लँगोट के सोने पर भी पिता गालियां देता है। देगची में रखे खोपरे का तेल जाँघों की साँदों में, सारे वदन पर मलता हुआ आग के सामने वह सेंकने लगा।

बाहर पिता का शोर सुनायी पड़ा; छोटी माँ ने चुगली की होगी।

'किवाड़ लगा कर क्या कर रहा है रे, साड़ेसाती? तुरक की भाँति लँगोट उतारकर नहा रहा है क्या?'

दिन में लँगोट निकालने का मौका, केवल शौच जाते समय मिलता था, फिर नहाते समय ही। इस प्यारी घड़ी में भी पिता डाँटता है। हमाम में उतर कर गरम पानी उँडेल लिया। शरीर पर धीरे-धीरे उँड़ेले जाने वाले गरम पानी के साथ तेल लगे हुए मर्म-स्थानों को टटोलने में बड़ा सुख मिला। सुना है कि रावण ने वर माँगा था कि स्नान के समय शरीर-भर में दाद हो जाये। शिकाई से मलते हुए मंजुनाथ के मुकुट से चुराये सोने से बने कटिसूत्र को भी माँजा। छोटी माँ की झुमकी, अपनी बीवी का हार, दोनों लड़कियों की बालियाँ पिता की रुद्राक्षमाला में गुँथा हुआ तार—सभी जगन्नाथ राय के प्राण बचाने वाले उस मुकुट से ही बने थे।

गणेश ने, अपने-आप हँसते हुए, लोटे से आवाज करते पानी भर-कर स्नान किया। सुना है, मंजुनाथ को अशुचि होने पर सारा गाँव जल-कर भस्म हो जाता है। थोथी बात है। शादी-ब्याह कराने जब पिता जाता है, तो गर्भ-मन्दिर में वह अकेला ही तो होता है। सबेरे जल्दी जाकर गर्भ-मन्दिर के द्वार को बन्द किये पूजा की तैयारी के बहाने बैठा है। मंजुनाथ को अनेक ढंग से अशुचि करके पिता के प्रति अपना गुस्सा निकाला था।

'अभी नहाना खत्म नहीं हुआ, रे?' फिर पिता की पुकार, छोटी माँ के नारियल घिसने की आवाज, यमुना के खाँसते हुए छौंकने की गन्ध बेफिक्री से बदन पोंछकर गणेश निकला।

नारियल तराशना छोड़कर छोटी माँ शायद पिता से और भी कुछ शिकायत कर रही होगी। पिता की चीख-पुकार फिर शुरू हुई। तहकीकात शुरू हुई कि जगन्नाथ का नाम लिखा 'देवदास' उपन्यास उसके पा कैसे आया? चुप खड़े गणेश को पिता मारने दौड़ा, पर उसके शुचि होने के कारण चुप हो गया।

रात में सोये-सोये गणेश ने बहुत देर तक ... ।

मंजुनाथ का पल्ला नहीं छूटता। उसके प्रसाद में वह डूब गया है। गर्भ-मन्दिर में तेल की तीखी बू से मिली अगरबत्ती और कर्पूर की बू। सिन्दूर की बू। घर आयें तो फिर वही पूजा के लिए निकालकर रखे सिन्दूर की बू। पानी में भीगे भगवान के भोग के चने की बू। जब भी भूख लगे वही खाते रहो। फिर नारियल। रोज़ ढेर सारे टुकड़े। मुफ़्त में मिलने वाले नारियल के यथेष्ट उपयोग के बिना कोई रसोई नहीं बनती। दाल में वही, ककड़ी में वही, चटनी में वही, कोसम्बरी में वही—जीवन-भर गणेश को कभी प्याज और आलू की दाल, आलू के बौण्डे, मसाला-दोसे खाने की बात मालूम नहीं। उन सबका जायका उसे अ० न० कृष्णराय के उपन्यासों में ही मिल पाता था।

यदि जगन्नाथ हार गये अथवा यदि मातंग भीतर नहीं आये तो पिता की जीत होगी। उनके मरने के बाद मंजुनाथ अपने को कोल्हू की भाँति पेरने लगेगा। मरते दम तक उसकी गत यही बनी रहेगी। सौतेली माँ सदा धिक्कारती रहती है कि युमना को लड़का नहीं हुआ। वही चने, वही नारियल, वही सिन्दूर, वही आरती—घिना कर गणेश कम्बल के अन्दर यों काँपा मानो उलटी आ गयी हो।

साँस रोककर चुपचाप लँगोट खोला। उस किनारे पिता सोया है। शायद वह अन्दाज़ा लगायेगा कि मैं क्या कर रहा हूँ! भोजन-शाला में सौतेली माँ, यमुना, बच्चे सोये हैं। कल फिर गालियाँ, शुरू होंगी; पिटाई होगी। सब-कुछ देखती हुई यमुना अपने कामों में लग जायेगी। नक्षत्र और तिथि देख कर उसकी बग़ल में आकर सोयेगा। पर पिता वहीं खर्राटे भरते सोये रहेंगे। 'देवदास' के अगले पृष्ठों को पढ़ने की उत्कण्ठा को पिता की ग़ैरहाज़िरी तक दबाकर रखेगा। सभी ऐसा ही चलता रहेगा।

'ना, मैं नहीं छोड़ूँगा'—कहकर गणेश एकदम उठ बैठा। हराम-ज़ादा, हरामज़ादा कहकर जाप किया। अँगोछा पहन कर कम्बल ओढ़े खड़ा हुआ। बाहर जाड़ा। गर्भ-मन्दिर की चाभी पिता के सिरहाने है। तकिये के नीचे है या बाहर? दबे पाँव जाकर टटोलकर देखा। भगवान की कृपा—चाभी सिरहाने ही थी, तकिये के नीचे नहीं थी। लड़खड़ाता

हुआ रसोई में गया। कभी पलकें न लगाने वाली डायन छोटी माँ यदि रोकेगी तो जवाब देंगे—'पानी पीना है।' नाहक शंका क्यों हो? घड़े से पानी लेकर पी लिया। ओखली के पास पड़े सब्बल को धीरे से उठाया। पिछवाड़े का दरवाजा खोला। मरियल किवाड़। कर्र की आवाज निकली। पिता का उनींदे में शाप सुनायी पड़ा। 'दरिद्र शनि' कहा होगा। टट्टी के लिए जाने का भ्रम पैदा किया। हाँडी में लोटा यों डुबोया कि कुछ आवाज निकले। उसी भाँति बाल्टी में भी पानी भरकर पिता को यकीन दिलाने के लिए कि टट्टी जा रहा है, धप्प से बाल्टी उठायी। पिछवाड़े के किवाड़ बन्द कर सब्बल लिये मन्दिर की ओर चल पड़ा।

मन्दिर के अहाते के इर्द-गिर्द अभी भिक्षुक जाग रहे थे। इस आधी रात में तीसरे दिन के रथोत्सव के लिए स्पेशल बस में आते रहने वाले यात्रियों को देखकर लगा कि ये कैसे मूर्ख हैं! कम्बल ओढ़कर मन्दिर में जाने से किसी को शंका न हो, इस विचार से पेड़ के नीचे बैठे एक भिखारी की ओर कम्बल फेंककर गणेश आगे बढ़ा। पुजारी का बेटा होने के कारण कोई परिचित व्यक्ति मिल भी जाये तो समझ लेगा कि कोई काम होगा। यदि पूछा कि सब्बल किसलिए तो कह देंगे कि दीपाधार के खम्भे गाड़ने हैं।

मन्दिर के बड़े द्वार को खोलकर गणेश भीतर गया। और द्वार बन्द कर लिया। कोई नहीं था, सिर्फ अँधेरा, नीरवता। ताला खोल कर गर्भ मन्दिर में गया। किवाड़ बन्द कर साँकल लगाया। दो नन्दा-दीप जल रहे थे। मंजुनाथ के छोटे लिंग पर मुखौटा—सौम्य और मुसकराता हुआ मुखौटा। सिर पर सोने का मुकुट। उपनयन के दिन से उसका अधिक समय यहीं बीता है। लगा कि सारा कितना सहज है।

कहते हैं, आर्चद्रार्क है; अट्ठारह फुट की गहराई में भूप्रस्तार का चक्र है। सरोवर में नवरत्न, नग-नाण्य भरे रहते हैं। अष्टदिग्बन्धन किया जाता है। पिता की पुराणपन्थी का नाश हो जाना चाहिए—समूल। वरना वह नष्ट हो जायेगा। दूसरा मार्ग नहीं। मातंगों को भीतर ले आयेंगे, तब मैं चिल्ला कर कहूँगा—'सब गया। अब हम सभी आजाद हैं।'

सब्बल से लिंग के इर्द-गिर्द खुदाई की। वदन से पसीना छूटा। नन्दा-दीप की रोशनी बढ़ायी। लिंग के नीचे कुछ दरार रहने की बात केवल वह और पिता जानते हैं। पर नागराज जोयिस को भी किसी तरह पता चल गया था। पिता का कहना था कि हर्गिज़ दरार नहीं हैं।

सब्बल की आवाज़ यों लग रही थी जैसे उसके सीने पर कूटा जा रहा हो। पिता उठकर यदि आकर देख लेगा, तो यहीं मेरी समाधि हो जायेगी, या उसकी समाधि बना दूंगा। सब्बल के प्रहार से लिंग छिन्न हो गया। अब क्या करें? चाहे कोई आ जाये, कोई देख ले, परवाह नहीं; सब्बल से लिंग के चारों ओर खोदने लगा।

पाँव पर एक चूहे के दौड़ने से वह डर गया। उसे मार डालने के लिए दौड़ा, तो वह अभिषेक के पानी बहने वाली मोरी में ग़ायब हो गया। 'मरने दे, मरने दे' कहते हुए गणेश उन्मत्तता में खोदने लगा। लिंग अपनी पीठ से बाहर आया। पिता के बिछाये गये धुले कपड़े में लपेटकर उठा लिया। उतना कोई भार नहीं था। अंतः सब्बल के साथ उसे उठाकर बाहर आया। गर्भ-मन्दिर का दरवाज़ा बन्द कर सीधे नदी की ओर गया। नदी-किनारे भी लोगों की भीड़ थी; पर किसी ने उसको पहचाना नहीं। पापनाशिनी घाट में लिंग को फेंक कर पिता का धुला कपड़ा भी वहीं फेंक कर वह वापिस आया।

शरीर में पसीना छूटा। पिछवाड़े से घर में प्रवेश करने तक होश नहीं था। पिछवाड़े का दरवाज़ा खोलकर भीतर पाँव रखना ही चाहता था कि अँधेरे में सामने एक व्यक्ति के खड़े रहने का आभास पाकर एकदम छाती धड़क उठी।

'कहाँ गया था रे, दरिद्र शनि, इतनी रात गये?' कहकर पिता का हाथ जब उसके जलते चेहरे पर पड़ा तो सहसा सिर चकरा गया। वह क्या कर रहा है, गणेश की समझ में कुछ नहीं आया। सब्बल उठाकर फेंक दिया। पता नहीं, पिता के वदन के किस भाग पर वह गिरा? 'हाय!' कहकर उनको चीखते देख गणेश एकाएक भाग निकला। कहाँ भाग रहा है, कुछ होश नहीं था। जगन्नाथ का घर बहुत दूर था। सीधे मन्दिर की ओर भाग कर, गर्भ-मन्दिर में घुसकर दरवाज़ा बन्द कर

लिया और जमीन पर लुढ़क गया। ऐसी नीरवता थी कि अपने दिल की धड़कन सुनायी पड़ रही थी। पिता ने पीछा नहीं किया था। शायद घर भी गया होगा। 'हाय माँ' कहकर लम्बी साँस ली और पाँव लम्बे कर लिये। कल जगन्नाथ राय के मातंगों के साथ आने तक यहीं छिपे रहने का निश्चय कर, मुँह से साँस लेता हुआ वह फर्श पर सो गया।

28

मेले के तीसरे दिन की दोपहरी में जगन्नाथ 'जागृति' का विशेषांक देखता बैठा था। विफल क्रान्ति!

फिर भी जगन्नाथ की दृढ़ संकल्प-शक्ति।

आगे पढ़ने का हौसला नहीं हुआ। घर का घेराव किये हुए लोग हो-हल्ला कर ही रहे थे। पुलिस भी शायद भीड़ की रोक-थाम करते, सीटी बजाते-बजाते थक गयी थी। कैसी अमन्द घोषणाएँ! 'गणेश भट्ट जी की जय।' 'नास्तिक को धिक्कार।' फिर वह भजन भी—

'जय मंजुनाथ। जय भूतनाथ।

जय गणेश भट्ट। जय देव देव!!'

जगन्नाथ ने खिड़की से देखा। अधिकतर सब बेहरे। मजे की बात यह थी कि कल उसने जिन पोस्टरों का प्रदर्शन किया था उन्हीं में परिवर्तन कर लिखकर, कुछ-कुछ थाम रहे थे: 'ब्रह्मत्व के गौरव की रक्षा करने वाले गणेश भट्ट जी की जय' ऐसी बातें। बेचारे—अनन्तकृष्ण का [illegible] था। अब इन्हीं [illegible] ही [illegible] की [illegible] रहे हैं। [illegible] की [illegible] वाला ठीक समझकर लिखता है [illegible] में आता।

'जानते हो, प्रभु कोई चाल चल रहा है। शायद लोगों ने गणेश को भूतनाथ का अवतार समझा हो। पर प्रभु को चिन्ता हुई है कि होश में आकर गणेश कहीं कोई स्टेटमेण्ट न दे बैठे। नेचुरली। इसीलिए उसने फ़रियाद की है कि गणेश ने हमारे उकसाने से मन्दिर पर हमला किया सोने-चाँदी की चोरी की।'

रंगराव और अनन्तकृष्ण भी ऊपर आये। गले में डाले खद्दर के दुपट्टे को तानते हुए अनन्तकृष्ण ने कहा—

"आप एक स्टेटमेण्ट दे दीजिये। प्रभु के स्टेटमेण्ट से भी पहले आपका देना ठीक रहेगा। बता दीजिये कि द्वेष में आकर मंजुनाथ के शिवलिंग के पुजारी के बेटे द्वारा उखाड़ने से अपने अहिंसात्मक आन्दोलन का कोई सम्बन्ध नहीं है। आगे फिर चाहे तो...!'

'न ! गणेश ने जो किया उसके लिए परोक्ष में मैं ही ज़िम्मेदार हूँ।'

गणेश को भूतनाथ का अवतार समझने वाले लोगों को खिड़की से देखते हुए जगन्नाथ ने कहा। इस नये उन्मेष के लिए कौन ज़िम्मेदार है ? रंगराव ने जगन्नाथ की बग़ल में आकर प्रार्थना की—

'नहीं, सर ! सभी हिन्दुओं की दुश्मनी मोल लेनी अच्छी टैक्टिक्स नहीं। सिर्फ़ इतना स्टेटमेण्ट दीजिये कि शायद पगला कर गणेश भट्ट ने ऐसा किया होगा। कहने का तात्पर्य यह नहीं होगा कि उन्होंने जो किया वह ग़लत है या सही ?'

अनन्तकृष्ण मान गये।

'गणेश को भूतनाथ का अवतार समझने वाले इन मूर्ख लोगों को एक जवाब भी मिल जायेगा। कुछ नहीं—सिर्फ़ इतनी-सी बात कि बौखलाकर उसने ऐसा किया।'

नीलकण्ठस्वामी ने अपनी दलील को और भी सूक्ष्म बनाया—

'भगवान पर गणेश को व्यक्तिगत द्वेष था। अपनी भाँति अयडियो लॉजिकल रेबेलियन नहीं। इसलिए उसके न्यूरोटिक एक्शन के साथ अपने को आयडेण्टीफ़ाइ न करने की बात कहना कोई ग़लत नहीं।'

अनन्तकृष्ण ने इस दलील का समर्थन किया।

'हुआ भी तो यही ! आपके कहने पर गणेश ने दरवाजा खोला। पता नहीं, उसने आपसे क्या कहा और लोगों ने क्या सुना—पर खबर तो फैल गयी कि भूतनाथ ने ही गणेश पर सवार होकर ऐसा करवाया। पागल लोग नाच उठे कि जब हरिजन मन्दिर में गये, तब भीतर भगवान ही नहीं था, इसलिए भगवान की अशुचि ही नहीं हो पायी। सब-कुछ अपने वश के बाहर चला गया था। कर भी क्या सकते ?—इस मिट्टी का असर ही ऐसा है।'

जगन्नाथ बेचैन होकर कल्पना करने लगा : मन्दिर के चबूतरे पर सिन्दूर की ढेरी के सामने बौराया हुआ गणेश बैठा है। उसकी पलकें मिचक रही हैं। होंठों पर मँडराने वाली मक्खियों को उड़ाने के लिए भी वह हाथ नहीं उठाता। मंजुनाथ की पूजा के लिए आये हुए लोग उसके सामने माथा टेक कर चुटकी में सिन्दूर लेकर जा रहे हैं। कालक्रम में पिल्ल या उसका बेटा कभी मन्त्री बनता है। भारतीपुर में अपनी तसवीर का अनावरण करता है। क्रान्ति के बारे में लिखते हुए मैं कहीं दूर रहूँगा—दिल्ली में। शायद मार्गरेट के साथ। बूढ़ा गणेश चबूतरे पर बैठा रहेगा, या उसके मर जाने पर उसकी चौकी की ही पूजा होती रहेगी। मेरे नाम से कन्या-पाठशाला बनेगी। मन्दिर में बिजली की बत्तियाँ जगमगाने लगेंगी। प्रभु मेरी प्रशंसा का पुल बाँध कर लेक्चर झाड़ने लगेगा। अभी चिल्लाने वाले लोग तब तालियाँ बजायेंगे।

रायसाहब कब तक लोगों को रोके रखेंगे, इस चिन्ता से जगन्नाथ उठ खड़ा हुआ। नीलकण्ठस्वामी ने कहा—'आपको देख कर लोगों का खून खौलने लगेगा। मत जाइये।' 'खून खौले, ऐसी हस्ती इनकी नहीं।' कहता हुआ जगन्नाथ ज़ीने से उतरने लगा तभी दारोगा आया। उसके हाथ में गणेश के अरेस्ट का वारण्ट था। प्रभु ने फ़रियाद की थी कि गणेश ने मन्दिर से सोना-चाँदी की चोरी की है। प्रभु कितना पाजी आदमी है—वास्तव में उसे मन्दिर के पुजारी के बेटे का जगन्नाथ के पास रहना खतरनाक लगा था। दारोग़ा ने बड़े अदब से गणेश को सौंपने की प्रार्थना की। जगन्नाथ ने उसे बैठने के लिए कहा।

गये। मुख-पृष्ठ का समाचार बन जाने की खुशी मे नीलकण्ठस्वामी ने शीर्षक पढ़ना शुरू किया। 'यह पी० आर० टी० रास्कल रिएक्शनरी, समाचार को ट्विस्ट कर देता है। 'जागृति' का समाचार ही ठीक रहता है।' कहते हुए जोर से पढ़ना शुरू किया—

'भारतीपुर मे विफल क्रान्ति
भगवान-रहित मन्दिर मे हरिजन प्रवेश
आन्दोलन से पीछे नही हटेंगे—जगन्नाथ
भगवान को अशुचि बनने से किसी भाँति भूतनाथ ने बचाया :
—भक्त गण।

उतावलेपन में अनन्तकृष्ण ने कहा, 'आगे पढ़िये।' रायसाहब बटुआ खोलकर पान लगाते हुए सुनते रहे। अचानक जगन्नाथ को याद आयी। बोला—

'पुलिस मातंगों की रक्षा कर रही है न ?'

'दस-बारह पुलिस वाले पहरे पर हैं।' पिल्ल को देख आया। शाम की मीटिंग मे आने के लिए कहा है।'

रंगराव ने कहा। इनमे किसी को भी पीडा समझ मे नही आयेगी। जरूरत भी नही। नीलकण्ठस्वामी का अखबार पढना ये कितनी तन्मयता से सुन रहे हैं! शायद इनको पत्र में समाचार द्वारा ही अपने कार्य की सार्थकता का भ्रम होगा। नीलकण्ठस्वामी जल्दी-जल्दी पढ रहा था—

'जब धूप का झाड ओस को झाड़ने लगता है, तब भारतीपुर बडा ही सुन्दर लगता है। देश-विदेश से लोग रथोत्सव के लिए आये हैं। राष्ट्रपति भी भक्त हैं मंजुनाथ के। इसकी लक्ष्मण-रेखा को लाँघने का साहस क्या हरिजनों में होगा ? इस कातरता मे चमकने वाली आँखें।'

जगन्नाथ सिटपिटा गया। 'बडा अच्छा लिखा है,' रंगराव ने तारीफ़ की। 'इस तरह लिखना बेईमानी है,' कहकर जगन्नाथ सिगरेट जलाये सुनता रहा।

'मंजुनाथ की महिमा को ध्वंस करने के लिए, जगन्नाथ के नेतृत्व मे सूर्योदय की वेला मे निकला शुभ्र वसनधारी हरिजन युवकों का जुलूस जब रथ की गली मे पहुँचा, तब सात बजे थे। पीछे कार। जय-ज

नारा।' 'इन्किलाव जिन्दावाद।' 'जगन्नाथ राय की जय।'... 'भूतनाथ के खेतिहरों के शोषण को धिक्कार।' 'मैं० सो० पा० की जय।'—सदियों से वेदघोष से गूँजे भारतीपुर में ये क्रान्तिघोष।'

'दोनों ओर पुलिस। जुलूस के आगे लम्बे क़द के, लण्डन की शिक्षा पाये, धर्मदर्शी घराने के जगन्नाथ जी। उनके पीछे दस हरिजन युवक। उनके पीछे भूतपूर्व कांग्रेसी नेता श्रीपतिराय। और भी पीछे सर्वोदय के नेता अनन्तकृष्ण, मैंसोपा के नेता नीलकण्ठस्वामी और उनके अनुयायी।'

रंगराव को छोड़ सभी के चेहरे खिल उठे।

'मातंगों के स्पर्श से रथ का खींचा जाना असम्भव होने के कारण सड़क के बीच में जनता की ही जगह। सजे रथ को पार कर मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ जुलूस। हर कहीं खुसुर-पुसुर। भीड़ को रोकने का पुलिस का कोलाहल।'

तभी एक देहाती औरत आवेश में आकर चिल्लायी—'मातंगों का भीतर जाना बिलकुल असम्भव है। भूतनाथ टाँग पकड़कर खींच देगा। रक्त की क़ै करा देगा।'

रहा। पर पिल्ल ने आँखें फेरकर अपने साथियों की ओर देखा। अपने पर ही नज़र गड़ाये हज़ारों लोगों को देखा। पीछे खड़े आदमी से पहले भीतर जाने के लिए कहा। उसने अपने पीछे वाले से यही बात कही। इस भाँति एक-दूसरे से कहते-कहते, क़तार में खड़े वे लोग जमा हो गये। एक-दूसरे को फुसलाने लगे, सटने लगे।

तब वह विमूढ़ चुप क्यों खड़ा था?

पी० आर० टी० की रिपोर्ट की नीलकण्ठस्वामी ने कड़ी आलोचना की—'कैसे सटल होकर एक्ज़ाजरेट कर रहा है!'

कोई चिल्लाया—'मंजुनाथ की जय! गोविन्द गोविन्द!' और एक पुकार—'बढ़े चलो!'

'हरिजनों की पीड़ा को समझ कुछ लोग नाच उठे। कुछ लोग रो पड़े। कुछ लोगों के शरीर पर भूतनाथ का आवेश-सा होकर थरथर काँपने लगे। पर यही ख़बर फैल गयी कि भूतनाथ ने मातंगों की टाँग पकड़कर घसीट दिया। आनन्द में विभोर होकर लोग पुलिस का पहरा तोड़कर घुस गये।'

जगन्नाथ समाचार सुनता खड़ा रहा।

सच है—तब वह हाथ बाँधे खड़ा था। वह जो नहीं कर सका उसे नीलकण्ठस्वामी ने कर दिया। पिल्ल के पास आकर उसका हाथ पकड़कर मन्दिर में खींच ले गया। दूसरे सभी पीछे-पीछे चल पड़े। प्रवेश की रस्म पूरी हुई।

नीलकण्ठस्वामी त्योरियाँ चढ़ाकर पढ़ रहा था—

'पूछने पर कि क्या इस ज़बरदस्ती प्रवेश के मे आप सहमत हैं, सर्वोदय नेता अनन्तकृष्ण से जवाब मिला—यह उद्देश्य का प्रश्न है। शुद्ध। पर इन सबके दर्शक बने खड़े जगन्नाथ से, मेरे प्रश्न पर केवल विषाद-पूर्ण मौन प्रतिक्रिया।—सो, मिस्टर जगन्नाथ, इसके खंडन में आपको एक स्टेटमेण्ट देना चाहिए।'

'मेरी समस्या यह है कि जो कुछ मुझे सच लगता है, वह प्रमुख है, या मेरे संकल्प की सिद्धि किसी भाँति सम्पन्न हो जाना प्रमुख है? इस मसले के शान्त होने तक कह नहीं कह सकूँगा। [illegible]

नारा।' 'इन्किलाव जिन्दावाद।' 'जगन्नाथ राय की जय।'... 'भूतनाथ के खेतिहरों के शोषण को धिक्कार।' 'मै० सो० पा० की जय।'—सदियों से वेदघोष से गूंजे भारतीपुर में ये क्रान्तिघोष।'

'दोनों ओर पुलिस। जुलूस के आगे लम्बे क़द के, लण्डन की शिक्षा पाये, धर्मदर्शी घराने के जगन्नाथ जी। उनके पीछे दस हरिजन युवक। उनके पीछे भूतपूर्व कांग्रेसी नेता श्रीपतिराय। और भी पीछे सर्वोदय के नेता अनन्तकृष्ण, मैसोपा के नेता नीलकण्ठस्वामी और उनके अनुयायी।'

रंगराव को छोड़ सभी के चेहरे खिल उठे।

'मातंगों के स्पर्श से रथ का खींचा जाना असम्भव होने के कारण सड़क के बीच में जनता की ही जगह। सजे रथ को पार कर मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ जुलूस। हर कहीं खुसुर-पुसुर। भीड़ को रोकने का पुलिस का कोलाहल।'

तभी एक देहाती औरत आवेश में आकर चिल्लायी—'मातंगों का भीतर जाना बिलकुल असम्भव है। भूतनाथ टाँग पकड़कर खींच देगा। रक्त की क़ै करा देगा।'

लम्बी साँस छोड़कर जगन्नाथ उठकर अपने कमरे में गया। नीलकण्ठ स्वामी पढ़ता ही रहा। जगन्नाथ ने खिड़की के उस पार देखा। बौरे हुए आम के पेड़। ईश्वर-विरोधी को देखने के लिए कौतूहल से पहाड़ चढ़कर आते हुए कुछ लोग। उनको रोकने वाली पुलिस। इस प्रकार देखते हुए, अपने खड़े रहने की घड़ी की कल्पना उसने नहीं की थी। अपने क़ाबू के बाहर निकल जाने का अन्दाज़ा तो था ही, पर इस प्रकार हो जाने की आशा नहीं थी।

मन्दिर की देहरी के पास पिल्ल खड़ा था। सदियों का परिवर्तन करनेवाले क़दम की प्रतीक्षा में था। बाहर वाले को भीतर पहुँचा देने वाला केवल एक क़दम। पीठ के पीछे हज़ारों आँखें। अजीब बात यह थी कि उसे जितना खौफ़ था उतना ही कुतूहल भी था। कुतूहल यह था कि पिल्ल तैयार है या नहीं? ताड़ी का नशा उतरा होगा। इतनी आँखों के सामने पिल्ल यदि केवल एक क़दम रख दे तो भारतीपुर एक नयी वास्त-विकता की ओर मुड़ पड़ेगा, इस याचना से पिल्ल की ओर देखता ही खड़ा

रहा। पर पिल्ल ने आँखें फेरकर अपने साथियों की ओर देखा। देखने पर ही नज़र पड़ाये हज़ारों लोगों को देखा। पीछे खड़े आदमी से पहले अंदर जाने के लिए कहा। उसने अपने पीछे वाले से यही बात कही। इस तरह एक-दूसरे से कहते-कहते, कतार में खड़े वे लोग जमा हो गये। एक-दूसरे को फुसलाने लगे, लड़ने लगे।

तब वह विमूढ़ चुप क्यों खड़ा था?

पी० आर० टी० की रिपोर्ट की [illegible] ने बड़ी आलोचना की—'कैसे सटन होकर एक्ज़ाइरेट कर रहा है!'

कोई चिल्लाया—'मुकुनाथ की जय! गोविन्द गोविन्द!' और एक पुकार—'बढ़े चलो!'

हूँ कि यह झमेला एक्शन के जरिए ही शान्त हो सकेगा। केवल सोचते बैठने से नहीं।'

जगन्नाथ कमरे में आकर, खिड़की के पास खड़ा हुआ। दूर से सुब्राय अडिग आते दिखायी पड़े। उनकी वेशभूषा देखकर कहीं पुलिस उन्हें रोक न ले, इस विचार से जगन्नाथ नीचे उतरा।

नीलकण्ठस्वामी ने जो किया शायद मैं भी वह कर सकता था। यों देखा जाये तो प्रारम्भ से उसने किया भी तो क्या ? उसकी क्रिया का परिणाम कितना भद्दा हो सकता है, इसकी कल्पना नहीं की थी।

मातंगों के साथ भीतर जाने पर वहाँ का दृश्य विचित्र था। गर्भ-मन्दिर के सामने प्रभु और सीतारामय्या थे। सीतारामय्या के सिर पर पट्टी बँधी थी। दोनों के चेहरे से उद्विग्नता व्यक्त हो रही थी कि, सवेरे से वे गणेश से दरवाज़े खोलने की मिन्नत करते, डाँटते-डाँटते थक गये थे। गणेश कुछ भी स्पष्ट रूप से कहने की स्थिति में नहीं था। जब सीता-रामय्या चिल्लाया—'मातंग भीतर आये हैं, दरवाजा मत खोलना।' तब मुझे गुमान हुआ था कि कुछ हुआ है। प्रभु ने नाटक खेला—'क्या करें ? भगवान की प्रेरणा से इनका लड़का दरवाज़ा बन्द कर बैठा हुआ है। हमारे कहने पर भी दरवाजा नहीं खोल रहा है।'

जगन्नाथ सीधे गर्भ-मन्दिर के पास जाकर दरवाज़ा पीटने लगा। 'गणेश ! मैं, जगन्नाथ आया हूँ। दरवाज़ा खोलो। डरो मत।' दरवाज़ा खुला। गणेश झुकते हुए आकर उसके चरणों के पास लुढ़क पड़ा...।

सुब्राय अडिग भाव-शून्य चेहरा लिये, 'मौसी से मिलने आया' कहा। 'भीतर हैं।' कहकर उन्हें भीतर भेजकर जगन्नाथ ऊपर चढ़ गया। गर्म चर्चा चल रही थी। नीलकण्ठस्वामी ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहा था।

'देखिये। कैसी खबर दी है। हरिजनों को भीतर आते देख मंजु-नाथ अन्तर्धान हो गये—इस प्रकार लोगों में खबर फैल गयी। नीलकण्ठ-स्वामी ने माइक में घोषणा की कि शिवलिंग का उन्मूलन पुजारी के बेटे गणेश भट्ट ने किया। पर लोग इस विचार से नाच उठे कि भूतनाथ ही गणेश भट्ट के शरीर पर सवार होकर मातंगों के प्रवेश से मन्दिर को

अपवित्र होने से रोकने के लिए पिछली रात ही मंजुनाथ को जल-समाधि के लिए ले गया। भारतीपों की देवभक्ति इतनी गहरी है कि...देव-भक्ति नाच करता है, रास्कल। तब मैंने जो कहा था क्या उसको रिपोर्ट किया है, माता? मैंने कहा था—थोथी पुराण-पोथियों की बलि मत हो जाओ। जगन्नाथ राय और गणेश भट्ट—दोनों क्रान्तिकारी हैं। इस क्रान्ति को पुराण बना देने वाले पुजारी और व्यापारी लोगों के फरेब का एक-न-एक दिन भण्डाफोड होगा। भूतनाथ का, किसानों का यह शोषण रुकना ही पड़ेगा। यह क्रान्ति की केवल शुरुआत है। मेरी एक बात की भी क्या इसने रिपोर्ट की है?'

जगन्नाथ नीचे उतरकर आँगन में टहलने लगा। अब तो कुछ ही समय में मीटिंग है। पिल्ल, उसके साथी, प्रायः बाक़ी मातंग भी आयेंगे। रंगराव ने समाचारपत्र को खबर भेजी थी कि सभी शोषित वर्गों की मीटिंग है। मातंगों की मीटिंग में, कृमियों के आने में कितनी दिक्कत होगी!

ऊपर मित्रगण जोर-जोर से चर्चा कर ही रहे थे। आज की मीटिंग में संगठन के बारे में क्या-क्या मसले तय किये जायें—इस पर विचार करता हुआ जगन्नाथ मुँह धोने के लिए हमाम में घुस गया।

फिर से मंजुनाथ की प्रतिष्ठा की तैयारी के बारे में अडिग जी मौसी को विवरण दे रहे थे!